बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा आर्थिक- सामाजिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन- उत्तर बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

के लिए गृह विज्ञान संकाय के अंतर्गत मानव विकास विषय में

पी-एच. डी.

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

2007

मार्गदर्शक :
डॉ. (श्रीमती) ज्योति प्रसाद
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
गृह विज्ञान विभाग
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर एवं
संकाय अध्यक्ष, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

शोधार्थी :
कु. ऋचा अग्रवाल

शोध केन्द्र
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled "To Study the effect of Mental health, Discipline and ~~Economic~~ socio-status on Moral development - With Special Reference to late Childhood." Submitted for the degree of Doctor of Philosophy in Home Science (Child Development), Bundelkhand University, Jhansi is an original piece of research work done by Km. Richa Agrawal in the Department of Home Science under my guidance and supervision.

The methods of the work and results obtained have been checked by me from time to time. The data collection made are true and inferences drawn are quite logical and reasonable.

I further certify that the Thesis has been duly completed; it embodies the work of the candidate herself and it is upto the standard both in respect of its contents and literary. She has contact me more then 200 days for her work.

Dated :
21\5\07

Jyoti Prasad

Dr. (Mrs.) Jyoti Prasad
Professor, Dean (Jiwaji University)
& Head of Home Science Department
KR.G. Govt. College, Gwalior (M.P.)
(Guide)

Declaration

I hereby declare that the thesis entitled, "To Study the effect of Mental health, Discipline and Economic-Socio status on Moral Development - With Special Reference to late Childhood." being submitted by me for the Degree of Doctor of Philosophy in Home Science (Child Development) of Bundelkhand University, Jhansi (U.P.) is and original piece of research work done by me and to the best of my knowledge and belief is not substantially the same as one which has already been submitted for the degree or any other academic qualification at any other University or examining body in India or any other country.

Date : 21/05/07

Richa.

(Km. Richa Agrawal)

Autonomy
13 - 18 Years

Heteronomy Reciprocity
9-13 years

Mental Health
Discipline
Socio-Economic Status

Heteronomy Authority
5 - 8 Years

Anomy
0 - 5 years

Piaget (1932)
Stages of Moral Development

Morality is the meditational thought within the child's personality, which direct, control and channelize the human global path of life. It develops within the cultural favourable framework of family.

Dr. Jyoti Prasad

आभार पुष्प

मानव प्रकृति से ही सृजनशील प्राणी है, किन्तु उसकी सृजनशीलता के मूल में प्रेरणा का बीज अवश्य होता है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का बीजारोपण मेरे आराध्य देव 'श्री कृष्ण' एवं मेरे पूज्य गुरूजनों, परिजनों की सत्प्रेरणा, स्नेह एवं आशीर्वाद का प्रतिफल है।

कोई भी महत्वपूर्ण कार्य बिना प्रेरणा, संबल, सहयोग एवं मार्गदर्शन के अभाव में संपूर्ण नहीं होता है। सर्वप्रथम में आभार अभिव्यक्ति का प्रथम पुष्प परम आदरणीय डा. (श्रीमती) ज्योति प्रसाद, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, शासकीय कमलाराजा स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) के चरणों में समर्पित करती हूँ जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोध प्रबन्ध तैयार होने तक पग-पग मेरा जो मार्गदर्शन किया तथा स्नेह प्रदान किया, वह मेरे सकंल्प का प्रेरणा स्त्रोत बन कर चिरस्मरणीय हो गया है।

शोध ग्रन्थ की मौलिकता तथा सुस्पष्ट प्रस्तुती परम ज्योर्तिमयी डा० श्रीमती ज्योति प्रसाद के कारण ही संभव हो सकी है। इन सबके लिये मैं हृदयान्तर से, पूर्ण भावना के साथ अपना श्रद्धा सुमन उनके चरणों में सादर समर्पित करती हूँ। तथा हृदय की गहराईयों से उनके प्रति कोटि-कोटि आभार व्यक्त करती हूँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनके मार्गदर्शन में रहकर मैंने जो ज्ञान प्राप्त किया है उस ज्ञान गंगा की अविरल धारा को सदैव प्रवाहित रख सकूं।

मैं विशेष रूप से शोध केन्द्र-शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर के प्राचार्य एवं विभाग के समस्त प्राध्यापकों के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ

जिनके आशीर्वाद एवं सहयोग से इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण कर सकी।

आभार अभिव्यक्ति के इस क्रम में मैं आभारी हूँ बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के समस्त प्राध्यापकों एवं पुस्तकालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का जिनके अथक सहयोग से मैं इस कार्य को संपन्न कर सकी।

साम्रगी सकंलन के लिए मैं आभारी हूँ उन सभी विद्यालयों की जिन्होने मुझे तथ्य सकंलन करने में पूर्णरूपेण सहायता प्रदान की। इसके अतिरिक्त सूचनादाताओं के प्रति भी आभारी हूँ जिनके सहयोग के अभाव में इस कार्य को संपन्न करना, मेरे लिये असंभव ही था।

इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिये मुझे मेरे पिता श्री आदेश नारायन अग्रवाल जी ने प्रेरित किया, उनका मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ यदि वो मुझे प्रेरित नहीं करते तो मैं इस कार्य को पूर्ण करने में सफल नही हो पाती।

धैर्य व साहस को बढाने का श्रेय मेरी माँ श्रीमती रेखा अग्रवाल को हैं, जिनके सहयोग व प्रेरणा द्वारा ही मेरा शोध कार्य पूर्ण हो सका है।

मैं अपने भाई बहनों अनु अग्रवाल श्रीमती प्रियंका अग्रवाल, कु0 अमृता अग्रवाल, कु0 एकता अग्रवाल के प्रति भी सदा हृदय से आभारी हूँ।

ग्वालियर नगर के बालक-बालिकाओं उनके अभिभावक एवं शिक्षक के प्रति अपना आभार व्यक्त करना मैं अपना महत्वपूर्ण दायित्व समझती हूँ, जिन्होंने प्रदत्त संकलन हेतु सहयोग प्रदान किया।

इसके अतरिक्त मैं डा0 एम0एल0 तिवारी, सेवानिवृत प्राध्यापक (मनोविज्ञान), संबंधित व्यक्तियों तथा स्नेही मित्रों के प्रति आभार प्रकट करने में हर्ष का अनुभव करती हूँ जिन्होंने प्रस्तुत अध्ययन में अपना प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग एवं समय देकर मुझे लाभान्वित किया। शोधार्थी उन सभी शिक्षाविदों एवं लेखकों जिनका नाम व विचार विषय-वस्तु के

प्रस्तुतीकरण में उद्धृत किया है, उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुये आभार व्यक्त करती हूँ।

शोध-प्रबन्ध को टंकित करने के लिये मैं मीरा कम्प्यूटर्स, बजरिया छैराहा, इटावा के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके अथक प्रयास व लगन से यह शोध ग्रंथ आर्कषक रूप में प्रस्तुत हो सका।

अंत में त्रुटियों के प्रति क्षमा याचना के साथ अपनी साधना का यह श्रद्धा सुमन श्री गणेश जी एवं वीणावादिनी माँ सरस्वती जी कों समर्पित करती हूँ।

(कु० ऋचा अग्रवाल)

प्राक्कथन

इक्कीसवीं सदी के द्वार पर खड़े भारत एवं सम्पूर्ण विश्व में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही हैं, क्योंकि मानव-मूल्यों की चेतना, क्षीण व धूमिल होती जा रही है। सरस्वती के मंदिर में लक्ष्मी का दबे पाँव प्रवेश नवाचार के कंधे पर मूल्यों की लाश को ढो रहा है। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव ने मानव को समृद्ध नैतिक परम्परा से दूर कर दिया है। मूल्य और नैतिकता का यह पतन भारतीय समाज की सुदृढ़ विरासत को क्षीण कर रहा है।

सामाजिक मूल्यों को बनाये रखने के लिये नैतिक विकास की निरंतरता आवश्यक है। व्यक्ति और समाज के नैतिक मूल्य, वे शाश्वत् मूल्य हैं जो निरन्तर बने रहते हैं। इस कारण अतीत के नैतिक मूल्य आज भी सार्थक व प्रासंगिक हैं। नैतिक विकास की इस नित्यता एवं नैरन्तर्य का कारण प्रारम्भ से आज तक मानव स्वभाव तथा मूल्य-चेतना में पाई जाने वाली समानता है। इस संबंध में पाश्चात्य विचारक कालाईल, महोदय ने कहा कि ''विश्व में केवल एक ही मदिर है और वह मनुष्य का शरीर है, इससे पवित्र कुछ भी नहीं और इस मानव शरीर में हैं - निरपेक्ष मूल्य और यही बोध सत्य - शिव और सुंदर का बोध है।'' साथ ही भारतीय मनीषा के लिये नैतिक विकास ही सर्वोपरि रहे हैं। वेदों में विश्व व्यवस्था को बनाने वाला नियम, सामाजिक संदर्भो में नैतिकता है, ''बसुधैव कुटुम्बकम्'' ही नैतिक है।

नैतिक सकंट से ग्रस्त मानव समाज में लड़खड़ाते हुये सामाजिक संबंध, मर्यादाओं का निषेध, उच्चतर मूल्यों की पराजय, सामाजिक मूल्यों का ह्रास, नैतिक विकास का पतन आदि से समाज विकृत हो रहा है। ऐसे भारतीय सामाजिक-परिवेश में आचरण संहिता के रूप में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता है। नैतिक विकास का अनुशीलन ही विकृत समाज को आदर्श समाज के

रूप में स्थापित कर सकेगा।

वर्तमान युग में भी हम अपने महापुरूषों, मनीषियों एवं ऋषियों के आदर्शो व नैतिक अंतर्बोधों का परायण कर सकते है, क्योकि अतीत के नैतिक मूल्य आज भी शाश्वत् हैं। नैतिक मूल्यों का समर्थन करते हुये श्री अरविन्द घोष ने कहा कि '' नैतिकता वह व्यवस्था है जो कि अंदर से आती है, जिसके प्रति हमें पूर्ण विश्वास होता है, जिससे मनुष्य इंसान होने के अर्थ को पूर्ण करता है।''

आज हम अनास्था तथा विरासत में प्राप्त पांरपरिक मूल्यों के विखंडन के जिस संसार में जी रहे हैं, उसमें विषाद सर्वव्यापी हैं। इस विषाद से न केवल समाज बल्कि व्यक्ति का व्यक्तित्व भी विघटित हो रहा है, अतः मानवीय नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना हेतु आवश्यक है - राष्ट्र के विकास की नींव को दृढ़ता प्रदान करना और यह नींव है, राष्ट्र के बालक। एक बालक पूर्णतः मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसमें मानवीय मूल्य हों और ये नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही संभव हैं। बाल्यावस्था, वह अवस्था है जिसमें बालक उस कच्ची मिट्टी अथवा छोटे पौधे की तरह होता है कि उसे जैसा चाहें वैसा रूप दे सकते हैं।

माता-पिता एवं परिवार के प्रत्यक्ष शिक्षण से बालक नैतिक मूल्यों को ग्रहण करता है। बालक में नैतिक विकास संबंधी कोई अमूर्त सामान्यीकृत संकल्पना नहीं होती, लेकिन जब किसी नैतिक व्यवहार को करने से उसे आत्मसंतुष्टि हो या सवेगात्मक सुरक्षा की अनुभूति हो और उस नैतिक व्यवहार को पुर्नबलन प्रदान किया जाए तो धीरे-धीरे वह नैतिक मूल्य उसका स्वाभाविक गुण बन जाते हैं, इसके लिये उन्हें अनुकूल पारिवारिक वातावरण प्रदान किया जाना महत्वपूर्ण है।

बालक के नैतिक विकास को परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर भी प्रभावित करता है। सुदृढ़ सामाजिक-आर्थिक स्तर सर्वागींण विकास एवं नैतिक विकास में प्रभावशाली योगदान देता है तथा बालक के विकास को सकारात्मक मार्ग की ओर उन्मुख करता है। बालक के सर्वागींण

विकास हेतु नैतिक पक्ष का व्यवहारिक समावेश आवश्यक है।

अध्ययन की सार्थकता एवं उपयोगिता को आधार मानकर अध्ययन का विषय ''बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर- बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में रखा गया है।

शोध- प्रबन्ध के **प्रथम अध्याय** में सम्प्रत्यय रूपरेखा के अंतर्गत बाल्यावस्था नैतिक विकास तथा नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर का विवरण प्रस्तुत किया गया है। **द्वितीय अध्याय** में संबंधित अध्ययन के उददेश्यों की व्याख्या की गई है। **तृतीय अध्याय** में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया जाकर **चतुर्थ अध्याय** में शोध पद्धति का उल्लेख किया गया है, जिसके अंतर्गत अध्ययन का विषय, परिकल्पना का विकास, अध्ययन का क्षेत्र, कार्यकारी परिभाषाँए, शोध प्ररचनाएँ, न्यादर्श का चुनाव तथ्य संकलन, मापन के उपकरण, पथप्रदर्शी अध्ययन तथा सांख्यिकीय विश्लेषण को परिलक्षित किया गया है। **पंचम अध्याय** में शोधार्थी द्वारा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण कर रेखाचित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। **षष्ठ् अध्याय** में तथ्यों की विवेचना प्रस्तुत की गई है, जिसमें प्राप्त परिणामों की व्याख्या व पूर्व में हुये शोध कार्यो से उन्हें समन्वित करने का प्रयास किया गया है। **सप्तम् अध्याय** में सारांश एवं निष्र्कष प्रस्तुत किये जाकर अष्टम् अध्याय में सारगर्भित सुझाव एवं उनकी उपादेयता तथा भावी शोध संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। अतं में संबंधित संदर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट को सम्मिलित किया गया है।

(कु0 ऋचा अग्रवाल)

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट

अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

अध्याय - प्रथम
सम्प्रत्यय रूपरेखा

"Morality is Universally acknowledges as the Highest aim of humanity and consequently of Education"

Harbet

आधुनिकता, उदारीकरण, वैश्विकता और विश्व ग्राम की अवधारणा, वैज्ञानिक अन्वेषणों ओर तकनीकी प्रगति ने समाजों के, विशेष रूप से भारतीय समाज के परंपरागत नैतिक मूल्य बोध को अनास्था के भंवर में फंसा दिया है। इन सभी क्षिप्र परिवर्तनों के रहते हुये भी बिना नैतिक नियमों के व्यवस्थित समाज की कल्पना कठिन है।

आधुनिक युग, स्वर्णिम प्राचीन मूल्यों के विघटन का युग है। मनुष्य की आस्था, अनुभूतियों, संवेदनाओं, मानवीय संवेगों का इतना अकाल शायद ही किसी युग में दृष्टिगोचर हुआ है। एक ओर बदलती हुई जीवन पद्धति और चरमराते सामाजिक ढांचे से तनावग्रस्त है - मानव, दूसरी ओर तनाव कम करने, तनाव रहित जीवन जीने की अदम्याकांक्षा। जनमानस में भौतिकता के प्रति गहरी लिप्सा ने नैतिक विकास को हाशिये पर लाकर खड़ा कर दिया है।

राष्ट्र के विकास हेतु संपूर्ण मानव समाज का संगठित होना अति आवश्यक है और इस एकता का सूत्र 'नैतिकता' में निहित है। इस माध्यम से ही प्राचीन राष्ट्र अपने वैभव को प्राप्त कर जगत जननी से पुनः विभूषित होकर सिंहासनरूढ हो सकेगा एवं 'वसुधैव कुटम्बकम्' की भावना साकार हो सकेगी। इस भाव एवं उद्देश्य का दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी ने शोध का विषय नैतिक विकास लिया है।

अलैक्सिस कैरल के अनुसार - ''अपनी ओर ध्यान देना अर्थात स्वयं अपने सद्‌गुणों का विकास

करना ही नैतिक विकास है।''

नैतिकता जीवन का नियम है। इसी के अंतर्गत संस्कार पोषित होते है और मानव विकास के प्रत्येक चरण में परिवर्तित, परिवर्द्धित व परिमार्जित होते रहते है। ये प्रत्येक युग चरण और गति सोपान में अपरिभाषेय हो बने रहते है। जीवन की परिकल्पना और संस्कृति की अवधारणा नैतिक विकास के बिना संभव नही है। नैतिक विकास चितंन शक्ति बनकर अपने व्यवहारिक स्वरूप में, मानव जीवन की भावभूमि में उसकी अस्मिता बन जाते है और युग तत्व को अनुप्रणित करते है। यहीं से पनपते हैं- विश्वास! व्यक्ति की चेतना की समृद्धि बनकर और यात्रा करते हैं- युग बोध तक की। यही अर्जन मनुष्य के भीतर एक विलक्षण शक्ति और प्रतीति का अनुभव कराता है, उसे गर्व होता है, अपने मानव होने का, अपने भीतर निहित विश्वास और आस्थाओं के प्रति जो उसे सृजन की चेतना और निर्माण की शक्ति देकर सामर्थ्यवान बनाते है। उसके भीतर संस्कारों की समृद्धि पनपती है, जो उसे जीवन के प्रांगण में क्रियाशीलता और व्यक्ति चेतना प्रतीति का उद्भास कराती है, तब अंतश्चेतना में अर्जन होता है - मानव मूल्यों, नैतिक मूल्यों एवं जीवन मूल्यों का। यही नैतिक मूल्य दिशा देते है, युगबोध की विस्तीर्णता तक। यही बोध नैतिकता के रूप में जीवन का नियमन करते है और सृजन की दृष्टि देते है।

समाज के नियमों, मान्यताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप किया गया आचरण ही नैतिक व्यवहार है, जो व्यक्ति अपनी सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप आचरण करता है, वह नैतिकता की संज्ञा पाता है। नैतिकता का संप्रत्यय, एक सापेक्ष संप्रत्यय है और समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में ही इसकी व्याख्या की जा सकती है। नैतिक व्यवहार जन्मजात नही होता, बल्कि वह सामाजिक परिवेश से अर्जित किया जाता है। यद्यपि बालक बाह्य स्त्रोतों द्वारा नैतिकता का प्रत्यय ग्रहण करता है तथापि जब नैतिक व्यवहार के बाह्य स्रोत्र समाप्त हो जाते है और बालक आंतरिक विवेक द्वारा प्रेरित होकर नैतिक बनने का प्रयास करता है, तब उसके अंतर्मन में वास्तविक नैतिकता का विकास होता है।

इस संबंध में **सरस्वती (1977)** ने अपने अध्ययन में बताया कि ''बालक में नैतिक मूल्यों का आतंरीकरण, इन नियमों के बाह्य अभिरोपण के आंतरिक स्वीकरण द्वारा होता है।''

जन्म के समय बालक न तो नैतिक होता है, और न ही अनैतिक। विकास क्रम में अपने परिवेश से वह नैतिकता का पाठ प्रारम्भ करता है। समाज के नैतिक मूल्यों के अधिगम के आधार पर ही बालक उचित - अनुचित, अच्छे-बुरे में अंतर करना सीखता है। बालक जिस अवस्था में रहता है, उस वातावरण की सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार करना सीखना एक धीमी एवं दीर्घकालीन प्रक्रिया है, परन्तु बालक के लिये यह आवश्यक है कि उसमें उन नैतिक मूल्यों का विकास हो जो उसके परिवेश की अपेक्षाओं के अनुरूप हों। उचित प्रकार से स्थापित नैतिक विकास बालक में सुरक्षा, आत्मविश्वास एवं आत्मसंयम का विकास करते है।

उत्तर बाल्यावस्था नैतिक विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। जहाँ बालक एक ओर तो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को तीव्रता के अनुसार पूर्ण करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक दबाव के कारण उचित व्यवहार द्वारा एक विशेष कार्यशैली विकसित करना चाहता है। उसके परिवेश के व्यक्ति अर्थात् माता-पिता, शिक्षक एवं अड़ोस-पड़ोस सदैव उसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से क्या करना चाहिये तथा क्या नही करना चाहिये, इस बात के लिये शिक्षित करते रहते हैं। बालक कल के आने वाले भविष्य का नागरिक व प्रणेता होता है। एक समाज का कर्तव्य उसका भविष्य निर्धारित करना, निर्माण करना, उन्हें सही पथ-प्रदर्शन देना, उसका सही तरीके से पालन-पोषण करना, उन्हें अपने कार्यो के प्रति सही दिशा व उचित शिक्षा देना, उसमें आदर्श चारित्रिक एवं नैतिकता का विकास करना है।

आज के औसत व्यक्ति के लिये गर्भाधान से मृत्यु तक की अवधि काफी लंबी होती है। अपने जीवन काल में बालक न केवल आकार, अनुपात, आकृति, शरीरिक क्रियाओं की दृष्टि से बदलता है, बल्कि अभिवृत्तियों, रूचियों और व्यवहार के तौर तरीकों की दृष्टि से भी बदलता

रहता है। प्रत्येक अवस्था के लक्षण यद्यपि भिन्न-भिन्न होते है, किन्तु एक अवस्था के लक्षण अपनी पूर्ण अवस्था के लक्षणों पर आधारित होते है। विद्वानों ने बाल विकास कम को समझाने के लिये विभिन्न अवस्थाओं में वर्गीकृत किया है।

हरलॉक (1967) महोदय के अनुसार बालक विकास को निम्नलिखित अवस्थाओं में वर्गीकृत गया है :-

जन्म पूर्व अवस्था	-	गर्भावस्था से जन्म तक
शैश्वावस्था	-	जन्म से दूसरे सप्ताह के अंत तक
वत्सावस्था	-	दूसरे सप्ताह के अंत से दूसरे वर्ष के अंत तक
पूर्व बाल्यावस्था	-	2 से 6 वर्ष
उत्तर बाल्यावस्था	-	6 से 12 वर्ष
यौवनारंभ	-	12 से 14 वर्ष
पूर्व किशोरावस्था	-	14 से 17 वर्ष
उत्तर किशोरावस्था	-	17 से 21 वर्ष
पूर्व प्रौढावस्था	-	21 से 40 वर्ष
मध्य वय	-	40 से 60 वर्ष
वृद्धावस्था	-	60 वर्ष से मृत्युपर्यन्त

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा केवल बाल्यावस्था की आयु को ही सम्मिलित किया गया है। मनोवैज्ञानिक स्लीवन द्वारा बाल्यावस्था 5 से 11 वर्ष तक की आयु मानी गई है। साथ ही **हेविंगहर्स्ट (1953)** ने 6 से 12 वर्ष तक बाल्यावस्था मानी है। इस संबंध में अंग्रेजी भाषा के महाकवि मिल्टन की एक पंक्ति **"Childhood shows the man, as morning the day"** प्रसिद्ध है।

6 से 12 वर्ष उत्तर बाल्यावस्था है। संज्ञानात्मक विकास के कारण इस आयु के बालक सांकेतिक व मानसिक गतिविधियां करने लगते हैं, पर उनका तर्क मूर्त अनुभवों तक ही सीमित रहता है। इस अवस्था में तार्किक चिंतन का विकास, संज्ञानान्तम विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। तार्किक चिंतन के महत्वपूर्ण अवयव-संरक्षण, वर्गीकरण, क्रमबद्धता, इसी अवस्था में विकसित होते हैं। समाजीकृत भाषा का विकास भी इस अवस्था में होता है, इसके कारण बालकों को अच्छे सामाजिक संबंध बनाने तथा अंत:क्रिया के कौशलों को सीखने में सहायता मिलती है। **McCarthy (1937) & Lindworsky (1939)** ने कहा है कि धनात्मक अभिप्रेरणा का बाल्यावस्था के नैतिक विकास में अत्यंत महत्व है।

शाला के प्रभाव से बालकों के व्यवहार-प्रतिमानों में परिपक्वता आती है। इसके सकारात्मक-नकारात्मक दोनों पहलू हैं। अभिभावक बालकों को समाज-अनुकूल व्यवहार विकसित करने हेतु उचित मार्गदर्शन और सहायता देते हैं।

उत्तर बाल्यावस्था सम्पूर्ण जीवन की सर्वाधिक संवेदनशील अवस्था है। बाल्यावस्था में बालक सबसे अधिक व तीव्र गति से सीखता है। अत: इसे जीवन की शिक्षणावस्था (Period of Learning) भी कहा जाता है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि गत्यात्मकता बाल्यावस्था की मुख्य विशेषता है। यह अवस्था सतत् परिवर्तनशीलता की होती है।

नैतिक विकास की दृष्टि से बाल्यावस्था का अत्यंत महत्व है। इस अवधि में अंर्तवैयक्तिक संबंधों का बालक के सीखने की क्रिया पर प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में **वाटसन (1959)** ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुये कहा है कि आगे चलकर बालक कैसा बनेगा, यह उसकी बाल्यावस्था पर निर्भर करता है। **विल्सन (1968)** ने कहा कि उत्तर बाल्यावस्था में बालक के नैतिक विकास में अंर्तविवेक (आतंरिक प्रतिमान), युक्तिसंगतता, परहितवाद एवं नैतिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण होते है।

हरलॉक (1974) ने कहा है कि उत्तर बाल्यावस्था में बालक सीखे गये नैतिक मूल्यों का सामान्यीकरण करने लगता है। इस अवस्था में उसमें नैतिक प्रत्ययों का विकास भी होता है।

मुरे (1924) एवं ओराइसन (1959) ने अपने अध्ययनों में ज्ञात किया कि बालक में इस अवस्था में भले-बुरे (Conscience) की भावना का विकास होता है जो बालक को नैतिक व्यवहार करने की प्रेरणा देती है और उसे दंड से बचाती है। **लर्नर (1937)** ने कहा कि 8-12 वर्ष आयु में नैतिक निर्णय में बालक दंड के साथ अपने माँ के साथ संबंधों से भी प्रभावित होता है। **मार्गन (1956)** ने बताया कि उत्तर बाल्यावस्था में बालक की न्याय व औचित्य बुद्धि विकसित हो चुकी रहती है, अतः अनुचित दंड मिलने पर वह शिकायत एवं रोष प्रदर्शित करता है।

गैसेल (1956) का विचार है कि नैतिक शर्म, नैतिक व्यवहार के विकास के लिये महत्वपूर्ण कारक है। इस आयु के अंत तक लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में नैतिक विकास शीघ्र और अधिक मात्रा में होता है।

अन्य मनोवैज्ञानिकों Connel & Gibbs (1991); Bennet (1992); Kromrey (1993); Kahne (1994); Shields & Bredmeier (1995); Zagzebski (1996), Battistich (1997); Haste (1998); Bertowitz (1998) आदि ने भी नैतिक विकास संबंधी अध्ययन किये।

उत्तर बाल्यावस्था का बालक यथार्थवादी बनता जाता है। 8-9 वर्ष में बालक काल्पनिक संसार में रहता है, और साहसी कहानियों में स्वयं को नायक मानता है। 10-12 वर्ष में 'वीर पूजा' की भावनाा होती है। समवयस्कों के क्रियाकलापों में रूचि रहती है, इसे 'टोली की अवस्था' भी कहा जाता है। इस समय नैतिक लज्जा, नैतिक विकास में बड़ा कारक है। बालक में इस समय आत्मविश्वास एवं महत्व की भावना उत्पन्न हो जाती है।

जोन्स (1954) ने कहा कि उत्तर बाल्यावस्था में बालक के नये नैतिक मानकों का निर्माण होता है और माता-पिता के मानकों से विरोध होता है। बालक की नैतिक नियमावली समूह

की नैतिक नियमावली द्वारा निर्धारित होती है। उसके संप्रत्ययों का सामान्यीकरण हो जाता है, ईमानदारी के आदर्श उच्च हो जाते हैं व बालक की नैतिक नियमावली प्रौढ़ के समान हो जाती है।

इस आयु में परिवेश के माध्यम से जो मूल्य बालक ग्रहण करता है, आयु वृद्धि के साथ वे दृढ़ होते जाते हैं। इस अवस्था में बालक में उत्तरदायित्व का बोध होता है। **हाफमेन (1968)** ने कहा कि उत्तर बाल्यावस्था में बालक के नैतिक विकास में अधिक स्थिरता, संगतशीलता तथा सामान्यीकरण आता है। **केटल (1970)** के अनुसार - आयु विचलन के साथ नैतिक विकास का संरूप परिवर्तित होता रहता है। **रूबिन एवं सुचिन्दर (1973) तथा ली वोई (1974)** ने भी नैतिक निर्णय व नैतिक व्यवहार के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया।

अभिभावक बालकों से जिस प्रकार व्यवहार करते हैं, उनकी अभिवृत्तियां व व्यवहार का तरीका आदि, वे बालक में नैतिक विकास का प्रत्यय विकसित करते हैं। परिवार का मनोवैज्ञानिक वातावरण, पारिवारिक परिवेश बालक में नैतिक विकास को प्रभावित करते हैं।

वर्तमान बदलते हुये संदर्भ में नैतिकता व अनैतिकता के मध्य क्षीण पड़ती रेखा, बालक को एक स्पष्ट पृष्ठभूमि देने में असमर्थ है। फलस्वरूप बालक स्वयं को असमंजस की स्थिति में पाता है। मानव मूल्यों की क्षीण व धूमिल होती चेतना से समाज में नैतिक संकट उत्पन्न हो गया है, मानव अपनी समृद्ध नैतिक परंपरा से दूर हो गया है। नैतिक शिक्षा की प्रथम पाठशाला है, परिवार फिर समाज। नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिये, नैतिक मूल्यों को आत्मसात करना होगा, उन्हें आचरण में उतारना होगा और इसकी आधारशिला की नींव है - बालक की उत्तर बाल्यावस्था।

अपने इसी चिंतन को एक दिशा प्रदान करने हेतु शोधार्थी ने शोध का विषय **''बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन- उत्तर बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में ''** का चयन किया है।

नैतिकता

'नैतिक' शब्द का विकास नीति से हुआ है जिसका अर्थ है - 'व्यवहार का मान्य नियम।' 'नीति' शब्द का अभिप्राय है - ले जाने की क्रिया, चाल-चलन, शील, आचार और व्यवहार। यह शब्द नी + त्तिन से बना है।

'नीति' में 'इक' प्रत्यय लगने से नैतिक बना है। 'नैतिक' 'शब्द' 'मोरल' (अंग्रेजी का पर्याय) का विकास, लेटिन शब्द 'मोरेस' से व्युत्पन्न है, जिसका तात्पर्य है- आचरण, रीति-रिवाज आदि।

'नैतिकता' एक ऐसा शब्द है जो किसी समाज में, व्यवहार के सामान्यत: स्वीकृत सामाजिक नियम, आंतरिक नैतिक नियंत्रण, नैतिक स्वतंत्रता और नैतिक रचनात्मकता से संबंधित है। समाज को व्यवस्थित बनाये रखने के लिये प्रत्येक समाज अपने सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु कुछ ऐसे सिद्धांत व नियम बना देता है, जिसके अनुसार व्यवहार करने पर अपना तथा दूसरों का कल्याण हो, किसी को हानि न पहुंचे और सामाजिक व्यवस्थाएँ बनी रहें। इन रीतियों एवं नियमों के अनुसार व्यवहार करने का गुण ही 'नैतिकता' कहलाता है।

नैतिक व्यवहार एक ऐसा आचरण है, जो अंदर से अनुशासित होता है। नैतिकता का सामाजिक व्यवस्थाओं से अटूट सम्बन्ध होता है। बालक अपने विवेक, ज्ञान, अन्तर्रात्मा के आधार पर आंतरिक नैतिकता अपनाता है। नैतिकता के निर्माण के लिये बालक के मूल प्रवृयात्मक संवेग जितने सुसंगठित तथा नैतिक गुणों के स्थायी भाव जितने अधिक होंगे, उसका नैतिक चरित्र उतना ही सुदृढ़ होगा।

इस क्षेत्र में **हार्टशोर्न और मे (1930)** ने कई हजार बालकों का व्यापक अध्ययन किया और देखा कि नैतिकता प्रत्येक स्थिति को देखते हुये अपना एक विशिष्ट एवं स्पष्ट स्वरूप प्राप्त कर लेती है।

प्रो0 डेविड (1982) के शब्दों में - ''नैतिकता कर्त्तव्य की वह आंतरिक भावना है जिसमें उचित-अनुचित का विवरण निहित हो।''

मैकाइवर एवं पेज (1989) के अनुसार - ''वास्तविक रूप में नैतिकता, नियमों का वह समूह है जिसके द्वारा व्यक्ति का अंत:करण सत्य-असत्य का ज्ञान कराता है।''

इस संबंध में अन्य मनोवैज्ञानिकों Higgius (1991), Bentlea (1992), Etzioni (1993), Noddings (1994), Baxter (1995), Lapsley (1996), Solomon (1997) आदि ने भी बालक के नैतिक विकास संबंधी अध्ययन किये।

नैतिकता के नियम सामाजिकता के संदर्भ में ही क्रियान्वित होते है। नैतिकता एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग एक श्रेष्ठ जीवन-यापन का बोध कराने के लिये किया जाता है। पहली स्थिति में यह स्वीकृत सामाजिक नियमों की ओर संकेत करता है और दूसरी स्थिति में इससे व्यक्तिगत, नैतिक नियंत्रण, नैतिक स्वतंत्रता और नैतिक रचनात्मकता के उद्‌भव का संकेत मिलता है। इससे नैतिक व्यवहार के दो स्तर भी स्पष्ट होते हैं। सामाजिक नियम संहिता का अनुगमन और समर्थन बाह्य नैतिकता है और श्रेष्ठ जीवन का परिपालन आंतरिक नैतिकता है।

भारतीय विचारकों के अनुसार :- भारतीय नीतिशास्त्र में 'श्रीमद्‌भागवत गीता' ने एक सर्वांगपूर्ण नैतिक सिद्धांत उपस्थित किया है।

प्रो0 बैजनाथ शर्मा ने कहा है कि ''नैतिकता' की परिभाषा यह हो सकती है कि परहित की भावना से की गई सभी क्रियायें एवं कार्य नैतिक कहे जा सकते हैं।''

भूतपूर्व राष्ट्रपति **डॉ0 एस0 राधाकृष्णन** (1966) के शब्दों में - ''नैतिकता को व्यक्ति के बौद्धिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के विकास का आधार माना है। नैतिकता सदगुणों का समन्वय मात्र ही नहीं, वरन् एक व्यापक गुण है तथा इसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रियाकलापों पर होता है और साथ में व्यक्ति का व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है।''

महामना **मदनमोहन मालवीय** के अनुसार - ''नैतिकता, मनुष्य की उन्नति का आधार है।''

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के शब्दों में - ''बालकों का चरित्र निर्माण नैतिक शिक्षा से ही

संभव है और उसी के आधार पर राष्ट्र का विकास निर्माण हो सकता है।''

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार :- डॉ0 रिकमेन (1912) ने अपनी पुस्तक 'ईयर बुक ऑफ एजुकेशन' में ''नैतिकता व्यवहार के किसी स्तर के अनुसार व्यवहार करना नहीं है। यह हमारे मस्तिष्क में स्थापित अच्छे संबंधों की, जिन्हें हम सभी के व्यवहारों तथा कार्यों में देखते हैं, इस सब की अभिव्यक्ति है।''

कोहेलबर्ग (1968) ने "Child is moral philosopher" कहा है।

मनोवैज्ञानिक **रस्किनरस** ने माना है कि नैतिकता स्वतः मूल्यवान होती है। साथ ही **कॉन्ट** (1790) ने कहा कि शास्त्र नियमों के पालन में ही नैतिकता विद्यमान है और नैतिक प्रशिक्षण द्वारा पाश्विक स्वभाव को मानवीय स्वभाव में परिवर्तित कर अनुशासित करना नैतिकता है।

नैतिकता बालक के सर्वांगीण विकास का आधार होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिये समाज एवं बालक का विकास तथा अस्तित्व अन्योन्याश्रित है। बालक का विकास समाज के बिना नहीं हो सकता और समाज के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं। बालक समाजिक तभी बन सकता है, जब उसमें नैतिकता हो उसका व्यवहार नैतिक हो। नैतिकता का विकास समाजीकरण द्वारा होता है। जब बालक के कार्य व व्यवहार नैतिकता से जुड जाते हैं, तो उसकी समझ में प्रखरता तथा विश्वास में दृढ़ता आती है जिससे बालक को दिशा-निर्देश प्राप्त होता है और वह अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

अन्य मनोवैज्ञानिकों Shwelder (1990), Likana (1991) Sommers (1992), Noam (1993), Speicher (1994), Aksan (1995), Schaffer (1996), Murray (1997) आदि ने भी बालक के नैतिक विकास संबंधी अध्ययन किये।

बालक की नैतिकता का व्यवहार किसी स्तर विशेष पर निर्भर नहीं करता, बल्कि ये तो

बालक की बाल्यावस्था में डाले गये संस्कारों पर निर्भर करता है, जो उसकी क्रिया, व्यक्तित्व और व्यवहार करने से स्पष्ट होते हैं। ये व्यवहार और अभिव्यक्ति बालक के नैतिक स्रोतों पर निर्भर होती है। नैतिकता का प्रादुर्भाव सद्गुणों के अपार भण्डार में हुआ है तथा संस्कृति नैतिक मूल्यों का दर्पण है।

नैतिक विकास

नैतिक विकास से ताप्तर्य उस विकास से है, जिन्हें मानवीय व्यवहारों से संबंधित करने पर जीवन उज्जवल तथा उच्च बनता है एवं इन व्यवहारों को उस स्तर का बनाना जिस स्तर को संस्कृति ने मान्य किया है या जो हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं, परम्पराओं और आदर्शों के अनुकूल हों।

जेम्स हेस्टिंग्स के अनुसार :- ''नैतिक दर्शन की विषय वस्तु मानव आचरण एवं चरित्र है तथा मानव आचरण व चरित्र के निर्धारक तत्व नैतिक विकास है।''

नैतिक विकास एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण समूह है, जिसे बालक अपनी संस्कृति एवं समाज द्वारा प्राप्त संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से ग्रहण करता है और अपने उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं स्तर की प्राप्ति हेतु जीवन पद्धति का निर्माण करता है तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है। इसमें विचार, विश्वास, आस्था और मनोवृत्ति आदि समाहित होते हैं। नैतिक विकास एक ओर बालक के अंतःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं, वहीं दूसरी ओर उसकी संस्कृति, समाज, परंपराओं द्वारा परिपोषित व सिंचित होते हैं।

इस संबंध में अनेक मनोवैज्ञानिकों एवं शोध अध्ययनकर्त्ताओं Bryk (1988), Battistich (1989), Soloman (1990), Hoffman (1991), Madden (1992), Blasi (1993), Splicher (1994), Laupa & Turiel (1995), Spario (1996), Marvin (1997), Nancy Willard (1997) आदि ने भी अध्ययन किये हैं।

बालक में नैतिक विकास होने पर ही वह अपनी 'आत्म-चेतना' द्वारा भलाई-बुराई,

सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित में अंतर करने लगता है। नैतिक विकास बालक की संकल्पनात्मक क्रियाओं के मापदंड को निर्धारित करते हैं। बालक का नैतिक विकास उसके सामाजिक जीवन से संबंधित होता है। उसकी नैतिकता के लिये व्यवहारिक समरूपता का होना आवश्यक है, इसी के द्वारा उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास हो सकता है। सामाजिक एवं सामुदायिक भिन्नता और भिन्न मापदंडों के बाद भी मूल्यगत विशेषताएं बालक को नियंत्रित करती हैं। ये विशेषताएं नैतिक व्यवहार को विकसित करने से ही विकसित होती है।

नैतिक विकास प्रासंगिक रहते हैं, उनका औचित्य हमेशा बना रहता है। नैतिक मूल्य शाश्वत्, सर्वदेशिक, सर्वकालिक हैं। नैतिक विकास उचित व अनुचित का प्रमाण हैं, जो व्यक्ति के लिये उस संस्कृति द्वारा निर्धारित किये जाते हैं, जिसमें वह रहता है। नैतिक विकास वास्तव में हमारी संस्कृति और संस्कारों की चेतना है।

नैतिक विकास जो हमारे लक्ष्य हैं, इन्हें पाने के लिये बालक सामान्य मापदण्डों के अनुरूप व्यवहार करे, यह उसका नैतिक आचरण है। बालक में नैतिक विकास को विकसित करना, अस्तित्व और बोध को बचाने की प्रक्रिया है। अस्तित्व और नैतिक विकास के बोध का परिणाम समाज है। **हैगर्टी, मैरो, कारमाईकेल, हौलिंगवर्थ, ब्रेकर, बर्गसन, ब्रमेल्ड, हेनरी ब्राउडे, पीटर्स, बैगले, बाउडी, डुयूई, हार्न, नारमन कारेस्टर, बेविट, राबर्ट एच. हचिन्स** आदि ने भी नैतिक मूल्यों के संबंध में अपने पृथक-पृथक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये हैं।

नैतिक विकास आत्मगत है। नैतिकता और उसका विकास व्यक्ति के जागृत विवेक की सीमा पर निर्भर रहता है। इस संबंध में मनोवैज्ञानिक रूथ महोदय ने कहा है कि **''नैतिक विकास का वर्गीकरण एक जटिल प्रक्रिया है तथा साधारण रूप से जिसे हम उचित-अनुचित, सही-गलत, सत्य-असत्य में वर्गीकृत करते हैं, यह उतनी सहजता से वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।''**

नैतिक विकास शाश्वत् नियमों की स्वीकारोक्ति, संस्कार, शैली, सामाजिकता, आध्यात्मिकता आदि से निर्धारित होते हैं। नैतिक विकास के आधार में मानवीयता, दयालुता, आत्मपवित्रता, क्षमा एवं सत्यता जैसे महान आदर्शवादी गुण सम्मिलित हैं। नैतिक विकास सीमाओं में रहकर एक साथ विकास का प्रकाश पुँज बनाते हैं। नैतिक विकास बालक के सम्पूर्ण आचरण के निर्धारक माने जाते हैं और इनका बालक के समायोजन एवं व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

थॉमसन (1949) के अनुसार :- ''बालक के अंदर सामाजिक व नैतिक विकास होने के कारण, उसकी समझ में प्रखरता और विश्वास में दृढ़ता आ जाती है। नैतिक मूल्य बालक को सदैव सुन्दर आचरण के लिये प्रेरित करते हैं और लक्ष्य प्राप्ति हेतु व्यवहार का निर्धारण करते हैं। पूर्ण विकसित नैतिक धारणाएं बालक में सुरक्षा का भाव विकसित करती है। प्राय: सभी बालक अपने परिवार एवं समाज के नैतिक मूल्यों को ग्रहण कर उनके द्वारा निर्दिष्ट आचरण करते हैं।''

इन विचारों की पुष्टि **Killen (1990), Higgins (1991), Solomon (1992), Bersott & Miller (1993), Etzioni (1994), Berkowitz (1995), Watson, Battistich & Schaps (1996)** आदि अध्ययनकर्त्ताओं ने भी की है।

नैतिकता स्व: प्रेरित होती है। बौद्धिक क्षमताओं के विकास के साथ - साथ नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा विकसित होती जाती है। नैतिकता के निर्धारक तत्वों का निर्धारण दो तत्वों-प्रथम, बौद्धिक पक्ष- उचित एवं अनुचित का ज्ञान तथा द्वितीय, भावात्मक पक्ष-जीवन में सही का अनुपालन करना, से होता है।

नैतिक मूल्यों का विकास

नैतिक विकास न तो जैविक है और ना ही आर्थिक, बल्कि इस विकास की कसौटी मानव आनंद है। विवेक और नैतिक मूल्यों का विकास समाजीकरण की प्रक्रिया में तत्काल ही प्रारंभ हो जाता है। समाज के नैतिक आदर्श, सामाजिक संस्थाएं और परंपरायें इन तीनों का सामंजस्य करना ही

नैतिक जगत् नैतिक विकास है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि प्रतिरूपण की प्रक्रिया से पुरूस्कार और दंड का बोध होता है और बालकों को सही-गलत का बोध कराते हैं। यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है।

मैक्स वेबर (1982) के अनुसार - '' 'व्यक्ति के द्वारा की जाने वाली क्रिया का विकास अविवेकशील से विवेकशीलता की ओर हुआ है।'

अभिभावक और समाज बाह्य नैतिकता बालक को देते हैं और परिपक्वता प्राप्त करने के लिये बालक को मूल्यों का एक व्यवस्थित संकलन बनाने के लिये इन सिद्धातों को विश्लेषित कर स्वीकार करना पड़ता है। नैतिक विकास बालक के सर्वागीण सृजनात्मक व्यक्तित्व का प्रतिफलन होते हैं।

बालक में आत्मशक्ति, मानसिक दृढ़ता, कर्त्तव्यपरायणता तथा धर्मपरायणता, ज्ञान वृद्धि, अभ्यास, नैतिक उपदेश, अनुकरण, निर्देश, दण्ड और पुरस्कार, प्रशंसा और निंदा, आदर्श प्रोत्साहन, रूचियों का विकास, स्नेह आदि के द्वारा नैतिक विकास सतत् रूप से अनवरत चलता रहता है।

बालक में नैतिक विकास नैतिक ज्ञान, नैतिक सम्बोध, नैतिक तर्क एवं नैतिक व्यवहार की परस्पर अंर्तक्रिया द्वारा होता रहता है। नैतिक ज्ञान और नैतिक सम्बोध का विकास बालक के भीतर आयु और परिपक्वता के साथ होता है। इसके अभाव में बालक प्रयत्न व भूल द्वारा नैतिक व्यवहार संपादित करता है। बालक में नैतिक निर्णय व नैतिक व्यवहार में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। **रूबिन एवं स्चनीडर (1973) एवं लोवोई (1974), गॉडमैन, मेटलैंड एवं नॉटर्न (1978) तथा यॉट् एवं आर्बथनॉट (1978)** ने अपने अध्ययनों में देखा कि उच्च स्तरीय नैतिक विकास बालक में उच्च नैतिक व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

हेलेन (1981) के अनुसार - ''बालक के नैतिक विकास हेतु नैतिक व्यवहार (सामाजिक आचरण), नैतिक भावना (विवेक) ओर नैतिक निर्णय (संज्ञानात्मक तत्व) इन तीन पक्षों का उल्लेख

किया है।'' साथ ही अनेकों मनोवैज्ञानिक **स्किनर (1948), मावरर (1960), सीयर्स (1957), बण्डूरा एवं वॉल्टर्स (1963)** ने बालक के नैतिक विकास की पृथक-पृथक दृष्टिकोण से व्याख्या की है। इसी प्रकार पेस्टालोजी, जॉन हेनरी, जोहान, क्रेयडिक हरबार्ट आदि ने भी बालक के नैतिक विकास एवं निर्माण को परिष्कृत स्पष्ट और उन्मुख करना आवश्यक माना है।

नैतिक विकास से संबंधित अवधारणाएँ

नैतिकता तथा इसका विकास, जो कि शताब्दियों से एक दार्शनिक विचार बना हुआ है, मनोवैज्ञानिकों द्वारा लगभग पचास वर्षों से अध्ययन किये जाते रहे हैं। नैतिक विकास का संबंध उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा बालक उचित और अनुचित, अच्छे या बुरे सिद्धांतों में अंतर करने में समर्थ होते हैं। शोध का नैतिक मूल्यों के विकास में अधिकतर ध्यान नैतिक विवेक एवं नैतिक चरित्र के विकास में रहता है। वे सिद्धांत जिनसे बालक किस प्रकार सीखता है, नैतिक परिणाम, हावभाव, चालढाल बनते हैं और कैसे उसके स्तर को अपनाता है, यह सब नैतिक विवेक के अंतर्गत आते हैं। नैतिक चरित्र, परिस्थितिजन्य आवश्यकता, नीतिशास्त्र संबंधी गतिविधियों में वास्तविक व्यवहार दर्शाता है। प्रथम ज्ञान एवं विवेक संबंधी निर्णय प्रक्रिया को अपनाता है जबकि दूसरा असामान्य या विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

(1) **आचरण पर बल देने वाली अवधारणा :-** यह धारणा मनोवैज्ञानिक **हल (1985)** के सिद्धांतों से प्रभावित है। इनके अनुसार नैतिक विकास अधिगम की अनुकूलन प्रक्रिया के माध्यम से होता है। दण्ड और पुरस्कार के माध्यम से निर्मित अंतःकरण उन सभी परिस्थितियों में भी क्रियाशील होगा, जहां दंड व पुरस्कार की संभावना नहीं है, परन्तु **हार्टशोर्न तथा मे (1927), सीयर्स (1957), राव, आलपोर्ट (1966)** आदि के अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि अधिगम के अनुकूलन सिद्धांत के आधार पर बालक के नैतिक आचरण के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, हालांकि नैतिक मूल्य अधिमग द्वारा अर्जित किये जाते हैं।

(2) **कर्त्तव्य अधिगम सिद्धांत पर आधारित अवधारणा :-** कर्त्तव्य उन आदर्शों व मूल्यों के संस्थान को कहते हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करके दिशा प्रदान करते हैं। बालक उन व्यक्तियों से तादात्म्य स्थापित करता है जिन्हें वह प्यार करता है, आदर्श व महत्वपूर्ण समझता है, इन आदर्शों और नैतिक मूल्यों को बालक आत्मसात् करता है और उसका अंतःकरण दृढ़ होता है। **हैविंग्हर्स्ट (1960)** नैतिकता को व्यक्तित्व के विशेष गुणों के रूप में लेते हैं, जैसे नैतिक स्थायित्व, अहम् शक्ति, पराहम् शक्ति, स्वतः प्रवृति, मित्रता, शत्रुता, दोषभाव ग्रंथि आदि। **हरलॉक (1972)** ने नैतिक व्यवहार के अधिगम पर बल दिया है। साथ ही **मेहता (1984)** ने ज्ञात किया कि बालक नैतिक मूल्यों को सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण द्वारा सीख सकता है।

(3) **मनोविश्लेषण सिद्धांत पर आधारित अवधारणा :-** इस धारणा के अनुसार चरित्र व नैतिक व्यवहार का विकास माता-पिता से तादात्म्य व आज्ञाओं के आंतरीकरण के माध्यम से उत्पन्न परम् अहम व विवेक के विकास के कारण होता है। इस धारणा के प्रतिपादक **फ्रॉयड (1923)** हैं। मनोवैज्ञानिकों ने नैतिकता और मनोविज्ञान के संबंधों को गहराई से विश्लेषण करने के लिये एक और मानव मन की प्रक्रियाओं का गहराई से विशलेषण किया, वहीं दूसरी ओर मानसिक प्रक्रियाओं की दृष्टि से नैतिक अवस्थाओं को स्पष्ट किया।

(4) **विकासात्मक उपागम पर आधारित बौद्धिक या निर्णयात्मक अवधारणा (संज्ञान विकासात्मक सिद्धांत)**

1. प्याजे (1965) द्वारा प्रतिपादित नैतिक विकास का सिद्धांत

प्याजे (1965) ने नैतिकता को बालकों के सामाजिक नियम, समानता एवं लोगों के प्रति न्याय की भावना के रूप में देखा। इन्होंने पाया कि बालक जिस सामाजिक वातावरण में रहता है, उसके नैतिक नियमों को वह अपने नैतिक अनुभवों पर लागू करता है। इस प्रक्रिया के

माध्यम से बालक में बाह्य समाजिक नियम, आंतरिक सिद्धांतों के रूप में परिणित होते हैं।

यह नैतिकता के दो स्वरूप 'परंपरागत' एवं तार्किक को मानते हैं। इनके अनुसार बालक अपने नैतिक विकास में चार अवस्थाओं से गुजरता है-

(अ) अनोमी - जन्म से 4 वर्ष : जहां नैतिक विकास की आधारशिला का निर्माण होता है।

(ब) परायत्तता : अधिकार - 4 से 8 वर्ष : अपरिपक्व नैतिकता जिसमें बालक बाह्य सत्ता से नियंत्रित होता है और उसमें आदर, आज्ञाकारिता, कर्त्तव्य संबंधी नैतिकता का विकास होता है।

(स) परायत्तता : अन्योन्यता - 9 से 13 वर्ष : जिसमें बालक में पारस्परिक सहयोग, आदर भावना, न्यायप्रियता, ईमानदारी की नैतिकता का विकास होता है। यह आयु नैतिक विकास व नैतिक निर्णय के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक में विवेक का उद्गम होता है। बालक पुरस्कार और दंड से ऊपर उठकर सामाजिक स्वीकृति ओर अस्वीकृति के स्तर पर पहुंच जाता है। बालक इस विश्वास की प्रेरणा से व्यवहार करता है कि व्यक्ति का आचरण इस प्रकार नियंत्रित होना चाहिये जिसमें न्याय एक पक्षीय न होकर पारस्परिक हो। समूह के साथ अनुरूपता अब अनिवार्यता का स्वरूप ग्रहण कर लेती है क्योंकि बालक को सामाजिक अकेलेपन का भय सताने लगता है।

(द) स्वायत्तता - किशोरवय 13 से 18 वर्ष : इसमें नैतिकता आत्म निर्धारित होती है। उत्तर बाल्यावस्था का बालक अमूर्त चिंतन करने लगता है, जो उसे नैतिकता के सिद्धांतों को समझने में सहायता करता है, परन्तु उसकी नैतिकता का चुनाव व नैतिक संस्थान का विकास वयस्कों की अपेक्षा भिन्न होता है, उसकी नैतिकता विषय संबंधित होती है।

लॉरेन्स कोलबर्ग (1974) ने नैतिकता के तर्क को **प्याजे (1965)** के संज्ञानात्मक सिद्धांत से जोडने का प्रयास किया है, क्योंकि बौद्धिक क्षमता ही उसे नैतिक मुद्दों पर सतत् विचार

करने की योग्यता प्रदान करती हैं तथा नैतिकता की उच्च अवस्था में पहुंचने के लिये अमूर्त चिंतन क्षमता की आवश्यकता होती है।

2. कोलबर्ग (1974) का नैतिक विकास का चरण सिद्धांत

कॉलबर्ग लॉरेन्स (1974) ने नैतिक विकास की अवस्थाओं से अधिक विकसित सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने **प्याजे (1965)** द्वारा बताई गई अवस्थाओं को और आगे बढाया तथा उनका विकास किया। इनके द्वारा बालकों को प्रस्तुत नैतिक उलझनों के उत्तरों द्वारा की गई जांच के परिणाम, नैतिक विकास की संपूर्ण अवस्था की व्यवस्थापन के रूप में लाया गया। कोलबर्ग अपने नैतिक विकास के तीन स्तर मानते हैं:-

(अ) प्रथम स्तर- 'पूर्व परंपरागत और पूर्व नैतिक स्तर': इस स्तर में बालक अपने मूल्यों का आंतरीकरण नहीं करता है। इसकी नैतिकता पूरूस्कार या दंड या वातावरण से निर्मित होती है।

क. प्रथम चरण - 'आज्ञाकारिता और दण्डोन्मुखता अथवा विषम नैतिकता': इस अवस्था में किसी कार्य की शारीरिक प्रतिक्रिया अच्छाईयाँ बुराईयों को निर्धारित करती है।

ख. द्वितीय चरण - 'निश्छल अहम् भावना (अहंकारी स्तर)': इसमें बालक स्व को सब कुछ मानते हुये भी स्वीकार करता है कि दूसरों के भी अधिकार हैं। इसमें बालक मानता है कि जो उसकी आवश्यकता की पूर्ति करे वही नैतिकता है।

(ब) द्वितीय स्तर - 'परंपरागत स्तर (भूमिका पुष्टिकरण)': इसमें बालक नैतिक मूल्यों का आंतरीकरण पूरी तरह नहीं करता। वह व्यवस्था (माता-पिता, समाज की) को स्वीकार करता है।

ग. तृतीय चरण - 'अंतर्वैयक्तिक संबंध': अच्छे बालक-बालिका अभिकेन्द्रण यह नैतिकता का स्वर्ण अवसर है। बालक ठीक व्यवहार कर अनुमोदन प्राप्त करता है, तथा दूसरों के दृष्टिकोण प्राप्त कर नैतिक व्यवहार करता है।

घ. चतुर्थ चरण - 'सामाजिक अवस्था और अंतःकरण': इसमें बालक में व्यवस्था के प्रति

श्रद्धा उत्पन्न होती है। वह समाज के सही और गलत का पता लगता है। वह कानून और व्यवस्था को नैतिकता का सार मानता है।

(स) तृतीय स्तर - 'उत्तर परंपरा स्तर (स्वस्वीकृत नैतिक सिद्धांत)': इसमें बालक पूरी तरह नैतिकता का आंतरीकरण कर देता है। उसके स्व द्वारा चयनित सिद्धांत और मूल्य होते हैं।

ड़. पॉचवा चरण- 'सामाजिक चरण-सामाजिक संविदा, उपयोगिता और वैयक्तिक अधिकार।

च. षष्ठ् चरण - 'सार्वभौम नैतिक सिद्धांत': इसमें बालक का अंत:करण पूर्णत: जाग्रत हो जाता है।

इसी प्रकार **कोहेलबर्ग (1968)** ने माना है कि नैतिक व्यवस्था का आधार 'न्याय का सिद्धांत' है।

सामाजिक अधिगम सिद्धांत :- बंडूरा एवं वाल्टर्स (1963) के अनुसार - ''सामाजिक क्रियाओं, समाजीकरण तथा व्यक्तिगत सिद्धांतों के विकास हेतु 'सामाजिक व्यवहार उपागम' प्रतिपादित किया। इन्होंने बताया कि सामाजिक 'एजेन्ट्स' के प्रदर्शन से नैतिक विकास तथा निर्णय स्पष्टत: समझा जा सकता है। इनके अनुसार अनुकूल नमूना भिन्न-भिन्न स्थितियों में नैतिक व्यवहार में अनुकूलता प्रदर्शित करता है।'' अनेकों मनोवैज्ञानिकों **स्किनर (1933), सीयर्स (1957), मावरर (1960), वाल्टर्स (1963)** आदि के सिद्धांत सामाजिक अधिगम सिद्धांत हैं।

मार्टिन हाफमैन (1968) का नैतिक विकास का धारा सिद्धांत (परहितवाद का सिद्धांत) के अंतर्गत बाल्यावस्था में नैतिक मूल्यों के विकास में अधिकाधिक स्थिरता, संगतशीलता तथा सामान्यीकरण आता है।

मनोवैज्ञानिक बोरापस स्मिथ की पुस्तक **'ग्रोइंग माइन्ड्स'** में नैतिक विकास की प्रथम अवस्था- विनयशीलता व आज्ञाकारिता की है। द्वितीय अवस्था मानवीय आचरण नियंत्रण के नैतिकता संबंधी नियम एवं तीसरी अवस्था व्यक्तिगत समायोजन है।

बीट्रिस स्वैनसन (1958) के अनुसार :- ''नैतिक विकास, अपने लिये ईमानदार होने और दूसरों की नैतिकता के बीच रचनात्मक तनाव होने के कारण सम्भव होता है, जिसमें प्रारंभ में आंतरिक प्रेरणा, आत्मकेन्द्रित होती है व उत्तर बाल्यावस्था में यह प्रेरणा शिक्षकों द्वारा प्राप्त होती है। इस अवस्था में नैतिकता के निर्धारण में साथियों की सत्ता प्रभावशाली कारक मानी जाती है।''

गैसेल (1956) के शब्दों में - ''नैतिकता, बालकों द्वारा नियमों की मान्यता, उसकी स्वार्थपरता और परहित कामना के बीच तनाव के कारण उद्भूत होती है।''

दुर्खीम (1961) के अनुसार - ''नैतिकता की संरचना तीन तत्वों- अनुशासन, संयोजन व स्वायत्तता से होती है।''

हैविंग्हर्स्ट और बाटावा (1962) के अनुसार - ''नैतिकता का विकास व्यक्तिगत बनावट और समायोजक के प्रारूप के संयोगों से संभव होता है।''

मैक्डूगल ने नैतिक विकास की चार अवस्थायें बताई हैं, जिनमें मूल प्रवृत्यात्म व्यवहार का स्तर, पुस्स्कार और दंड का स्तर, सामाजिक स्वीकृति का स्तर तथा परहित कामना व सामाजिक प्रेम का स्तर है।

इसके अतिरिक्त नैतिक विकास की चार अवस्थायें बनाई गई जिनमें -

(1) वर्जन अवस्था (टोटम अवस्था) - निषेध की नैतिकता

(2) वैध अवस्था (लीगल स्टेज) - इसमें हम्मूरबी, मोसेज और सोलन ने नैतिकता हेतु आचरण संहिता को माना।

(3) व्युत्क्रम अवस्था (रेसीप्रोकल स्टेज)- आचरण नियंत्रण की नैतिकता।

(4) सामाजिक अवस्था - राइसमेन, पेक और हैविंग्हर्स्ट ने कहा कि नैतिकता सामाजिक स्वीकृति या अस्वीकृति अर्थात् लोकमत द्वारा नियंत्रित होती है।

नैतिक विकास के चरण

(1) निर्नैतिक चरण-शिशु अवस्था के बालक का व्यवहार सुखवाद से प्रेरित होता है।

(2) पूर्वनैतिक चरण - दंड, आज्ञापालन उन्मुख चरण व सावधान नैतिकता।

(3) पूर्व रूढ़िगत, सहज, नैमित्तिक सुखवाद - 4 से 5 वर्ष में सत्तावादी चरण।

(4) नैमित्तिक, सापेक्षी अभिविन्यास - 7 से 8 वर्ष में अंहकेन्द्रित नैतिकता समाप्ति व समूहोन्मुख नैतिकता का प्रारंभ व बालक में अंतर्विवेक का उदय।

गैसेल (1956) इसे सामाजिक-संदर्भ चक्र कहते हैं। नैतिक निर्णय व नैतिकता का संप्रत्यय बालक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से प्राप्त करता है। इस चरण में परंपरागत भूमिका, अनुपालन, व्यवहारिक एवं पारस्परिक नैतिकता, परस्पर आदर आधारित शीलाचार, नैतिक विकास की विशेष अवस्थाएँ होती है। बालक का आंतरिक आत्म नियंत्रण बाहर से थोपे गये अनुशासन का स्थान लेने लगता है।

(5) कानून व्यवस्था अभिविन्यास - 11 से 12 वर्ष बालक का पराहम् विकसित हो जाता है, इसे अयुक्तिक अंर्तचेतना का चरण कहते हैं, क्योंकि बालक की अपनी चेतना या नैतिकता के संप्रत्यय उसके व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। बालक में कर्त्तव्यबोध एवं दायित्वबोध की भावना विकसित होती है।

(6) परंपरोत्तर, सामाजिक अनुंबध, स्वायत्तापरक अभिविन्यास - 14 से 15 वर्ष की आयु तक समीक्षात्मक चिंतन, तर्क संगत विवेचना, विस्तीर्ण सामाजिक अनुभव आदि नैतिक संप्रत्ययों और अनुशास्तियों के पुर्नमूल्यांकन में योगदान देते हैं।

(7) सर्वव्यापी नैतिक सिद्धांतीय अभिविन्यास - 16 से 18 वर्ष, तर्कसंगत, परहितवादी चरण बालक नैतिक निर्णय आत्मपरक् होते हैं वह नैतिक सिद्धांतों को स्वयं चुनता है।

अनेकों मनोवैज्ञानिक एवं अध्यनकर्त्ताओं कार्टर्स (1927), रीबैक (1927), वाशबर्न (1931), एसडेल (1932), मालर (1934), मैकगाउन (1935), लरनर (1937), सेन्डीफोर्ड (1938), स्वेनसन

(1949), जोन्स (1954), थोरपे (1955), सीयर्स, मैक्कॉबी, लेविन (1957), ग्लुक और ग्लुक (1957), आइजैंक (1959), डुरकिन (1959), डाउवान (1960), मार्टिन (1960), पैक एवं हैविंगहर्स्ट (1960), ब्रानफ्रेनब्रेनर (1961), ऐरोनफ्रीड (1961 एवं 1964), ग्राइन्डर (1962), लॉवेल (1963), बंडुरा और वाल्टर्स (1963), मोरर (1963), बंडुरा, रॉस एवं रॉस (1963),बेकनब्रिज और विन्सेन्ट (1966), सीयर्स, राव, अलपोर्ट (1966), मन (1967) लॉवेल (1972), आदि ने भी बालक के नैतिक विकास पर अध्ययन किये हैं।

इस प्रकार विभिन्न अवधारणाओं एवं सिद्धांतों द्वारा यह ज्ञात होता है कि नैतिक विकास एक जटिल प्रकिया है, जिसमें सम्पूर्ण व्यक्तित्व का योगदान होता है तथा बालक के समायोजन को प्रभावित करने वाले सभी कारक पारस्परिक रूप से इसका निर्धारण करते हैं। आरंभिक अवस्था में नैतिक विकास अधिकतर अनुकूलन प्रकिया के माध्यम से होता है, उसमें सामान्यीकरण का अभाव होता है। बाद में नैतिक विकास पर बालक के अन्य व्यक्तियों से पारस्परिक संबंध तथा तादात्म्य का प्रभाव पड़ता है और अंत में नैतिक विकास का आधार पूर्णत: व्यक्तिगत होता है। अत: प्रारम्भ में नैतिक विकास अनुकूलन फिर प्रयत्न-भूल और अंत में अंतर्दृष्टि से अधिक प्रभावित होता है।

उत्तर बाल्यावस्था में बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

जिस प्रकार एक बालक का सर्वागीण विकास, विभिन्न आयामों पर निर्भर है और अनेकों कारक उसके विकास को प्रभावित करने के लिये उत्तरदायी रहते हैं, उसी प्रकार एक बालक के नैतिक विकास को भी अनेकों कारक प्रभावित करते हैं, जो उसके नैतिक विकास को प्रभावी सहायता प्रदान करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

भौतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के समायोजन के लिए अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है, इसे अच्छा रखने के लिए मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की उत्पत्ति हुई। इसका आविष्कार डब्लयू क्लिफर्ड बियर्स (W. Clifford Bears) ने किया उन्होने व्यक्तित्व सम्बन्धी विकारों के निवारण तथा उनके प्रभावों से बचने के लिए कुछ नियम बनाए, इसका परिणाम यह हुआ कि 1908 में मानसिक स्वास्थ्य समिति (Association of Mental Health) की स्थापना हुई। तत्पश्चात् एक राष्ट्रीय परिषद का गठन हुआ। आज प्रत्येक देश में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का प्रयोग हो रहा है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ :– इस विज्ञान के अर्न्तगत उन प्रमाणों का अध्ययन किया जाता है, जिनके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का संतुलित विकास किया जाता है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्र्कषों से जीवन को सरल तथा कठिन दोनों प्रकार की परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करने में सहयोग प्राप्त होता है।

इस विज्ञान मे मुख्यत: तीन कार्य शामिल होते हैं :-

1 मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा

2 मानसिक रोगों की रोकधाम

3 मानसिक रोगों का प्रारम्भिक उपचार

मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिय यह आवश्यक है कि ऐसे नियमों की खोज की जाए, जिनके द्वारा मन स्वस्थ रह सके। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि मानसिक रोगों की रोकथाम के प्रयास किए जायें। यदि मानसिक रोगों की उत्पत्ति-काल में ही उनका यथोचित उपचार शुरू होता है तो व्यक्ति को गम्भीर मानसिक अस्वस्थता का सामना नही करना पडता। इस दृष्टि से इसे दो भागों में बांटा जा सकता है।

(1) विधेयात्मक

(2) निषेधात्मक

विधेयात्मक पहलू वह कहलाता है, जिसके अर्न्तगत उन नियमों तथा परिस्थितियों को उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है, जिनके द्वारा व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास होता है। इस सन्तुलन से ही व्यक्ति जीवन को सरल तथा जटिल परिस्थितियों से समायोजित करता है तथा इसके लिए जरूरी है, व्यक्ति का मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहना।

निषेधात्मक पहलू वह पहलू कहलाता है, जिसमें व्यक्ति उन परिस्थितियों से बचने का प्रयास करता है जो उसके जीवन के लिए घातक होती हैं। ऐसी परिस्थितियाँ जो मानसिक संघर्ष, भावना ग्रन्थियाँ तथा समायोजन दोष उत्पन्न करती है। अर्थात् मानसिक रोगों की रोकथाम तथा उनका उपचार आवश्यक होता है।

अतएव कहा जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करने, उसे मानसिक रोगों से मुक्त करने तथा यदि व्यक्ति मानसिक रोगों या समायोजन दोष से पीड़ित होना आरम्भ हो जाता है, तो उसके कारणों का यथोचित पता लगाकर उसका उपचार करना मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान कहलाता है।

विलियम जे० ई० वैलिन के अनुसार :- ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान कहलाता है जिसमें व्यक्ति तथा समाज के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं विकास हो सके। साधारणतया: तथा गम्भीर मानसिक रोगों एवं दोषों तथा मानसिक शैक्षिक और सामाजिक समायोजन दोषों की रोकधाम तथा उपचार हो सके।''

वैब्सटर शब्दकोश के अनुसार :- ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसके द्वारा हम मानसिक स्वास्थ्य को स्थिर रखते हैं तथा पागलपन और स्नायु सम्बन्धी रोगों को पनपने से रोकते हैं। साधारण स्वास्थ्य-विज्ञान में केवल शारीरिक - स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाता है, किन्तु मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य के साथ शारीरिक स्वास्थ्य को भी सम्मिलित किया

जाता है, क्योकि बिना शारीरिक स्वास्थ्य के मानसिक स्वास्थ्य सम्भव नहीं हो सकता।''

क्रो तथा क्रो के अनुसार :- ''मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान एक विज्ञान है जो मानव कल्याण के लिए है और वह मानवीय सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।''

हैडफील्ड के अनुसार :- ''मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान का सम्बन्ध मानसिक स्वास्थ्य के सरंक्षण तथा मानसिक रोगों के निराकरण से मानते हैं।''

जे0 एफ0 शेफर के अनुसार :- ''Mental hygine has implication for all persons. In the broadest sense, the aim of mental hygine is to assist every individual in the attainment of a fuller happier, more harmoniaus and more effective existence".

एच0 आर0 भाटिया के अनुसार :- ''Mental hygine is the science and art avoiding mental illness and maladjustments and is doing so it inevitably drown in to determination of causes".

तात्पर्य यह है, कि वही मन स्वस्थ कहा जा सकता है, जो मानसिक संघर्षो और भावना-ग्रन्थियों से मुक्त हो। व्यक्ति अपनी क्षमताओं के अनुरूप संतुष्ट रूप में जीवन की वास्तविकता को स्वीकार कर समाज से समायोजन स्थापित करे। जिस प्रकार स्वस्थ शरीर की पहचान नाड़ी, हृदय और रक्त प्रवाह की नियमित गति से होती है उसी प्रकार स्वस्थ मन की पहचान 'अन्त:' और 'बाह्यय' समायोजन से होती है। जहाँ प्राकृतिक इच्छाएँ और सामाजिक आदर्शो में कोई विरोध न हो, न दो विरोधी इच्छाओं में संघर्ष ही हो, यदि संघर्ष का कोई अवसर आए तो मन उसका सामना करने के लिए सशक्त रहे और किसी प्रकार की उलझनों में न फँसे, वही मन स्वस्थ मन कहलाता है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के उद्देश्य :- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के लिए मनोवैज्ञानिकों

ने निम्नानुसार उद्देश्य तय किए हैं।

(1) मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की रक्षा और मानसिक रोगों का निराकरण करना।

(2) मानसिक रोगों या असमायोजन दोषों की रोकथाम करना।

(3) मानसिक रोगों और व्यवहार सम्बन्धी दोषों का प्रारम्भिक उपचार।

(4) लोगों की प्राकृतिक इच्छाओं को सन्तुष्ट करने के लिए अच्छी परिस्थितियाँ उत्पन्न करना।

(5) अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में ऐसे विचारों को उत्पन्न करना जिनसे कि 'विश्व शान्ति' स्थापित हो।

(6) बाल जीवन में समायोजन कर उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता देना।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ :- हैडफील्ड् के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण तीन तत्व होते है, जो निम्न हैं -

(1) हमारी जन्मजात एवं अर्जित क्षमताओं की पूर्ण अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त हो।

(2) वे परस्पर सन्तुलित बनी रहें।

(3) वे किसी सामान्य उद्देश्य की ओर प्रेरित हो।

(1) **पूर्ण अभिव्यक्ति :-** व्यक्ति जब शिशु के रूप में इस व्यापक संसार में प्रवेश करता है तो वह कुछ क्षमताओं जिन्हे मैक्ड्गल मूल प्रवृत्तियाँ कहते हैं, को लेकर आता है और कुछ जीवन काल में वातावरण से अर्जित करता रहता है। मानसिक स्वास्थ्य के लिये यह आवश्यक है कि उनका दमन न हो, बल्कि उन्हे अभिव्यक्ति के लिये अवसर प्राप्त हो।

(2) **सन्तुलन :-** मानसिक स्वास्थ्य के लिये दूसरी आवश्यक बात मानसिक सन्तुलन है। इससे व्यक्ति की क्षमताओं प्रवृत्तियों, इच्छाओं तथा संवेगों की क्रियाशीलता में परस्पर सन्तुलन बना रहता है। इससे 'मानसिक-सघर्ष' उत्पन्न हो जाते है, जो व्यक्ति में 'भावना-ग्रन्थियों' को जन्म देकर उसमें मनोविकार पैदा करते हैं।

(3) **व्यापक उद्देश्य :-** विभिन्न क्षमताओं, प्रवृतियों, इच्छाओं और संवेगों में सन्तुलन

तथा समन्वय तभी सम्भव है, जब व्यक्ति के समक्ष व्यापक उद्देश्य तथा आदर्श हों। ये उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से निर्धारित किए जाने चाहिए।

हैडफील्ड के अनुसार :- ''मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से जीवन के उर्पयुक्त उद्देश्य वे है जिनकी सिद्धि से व्यक्ति को महान आत्म-सन्तोष, पूर्णता एवं सुख की प्राप्ति होती है।''

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से होता है। उसी व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ समझा जा सकता है। जो शैक्षिक, व्यवसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक इत्यादि विभिन्न परिस्थितियों से स्वंय को समायोजित करता है।

हैडफील्ड के शब्दों में :- ''सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्ण एवं सन्तुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ कहते हैं।''

मानसिक स्वास्थ्य से सम्पन्न व्यक्ति के प्रमुख लक्षण

(1) ऐसे व्यक्ति जिसे अपनी क्षमताओं तथा कमियों का ज्ञान हो तथा वह समायोजन सम्बन्धी समस्याओं के प्रति अन्तदृष्टि रखता है।

(2) वह नवीन सामाजिक परिस्थितियों से शीघ्र ही समायोजन स्थापित कर ले।

(3) उसके व्यक्तित्व का संन्तुलित एवं सर्वागींण विकास हो।

(4) उसे अपने व्यवसाय में अत्यधिक सन्तोष प्राप्त होता हो।

(5) वह अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को सदैव सामाजिक मान्यताओं की सीमा में रखता हो।

(6) वह वांछनीय संवेगों का उपयुक्त समय में अनुभव करता हो।

(7) वह संवेगात्मक जीवन में मानसिक संघर्षो तथा भावना ग्रन्थियों से विमुक्त हो।

(8) ऐसी आदतें जो समाज हित में हो।

(9) वह जीवन के प्रति 'स्वस्थ अभिवृति' रखता हो।

(10) वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करे।

मानसिक अवस्थता के कारण :– मानसिक अस्वस्थता के कई कारण होते है लेकिन प्रमुख कारण पँच होते है, जिनसे व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है ये है -

(1) अनुवांशिकता

(2) सामाजिक अवस्था

(3) आर्थिक अवस्था

(4) शरीरिक अवस्था

(5) संवेगात्मक अवस्था

अनुवांशिक अवस्था :– वहुत से बालकों में मानसिक अस्वस्थता का कारण पैतृक दोष होता है। ऐसा बालक बचपन से ही झक्की और आवेगी होते हैं।

सामाजिक अवस्था :– प्रत्येक बालक में आत्म-गौरव की प्रवृत्ति होती है। वह अपने साथियों में ऊँचा स्थान प्राप्त करना चाहता है। जब वह ऐसा नहीं कर पाता तो उसमें हीन ग्रन्थि पनपने लगती है। उसका मन खिन्न तथा दुःखी होने लगता है।

आर्थिक अवस्था :– जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती वे अपने बच्चों को अच्छे-अच्छे खिलौने तथा अच्छे अच्छे कपड़े लाकर नही दे पाते। ऐसी अवस्था में बालक जब अपनी तुलना सम्पन्न परिवार के बालकों से करता है तो उसका हृदय दुःखी होता है और उसमें आत्म दैन्य की प्रवृत्ति घर कर जाती है।

शारीरिक अवस्था :– शरीर और मन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो बालक शरीरिक रूप से अस्वस्थ रहता है, उसका मन भी अस्वस्थ होता है। ऐसा अस्वस्थ बालक जब स्वस्थ बालक को खेलते हुए देखता है तो उसके हृदय में ग्लानि-भाव उत्पन्न होने लगते हैं।

संवेगात्मक अवस्था :– संवेग भी मानसिक अवस्था को प्रभावित करते हैं। जिन बालकों के संवेगों का समुचित विकास हुआ है, वे स्वस्थ रहते हैं। संवेग ही मानसिक स्वास्थ्य का माप है।

मानसिक स्वास्थ्य के नियम :– संवेंगों का सम्बन्ध मूल-प्रवृत्तियों से है। इस दृष्टि से सवेगो के समुचित विकास का अर्थ हुआ, मूल-प्रवृत्यिों का उन्यन-परिमार्जन।

मैक्डूगल ने मूल-प्रवृत्तियों की सख्या 14 मानी है। इन्हे तीन भागों में विभक्त किया गया है।

(1) आत्मरक्षा सम्बन्धी :- इसमें भूख, भागने, और लड़ने की मूल प्रवृत्तियाँ आती है।

(2) सामाजिक जीवन सम्बन्धी :- इसमें सामूहिकता, आत्म- गौरव, आत्म-लघुता और रचना की मूल प्रवृत्तियाँ आती है।

(3) जाति रक्षा सम्बन्धी :- इस भाग में काम (Sex) तथा शिशु रक्षा सम्बन्धी प्रवृत्तियों को रखा जाता है।

बाल मन को स्वस्थ रखने के लिये इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(1) बालकों की मूल - प्रवृत्तियों का दमन न करना।

(2) बालकों की मूल - प्रवृत्तियों का उन्नयन-परिमार्जन करना।

बालकों की मूल - प्रवृत्तियों का दमन करने से उनके मन में एक भावना-ग्रन्थि बन जाती है। मनौवैज्ञानिक मन को दो भागों में बाँटते हैं-

1. ज्ञात या चेतन
2. अज्ञात या अचेतन

चेतन मन, मन का बाहरी भाग कहलाता है और अचेतन मन, मन का आन्तरिक भाग। फ्रायड ने मन की तुलना समुद्र में तैरते वर्फ के टुकड़े से की है। जिस प्रकार समुद्र में तैरता बर्फ के टुकड़े का केवल ऊपरी दसवां भाग दिखाई देता है, उसी प्रकार मन का दसवां भाग ही चेतन

कहलाता है। जब मनुष्य मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शिकार होता है तब उसके अचेतन मन का कुछ भाग चेतन में आ जाता है।

बालक के मन में कई इच्छाँए व कामनाएँ होती है। यह आवश्यक नहीं कि वे सब की सब पूरी हो जाऐं। इस कारण उसके मन में विकृति उत्पन्न हो जाती है, उसके मन में चोरी की भावना आती है, किन्तु नैतिकता के कारण वह ऐसा नहीं कर पाता। इस कारण उसकी यह भावना अचेतन मन में चली जाती है। बार-बार यह चेतन मन में आने का प्रयास करती है, लेकिन उसकी नैतिक भावना चेतन तथा अचेतन मन के बीच बैठ जाती है। फ्रायड इसे प्रतिरोधन (Censor) कहते है।

बालक की जो अतृप्त इच्छाएँ अचेतन मन में दबी रहती है, वह भावना-ग्रन्थि कहलाती है। जब बालक की अतृप्त इच्छा चेतन मन में नहीं आ जाती तो उसके चेतन और अचेतन मन में संघर्ष चलता रहता है जो अन्तर्द्वन्द्व कहलाता है। इस प्रकार दमन से बनने वाली भावनाा ग्रन्थियाँ मानसिक रोग के कीटाणु होते है। जिस व्यक्ति में जितनी नैतिक शक्ति होती है वह इन ग्रन्थियों पर उतनी ही विजय प्राप्त कर सकता है, यही मानसिक स्वास्थ्य कहलाता है।

पी0 वी0 यंग के अनुसार :- ''मानसिक रूप से स्वस्थ तथा अस्वस्थ व्यक्ति में केवल इतना ही अन्तर है कि पहला भावना-ग्रन्थियों से युद्ध करना जानता है तथा दूसरे में इतनी क्षमता नहीं होती।''

बालकों की मूल-प्रवृत्तियों का उन्नयन-परिमार्जन से मूल :- प्रवृत्तियाँ शान्त हो जाती है तथा परिशोधित रूप लेने के कारण समाज उसकी आलोचना नहीं करता। यह तो सृष्टि का नियम है कि मूल-प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति रोकी नहीं जा सकती। वह किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त हो ही जाएगी। यदि किसी बालक में लड़ने की प्रवृत्ति सबल है तो वहाँ वह दूसरे बालक का सिर फोड़ सकता है, वहीं वह चोरी का खिलाड़ी या वीर सैनिक भी बन सकता है। यदि उसकी आत्म-गौरव की प्रवृत्ति सशक्त है, तो उसकी सन्तुष्ठि दूसरों पर रौब डालने के रूप में भी हो सकती है, और

परोपकार के रूप में भी।

बालकों में मानसिक अस्वस्थता के कारण :- बालकों में मानसिक अस्वस्थता के कई कारण होते हैं। मुख्य कारण वातावरण का उपयुक्त न होना ही होता है। इन्हें हम तीन भागों में बाँट सकते हैं-

(1) परिवारिक कारण

(2) समाज से सम्बन्धित कारण

(3) विद्यालय से सम्बन्धित कारण

1 **पारिवारिक कारण**

निर्धनता का प्रभाव :- प्लान्ट ने परिवार की निर्धनता का बालक पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए है, उनके अनुसार निर्धनता के कारण बालक के व्यक्तित्व में कठोरता या उगृता उत्पन्न हो जाती है। निर्धनता के कारण बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाने के कारण स्वयं को सर्वथा असुरक्षित पाते हैं। इसका प्रभाव प्रौढ़ता तक पड़ता है। निध र्निता के कारण 'हीनत्व-ग्रन्थि' उत्पन्न हो जाती है इस कारण वह दूसरों से स्वयं को नीचा अनुभव करने लगता है, जिससे उसमें आत्म विश्वास की कमी हो जाती है।

माता-पिता की घृणा का प्रभाव :- बालक के कुरूप होने, उनकी चाह न होने, बुद्धि की कमी होने इत्यादि के कारण बहुत से नगरों में रहने वाले माता-पिता अपने बच्चे से घृणा करने लगते है। बालक पर उनकी घृणा के कई प्रभाव पड़ते हैं। बालक में बदला लेने की भावना उत्पन्न हो जाती है। कभी-कभी तो वह अपने शुभचिंतकों को भी दुश्मन समझने लगते हैं।

माता पिता की ममता का प्रभाव :- इकलौता बेटा होने पर या किसी अन्य कारण से माता पिता बालक से अत्यधिक ममता करने लगते है, जिसका बालक पर कुप्रभाव पड़ता है। इससे बच्चे के मन में आत्मनिर्भरता का प्रभाव हो जाता है, और वह स्वयं को अयोग्य

समझने लगता है। इस प्रकार की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के प्रभाव में बालक का विकास रूक जाता है।

पक्षपात का प्रभाव :- बहुत से माता पिता बालकों को दो आँखों से देखने लगते हैं। इससे उन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो बालक वांछित प्रेम नहीं प्राप्त कर पाते वे सर्वदा यही चाहते हैं कि सभी लोग उसकी आवश्कताओं के प्रति ध्यान दें, ऐसा न करने पर उसमे झगडालू मनोवृत्तिया उत्पन्न हो जाती है।

नैतिक आदर्शो का प्रभाव :- बहुत से परिवारों में माता-पिता के ऊँचे नैतिक आदर्श होते हैं, जिनका कठोरता से पालन कराया जाता है, इन आदर्शो के बोझ से दबे हुए बालकों के व्यक्तित्व पर कुप्रभाव पडता है। उनके अचेतन मन में भावना ग्रन्थियों का निर्माण हो जाता है। आदर्श तथा यथार्थ से चलने वाले अनवरत संघर्ष के कारण उनका मन प्रभावित होता है जो स्नायु-मण्डल को प्रभावित करता है।

2 सामाजिक कारण

जिन समाजों या समुदायों का संगठन बहुत कमजोर होता है उन बालकों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह पाता। आन्तरिक झगड़े, अवज्ञा, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभाव, धार्मिक संघर्ष, पूर्वग्रहों का स्थान इत्यादि असंगठित समाज के लक्षण होते है। इनमें रहने वाले वालकों में ईर्ष्या, दोष, घमण्ड, असहयोग, संवेगात्मकता अस्थिरता, दुश्चरित्रता जैसे अनेक अवगुण घर कर लेते है। इस प्रकार समाज के क्रिया कलापों का बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

3 विद्यालय से सम्बन्धित कारण

प्रतियोगिता का प्रभाव बाल मन पर पड़े बिना नही रहता। स्कूल की परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने में बालकों में अत्यधिक प्रतियोगिता पाई जाती है। इसका कुप्रभाव बच्चों के मानसिक विकास पर प्रभाव डालता है। जो बच्चे परीक्षा में असफल या कम अंक लाते है वे हतोत्साहित हो

जाते है। उनमें हीनत्व-ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। परिणाम स्वरूप ऐसे बालक जीवन भर स्वयं को अयोग्य समझने लगते है। प्रतियोगिताओं में सफल बालकों के मन में 'अहम्' का भाव भी विकसित हो जाता है, जो भविष्य में घातक सिद्ध होता है।

रूचि के प्रतिकूल पाठयक्रम, कक्षा में अत्यधिक नियंत्रण भी ऐसे कारण है जो बालक के मानसिक स्वास्थ्य के लिये घातक होते हैं, पढ़ाई से ऊब का कारण भी प्रतिकूल और भारी भरकम पाठयक्रम होता है। अत्यधिक पिटाई के कारण भी बालक का मस्तिष्क रोगग्रस्त हो जाता है। कक्षा में अत्यधिक नियंत्रण भी बालक के स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। शिक्षकों के व्यक्तित्व का बालक के व्यक्तित्व पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक में संवेगात्मक अस्थिरता, स्नायुविकारता, निराशावादिता, उत्तेजनशीलता, इत्यादि लक्षण पाए जाते हैं तो बालकों को भी इन लक्षणों से ग्रस्त होना पड़ता है। कभी कभी शिक्षक के अवांछित व्यक्तित्व के कारण बालकों का मस्तिष्क असंतुलित तथा असंगठित हो जाता है।

बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा रखने के उपाय

(अ) **बालकों की मानसिक अस्वस्थता का उपचार :-** बालकों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति यही प्रयास होना चाहिए कि वह किसी भी मानसिक रोग से पीड़ित न हो। यदि ऐसा होता है तो उसका निदान उतना सरल नहीं है। शिक्षक बालक के मस्तिष्क में आई विकृति को दूर करने में असफल रहेगा। परिणामतः उसका उपचार किसी मनौचिकित्सक द्वारा ही कराना पड़ेगा।

(व) **मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति के उपाय :-** बालकों को मानसिक रूप से उन्नत करने के लिये अनेक उपाय है। इनमें स्कूल का अच्छा वातावरण आवश्यक होता है खेल के मैदान, स्वच्छ भवन, फुलबारी आदि साफ सुथरे और आकर्षक होने चाहिए। बाल अपराध रोकने के लिए विद्यालय का सुप्रशिक्षित होना आवश्यक है। उसमें शिक्षा के विभिन्न अंगों के सचालन की योग्यता तो होनी ही चाहिए साथ ही बाल मनोविज्ञान की जानकारी भी होनी चाहिए ताकि वे बच्चों

को तद्नरूप शिक्षा दे सके। बालकों की उनकी रूचि और योग्यतानुरूप शिक्षा दी जानी चाहिए तथा ऐसी शिक्षण-पद्धति का प्रयोग किया जाना चाहिए जो बालकों द्वारा सहज ही ग्रहण की जा सके।

बालकों के लिए स्वस्थ मनोरंजन भी आवश्यक होता है। बाल अपराध को रोकने के लिये अभिभावक-शिक्षक परिषद कारगर सिद्ध होती है। इससे बालक-शिक्षक निकट आते हैं। बालकों की काम-प्रवृति का शोधन करने के लिए उन्हें यौन शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे वे यौन अपराध ों से बच सकते हैं। शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक व नैतिक शिक्षा, मूल प्रवृत्तियों एवं संवेगों का शोधन, अनुशीलन अध्ययन, प्रेम व सहानुभूति शरीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाना आदि ऐसे तत्व है जो बालक के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में सहायक होते है।

कला, साहित्य व यात्राएं बालक को स्वावलम्बन की ओर ले जाती हैं। व्यवसायिक निर्देशन और अच्छी नागरिकता की शिक्षा बालक को कर्तव्य व अधिकारों की समझ तो देगी ही साथ ही उन्हें रचनात्मक बनाने में सहयोगी होगी।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बालक के विकास में उसका मानसिक स्वास्थ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। यदि बालक का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नही है और व मानसिक रूप से अविकसित है तो ऐसा बालक जीवन में कम ही उन्नति कर पाता है। ऐसे बालकों के विकास के लिए माता-पिता, शिक्षक और बातावरण को प्रयास करने होगें। तभी बालक मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकेगा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्णता एवं सन्तुलित क्रियाशीलता ही मानसिक स्वास्थ्य कहलाती है।

मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक विकास

मानसिक स्वास्थ्य बालक में नैतिक विकास को भी प्रभावित करता है, जब बालक का मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ होगा तो उसका नैतिक विकास भी समुचित प्रक्रिया में होगा।

Sharma (1999) ने शहरी व ग्रामीण छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक विकास

विषय पर अध्ययन में बताया कि छात्र-छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य नैतिक मूल्य से प्रभावित होता है, साथ ही नैतिक मूल्य भी प्रभावित करते हैं।

Arya's (2000) ने किशोरों में नैतिक विकास के लिये एक प्रयोगात्मक अध्ययन में बताया कि नैतिक विकास पर मानसिक योग्यता, शैक्षिक कार्यक्रम व सामाजिक-आर्थिक स्तर की मित्रता का सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य का संबंध व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से होता है जो उसके नैतिक विकास में सहायक होते हैं। उसी व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ्य समझा जाता है जो नैतिक मापदण्ड़ों के अनुसार व्यवहार करें व शैक्षिक, व्यवसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नैतिक इत्यादि विभिन्न परिस्थितियों से स्वय को समायोजित करें।

बालक का मानसिक स्वास्थ्य बालक की , अभिप्रेरणा, अभिवृत्तियों एवं नैतिक विकास एवं समस्त व्यवहार को प्रभावित करता है। इस संबंध में लक्ष्मी नारायन और प्रभाकरन (1993), एरिकसन (1936), केनिहाउसर (1965), रोर्जस (1969), हरलांक (1972), आनन्द (1988), लेहनर और क्योबस् (1962), जाहोदा (1959), सिंह (1998), सेन गुप्ता (1985), एस.एस. जलोटा, एस डी कपूर (1975) आदि ने भी अध्ययन किये।

अनुशासन

जीवन में अनुशासन एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, ये एक ऐसी प्रवृति है, जो व्यक्ति को सफलता के साथ-साथ ऊँचाई तक पहुँचाती है। अनुशासन ही वह सीढ़ी है, जिस पर पैर रख कर इन्सान सफलता की बुलन्दियों को छू सकता है। बालकों में अनुशासन का महत्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता हैं, कि यदि व अनुशासनबद्ध नही रहेगें तो उनके सभी कार्य आधे-अधूरे रह जाऐगें इसलिए माता-पिता और शिक्षक बालकों में सर्वप्रथम अनुशासन पालन की आदत डालते

है। अनुशासन में रखने की कई तकनीकें हैं। ये भिन्न-भिन्न तकनीकें बालक के व्यक्तित्व तथा व्यवहार को प्रमाणित करती है। उचित अनुशासन के द्वारा बालक में अच्छी आदतें तथा उनका नैतिक विकास किया जा सकता है।

माता-पिता द्वारा बच्चों के पालन-पोषण मे, उन्हें भोजन, वस्त्र एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं प्रदान करने के अतिरिक्त पुरस्कार एवं दण्ड भी शामिल है, जिसका उपयुक्त समय एवं मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। व्यक्ति को अनुशासित रहने की आदत एकाएक नही हो जाती वरन् बचपन से ही उसे अनुशासन का महत्व एवं अर्थ समझाना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि यदि बच्चे को बाल्यकाल से ही अनुशासन में रहना सिखाया जाए तो वह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में साथ निभाता है।

बल्यावस्था में अनुशासन की भूमिकाः- अनुशासन का उद्‌देश्य बालक को यह सिखाना है, कि वह जिस समूह में रहता है या जिससे संबंधित है, उसमें क्या सही है, क्या गलत है, इसके पश्चात यह देखना कि वह इस ज्ञान के अनुसार व्यवहार एवं क्रिया करे। यह कार्य सर्वप्रथम उनके व्यवहार पर बाहय नियंत्रण द्वारा एवं बाद में आन्तरिक नियन्त्रण द्वारा जब स्वय के व्यवहार का उत्तरदायित्व ग्रहण कर लेते हैं, के द्वारा किया जाता है। बाल्यावस्था में शिशुओं को घर-परिवार तथा पड़ोस में विशिष्ठ परिस्थितियों में शुद्ध-सही विशिष्ठ प्रतिक्रियाएँ करना सीखना चाहिए, जो कार्य गलत हैं, वह हर समय गलत ही होना चाहिए बिना इस तथ्य के कि, यह कार्य किसने किया है, अन्यथा शिशु भृमित हो जाएगा तथा वह नहीं जान पाएगा कि उससे क्या उपेक्षा की जाती है। छोटे बच्चों को भी कठोर अनुशासन द्वारा जिसमें गलत बातों व व्यवहार के लिए दण्ड भी शामिल है, के व्यवहार का तरीका विकसित किया जा सकता है, जिससे उन्हें माता-पिता के लिए उपद्रवी या उत्पाती होने से बचाया जा सकता है, दण्ड देने से पूर्व बालक को यह ज्ञात होना चाहिए कि उन्हें किस गलती, उदण्डता या अनुशासनहीनता के लिये सजा दी जा रही है।

The Four R's of discipline in Family

(1) Relationship	[Strong Deep Loving Kindly Respect Courtesy Appreciation]	Security
(2) Readiness	[Individual differences Activities Learings Opportunities Cooperation Recognision Encouragement]	Potentiality
(3) Responsibility	[Self discipline Good decision Self-management Self-approval]	Sense of autonomy of competence of power social approval
(4) Response	[Warm Creative Positive Appreciation]	Good performance salf confidence competence

Good self image, Happy balance personality, Healthy personal and moral development.

बाल्यावस्था के दौरान अनुशासन के शैक्षणिक पक्ष पर बल देने के लिए बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि क्या सही है, और क्या गलत, लेकिन बालक जब अच्छा कार्य करे तो उसे प्रशंसा एवं स्नेह द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए बजाए इसके कि जब वे कुछ गलत करे तो दण्ड दें। दण्ड का प्रयोग न करे ऐसा नही है। दण्ड का शैक्षिक मूल्य होता है। शिशु के गलती करने या वर्जित कार्य करने पर उसे दण्ड देना यह बता देता है कि उसके द्वारा किया गया कार्य गलत था जिसकी पुनरावृत्ति नही होनी चाहिए।

अधिकांश माता-पिता बच्चे की प्रशंसा करने में लापरवाही बरतते है, उनका यह आचरण बच्चे को मानसिक आघात भी पहुँचाता है। इसलिए माता-पिता को समय समय पर बालक के अच्छे कार्यो की प्रशंसा करनी चाहिए। कुछ बच्चे माता-पिता के चेहरे के भाव से यह समझ लेते है, कि वे उसकी प्रशंसा कर रहे है या नाराज हैं, उनके चेहरे की प्रसन्नता या क्रोध शिशु को यह समझा देता है कि उन्होंने सही या गलत कार्य किया है। परिणाम स्वरूप ये भाव बालक को वह क्रिया दोहराने के लिये प्रेरित करते है, जिनसे उनके माता पिता के मुख पर अनुकूल प्रतिक्रियाएँ दिखाई देती हैं।

अनुशासन के तत्व

अनुशासन सामाजिक समूह द्वारा मान्य नैतिक व्यवहार खिसाने का सामाजिक तरीका है। अनुशासन द्वारा ही बच्चों को सामाजिक मानदण्डो के अनुकूल व्यवहार के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके तीन मुख्य तत्व होते हैं।

(1) नियम तथा कानून

जो मान्य व्यवहार के लिए निर्देशा तत्व (Guide Line) होते है।

(2) दण्ड

जानबूझ कर या सोच समझकर नियम तथा कानूनों का उल्लघंन करने के लिए दण्ड का

विधान किया गया है।

(3) पुरस्कार

सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त व्यवहार करने के लिए पुरस्कार देने की व्यवस्था है।

अतएव अनुशासन में नियम तथा कानून, दण्ड तथा पुरस्कार तीन महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। पूर्व बाल्यावस्था के दोरान अनुशासन के शैक्षणिक पद पर अधिक बल देना चाहिए, तथा दण्ड उन्ही परिस्थितियों में देना चाहिए जब इस बात के स्पष्ट प्रमाण हो कि बच्चा सामाजिक उपेक्षाओं को न केवल अच्छी प्रकार से जानता था बल्कि उसने इनका जानबूझकर उल्लंघन किया है। छोटे बच्चों को सामाजिक मान्यता प्राप्त व्यवहार को सीखने में 'पुरस्कार' की एक प्रेरक के रूप में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पुरस्कार प्रेरणा के लिये पुर्नवलन का कार्य करती है।

माता-पिता कई बार बच्चों को अनुशासन सिखाने के लिए दण्ड का प्रयोग करते है। आजकल दण्ड के कुछ सामान्य स्वरूप जो उपयोग में लाये जाते है वे है- शारीरिक दण्ड जैसे थप्पड़ मारना, पिटाई करना आदि। बच्चों को उनके कमरे में अकेला छोड़ना, उन्हे सोने चले जाने के लिये कहना, बहुधा उन्हे भोजन कराए बगैर उन्हे कोने में दीवार की ओर मुँह करके खड़ा करना, जिससे उसे सभी इस अपमानजनक अवस्था में देखे, उन्हें दी जाने वाली सुविधायें स्थागित कर देना, जैसे टी0वी0 पर पसन्दीदा कार्यक्रम न देखने देना, उन्हें प्यार न करना, उन्हें छोड़ देने का भय दिखाना, उस बच्चे की अपने भाई-बहनों से तुलना करके, उसे भला-बुरा कहना आदि ऐसी ही बातें हैं, जो बच्चे को अनुशासन सिखाने के लिए दण्ड के रूप में उपयोग में लाई जाती है।

बच्चों को पुरस्कृत करने के लिए खिलौनें, आइसक्रीम, चाकलेटस देना या कभी-कभी बाहर घुमाने ले जाना आदि का प्रयोग किया जाता है। यह पुरस्कार उन्हे अच्छे व्यवहार के लिए ही नहीं दिया जाता, बल्कि घर के नियम, कानूनों का पालन करने के लिये भी दिया जाता है। बच्चों को कब दण्डित करना है एवं कव पुरस्कृत, यह निर्णय माता-पिता को बहुत सोच समझकर लेना

चाहिए। दोनो की ही अधिकता बालक के व्यक्तित्व के उचित विकास में बाधक होती है।

अनुशासन के प्रकार

बच्चों को अनुशासित करने के लिए तीन विधियाँ उपयोग में लाई जाती है।

(1) सत्तावादी अनुशासन

(2) स्वीकृति देने वाला अनुशासन,

(3) लोकतंत्रीय अनुशासन

1 **सत्तावादी अनुशासनः–** सत्ताबादी अनुशासन में माता-पिता तथा अन्य बुजुर्ग नियमों को स्थापित करते है, एवं बच्चों को सूचित किया जाता है कि वे इन नियमों में बधें रहेगे, वे बच्चों को यह बताने का प्रयास नही करते कि उन्हे इन नियमों के अनुकूल क्यों बनना है, न ही बच्चों को यह अवसर दिया जाता है कि वे अपनी ईमानदारी या निष्पक्षता के बारे में अपनी राय व्यक्त कर सके। यदि बच्चे इन नियमों के अनुकूल नही चल पाते तो उन्हे दण्ड दिया जाता है, जो बहुधा कड़ा एवं दुष्टता पूर्ण होता है। यह माना जाता है कि इससे बच्चा भविष्य में इन नियमों को नही तोड़ेगे। नियमों को तोड़ने वाले कारणों पर विचार नहीं किया जाता है यह मान लिया जाता है कि उन्हें नियमों की जानकारी थी और उन्होने इच्छापूर्वक इनका उल्लंघन किया है और न ही माता-पिता द्वारा इस बात पर ध्यान देना आवश्यक समझा जाता है कि यदि बच्चों ने नियमों का पालन किया है तो उन्हें पुरस्कृत किया जाए। पुरस्कार देने का अर्थ यह समझा जाता है कि 'यह तो उनका कर्त्तव्य है' इसके लिए उन्हे किसी प्रकार का उत्कोष (Bribet) या रिश्वत देना क्या उचित है।

2 **स्वीकृति देने वाला अनुशासन :–** अनुज्ञा या स्वीकृति देने वाला अनुशासन विकसित होने का कारण उस व्यस्क द्वारा स्वय की बाल्यावस्था में अपने माता-पिता या 'सत्तावादी अनुशासन' भोगना होता है। इसी विद्रोह या बगावत के कारण इस प्रकार के अनुशासन उनके द्वारा अपने बच्चों पर लागू किये जाते हैं। इस प्रकार की अनुशासन तकनीक के पीछे यह दर्शन है, कि

बच्चों को अपने क्रियाकलापों के परिणाम या नतीजों द्वारा यह सीखना चाहिए कि 'सामाजिक मान्यता' प्राप्त तरीकों के अनुसार कैसे व्यवहार किया जाता है, परिणाम स्वरूप उन्हें नियम तथा कानून नहीं सिखाए जाते, उन्हें इच्छापूर्वक नियम तोड़ने पर दण्डित नही किया जाता है, न ही उन्हें सामाजिक मान्यता प्राप्त नियमों का पालन करने पर पुरस्कृत ही किया जाता है। व्यस्कों द्वारा प्रचुरता से इस प्रवृति को अपनाया जा रहा है इस कारण उनके अनुशासन में तीन महत्वपूर्ण तत्व उपस्थित रहने में असफल होते हैं।

3 **लोकतंत्रीय अनुशासन :-** लोकतंत्रीय सिद्धान्तों पर आधारित अनुशासन को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह सिद्धान्त बालक के उस अधिकार पर बल देता है, जिससे उसे यह बताया जाता है, कि नियम क्यों बनाए जाते हैं, साथ ही उन्हें अपना मत व्यक्त करने का अवसर भी दिया जाता है, यदि कोई नियम निष्पक्ष नहीं लगता है, तो वे अपनी इच्छा बता सकते है। बच्चों को नियमों का अर्थ समझाने का प्रयास किया जाता है तथा उन्हे यह समझने के पर्याप्त अवसर दिए जाते है कि समाज द्वारा बन्धन लगाने के क्या कारण है, क्यों उनसे कुछ व्यवहार करने या न करने की प्रत्याशांऐ की जाती है।

इस प्रकार के अनुशासन में शारीरिक दण्ड नही दिया जाता, दण्ड उनके बुरे कार्य तक ही सीमित रहता है अर्थात उनके बुरे कार्य के अनुसार ही उन्हें दण्ड दिया जाता है, दण्ड बहुत कड़ा एवं दुष्टतापूर्वक नही दिया जाता। अच्छे कार्य एवं व्यवहार के लिए बच्चों की पर्याप्त प्रशंसा की जाती है। एवं उसे पुरस्कृत किया जाता है।

अनुशासन का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव

अनुशासन के महत्वपूर्ण तत्व होते है, जो उन्हें समाज द्वारा मान्यता प्राप्त व्यवहार करने में सहायता प्रदान करते है। माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बच्चों को नियन्त्रित करने के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुशासन विधियाँ अपनाई जाती है, चूंकि बालक के विकास में

अनुशासन की भूमिका मुख्य होती है इसलिए अनुशासन बालक के व्यक्तित्व को बनाने में सहायक भूमिका का निर्वाह करता है।

अच्छी आदतों का निर्माण :- शिशुओं में कुछ अच्छी आदतों का निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक होता है इन आदतों से शिशु व्यवस्थित दिनचर्या व्यतीत करता है, जिससे उसके व्यक्तित्व में उचित विकास होता है। इन आदतों का निर्माण हो जाने से शिशु तथा बालक जीवन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करते है। शिशुओं में अच्छी तथा स्वस्थ आदतों के निर्माण का कर्तव्य माता-पिता अभिभावकों एवं परिवार के अन्य सदस्यों का है, स्वस्थ एवं अच्छी आदतें इस प्रकार है -

(1) भोजन संबंधी आदतें

(2) शोच संबंधी आदतें

(3) मूत्रादि संबंधी आदतें

(4) स्वच्छता एवं व्यवस्थित रहने संबंधी आदतें

(5) शिष्टता अथवा स्वभाव एवं व्यवहार संबंधी आदते

यदि उक्त आदतें अच्छी एवं स्वस्थ है तो वे बालक के सर्वागीण विकास में सहायक होती हैं। इन आदतों की नींव शिशु में शैशवस्था में ही डालनी चाहिए। अच्छी आदतों के निर्माण में अनुशासन का बहुत योगदान होता है। माता-पिता को बच्चों में आदतों का निर्माण करते समय कठोर होना पड़ता है, क्योंकि आदतों का निर्माण आसान कार्य नही होता।

बच्चों को प्रेम तथा सहानुभूति पूर्वक समझाना पड़ता है कि इन अच्छी आदतों के क्या लाभ होते है। बच्चों को डाँटने-डपटने एवं झिड़कने से वे दुःखी एवं चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते है। माता-पिता के व्यवहार में एकरूपता (consistency) होनी चाहिए, यदि माता-पिता विभिन्न प्रक्रति के है और बालक के एक ही कार्य पर कभी उसे भला और कभी बुरा कहते है तब बच्चा यह निर्णय नहीं कर पाता कि उसका कार्य उचित है या अनुचित। अत: बालक के साथ व्यवहार करने

में उन्हें एकरूपता रखनी चाहिए। ताकि वे माता-पिता पर विश्वास एवं भरोसा कर सकें।

कभी-कभी माता-पिता बच्चों को एक ही समय में दो आज्ञाएँ देते है जैसे - चले जाओ, नहा लो, नाशता कर लो आदि, तब बच्चा भ्रमित हो जाएगा कि वह पहले क्या करे। अतः कभी भी बच्चों को दो आज्ञा एक साथ नही देनी चाहिए बच्चों को क्या करना है, इसका उसे स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। आज्ञा पालन न करवाने के लिये उन्हे दण्डित करना उचित नही है, बल्कि समझदारी से काम लेना चाहिए। बालक जब आज्ञा का पालन करता है, तो उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आज्ञा पालन की आड़ में उसकी स्वतंत्रता में बाधा न आए। बच्चों से आज्ञा पालन करवाने एवं हुक्म चलाने में पर्याप्त अन्तर रखा जाना चाहिए।

नैतिक विकास में अनुशासन

बालक की नैतिक आचार संहिता के विकास में अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। माता-पिता द्वारा बालक को नियन्त्रित करने हेतु अनुशासन की विभिन्न तकनीकें प्रयोग में लाई जाती है।

(1) **नैतिक आचार संहिता बनाने में सहयोग देना :-** बड़े बच्चों को सही गलत सिखाने के लिए कारणों पर बल दिया जाना चाहिए। जैसे व्यवहार के कुछ निश्चित तरीके क्यों मान्य है, जबकि अन्य नहीं। तथा बालक के उन विस्तृत विशिष्ठ प्रत्यय निर्माण में सहायक होने चाहिए जो प्रत्यय अधिक सामान्य एवं मूर्त होते है।

(2) **पुरस्कार :-** पुरस्कार जैसे प्रशंसा अथवा विशेष सत्कार करना जब बच्चे कठिन परिस्थितियों में अच्छी तरह से अपने आपको समायोजित करते हैं, तब उन्हे पुरस्कार दिया जाना चाहिए। पुरस्कार का शैक्षणिक मूल्य होता है यह पुरस्कार बच्चों को यह दर्शाते है कि उन्होंने बिल्कुल सही आचरण किया है, तथा पुरस्कार बच्चों को अच्छा आचरण करने के लिये प्रेरित करते है। यदि हम चाहते है कि बच्चों को दिया जाने वाला पुरस्कार प्रभावशाली हो तो यह बालक

की आयु तथा विकास के स्तर के अनुरूप होना चाहिए।

3 **दण्ड :–** पुरस्कार के समान ही दण्ड को भी विकासात्मक रूप से उपयुक्त होना चाहिए। इसका संचालन ईमानदारी से किया जाना चाहिए, अन्यथा यह बालक में अप्रसन्नता उत्पन्न करता है। दण्ड भी बच्चों को भविष्य में सामाजिक प्रयत्नों के अनुरूप व्यवहार करने के लिये प्रेरित करता है।

4 **एकरूपता :–** बालको को नियंत्रण में रखने के लिए माता-पिता को सदैव एकरूप होना चाहिए। जो आज सही है वो कल भी सही होना चाहिए और भविष्य में भी वे सही रहे। एक गलत कार्य के लिए प्रत्येक बार वैसा ही दण्ड दिया जाना चाहिए जैसा पहली बार की गई गलती के लिए दिया गया था, वहीं सही कार्य के लिये भी वैसा ही पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

अनुशासन एवं नैतिक विकास

उत्तर बाल्यावस्था में बालक के नैतिक विकास में अनुशासन का अत्यंन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इस सम्बन्ध में **वेल्टन महोदय**- ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है कि ''सच्चे अनुशासन का लक्ष्य अन्त:चैतना का प्रशिक्षण है जो कि शुभ संकल्प प्राप्त करने और नैतिक अंर्तदृष्टि के विकास में सहायक है।''

अनुशासन, प्रशिक्षण और अधिगम की एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक के नैतिक विकास को प्रेरणा प्रदान करती है। अनुशासन के दो पक्ष है, प्रथम पक्ष - पारिवारिक परिवेश एवं समूह तथा समाज अनुमोदित नैतिक व्यवहार की शिक्षा प्रदान करना है, द्वितीय पक्ष - आत्मानुशासन के माध्यम से व्यवहार प्रतिमानों का विकास, जिससे बालक में एकीकृत व्यक्तित्व विकास एवं सुरक्षा की भावना विकसित हो सके।

जीवन निर्वाह की विधियों के लोकतंत्रीकरण, परपंरागत धर्म के प्रभाव के ह्रास के फलस्वरूप सर्वसत्तावादी अनुशासन के स्थान पर अनुशासन के प्रति युक्ति संगत और उदार

अभिवृत्तियों का विकास हुआ है। आज बालक के स्वयं स्वीकार किये गये नैतिक सिद्धातों के प्रकाश में स्थिति की आवश्यकतानुसार उद्भुत नियमन आवश्यक है।

अनुशासन का प्रथम आवश्यक गुण है 'आदत' या 'अभ्यास का निर्माण' जो सिद्धांत या नियमों से व्यवहृत होता है। ये नियम बालक को समूह द्वारा स्वीकृत आचरण के प्रतिमानों से परिचित कराते हैं व अवांछित व्यवहार को रोकते है। अनुशासन का द्वितीय गुण 'संगति' है। संगत प्रशिक्षण से ही बालक यह समझ पाता है कि उससे क्या आशा की जाती है। अनुशासन का तृतीय अत्यावश्यक गुण 'पुरस्कार' एवं 'दण्ड' है जो अधिगम, पुरस्कार प्रबलक का कार्य करते हैं व बालक के स्वस्थ संवेगात्मक विकास में सहायक होते है। बालक को वाछिंत कार्य हेतु प्रोत्साहित करते हैं व दण्ड, अवांछित कार्यो से विरत रहने में सहायक सिद्ध होता है परन्तु दोनों में संतुलन होना आवश्यक है। दण्ड को प्रभावकारी सिद्ध करने हेतु उसे संगत होना आवश्यक है। दण्ड का उद्देश्य बालक को सुधारना व उन्नत बनाना होना चाहिए। इन तथ्यों की पुष्टि **बुल (1969)** ने भी की है।

अनुशासन का प्रमुख उद्देश्य बालक को समाज व संस्कृति द्वारा मान्य व्यवहार सिखाना एवं उसके सामाजिक समायोजन में सहयोग करना है, जिससे बालक सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार करता है और उसमें नैतिक विकास होता है। **रड्के (1946), डुबोइस (1952), जोंस (1954), सीयर्स, मैक्कोंबी एवं लेविन (1957), मिलर एवं स्वानसन (1958)** ने अपने अध्ययनों में बताया कि बालको को स्नेह, निर्देशन एवं पुरस्कार देने से वे अनुशासित होते है। अनुशासन बालक में सुरक्षा, आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न करता है। उसे अपनी सीमाओं, बंधनों एवं स्वतन्त्रता का ज्ञान कराता है और उसे नैतिक मानकों के अनुसार चलने में सहायता करता है, जिससे उसे दोष की भावना कम सताती है। इस प्रकार अनुशासन द्वारा उत्पन्न आत्मानुशासन के माध्यम से बालक नैतिक व्यवहार, नैतिक भावना और नैतिक निर्णय लेना सीखता है और उसका नैतिक विकास होता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर :-

किसी भी परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर उस परिवार की समाज, में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है।

जै0एस0 प्लान्ट ने इस संबन्ध में कुछ अध्ययन किये जिनके आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचें कि यदि बालक का परिवार आर्थिक संकट में होता है तो उसमें सहनशीलता आदि गुणों का विकास हो जाता है, ऐसे बालक, व्यस्क होने पर धन इकठ्ठा करने में सुख एवं संतोष का अनुभव करते है। ये बालक हीनता की ग्रन्थि के शिकार हो जाते हैं।

शैवियाकोब महोदय का विचार है कि ऐसे बालक अपना आत्म विश्वास खो बैठते है तथा किसी भी सामाजिक कार्य के उत्तरदायित्व को लेने में संकोच करते है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के बालकों में हीनता की भावना की ग्रन्थि का विकास हो जाता है, एवं सभी अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं। ऐसे बहुत से उदाहरण है, जिनमें निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक आगे आकर महान समाज सुधारक, दार्शनिक एवं साहित्यकार बनें।

परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय प्रत्यय है, जो बालक में नैतिक विकास, मानसिक स्वास्थ्य एवं अनुशासन को बहुआयामी स्तर से प्रभावित करता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर का अर्थ किसी व्यक्ति की उस स्थिति या पद से होता है, जिसे समाज में प्रचलित मापदंड के अनुसार, सांस्कृतिक आधार, प्रभावशाली आमदनी व भौतिक सुख-साधान। धन तथा समाज की सामूहिक क्रियाओं से मापा जाता है।

चेपिन (1933) के अनुसार :- ''सामाजिक-आर्थिक स्थिति में, व्यक्ति की समूह में, सामाजिक व आर्थिक, दोनों स्थितियां शामिल होती है। सामाजिक स्थिति, सामाजिक संबंधों में व्यक्ति की स्थिति दर्शाती है।''

डुबोइस (1952) के शब्दो में :- ''निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक अधिक दुष्टता करते हैं व समवयस्कों द्वारा अस्वीकृत होते हैं।''

हैविग्हर्स्ट (1953) ने अपने अध्ययन में बताया कि ''बाल्याबस्था में बालक अपने सामाजिक-आर्थिक वर्ग के दोस्त बनाता है।''

स्टौफर (1955) ने कहा कि ''निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग में बालिकाओं की अपेक्षा बालक अधिक दुष्टता करते हैं।''

रेनवाटर (1956) ने अपने अध्ययन में बताया कि ''निम्न वर्ग के माता-पिता बालक को कठोर शारीरिक दंड देते है। मध्यम वर्ग के माता-पिता बालक में दोष या लज्जा की भावना जागृत करने का प्रयास करते है या प्यार से वचिंत कर देते है। इस कारण निम्न वर्ग के बालक झूठ बोलकर या छिपाकर, दंड से बचता है व मध्यम वर्ग का बालक माता-पिता की इच्छानुसार चलने का प्रयास करता है।''

स्वेल एवं हेलर (1956) के शब्दों में :- ''बालक के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति व उसके व्यक्तित्व समायोजन में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।''

एक अन्य मनोवैज्ञानिक **लैपियर महोदय** ने कहा कि ''सामाजिक वर्ग व्यक्तियों के एक दो या अधिक समूह है जिन्हे समुदाय के सदस्यों द्वारा सामाजिक रूप से श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठ पदों में श्रेणीबद्ध किया जाता है।''

कुलश्रेष्ठ (1980) के शब्दों में :- ''यह व्यक्ति की अन्य व्यक्तियों के साथ संबंधों में विशिष्ठ स्थिति होती है, जिसके द्वारा वह सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।''

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बालक के व्यक्तित्व का निर्धारण करती है। अनेक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति बालकों की हीन ग्रंथियों, कुंठा, असन्तोष और विद्रोही प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करती है। बालक के विकास हेतु उत्तरदायी

कारक सामाजिक-आर्थिक स्तर के मापन हेतु मनोवैज्ञानिकों व विद्वानों ने अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो को मापन बिन्दुओं का रूप प्रदान किया, जिनमें बालक की शिक्षा व अधिगम, परिवार का शैक्षिक स्तर, बालक के सरंक्षक का व्यवसाय, संरक्षक की आमदनी व आय के स्रोत परिवार की स्थिति व वातावरण, बालकों को प्राप्त सुविधाएं व साधन तथा घर में साधानों की उपलब्धता शामिल है।

आज के युग में सबसे ज्यादा आवश्यकता इस बात की है कि बालकों के सर्वागणि विकास व उनकी प्रतिभा का प्रयोग देश हित में मानव कल्यार्थ करने हेतु उन्हें पर्याप्त साधन व सुविधाएं प्रदान की जायें तथा बालक को शिक्षा के साथ साथ नैतिक विकास की ओर भी प्ररित करें तो हम अपनी संस्कृति के अस्तित्व को अक्षुण बनाये रख सकते है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं नैतिक विकास

सामाजिक -आर्थिक स्तर बालक में नैतिक विकास को भी प्रभावित करता है जब बालक का सामाजिक-आर्थिक स्तर सुदृढ़ होगा तो उसका विकास समुचित प्रक्रिया में होगा और उसमें नैतिक मूल्य भी विकसित होगें, जिससे उसका नैतिक विकास प्रभावी होगा। यह नैतिक विकास उसके सद्‌गुणों, सदाचरण, संतुष्ठि और सद्‌व्यवहार से ही मिल सकेगा। वर्तमान में गिरते हुये नैतिक विकास का एक कारण आर्थिक विषमता है।

परिवार के सामाजिक -आर्थिक स्तर को तीन भागों-उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विभक्त किया जा सकता है। सामान्यतः वर्गीकरण आय के आधार पर किया जाता है, जिस परिवार की आय जितनी होती है, उसी हिसाब से उसका समाज में स्थान व आर्थिक स्थिति निर्धारित हो जाती है। आधुनिक समाज में व्यक्ति की समूह में स्थिति को आय, व्यवसाय, शिक्षा परिवार, घर की स्थिति, पास-पड़ोस, जाति व व्यक्ति द्वारा प्राप्त प्रतिष्ठा के आधार पर प्राप्त किया जाता है। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करने में आर्थिक कारक महत्वपूर्ण सिद्ध होते है।

किसी व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति समाज में उसकी श्रेणी की ओर इंगित करती है , जिसमें कि वह रहता है तथा उस समाज में वह कितना सम्मान पाता है, सामाजिक संरचना पर उसका कितना प्रभाव है, इसके अतिरिक्त उसका व्यक्तिगत प्रभाव जिसके कारण उसका सम्मान कम होता है या बढ़ जाता है।

एक सामाजिक स्थिति प्राप्त व्यक्ति को सामाजिक विकास के तीन मानदडों को स्वीकार करना होता है, जिनमें उसे समाज द्वारा स्वीकृत तरीकों से व्यवहार करना आना चाहिये, समाज द्वारा निर्दिष्ट भूमिका का निर्वाह करना चाहिए तथा उसे सामाजिक गतविधियों के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखना चाहिए।

स्पष्ट है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अर्थ परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से होता है। सामाजिक आर्थिक स्थिति एक बहुआयामी घटना है जो न केवल परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शाती है बल्कि परविार के सदस्यों के सांसारिक सुख-सुविधाओं के स्वामित्व तथा प्रतिष्ठा को दर्शाती है। इसका सापेक्षिक महत्व भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होता है।

आधुनिक समाज प्राचीन रीति-रिवाजों से भिन्न होता हैं। साथ ही आधुनिक समाज में प्राचीन समाज की तुलना में परिवर्तन शीलता अधिक पाई जाती है। आर्थिक तत्व सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो कि सामाजिक-आर्थिक स्तर नामक चर कहलाता है।

परिवार का सामाजिक -आर्थिक स्तर बालक के प्रत्यक्षीकरण, अभिवृत्तियों, अभिप्रेरणा नैतिक विकास एवं समस्त व्यव्हार को प्रभावित करता है। इस संबंध में ब्रनूर एवं गुडमैन (1947) सेन्टर्स (1949), रूबिन (1950), स्चमलिंडर एवं लिसगार्ड (1953), हिम्मेलवीट (1955), मैकी एवं लीड़र (1955), रोसम (1956), शान्मुगम (1957), हाफमैन, मिट्सांस एवं प्राटँ (1958), रायचौधरी (1959), सिंह (1960), सेनगुप्ता (1969), स्वीवन्ट एवं लोंग (1973), जेकब (1974),

जेगिओब (1975), शर्मा (1979), आदि ने भी अध्ययन किये है।

सामाजिक-आर्थिक कारक बालक के विकास को सकारात्मक व नकारात्मक मार्ग की ओर उन्मुख कर सकता है। **बोस्साई (1954)** ने अपने अध्ययन में बताया कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति व पिता के व्यवसाय के बीच धनिष्ठ संबंध होने के कारण पिता का व्यवसाय, बालक का, माता पिता के साथ संबंध निर्धारण में महत्वपूर्ण होता है। बालक के लिये पिता के व्यवसाय का एक सांस्कृतिक अर्थ होता है जो उसे प्रतिष्ठा प्रदान करता है या उससे वचिंत करता है। बालक का विकास उसकी परिपक्वता, मानसिक कुंठाएं, हीन ग्रंथियां उसके रहन सहन, आचार विचार एवं प्राप्त सुविधा एवं आवश्यकताओं पर निर्भर रहता है।

एक प्रसिद्ध विद्वान का कहना है कि यदि हमें अपने भारत का निर्माण करना है या उसे खुशहाली के मार्ग पर अग्रसर करना है तो इसके लिये सर्वप्रथम हमें हमारे नागरिको के जीवन स्तर को उच्च बनाना होगा। **स्टेगनर (1961)** ने अपने अध्ययनों द्वारा यह प्रमाणित किया है कि निम्न-आर्थिक स्तर के बालकों के व्यक्तित्व में हीनता, स्नायु दुर्बलता और अंर्तमुखता के लक्षण पैदा होते है।

आर्थिक कठिनाई के कारण बालक भौतिक सुविधाओं से वंचित रह जाता है एवं उसके मानसिक विकास हेतु आवश्यक साधन भी उपलब्ध नहीं हो पाते। ऐसे बालकों के भीतर आकांक्षाएं हीन स्तरीय होती है। **इवान (1951)** ने 'अमेरिका सोशियोलॉजीकल रिव्यू' शोध में देखा कि माता-पिता बालकों का सामंजस्य शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति द्वारा प्रभावित होता है। **लेहमन (1952)** ने कहा कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बालक की महत्वाकांक्षाओं के प्रकार पर तथा उन्हे प्राप्त करने में उनकी सफलता/असफलता पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

लेस्को (1954) ने बताया कि बाल्यावस्था में अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक वर्ग की

पृष्ठभूमि वाले बालकों की क्रियायें परिणाम व प्रकार की दृष्टि से भिन्न-भिन्न होती है।

क्लार्क (1955) ने ज्ञात किया कि सामाजिक - आर्थिक वर्ग की अपेक्षा उच्च व मध्यम वर्ग में उत्तरदायित्व की भावना बालक हेतु आवश्यक मानी जाती है।

हॉस (1955) ने कहा कि निम्न सामाजिक आर्थिक वर्ग की अपेक्षा उच्च व मध्यम वर्ग में उत्तरदायित्व की भावना आवश्यक मानी जाती है **स्वेल (1956)** ने भी कहा कि बालक के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति व उसके व्यक्तित्व समायोजन में घनिष्ठ सम्बन्ध होते है। **बाटर्स (1957)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मध्यम वर्ग के माता-पिता बालकों से अवास्तविक महत्वकांक्षाएँ रखते है तथा बच्चों का प्रत्याशाओं के अनुसार असफल रहने पर उनमें असुरक्षित व अस्वीकृति की भावना उत्पन्न होती है। साथ ही **एफेल (1976)** ने बालकों के पारिवारिक परिवेश पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया और पाया कि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवार बच्चों को अच्छी सुविधाएं देते है।

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में परिवारिक जीवन का नमूना भिन्न होता है और उसका प्रत्यक्ष एवं महत्वपूर्ण प्रभाव बालकों पर पड़ता है। मध्यम श्रेणी के परिवारों में बालकों से परिवार के लिये अनेक आशायें की जाती है। तथा उन पर सामाजिक अनुरूपता स्थापित करने पर बल दिया जाता है। ऐसे परिवार समाज की आलोचनाओं से डरते है। ऐसे परिवारों में बालक परिवार का एक महत्वपूर्ण अगं माना जाता है। उससे अनेकों अपेक्षाएं रहती है इस कारण उसके साथ विनम्र व्यवहार रखा जाता है एवं पालन-पोषण में प्रजातांत्रिक विधि अपनाई जाती है। इस प्रकार परिवार में प्रेम स्नेह, सहिष्णुता, त्याग एवं सहयोग का पर्यावरण बना रहता है।

निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में उक्त गुणों का अभाव रहता है, अर्थाभाव के कारण बालकों का नकारात्मक व्यक्तित्व विकास होता है जो नैतिक विकास में बाधक तत्व है।

बालक में नैतिक विकास एवं परिवार की सामाजिक-आर्थिक दशा का सीधा संबंध होता है।

इस प्रकार सुदृढ़ सामाजिक-आर्थिक स्तर बालक में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है जो बालक के सर्वांगीण नैतिक विकास हेतु आवश्यक है।

अध्याय - द्वितीय
शोध कार्य का उद्देश्य
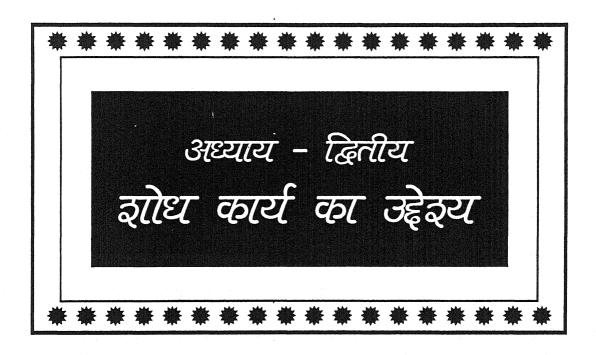
अध्याय – द्वितीय
शोध कार्य का उद्देश्य

किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिये उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक है। प्रत्येक मानवीय प्रयास के मूल में कोई न कोई उद्देश्य अवश्य निहित होता है। सभी शोध कार्यो का मूल उद्देश्य ज्ञान में वृद्धि करना अथवा अज्ञात की जानकारी प्राप्त करना है। बिना उद्देश्य के शोध कार्य उस यात्रा के समान है जिनका गन्तव्य स्थान स्वयं चालक को पता नहीं है। शोध प्रबन्ध का उद्देश्य जहां एक ओर सैद्धांतिक होता है वहीं दूसरी ओर व्यवहारिक! दूसरे रूप में सभी शोध प्रबन्धों के उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न होते है। किसी शोध कार्य का उद्देश्य ज्ञानार्जन होता है तो कोई शोध कार्य संबधित कारणों को जानने के लिये किया जाता है। कुछ शोध कार्य किसी विशिष्ट समस्या का समाधान दूढ़ने के लिये तो किसी शोध का उद्देश्य प्रचलित कल्याण कार्यक्रमों को प्रभाव पूर्ण बनाने के लिये आवश्यक सुझाव देना होता है। इससे स्पष्ट है कि शोध कार्य प्रारम्भ करते समय ही शोधार्थी के समक्ष उद्देश्यों की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिये क्योंकि शोधार्थी शोध कार्य करते समय यह नही देखता कि किसी विशेष दशा में समाज को लाभ हो रहा है अथवा हानि वरन उसका उद्देश्य इस अर्थ में केवल वैज्ञानिक होता है कि वह निष्कर्षों की चिंता किये बिना केवल ज्ञान को संचय के प्रयास मे लगा रहता है। ऐसा करते समय शोधकर्ता के सामने तीन लक्ष्य प्रमुख होते हैं।

(1) अज्ञात तथ्यों की वास्तविक जानकारी प्राप्त करना।

(2) अनुसंधान द्वारा उन तथ्यों के विभिन्न पक्षों का सूक्ष्म अवलोकन करना।

(3) विभिन्न तथ्यों के बीच पाये जाने वाले सामान्य तत्वों को दूढंकर उनकी व्यवस्थित रूप से व्याख्या करना।

इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक शोध का उद्देश्य केवल नये सिद्धांत का निर्माण करना ही नही होता वरन् पुराने सिद्धातों का नई परिस्थितियों में सत्यापन करना भी होता है। अनुसंधान के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुये **पी० वी० यंग** ने कहा कि ''सामाजिक शोध का एक उद्देश्य अनुभव सिद्ध तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक अवधारणाओं को प्रस्तुत करना तथा उन्हें विकसित करना है।''

शोध का उद्देश्य सैद्धांतिक होने के साथ ही साथ व्यवहारिक भी होना चाहिए अर्थात् एक अनुसंधानकर्ता सामाजिक जीवन तथा सामाजिक घटनाओं को समझने के लिये केवल सिद्धांत ही प्रस्तुत नहीं करता बल्कि ऐसे सुझाव भी प्रस्तुत करता है जिनके द्वारा सामाजिक जीवन को अधिक स्वस्थ बनाया जा सके। वास्तविकता यह है कि कोई भी वह ज्ञान व्यर्थ है जिसका व्यवहारिक उपयोग न किया जा सके।

शोध के व्यवहारिक उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए **एकॉफ**[34] ने लिखा है कि '' जो शोधकर्ता शोध से प्राप्त निष्कर्षों को अपने तक सीमित रखता है वह वास्तव में वैज्ञानिक नहीं होता।'' विज्ञान अविजयिक रूप से सार्वजनिक होता है। इससे स्पष्ट होता है कि शोध का उद्देश्य सैद्धांतिक होने के साथ- साथ व्यवहारिक भी होना चाहिए।

शोधार्थी का विषय ''**बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन -उत्तर बाल्यावस्था के विशेष सन्दर्भ में**'' है।

उत्तर बाल्यावस्था बालक के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है जो बालक की अभिवृत्तियों व व्यवहारों में होने वाले अनेक परिवर्तनों के लिये उत्तरदायी होती हैं। इस अवस्था में बालक को एक ओर तो अपने समूह की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होता है वहीं दूसरी ओर माता-पिता की अपेक्षाओं को भी पूर्ण करना होता है तथा इन्हीं के मध्य बालक का नैतिक विकास होता है।

आज जब समाज दोहरे नैतिक मापदंण्डों के दौर से गुजर रहा है, एक सुस्कृंत, सुसंगठित परिवार की कल्पना, बिना उच्च नैतिक विकास के नही की जा सकती।

अतः शोधार्थी ने इस कठिन विषय को चयन करने का साहस व्यक्त किया और इन सामान्यीकरणों को दृष्टिगत रखते हुये तथा इसे निश्चित उद्देश्यों की धारणा में बदलने हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा निम्न उद्देश्यों को निर्मित किया गया है, जो निम्नलिखित हैं। -

(1) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर का अध्ययन करना।

(2) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

(3) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार का अध्ययन करना।

(4) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अनुशासन में सम्बन्ध ज्ञात करना।

(5) बालक एवं बालिकाओं के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

(6) बालाकों के नैतिक स्तर तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर में सम्बन्ध ज्ञात करना।

(7) नैतिक विकास में लैंगिक विभिन्नता को ज्ञात करना।

अध्याय - तृतीय
साहित्य का पुनरावलोकन
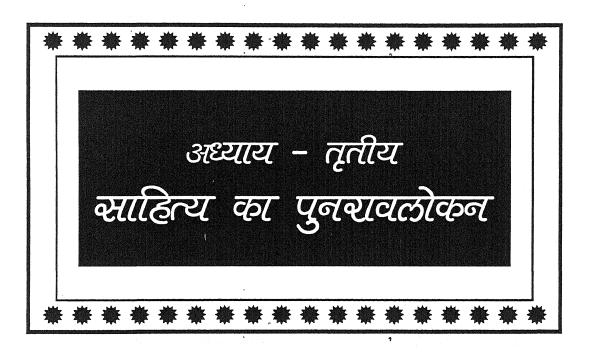
अध्याय - तृतीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक प्राथमिक, महत्वपूर्ण एवं अत्याज्य आवश्यक चरण है, जो अनुसंधान को गुणात्मक स्तर प्रदान करता है। यह शोधकर्त्ता को उसके अध्ययन से संबंधित साहित्य का ज्ञान कराकर उसकी दिशा को निर्धारित करता है। विषय का चुनाव करने से पूर्व एवं पश्चात् यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता, उस विषय से संबद्ध अन्य शोधकर्त्ताओं के भावों, विचारों, निष्कर्षों, क्षेत्रों, उद्देश्यों तथा पद्धतियों से अवगत हो।

John W. Best (1963) ने कहा कि ''किसी भी अनुसंधानकर्त्ता को अपनी शोध समस्या के चयन, प्राक्कल्पना निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने के लिये ठोस आधारों की आवश्यकता होती है। यह ठोस आधार पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, अभिलेखों तथा पूर्व में संपन्न हुये शोध परिणामों से प्राप्त होते हैं। एतदर्थ अनुसंधानकर्त्ता को संदर्भ साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है।''

उपलब्ध शोध साहित्य के अध्ययन से शोधकर्त्ता को अपने विषय (समस्या) से संबंधित प्रारंभिक अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त होता है, समस्या को विस्तृत आकार मिलता है तथा अध्ययन की दिशा-निर्धारण में सहायता मिलती है। अनुसंधानकर्त्ता, विद्वानों, समाजशास्त्रियों एवं अनेक अन्य शोधकर्त्ताओं के पूर्व अनुसंधानों के ज्ञान का लाभ लेकर शोध की नई दिशा में आगे बढ़ता है।

P.V. Young (1975) के अनुसार - ''साहित्य में पुनरावलोकन के द्वारा अध्ययनकर्त्ता को एक ऐसी अंर्तदृष्टि मिल जाती है, जिससे अवधारणाओं को समझने में सहायता मिलती है तथा अनेक मान्यताओं का सत्यापन करने के तरीकों का ज्ञान हो जाता है। साहित्य के अध्ययन से अनेक ऐसी पद्धतियां और प्रविधियों का ज्ञान हो जाता है, जिन पर हो सकता है कि अध्ययनकर्त्ता ने पहले

विचार न किया हो, साथ ही अनावश्यक दुहराने की गलती से बचने तथा निराशाजनक फलदायक परिणामों की एक दिशा से दूर रहने में सहायता मिल सकती है।''

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन द्वारा शोधकर्त्ता तथ्यों की पुनरावृत्ति नहीं करता। शोध के विषय क्षेत्र के वर्तमान ज्ञान की सीमा रेखा की जानकारी प्राप्त हो जाती है तथा पूर्व शोधकर्त्ताओं के द्वारा सुझाई हुई समस्याओं की जानकारी मिल जाती है। समस्या विशेष की परिसीमाओं को समझने में तथा उसे सारगर्भित बनाने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त भूतकाल की दशाओं में हुये शोधों को नई दिशाओं में प्रयोग करके देखने पर आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है।

अध्ययन हेतु लिया गया प्रस्तुत शोध विषय पूर्णतः मौलिक है। पाश्चात्य तथा पूर्वी देशों के संदर्भो का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षा अथवा मनोविज्ञान की दृष्टि से सर्वथा अछूता है। यह अध्ययन नैतिक मूल्यों से संबंधित है, जिसमें शोध समस्या में प्रयुक्त विभिन्न चरों से संबंधित उन सभी अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है जो शोध अध्ययन के किसी भी क्षेत्र पर प्रकाश डालते हैं। शोधपरक् ग्रंथ तथा पत्रिकाएँ प्रस्तुत शोध विषयक्रम में महत्वपूर्ण दिशा निर्देश करती हैं। यह संदर्भ, प्रस्तुत शोध विषय को चयन करने, अवधारणा को स्पष्ट करने तथा अध्ययन के महत्व को स्थापित करने में कुछ प्रकाश अवश्य डालते हैं। भारतीय शोध सर्वेक्षणों का अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि प्रस्तुत शोध अध्ययन के कतिपय संदर्भो को छूते हुये कुछ अध्ययन प्राप्त हुये हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संबंध में शोधकर्त्री ने संदर्भ साहित्य की समीक्षा निम्न उपशीर्षकों के अंतर्गत संपन्न की है :-

<u>नैतिक विकास से संबंधित अध्ययन</u>

Parikh (1980)[99] ने खोज की कि वे अभिभावक जो कम स्तर का शक्ति दृढ़ कथन (दाता) एवं उच्च स्तर का प्रोत्साहन एवं प्रेरक अनुशासन का उपयोग करत है, उनके बालक नैतिक

रूप से परिपक्व होते हैं।

Haffman (1982)[149] ने ज्ञात किया कि बालकों के नैतिक विकास में अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Stengel, Susan R. (1982)[231] ने 'छोटे बालकों की नैतिक शिक्षा' विषय पर एक शोध लेख लिखा। इसमें इन्होंने यह निर्णय लिये कि छोटे बालकों को संसार में समायोजित होने के लिये तथा नैतिकता को समझने के लिये किस प्रकार अनुशासन में रखना व शिक्षा देना चाहिये। यदि कोहेलबर्ग (1969) की नैतिक तर्क संबंधी अवस्थाओं को छोटी आयु से ही बालकों की शिक्षा में सम्मिलित किया जावे तो इससे अभिभावक तथा शिक्षक को लाभ मिल सकता है तथा बालक अपनी विकासात्मक अवस्था के साथ-साथ धनात्मक न्याय का प्रत्यय विकसित कर सकता है। यद्यपि छोटा बालक स्व-केन्द्रित होता है, परन्तु उनकी बौद्धिक विकास संबंधी क्रियाओं के साथ नैतिकता तथा सामाजिकता की शिक्षा भी जोड़ी जा सकती है। इससे बालकों के भविष्य में नैतिक विकास में सहायता मिलेगी तथा बालक के जीवन में नैतिकता की नींव पड़ेगी। घर तथा कक्षा में नैतिक वातावरण निर्मित कर नैतिकता का प्रथम पाठ पढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा संचार तकनीक का उपयोग करके नैतिक वाक्यों एवं अभिवृत्तियों द्वारा तथा समस्याएँ सुलझाने संबंधी तर्क देकर नैतिक शिक्षा दी जा सकती है। बालक की नैतिक वृद्धि के लिये कम से कम 4 वर्ष की आयु से समूह सभाओं का आयोजन किया जाना चाहिये। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि प्रत्येक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम में नैतिक मूल्यों के विकास का कार्यक्रम जोड़ा जाना चाहिये। अतः पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय नैतिक शिक्षा को स्थान दिया जाना आवश्यक है।

Levin, David M. (1982)[166] ने अपने शोध कार्यों द्वारा स्पष्ट किया कि समाज में नैतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा देने के लिये, नैतिक प्राकृतिक तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिये तथा इसके लिये मन व शरीर का उपयोग किया जाना चाहिये तथा छोटे बालक को ऐसे अनुभव

प्रदान किये जाने चाहिये, जिससे वह विभिन्न परिस्थितियों में नैतिक शिक्षा ग्रहण कर सके। इस प्रकार बालक स्वयं का शरीरिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी प्राप्त कर सकेगा एवं नैतिक समुदाय का निर्माण करने के लिये बालक की श्रेष्ठ नींव का निर्माण हो सकेगा।

Helkama, US (1983)[147] ने 'नैतिक तर्क (चिंतन) तथा नैतिक विकास' पर शोध अध्ययन किया। प्रथम अध्ययन के लिये 116 पूर्व किशोर, किशोर तथा पूर्व प्रौढ़ का आधे घंटे तक नैतिक निर्णय संबंधी इन्टरव्यू लिया गया। प्राप्त उत्तरों को कोहेबर्ग स्कोरिंग मापनी (1969 व 1976) के आधार पर स्कोरिंग निर्देशिका स्कोर (1979) किया गया। द्वितीय अध्ययन में रेण्डम निदर्शन विधि द्वारा 18 से 65 वर्ष की आयु के 83 लोगों को कोहेलबर्ग हिन्ज (Heinz) मापनी दी गई तथा इनसे नैतिक मूल्य संबंधी सर्वेक्षण कार्य कराये गये। दोनों अध्ययन से प्राप्त आंकड़े यह बताने में सक्षम थे कि नैतिक तर्क की विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्तियों के मूल्यों में एकांकी वृद्धि तथा एकांकी न्यूनता दिखाई देती है। उच्च नैतिक मूल्य वाले व्यक्तियों में परंपरागत मूल्यों का बाहुल्य पाया गया।

Saxena & Sudarshan (1984)[208] ने 10 से 15 वर्ष के भारतीय बच्चों में नैतिक निर्णय के विकास में आयु, लिंग एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के अंतरों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले, जिनके अनुसार 10 से 15 वर्ष की आयु के दौरान नैतिक स्तर में परिवर्तन का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता, निष्कर्ष उच्च सामाजिक वर्ग के पक्ष में थे, कोई लिंग भेद नहीं था, नैतिक निर्णय के स्तर व विशिष्ट पारिवारिक पृष्ठभूमि के गुणों में सकारात्मक संबंध था।

Peterson et.al. (1984)[194] ने देखा कि उच्च नैतिक मूल्यों वाले माता-पिता के बालक भी उच्च नैतिक मूल्य एवं नैतिक निर्णय क्षमता वाले तथा परोपकारी पाये जाते हैं।

Eran (1985)[257] ने माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी बालक-बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं की अपेक्षा शहरी

छात्र-छात्राओं को विभिन्न नैतिक मूल्यों में पिछड़ा पाया गया। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नैतिक मूल्य अधिक पाये गये।

Hommers, Wilfried (1985)[152] ने 6.6 वर्ष के 40 किण्डर गार्टन बालकों, 8.6 वर्ष के 40 प्राथमिक शाला के बालकों तथा 25.9 वर्ष के 40 विश्वविद्यालयीन बालकों के 'नैतिक निर्णय' को जानने के लिये एक अध्ययन किया, जिसमें बालकों को 12 कहानियां सुनाई गई, जिसमें बालक दूसरे बालक के महत्वपूर्ण स्टेम्प्स को नष्ट कर देता है, जबकि कुछ कहानियों में स्टेम्प्स दुर्घटनावश नष्ट हो गये थे, कुछ में उचित देखभाल न होने के कारण तथा कुछ में जानबूझकर नष्ट किये गये थे। बालकों को नष्ट किये गये स्टेम्प्स के बदले मुआवजा देना था। बालकों को इसके लिये अनेक विकल्प प्रदान किये गये, जैसे-स्टेम्प्स नहीं देना, आधे स्टेम्प्स देना या खराब किये स्टेम्प्स के दोगुने स्टेम्प्स देना। बालक के नैतिक मूल्यों को मापने के लिये 20 बिन्दुओं की एक द्विध्रुवीय अच्छी बुरी मापनी तैयार की गई। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि बालकों का नैतिक निर्णय, मुआवजे से अधिक प्रभावित था, जबकि उनके निर्णय गलती करने की क्रिया से संबंधित नहीं थे, जबकि वयस्कों द्वारा किये गये नैतिक-निर्णय में दोनों ही कारकों को समान महत्व दिया गया था।अतः निर्णयों को मुआवजा सिद्धांत पर आधारित करना संभव नहीं था।

Sapozhnikova (1985)[206] ने 'किशोर बालकों के नैतिक विकास' नामक शीर्षक से एक शोध लेख का प्रकाशन किया, जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के बालकों के नैतिक मूल्यों से संबंधित व्यवहारिक नियंत्रण करने की योग्यता का अध्ययन किया गया। इस योग्यता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि जो कारक नैतिक विकास से धनात्मक रूप से संबंधित थे, उनमें योग्यता विकसित करने हेतु किशोर बालकों को स्व-प्ररित करने के सुझाव प्रस्तुत किये गये।

Sharma, S, (1986)[254] ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में बुद्धि के विकास

के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है।

Tiwadi (1987)[261] ने किशोरावस्था में धार्मिक और नैतिक विकास विषय पर अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं में धर्म व नैतिकता संबंधी ज्ञान शहरी छात्र-छात्राओं की अपेक्षा अधिक है एवं इस ज्ञान का विभिन्न कक्षाओं में उत्तरोत्तर विकास हुआ है।

Bhatnagar, (1988)[258] ने 'किशोरावस्था के छात्रों में नैतिक मूल्य और समायोजन' विषय पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि नैतिक दृष्टि से सजग छात्राएं सर्वाधिक कॉन्वेंट स्कूल में तथा सबसे कम निजी स्कूलों में पाई गई। राजकीय स्कूलों का स्थान इन दोनों के मध्य में था। नैतिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ समायोजन भी उच्च स्तर का होता है। निजी विद्यालयों में समायोजन तथा नैतिक मूल्य का सहसंबंध ऋणात्मक है जबकि कॉन्वेंट स्कूलों में धनात्मक है।

Perry Kedam (1988)[196] द्वारा 'बालकों के नैतिक मूल्यों तथा नैतिक व्यवहार के विकास पर धार्मिक शिक्षा के प्रभाव' का अध्ययन किया गया तथा बालकों के नैतिक निर्णय धार्मिक शिक्षा से धनात्मक रूप से संबंधित पाये गये।

Agarwal & Pandey (1989)249 ने अपने अध्ययन में छात्र-छात्राओं का मूल्य मापन किया व पाया कि अधिकांश मूल्यों में छात्रों एवं छात्राओं में पर्याप्त सार्थक अंतर पाया जाता है अर्थात् अधिकांश मूल्यों के प्रति उनके दृष्टिकोण में भिन्नता है।

Verma & Sinha (1989)[240] ने 6 से 11 वर्ष के बच्चों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया तथा न्यादर्श का चयन मिशनरी स्कूल तथा वर्नाक्यूलर स्कूलों से किया। शोधकर्त्ता ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग कर 14 मौलिक मूल्यों पर विद्यार्थियों का रेटिंग किया और पाया कि वर्नाक्यूलर विद्यालयों की शिक्षा का मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि मिशनरी विद्यालयों की शिक्षा का प्रभाव अमूर्त चिंतन वाले मूल्यों पर पड़ता है।

Curry,-Nancy-E. et. al. (1990)[17] ने मानवीय जीवन मूल्यों की संवेदना विकसित

करने तथा स्वाभिमान विकसित करने के संबंध में यह शोध कार्य किया। इसमें बालकों को सहभागी क्रियाओं के द्वारा 'स्व' के संबंध में संवेदना विकसित करने की शिक्षा दी गई। क्रियाकलापों के बाद उसे मूल्यांकित करने के अवसर भी प्रदान किये। इसके अंतर्गत स्नेह, सच्चाई, शक्ति, सीमाएँ, स्वायत्तता, पहल तथा नैतिकता और प्रतिस्पर्धा को सम्मिलित किया गया। इसके अलावा सामाजिकता व स्वनियंत्रण को भी इनके खेल में शामिल किया गया। इसके बाद बालकों से यह पूछने का प्रयास किया कि बालक अपनी भूमिका के विषय में क्या सोचते हैं। इस शोध कार्य का उद्देश्य अभिभावक, शिक्षक, प्रशासक तथा नीति-निर्धारकों को बालक के आत्म-सम्मान के संबंध में सूचना देना था। इन्हें यह भी बताया गया कि बालक के व्यक्तित्व विकास, सामाजिक, संज्ञानात्मक व नैतिक विकास के लिये बहुस्तरीय क्रिया का होना आवश्यक है।

Demon, William et. al. (1992)[18] ने 'स्व' को समझने में सामाजिक तथा नैतिक विकास की भूमिका पर शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष यह बताते हैं कि 'स्व' को समझने में सामाजिक अंत:क्रिया व नैतिकता का अत्यधिक योगदान होता है व कुछ महत्वपूर्ण मूल नैतिक प्रत्यय, 'स्व' को समझने में मदद करते हैं। यह व्यक्ति के मूल उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं व 'स्व' की रूचि व योगदान को प्रदर्शित करते हैं। लोग इसे किस प्रकार ग्रहण करते है? 'स्व' संबंधी संवेदना में इसका क्या योगदान है? तथा यह अंत:संबंधों के व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं? यह भी इस शोध कार्य में देखा गया।

Kazdin, -Alan-E (1992)[159] ने 'बालक एवं परिवार' विषय पर अध्ययन करते हुये ज्ञात करने की चेष्टा की कि बालक व उसके परिवार की विशेषताएं किस प्रकार उसके व्यवहार और सामाजिकता को प्रभावित करती हैं। अध्ययन हेतु उन्होंने 6-13 वर्ष आयु के 258 बालाकों को मनश्चिकित्सीय परिस्थितियों में उच्च व निम्न असामाजिक व्यवहारों के आधार पर विभाजित किया और देखा कि वे बालक जो बाह्य समाज विरोधी व्यवहार अधिकतम करते देखे जाते हैं, वे अधिक

नकारात्मक, अफसोस करने वाले एवं परिस्थितियों से क्रोधित होने वाले दिखाई दिये। वे उन परिवारों से थे जो अंतर्द्वन्दकारी एवं अपने परिवार के सदस्यों के साथ कम स्वतंत्र थे, जबकि निम्न असामाजिक व्यवहार करने वाले बालक कुछ ही सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदारी करने वाले, अधिक चिंता करने वाले एवं परिवार से कम सामाजिक लगाव दर्शाने वाले थे, उनके परिवार संगठित भी नहीं थे और वे नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों पर कम बल देने वाले थे।

Ma, Hing Keung (1992)[170] ने अपने अध्ययन में निरीक्षण किया कि परोपकारी बालकों में कम से कम एक अभिभावक, बालकों में नैतिक मूल्यों का संचार करते हैं और वे बालक के आदर्श के रूप में कार्य करते हैं।

De-La-Taille et. al. (1993)[125] ने 6 से 14 वर्ष के बालकों के नैतिक मूल्यों तथा अपराध स्वीकृति व नैतिक सीमा रेखाओं का अध्ययन किया। अपने शोध कार्य में यह देखा कि नैतिक मूल्यों के विकास में अपराध स्वीकृति की क्या भूमिका है तथा वे कौन से तथ्य हैं, जो व्यक्ति की नैतिक सीमा रेखा निर्धारित करते हैं। इस शोध कार्य हेतु 5 से 14 वर्ष के 50 ब्राजीलियन के पूर्वशालेय, शालेय व किशोरावस्था के बालक लिये गये। इन्हें दो प्रकार की परिस्थितियों में रखा गया। प्रथम परिस्थिति में गंभीर अपराध स्वीकृति को प्रदर्शित किया गया व द्वितीय परिस्थिति में कम गंभीर समस्याओं पर अपराध स्वीकृति का अवलोकन किया गया। दोनों ही परिस्थितियों से संबंधित बालकों के अभिमतों का निरीक्षण किया गया व आयु के अनुसार निर्णयों का मूल्यांकन किया गया।

Edwards,-Carolyn-Pope (1993)[25] ने संस्कृति तथा जीवन मूल्यों के निर्माण के संबंध में दो विभिन्न संस्कृतियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें माता-पिता तथा अन्य सामाजिक अभिकर्त्ता की भूमिका बालक के नैतिक ज्ञान को बढ़ाने में देखी गई। प्रतिदिन की दैनिक दिनचर्या में किस प्रकार माता-पिता नैतिक मूल्यों को निर्मित व स्थानान्तरित करते हैं तथा क्या

इसका कोई सांस्कृतिक तरीका है? अपने बच्चों को कार्य तथा खेल सिखाते समय क्या वे निर्धारित तरीकों का उपयोग करते हैं? शोध के प्रथम चरण में पारिवारिक वातारवरण में ओयूजिस तथा केन्या समुदाय के 7 से 16 वर्ष आयु के 28 बालकों को सम्मिलित किया गया व द्वितीय चरण में 2 से 4 वर्ष के 4 वत्सावस्था के बालकों का कक्षा के वातावरण में अवलोकन किया गया। परिणाम यह बताते हैं कि बालक के नैतिक मूल्यों पर सांस्कृतिक तरीकों का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

Epps,-Kevin et. al. (1993)[26] ने बालकों की घृणा पद्धति पर अध्ययन करते हुये देखा कि बालक की सामाजिक व वातावरण जन्य परिस्थितियां उसके विकास हेतु आवश्यक आधार होती हैं। इन्होंने अधिकार व मनोवृत्तियों के संदर्भ में बालकों की मनोवृत्तियों, संज्ञान व नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया और नैतिकता बोध पर इन दोनों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित किया।

Thomus,-Robert Murray et. al (1993)[80] ने 'नैतिक तर्क तथा अनुचित कार्य के मध्य संबंध ज्ञात करने के लिये' एक शोध कार्य किया, जिसमें यह देखा गया कि अनुचित कार्य करने के बाद बालक उसका क्या नैतिक तर्क प्रस्तुत करते हैं। इसके अंतर्गत उत्तरदाताओं में पूर्व किशोरावस्था व पूर्व प्रौढ़ावस्था को सम्मिलित किया व उनसे निर्धारित प्रश्न पूछे गये तथा इन प्रश्नों को विभिन्न उत्तरदाताओं के नैतिक तर्क से जोड़ा गया, इसमें कुल 562 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया। परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि बालकों के नैतिक तर्क के स्तर व अनुचित कार्यों में सहसंबंध पाया गया।

Damon, -William (1994)[19] ने 'धनात्मक न्याय के विकास के संदर्भ में वितरण प्रणाली एवं सहभागिता पर नैतिक विकास' के संदर्भ में अध्ययन किया। बालकों की सहभागिता के क्रियाकलाप, उनके सामाजिक विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं? क्या बालक अपनी स्वत: की सहभागिता अपने स्वत: के साथ करता है या स्रोतों के साथ? क्या वह दूसरों के साथ सहभागिता इसलिये करता है कि वे उसे ठीक लगते हैं या सहभागिता के नैतिक मूल्य आधार हैं? क्या सहभागिता

के कई कारण एवं तरीके होते हैं? क्या बालक सहभागिता को विकास के अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग दर्शाते हैं? ये सभी प्रश्न बालकों में धनात्मक न्याय की स्थिति जानने हेतु आवश्यक हैं। साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि उपलब्ध स्रोत, प्रशंसा एवं अन्य पुरस्कार का नैतिक विकास में क्या महत्व है तथा विभिन्न अवस्थाओं में किस प्रकार बालक अंतर्द्वन्दों से बाहर आते हैं? अपने अध्ययन में इन्होंने वास्तविक जीवन में पुरस्कृत परिस्थिति का नैतिक विकास पर प्रभाव देखा।

Sarangi, -R.S. (1994)[104] ने नैतिक शिक्षा की दृष्टि से उड़ीसा के 100 प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा में उनकी रूचि का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि छात्र मानते हैं कि नैतिक शिक्षा के लिये विशेष प्रशिक्षित अध्यापक होने चाहिये। 88.9 प्रतिशत छात्र नैतिक वार्त्ताओं को महत्व देते हैं, 37.3 प्रतिशत छात्र नैतिक शिक्षा के लिये दूरदर्शन को सर्वाधिक स्थान देते हैं।

Smetana, -Judith -G (1994)[77] द्वारा नैतिकता को अमूर्तता, अस्पष्टता और व्यवहारिकता के संदर्भ में, अध्ययन किया गया तो अध्ययनकर्त्ता ने देखा कि नैतिक ज्ञान को मनोवैज्ञानिक अध्ययन में केन्द्र पर रखा जाना आवश्यक है, क्योंकि भाव और व्यवहार की भूमिकाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक व्यवहार एवं अंतर्द्वन्दात्मक सामाजिक समस्याएँ व्यक्ति में स्पष्ट रूप से नैतिक धरातल पर विभिन्नताएँ लाते हे। यही नहीं, नैतिक विकास के विवेकीकृत एवं जगतपरक् उपागम को भी पुनर्निर्मित किया जा कता है, क्योंकि की गई खोजों पर दृष्टिपात करने से यह विदित होता है कि क्षेत्र विशेष के संदर्भ में नैतिकता का विकास होता है जो भिन्नताओं व समानताओं दोनों का आधार बनता है। बालकों, किशोरों व प्रौढ़ों की नैतिक सोच इस बात को सुझाती है कि नैतिकता को अन्य प्रकार के सामाजिक ज्ञान के संबंध, स्थिति एवं विभक्तिकृत स्वरूप के संदर्भ में समझा जाना चाहिये, न कि नैतिक विकास के प्रयोगात्मक आधारों की मदद से नैतिकता की परिभाषा दी जानी चाहिये एवं सामाजिक क्षेत्रों से इसमें भेद किया

जा सके तथा विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में उत्पन्न होने वाली समाजिक समस्याओं को समझने हेतु नैतिकता का व्यवहारिक रूप अपनाया जा सके।

Silverman, -Linda-Kreger (1994)[220] ने 'प्रतिभावान बालकों की नैतिक संवेदनशीलता तथा उनके सामाजिक मूल्यांकन' पर शोध कार्य किया। कुछ व्यक्तित्व विशेषताओं तथा संज्ञानात्मक जटिलताओं के कारण प्रतिभावान बालक विशेष अनुभवों तथा जागरूकता का प्रदर्शन करते हैं। यह जागरूकता विभिन्न अवलोकनों व सैद्धांतिक कारणों में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। अतः अध्ययन यह ज्ञात करने के लिये किया गया कि क्या प्रतिभावान बालकों की नैतिक संवेदनशीलता भी विशेष होती है। इस शोध अध्ययन में प्रतिभावान बालकों को समाज के लिये अधिक उपयोगी बनाने के प्रयास किये गये एवं उनके समझने की आवश्यकता, तर्क, जटिलता तथा नैतिक मूल्य के संबंध का अवलोकन किया गया।

Diver, -S.et.al. (1995)[20] ने 'किशोरावस्था के बालकों के नैतिक विकास' का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने प्रतिरोध, प्रायश्चित, सुधार एवं प्रतिशोध पर विशेष रूप से कार्य किया। इसमें 9-21 वर्ष आयु के 136 किशोर लिये गये। यह शोध कार्य चार चरणों में पूर्ण हुआ। प्रथम चरण में एक सुसंगठित साक्षात्कार प्रणाली निर्मित की गई, जिसके संबंध में विभिन्न महत्वपूर्ण लोगों के विचार जाने गये। द्वितीय चरण में उन विचारों के विश्लेषण हेतु एक फ्रेमवर्क तैयार किया गया एवं तृतीय चरण में 136 बालकों का जो कि 9,14, 17 व 21 वर्ष के थे, साक्षात्कार लिया। चतुर्थ चरण में इन इन्टरव्यू के ऑडियो टेप तैयार किये गये व उनके परिणामों का विशलेशण किया गया। विश्लेषण के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि किशोरों के सुधार के लिये कौन सी योजना बनाई जानी चाहिये, जिससे उन्हें अपराध व अनुचित कार्यों से बचाया जा सके। उत्तर बाल्यावस्था प्रारंभिक युवाकाल एवं पूर्व प्रौढ़ावस्था में बालकों की बाह्य नैतिक तार्किकता प्रकाशित होती है। एवं उनके नैतिक तर्क में परिवर्तन दिखाई देता है।

Millard, -Janice - L (1995)[178] ने किशोर बालकों के नैतिक विकास के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये माध्यमिक स्कूल के बालकों का चयन किया, जो कि कक्षा 6 व 12 के विद्यार्थी थे। इसमें किशोर बालकों के आत्म-सम्मान, संज्ञानात्मक विकास, नैतिक चिंतन तथा संघर्ष से बचाव के कौशल संबंधी प्रश्नों का समावेश किया गया। इसमें विद्यार्थी तथा अध्यापक व प्रशासकों को सम्मिलित किया गया। सभी विषय उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे। विद्यार्थियों की आयु सीमा 12-16 वर्ष रखी गई। इन सभी विद्यार्थियों का उच्च शैक्षिक स्तर था, इसमें से कुछ विद्यार्थी ध्यान केन्द्रित न कर पाने की समस्या से संबंधित थे, कुछ उच्च क्रियाशीलता की समस्या से ग्रसित थे तथा कुछ अवसाद वाले विद्यार्थी भी सम्मिलित किये गये। प्रथम क्रिया के रूप में कुछ समूह निर्मित किये गये, जिसमें सभी प्रकार के विद्यार्थियों की सुरक्षा व आदर का ध्यान रखा गया। इच्छा व्यक्त करने पर उन्हें आवश्यक निर्देश प्रदान किये गये। द्वितीय चरण में सभी विषयों ने कम से कम एक सप्ताह तक आत्म-सम्मान को बढ़ाने वाली क्रियाएँ की, इसके अलावा कौशल विकास, मित्रों के साथ सहयोग व प्रकृति के साथ संबंध को भी बढ़ावा दिया गया। तृतीय चरण में सभी विषय का साक्षात्कार काउन्सलर से करवाया गया, जिससे विद्यार्थियों के कौशल, अभिवृत्ति व व्यवहारों पर बाह्य चुनौती देने वाली कार्य विधि का प्रभाव देखा जा सके।

Li-Liu et.al (1996)[167] ने 'प्राथमिक शाला विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों के विकास एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा का प्रयोगात्मक' अध्ययन किया। बालकों के नैतिक विकास व शिक्षा पर दो नैतिक आयाम का उपयोग करते हुये जिसमें न्याय एवं सरोकार प्रमुख तौर पर किये गये। यह अध्ययन प्राथमिक शालाओं के चौथी व पांचवी कक्षा के छात्र-छात्राओं पर किये गये। इसमें 160 सामान्य चायनीज बालक एवं बालिकाएं 4 शालाओं से लिये गये। इनमें से कुछ बालकों को शिक्षा की विभिन्न विधियों के अंतर्गत पुरूस्कृत करते हुये सिखाया गया व उनके नैतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया। एक सप्ताह की शिक्षा के बाद जब उनके मध्य तुलना की गई तो देखा गया कि शिक्षा के

पूर्व व शिक्षा के बाद बालकों में नैतिक मूल्यों की प्रमुखता पाई गई। इस प्रकार नैतिक मूल्यों के विश्लेषण के आधार पर नैतिक मूल्यों में परिवर्तन के आधार देखे गये।

Yuill, Nicola et.al. (1996)[245] ने 'बालकों की पूर्व इच्छाओं के प्रति परिवर्तनशील समझ' का अध्ययन करते हुये वस्तुगत से आत्मगत एवं नैतिकता के संबंध ज्ञात किये। इसमें उन्होंने अपने पूर्व अध्ययन के आधार पर बालकों के अंतर्विरोधी विकसित होने वाले संवेगों के बारे में निर्णय लिये। विशेष रूप से जब बालक अनैतिक क्रिया करता है। बालकों के निर्णय क्रमशः दुखदायी से सुख की ओर, जिसमें वे अपनी आत्मगत् मानसिक अवस्था व इच्छा की प्रशंसा करते देखे जाते हैं तथा सुखी से दुखी की ओर, जिसमें बालक अपने संवेगों में नैतिक मूल्यों की भूमिका स्वीकार करते हैं। 8 प्रयोगों द्वारा इस अंतर्द्वन्द का अध्ययन किया गया, जिसमें 3 से 10 वर्ष आयु के 142 बालकों को देखा गया, जिसमें बालक निरपेक्ष एवं अनैतिक क्रिया का निर्णय करते हैं, जो बालक दुखदायी से सुखदायी की ओर कष्टप्रद महसूस करते थे, उन्होंने अंतर्द्वन्दों के बारे में एकीकरण किया। 3 वर्ष का बालक इतना निर्णयकर्त्ता हो जाता है कि वे अपने गलत काम को अपनी सफलता या दुखदायी समझने लगता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि उसके पीछे नैतिकता के आधार क्या हैं?

Schulman,-Michael (1996)[213] ने 'बालकों में देखरेख संबंधी रूपरेखा, जिसमें किशोरों हेतु उपलब्ध आवास सुविधाओं का उनके नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव' का अध्ययन किया। इसमें किशोरों को व्यवहार प्रलोभन एवं नैतिक शिक्षा इसलिये दी गई ताकि वे अपने व्यवहारों पर नियंत्रण व आवश्यकता पड़ने पर उनमें संशोधन कर सकें। यही नहीं अंततोगत्वा वे यह जान सकें कि कौन सी बात प्रोत्साहनकारी है। वे किशोर जिनके व्यवहार के धनात्मक पक्षों को अन्यों के संदर्भ में परखा गया एवं प्रोत्साहित किया गया, वे अधिक आपस में सहयोगी देखे गये व उनका जीवन समाज के लिये अधिक रचनात्मक था। इन कार्यक्रमों में आवास में रहने वाले, दूसरों की परवाह

करने वाले, अधिक पुरूस्कार पाने वाले और अधिक अच्छे स्तर के घोषित किये गये। इन कार्यक्रमों में पुरस्कार पद्धति एवं अन्य पक्ष जैसे कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण एवं परामर्शदाताओं का अधिक प्रभावी नैतिक शिक्षक बनना उपयोगी सिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम के अध्ययन का लक्ष्य आवास में रहने वाले बालकों को नियमों का आज्ञाकारी बनाने की तुलना में उन्हें अच्छा व स्वयं के प्रति आज्ञाकारी बनाना था।

Nucci, Larry-P. (1996)[63] ने नैतिकता व्यक्तिगत स्वतंत्रता से संबंधित अध्ययन किया। शोध के निर्णय यह बताते हैं कि बालकों के लिये व्यक्तिगत स्वतंत्रता आवश्यक है, इससे वयस्कों एवं बालकों के अंतर्संबंधों में सुधार आता है एवं वे मानव कल्याण से अधिक जुड़ाव प्रदर्शित करते हैं।

Smalt, -Ruth-Herron (1997) [228] ने 6 से 8 वर्ष की बालिकाओं के नैतिक तर्क का अध्ययन करने हेतु शोध कार्य किया। इसमें से 4 बालकिाओं का साक्षात्कार एवं अवलोकन तथा 2 बालिकाओं की विभिन्न कारकों से तुलना की गई। प्रथम चरण में बालिकाओं की नैतिक तर्क शक्ति का अध्ययन किया गया तथा यह देखा गया कि अपने स्काउटिंग अनुभवों के दौरान क्या बालिकाएँ अपने नैतिक तर्कों का उपयोग करती हैं। अध्ययन पूर्ण करने हेतु साक्षात्कार, अवलोकन व नैतिक प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि 6 से 8 वर्ष की बालिकाओं को यदि नैतिक अनुभव दिये जायें, तो वे उन्हें प्रदत्त, नैतिक भूमिकाओं का सवंहन कर सकती हैं। तथा स्वयं को साहसी प्रमाणित करते हुए विभिन्न परिस्थितियों का सामना कर सकती हैं। निष्कर्ष में ब्राउनी व नॉनब्राउनी बालिकाओं की सच्चाई, उचित-अनुचित व स्वयं के प्रति आदर संबंधी भावनाओं में स्पष्ट अंतर पाया गया।

Kochanska,-Grazyna et.a al. (1997)[47] ने 'पूर्व शालेय व टोडलर बालकों' पर शोध कार्य किया व उनका सामाजिक-नैतिक विकास देखने का प्रयास किया। इनमें उन सभी

प्रेरणा देने वाले निर्देशों को भी ध्यान में रखा गया, जिससे बालकों में जीवन मूल्य स्थानांतरित होते हैं। बालक की चेतनता के विकास में व्यक्तिगत विभिन्नताओं को भी ध्यान में रखा गया। माता-पिता व बालकों के संबंध का प्रभाव भी बालकों के सामाजिक-नैतिक विकास पर देखा गया। निर्णय यह बताते हैं कि नैतिकता का विकास वत्सावस्था तथा पूर्व-बाल्यावस्था से ही प्रारंभ हो जाता है। अत: बालकों को इस आयु से ही सामाजिक-नैतिक शिक्षा दी जा सकती है। माता-पिता के समाजीकरण के प्रकार तथा उनके अंत: संबंधों पर बालक का सामाजिक-नैतिक विकास निर्भर करता है।

Morrison et. al. (1997)[181] ने 'नैतिक मूल्यों के विकास व लिंग भेद' पर अध्ययन किया। इसमें नैतिक मूल्य व उनके विकास में अपने 'स्व' व अन्यों के सही व गलत व्यवहारों के परिपेक्ष्य में अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने सुझाया कि सभी संस्कृतियों में मूल्यों का सार्वजनीय स्रोत होता है, क्योंकि मनुष्य अपनी आंतरिक एवं जन्मजात योग्यताओं के आधार पर नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं। चूंकि मनुष्य परस्परिक अंत:क्रिया एवं प्राथमिक देखरेख के आधार पर शक्तिशाली संबंध निर्मित करते है। यह पारस्परिकता, जीवन-पर्यन्त चलती है, एवं सहमति तथा असहमति के अनुभवों के रूप में प्रकाशित होती रहती है। इसकी निरंतरता एवं परिपक्वता के आधार पर ही नैतिक मूल्यों की ठोस नींव तैयार होती है। इन्होंने अपने अध्ययन में नैतिकता व लिंग भेद की भी विवेचना की, वह भी बालकों एवं बालिकाओं में विभिन्न विकासवादी मार्गों के संदर्भ में।

Grusec et. al. (1997)[32] ने 'अभिभावकत्व एवं बालकों के मूल्यों के आत्मीकरण' विषय पर अध्ययन किया, जिसकी सहायता से सामाजिक व नैतिक मूल्यों के सीखने एवं अभिभावकों की सीखने में भूमिका को देखा गया। अपने अध्ययन में इन्होंने अभिभावक प्रकार व बच्चों के लालन-पालन के दर्शन का परीक्षण करना जरूरी समझा। यही नहीं, बाद में उन्होंने छोटे बालकों, युवा बालकों व किशोरों के विकास में अभिभावकों द्वारा अपनाये गये तरीकों को भी खोजा और

इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि किस प्रकार अभिभावकों द्वारा अपनाये गये तरीके मूल्यों के हस्तांतरण, प्रस्तुतीकरण व विभिन्न प्रकार के सैद्धांतिक निर्णयों को एकीकृत करते हैं। इन्होंने अभिभावकों का प्रभाव सामाजिक व जैवकीय संदर्भों में भी देखा और इस प्रकार समाजीकरण के प्रभाव, सिद्धांत एवं खोजों से बालक का विकास किस तरह प्रभावित है, पर निर्णय दिया। साथ ही अभिभावकों की भूमिकाओं की जटिलताओं का बालक के नैतिक विकास पर प्रभाव का विश्लेषण किया।

Zern, David-S. (1997)[246] ने 'किशोरों की मनोवृत्तियों का उनके नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होने संबंधी' दीर्घकालीन अध्ययन किया। ये किशोर 12 से 22 वर्ष आयु के मध्य थे, ऐसे 2861 किशोर पाये गये। इन पर लगातार 15 साल तक प्रदत्त संकलन किया गया, उन्हीं की प्राथमिक, सेकेण्डरी व महाविद्यालयीन स्तर पर प्राप्त सूचनाओं को मापते हुये यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि इन किशोरों का नैतिक मुद्दों पर मार्गदर्शन किस इकाई द्वारा किया जाऐ- परिवार, शाला, धार्मिक संस्थाएं, मित्रमंडली या व्यक्ति का स्वतः के द्वारा। क्रियाकर्त्ताओं की जब प्रथम तीन वर्ग में तुलना की गई तो विदित हुआ कि इन संस्थाओं का नैतिकता पर औसत प्रभाव पड़ता है। और जब यह अंतर लिंग भेद व आयु के अंतर के धरातल पर देखा गया तो नैतिकता के विकास पर प्रभाव में स्पष्ट अंतर देखे गये।

Stephens, -Dawn -E.et. al. (1997)[232] ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि खिलाड़ियों की निर्देशित नैतिकता तथा स्वीकृत नैतिकता में अंतर पाया जाता है। इस शोध कार्य का उद्देश्य नैतिकता संबंधी नवीन मापनी का निर्धारण करना था, जिससे विभिन्न खेलों में उचित खेल संबंधी नैतिकता का विकास हो सके। इस शोध हेतु 9 से 14 वर्ष की 212 बालिकाएँ थीं, जिनमें स्वभावगत् विशेषता, निर्णयात्मक क्षमता, नैतिक प्रेरणा तथा टीम के नियम बनाने का प्रत्यक्षीकरण विद्यमान था, जिससे धोखेबाजी, आक्रामकता तथा झूठ बोलने की प्रवृत्ति को रोका जा सके। शोध

निर्णायों को वर्तमान में उपलब्ध नैतिक साहित्य से सत्यापित किया।

Kyung-Hee-Kim, Maria (1999)[163] ने 'नैतिक सामाजिक निर्णय' विषय पर एक शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बालकों तथा किशोरों के नैतिक-सामाजिक तर्क का अध्ययन करना था, जिसमें ईमानदारी तथा दयालुता से संबंधित कुछ कहानियां बालकों को हल करने के लिये दी गई इससे बालकों ने ईमानदारी तथा दयालुता के मध्य संबंध को ग्रहण किया। यह टेस्ट 300 बालकों एवं 231 किशोरों पर किया गया। सामाजिक-नैतिक स्तर ज्ञात करने तथा लैंगिक विभिन्नता देखने के लिये काई वर्ग मान का उपयोग किया गया। परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि विभिन्न किशोरों तथा बालकों के नैतिक-सामाजिक स्तर में अंतर पाया जाता है तथा सामाजिक-नैतिक निर्णय में लैंगिक विभिन्नता स्पष्ट दिखाई देती है।

Sharma (1999)[101] ने जयपुर शहर व ग्रामीण क्षेत्र के सेकेण्डरी-माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष बताते हैं कि लिंग एवं परिवेश का नैतिक मूल्यों पर सार्थक प्रभाव पाया गया। शहरी छात्राओं की तुलना में छात्रों का नैतिक मूल्य स्तर उच्च पाया गया तथा ग्रामीण छात्रों की तुलना में छात्राओं का नैतिक मूल्य स्तर उच्च पाया गया। शहरी छात्राओं की तुलना में ग्रामीण छात्राओं का नैतिक स्तर उच्च पाया गया।

Sharma (1999)[101] ने जयपुर शहर के भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यालय संगठन की भिन्नता के आधार पर बालकों के नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया व देखा कि विद्यालय के संगठन व वातावरण का प्रभाव बालकों के नैतिक विकास में भिन्न -भिन्न पाया जाता है।

Sharma (1999)[101] ने 'शहरी व ग्रामीण छात्र-छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं नैतिक विकास' विषय पर अध्ययन में बताया कि छात्र-छात्राओं का बौद्धिक स्तर नैतिक मूल्य से प्रभावित होता है, साथ ही नैतिक मूल्य भी प्रभावित करते हैं।

Pancer, -Smark (1999)[64] ने केनेडा के युवाओं की सामुदायिक सेवाओं की संलग्नता में सामाजिक व पारिवारिक परिवेश का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह सुझाव देते हैं कि युवाओं को सामुदायिक सेवाओं में संलग्न करने के अनेक तरीके हैं, जिससे उन्हें सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनाया जा सकता है। इस शोध में सामाजिक जिम्मेदारियों के अधिग्रहण में परिवार का महत्व भी ज्ञात हुआ अर्थात् अभिभावक अपने युवा बालकों के व्यवहार में नैतिक मूल्यों को विकसित कर सकते हैं व स्वयं भी एक आदर्श के रूप में अपने बालकों के सम्मुख प्रस्तुत हो सकते हैं व अपने बालकों को दूसरों की देखभाल करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। शाला तथा धार्मिक स्थल भी नैतिक शिक्षा के पर्याय हो सकते हैं, जिसमें अनेक ऐच्छिक क्रियाएँ प्रारंभ करके सामाजिक संलग्नता को बढ़ावा दिया जा सकता है। युवावस्था में मित्रमंडली का बहुत अधिक महत्व होता है, अतः यह समूह में भी इस कार्य को कर सकते हैं।

Hodin, -Louise-Klein (2000)[148] ने 'जेविश शिक्षा का नैतिक तर्क पर प्रभाव' जानने हेतु जेविश हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया, क्योंकि जेविश शिक्षा में सदैव नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। अधिकांश जेविश माता -पिता अपने बालकों को जेविश शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं, परन्तु वर्तमान युग में जेविश माता-पिता अन्य शालाओं में भी शिक्षा देना पंसद करते हैं। वे ऐसी जेविश शालाओं को भी देख रहे हैं जो दिन के स्कूल (डे स्कूल) हैं। इस शोध अध्ययन में समूहों का अध्ययन किया गया, जिसमें एक समूह के विद्यार्थी परंपरागत जेविश शिक्षा से संबंधित थे, जबकि दूसरे समूह के विद्यार्थियों ने अन्य शालाओं में भी शिक्षा प्राप्त की थी। ये दोनों ही प्रकार की शालाएँ प्रभावशाली शालाओं की श्रेणी में आती थी। इन बालकों पर Defining Issues Test (D.I.T.) लागू किया गया। परिणाम यह बताते हैं कि जेविश शिक्षा नैतिक तर्क को अधिक प्रभावित करती है, जो बालक पूर्व किशोरावस्था की आयु तक जेविश शिक्षा पाते हैं, उनमें नैतिक मूल्यों का बाहुल्य पाया गया, परन्तु दोनों समूहों में बहुत कम सार्थक अंतर दिखाई दिया, परन्तु

निर्णय धार्मिकता में अधिक विभिन्नता दर्शाते हैं।

Laupa, -Marta (ed.)(2000)[53] ने 'किशोर बालकों के उचित एवं अनुचित प्रत्यय के विकास' के अध्ययन के संबंध में शोध कार्य किया। इस अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया कि बालकों तथा पूर्वप्रौढ़ावस्था के व्यक्तियों में उचित-अनुचित का निर्णय करने की कैसी क्षमता है। शोधकर्त्ता ने इस संबंध में नैतिक विकास के प्रत्यय तथा तर्क संगत प्रत्ययों का अध्ययन किया तथा व्यक्तिपरक् व वस्तुपरक् सच्चाई के मध्य अंतर देखने का प्रयास किया। इसके अलावा विभिन्न निर्णायों में सहसंबंध देखने का भी प्रयास किया गया।

Goodman,-Joan-F.(2000)[140] ने 'पूर्व शालेय बालकों की नैतिक शिक्षा' पर शोध कार्य किया, जिसमें शिक्षा के दो आयाम लिये गये-एक परंपरागत व दूसरा प्रगतिशील। परंपरागतवादियों का विश्वास है कि नैतिक मूल्य, बाह्य जगत से संबंधित व विश्वव्यापी होते हैं व उन्हें बालक के चरित्र में उतारने के लिये अनुशासन, साहस, आज्ञाकारिता तथा विश्वास से प्रत्यक्ष निर्देशित करने की आवश्यकता होती है। और इन्हें विकसित करने हेतु बालक में कुछ नियमों का नियमन करना आवश्यक है, जबकि प्रगतिवादी यह विश्वास रखते हैं कि नैतिक जीवन-मूल्य वे कारक हैं जो कि सामाजिक संदर्भ पर आधारित हैं और इन्हें विकसित करने हेतु बालकों को सामाजिक-नैतिक वातावरण, जिसमें निःस्वार्थता, देखभाल, सहनशीलता आदि कारकों की आवश्यकता होती है। अतः जो योजनाएँ प्रारंभ की जाएं, उनमें दोनों ही तथ्यों को ध्यान में रखकर आवश्यकतानुसार संतुलित किया जावे। यदि परंपरागत विधियों का उपयोग करना है तो बालक के संज्ञानात्मक विकास, नैतिक वास्तविकता तथा स्वीकृति को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस प्रकार बालक में नैतिक पहचान को निर्मित करने के लिये इन दृष्टिकोणों का सहारा लिया जा सकता है।

Zhai, -Hongchang et. al (2000)[247] ने सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों के स्व-मूल्य की संवेदना को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। इसमें सेकेण्डरी स्कूल के 774

बालक-Key स्कूल, सामान्य स्कूल व व्यावसायिक स्कूल से चुने गये। इन पर 'सेल्फ वेल्यू सेंस स्केल' मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में सामान्य स्व-मूल्य संवेदना, नियमित सामाजिक स्व-मूल्य संवेदना, विशेष सामाजिक स्व- मूल्य संवेदना व नियमित व्यक्तिगत स्व-मूल्य संवेदना, अंतसंबंध मूल्य, मानसिक मूल्य, नैतिक मूल्य, ब्रायोलॉजिकल व पारिवारिक मूल्य को सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों का वातावरणीय कारक जैसे अभिभावकों का शैक्षिक स्तर, व्यवसाय, पारिवारिक-आर्थिक स्तर तथा सीखने संबंधी उपलब्धि का परीक्षण भी किया गया। स्व-मूल्य के निर्धारण में पारिवारिक कारकों ने महत्वपूर्ण स्थान पाया। इसके अलावा विद्यार्थियों की सीखने संबंधी उपलब्धि पर रहन-सहन संबंधी वातारण, पारिवारिक-आर्थिक स्तर, अभिाभवक, व्यवसाय व पारिवारिक ढांचे का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई दिया।

Budhal, -Rishichand-Sookai (2000)[113] ने एक शोध कार्य किया, जिसमें शाला में अकेले रहने वाले या अधिक घुलने-मिलने वाले बालकों के संज्ञानात्मक, नैतिक, सामाजिक व व्यक्तित्व विकास का अध्ययन किया व यह पाया कि जिन बालकों को उनकी मित्र मंडली द्वारा तिरस्कृत किया जाता है, वे अकेले रहना पसंद करते हैं। यह अध्ययन प्रायमरी व सेकेण्डरी स्कूल के बालकों पर किया गया। इसका उद्देश्य अभिभावकों व शिक्षकों हेतु प्रभावशाली कार्यक्रम विकसित करना था। जब सामाजिक अकेलेपन के कारकों का अध्ययन किया गया, तब सामाजिक प्रतिस्पर्धा, आत्म-सम्मान, मनोवैज्ञानिक कारक, बुद्धि, शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक मूल्य, शारीरिक अक्षमता, खेल में सहभागिता व शारीरिक आकर्षण मुख्य कारक ज्ञात हुए। इसके अलावा माता-पिता का वैवाहिक समायोजन, अभिभावक का निरीक्षण, अभिभावक की स्वीकृति, अभिभावक सत्ता, अभिभावक संघर्ष आदि कारक भी समाने आये। सामाजिक अकेलेपन के संदर्भ में शारीरिक, संज्ञानात्मक, व्यक्तित्व, नैतिक व सामाजिक पक्षों का अध्ययन किया गया। निर्णय यह बताते हैं कि स्वाभिमान तथा सामाजिक प्रतिस्पर्धा एवं आज्ञाकारिता सामाजिक अकेलेपन के लिये सर्वाधिक

जिम्मेदार हैं। इसके अलावा परिवार में बोली जाने वाली भाषा भी सामाजिक अकेलेपन को प्रभावित करती है। इस हेतु अभिभावक एवं शिक्षकों को निर्देशित किया कि सामाजिक रूप से अकेले बालकों को पहचानें व उन्हें सामाजिक बनाने का प्रयास करें।

Arya, S. (2000)[90] ने किशोरों में नैतिक मूल्य के विकास के लिये एक प्रयोगात्मक अध्ययन में बताया कि नैतिक मूल्य के विकास पर मानसिक योग्यता, शैक्षिक कार्यक्रम व सामाजिक-आर्थिक स्तर की मित्रता का सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

Lee, Kang (2000)[54] ने शोध कार्य किया, जिसमें 'बालकों की झूठ बोलने संबंधी भाषा क्रिया का अध्ययन' किया गया, इसमें क्रिया भाषा-सिद्धांत व विचार का उपयोग किया गया तथा बालकों के झूठ बोलने संबंधी ज्ञान के विकास का अध्ययन विशेष रूप से नैतिक जीवन मूल्यों के साथ किया गया। शोधकर्त्ता ने पाया कि बालक जानबूझकर व अनजाने में, दोनों ही प्रकार से झूठ बोलते हैं। इस प्रत्यय को देखने हेतु शेधकर्त्ता ने केनेडा व चाइना में बालकों के झूठ के प्रत्यय व नैतिक नियंत्रण का अध्ययन किया व पाया कि किस प्रकार झूठ बोलने की क्रिया में सांस्कृतिक विभिन्नता पाई जाती है।

Kakkar, A. (2001)[45] ने अभिभावक स्वीकृति-अस्वीकृति से संबंधित व्यक्तिगत मूल्य संबंधी शोध में आगरा शहर के शासकीय अनुदान प्राप्त विभिन्न इंटरमीडिएट शालाओं की 16 से 17 वर्ष आयु की 150 किशोर बालिकाओं पर PARQ (वयस्क फार्म), PVQ मूल्य मापन हेतु प्रयुक्त किया। निष्कर्ष बताते हैं- प्रथम, किशोरियों के प्रति अभिभावक अस्वीकृति एवं उनके आर्थिक मूल्यों व सुख-संबंधी मूल्यों में धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। द्वितीय, किशोरियों के प्रति अभिभावक अस्वीकृति एवं सामाजिक मूल्यों, सौन्दर्यात्मक मूल्यों एवं ज्ञान मूल्य के मध्य नकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। तृतीय, अभिभावक किशोरियों के बीच स्वीकृति-अस्वीकृति एवं उनके धार्मिक मूल्य, शक्ति मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य एवं स्वास्थ्य मूल्यों के मध्य असार्थक

सहसंबंध पाया गया।

Nucci et. al. (2001)[62] ने 'नैतिक शिक्षा' विषय पर एक शोध लेख का प्रकाशन किया, जिसमें 25 वर्षों के शोध निष्कर्ष प्रकाशित किये गये थे। यह शोध सामाजिक-संज्ञानात्मक डोमेन सिद्धांत पर आधारित थे, जिसके अनुसार नैतिकता अन्य सामाजिक मूल्यों से भिन्न होती है तथा कक्षा में नैतिक वातावरण निर्मित करने के लिये, बालकों के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में अनुशासन तथा नैतिक मूल्य कार्यक्रम सम्मिलित किये जाने की आवश्यकता थी। इसमें एक प्रश्नावली निर्मित की गई, जिसमें नैतिकता से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किये गये-क्या नैतिकता एक विश्वव्यापी भावना है? क्या यह व्यक्ति की संस्कृति से संबंधित है? क्या नैतिक चरित्र जैसा कोई कथन हो सकता है? बालक के नैतिक तथा सामाजिक विकास में शिक्षिका की क्या भूमिका है? शोलय बालकों के नैतिक विकास कार्यक्रम में एक सघन नैतिक विकास कार्यक्रम की भूमिका का अध्ययन करने हेतु यह शोध कार्य किया गया, जिसमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि बालक के सामाजिक संसार को निर्मित करने में विशेष प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

Verma, et. al (2001)[84] ने अभिभावकों के नैतिक मूल्यों की उनके बालकों के प्रतिसामाजिक व्यवहार के विकास में भूमिका जानने हेतु अध्ययन किया। इस हेतु 240 बालिकाओं के अभिभावकों को शामिल किया गया, इसमें 4 से 5, 6 से 7 एवं 8 से 9 वर्ष की शाला जाने वाली बालिकाओं एवं उनके माता-पिता को शामिल किया गया। अभिभावक मूल्य मापनी (PVT) का उपयोग किया गया। बालिकाओं के प्रतिसामाजिक व्यवहार का अध्ययन प्रयोगात्मक परिस्थितियों में किया गया, जिसमें समस्या सुलझाने पर प्राप्त पुरस्कार को उनके साथियों के साथ बांटना था। निष्कर्ष बताते हैं कि बालिकाओं के प्रतिसामाजिक व्यवहार के विकास में माता के नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व है। एवं बालक की आयु में वृद्धि के साथ अभिभावकों के उच्च एवं निम्न नैतिक मूल्य बालकों के विकास को एक समान प्रभावित करते हैं।

Pascual, A. et. al (2002)[191] ने डेलेमिया बालकों के सुधार कार्यक्रमों की योजना विकसित करने के लिये 12-16 वर्ष आयु के 60 किशोर बालकों के नैतिक मूल्य तथा तर्क स्तर का परीक्षण किया, जिसे कोहेलबर्ग (1975) के नैतिक सिद्धांतों से संबंधित किया गया। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि कोहेलबर्ग के नैतिक सिद्धांत मूल्यांकित संज्ञानात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं जिसकी कुछ सीमाएँ हैं। अतः कोहेलबर्ग का सिद्धांत, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य बालकों के नैतिक विकास को समझना तथा विशेष रूप से युवा बालकों के वेल्यू पेटर्न को जानना था। इस परीक्षण के द्वारा कुछ ऐसे वास्तविक निष्कर्ष प्राप्त किये, जिसके आधार पर मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन दृष्टिकोण तथा उचित सुधार कार्यक्रम विकसित किया जाना संभव था।

Prencipe, -Angela et.a al. (2002)[198] ने मूल्यों के शिक्षण में तर्क के प्रभाव को शाला व पारिवारिक संदर्भ में अध्ययन किया। इसमें कुल 160 सहभागी बालक, किशोर व नववयस्क लिये गये। इसमें 4 आयु वर्ग बनाये गये, जिसमें बालक 8 से 13 वर्ष के, महाविद्यालयीन विद्यार्थी 18 से 32 वर्ष के थे। इन्हें मूल्य शिक्षण से संबद्ध किया गया और संबंधित मूल्यों की शिक्षा दी गई। शिक्षा देने के लिये शाला व परिवार दोनों को व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि मूल्य संबंधी शिक्षण में, मूल्यों के प्रकार महत्वपूर्ण हैं और बालक उन नैतिक मूल्यों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं, जो उचित व न्याय से संबंधित हैं। निष्कर्ष यह भी सुझाव देते हैं कि मूल्य शिक्षा को सामाजिक तर्क के प्रतिमान के रूप में अधिक अच्छी तरह ग्रहण किया जा सकता है।

Silva (2002)[219] ने दूरदर्शन में नैतिक मूल्य विषय पर अध्ययन में दूरदर्शन में प्रसारित धारावाहिकों का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में जब कोहेलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत को प्रचलित पोर्तगीज दूरदर्शन कार्यक्रम के संदर्भ में अध्ययन किया तो दो घटनाक्रमों के नैतिक तथ्यों से संबंधित कथनों को छांटा गया जो कि बालकों व किशोरों में बहुत

ज्यादा प्रचलित कार्यक्रम है और उनकी मदद से इन कथनों को नैतिक सोच के स्तर एवं अवस्थाओं से संबद्ध किया गया जो कोहेलबर्ग सिद्धांत पर आधारित थे। परिणाम दर्शाते हैं कि अधिकांश कथन परंपरागत हैं और जब निष्कर्षों को दूरदर्शन कार्यक्रमों और नैतिकता से संबंधित करने का प्रयास किया गया व साथ ही कार्यक्रम समयबद्ध योजना के अनुसार दिखाया गया व कोहेलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत पर उसे आधारित रखा गया तो नैतिक मूल्यों का प्रभाव अधिक पाया गया।

Lewis, C. et. l. (2003)[55] ने एलिमेन्ट्री स्कूल में नैतिक सुधार की दृष्टि से एक प्रोग्राम डिजायन किया, जिसमें बालकों को अधिक कौशल करने, उत्तरदायित्व निभाने व देखभाल करने संबंधी, कौशल सिखाने के कार्यक्रम विकसित किये गये। इसमें बालकों को उनकी शैक्षणिक वृद्धि के साथ-साथ उनके सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास के लिये भी प्रेरित किया गया। विशेष रूप से इस प्रोग्राम के द्वारा शालेय वातावरण तथा उसमें निहित मूल सिद्धांतों को पुन: निर्मित करने का प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों, शिक्षकों व अभिभावकों के मध्य अच्छे संबंध विकसित करने हेतु सहायक सेवाएँ प्रारंभ की गई तथा विद्यार्थियों को नियमित रूप से दूसरों से मिलने-जुलने के अवसर प्रदान किये गये। उनके लिये अनेक लेख तैयार किये गये और उन्हें जीवन मूल्यों से संबंधित कार्यों को करने हेतु प्रेरित किया गया। प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियों में आपसी सहायक संबंधों को विकसित करने वाले क्रियाकलापों को डिजाइन किया गया, जिससे विद्यार्थियों की प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियां जीवन मूल्यों से प्रेरित हो सकें तथा शाला और घर में अच्छे आपसी संबंध विकसित हो सकें। आपस में सहयोगी सीखने की क्रिया संपन्न हो, विकासात्मक अनुशासन निर्मित हो, साहित्य संबंधी शिक्षा दी जा सके तथा विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थी आपस में क्रिया कर सकें। विभिन्न क्रियाकलापों में परिवार की भागीदारी हो तथा संपूर्ण शाला, समुदाय से जुड़कर, समुदाय के निर्माण के लिये संलग्न हो सके।

Palmer, -Emma J. (2003)[190] ने नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य संबंध ज्ञात करने

हेतु शोध कार्य किया। यद्यपि शोध के पहले ही यह ज्ञात था कि नैतिक तर्क के स्तर तथा बचाव व्यवहार में संबंध पाया जाता है तथा बचाव करने वाला व्यक्ति, बचाव न करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा, कम परिपक्व व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं, परन्तु यह शोध कार्य अधिक विस्तृत संबंध ज्ञात करने हेतु किया गया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि कुछ विशेष नैतिक मूल्य बचाव पक्ष से अपेक्षाकृत अधिक संबंध रखते हैं। इसके अलावा नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य संबंध ज्ञात करने की मनोवैज्ञानिक तकनीकी के विषय में अधिक शोध कार्य नहीं हुये थे। यह शोध अपराध के सैद्धांतिक मॉडल एवं नैतिक तर्क सिद्धांत के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु किया गया। शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि बालकों के पूर्व सामाजिक अनुभव, बालक के नैतिक तर्क तथा अन्य सामाजिक-संज्ञानात्मक प्राविधि को प्रभावित करते हैं तथा ये सामाजिक-संज्ञानात्मक कारक, जेसे-सामाजिक सूचना प्राविधि तथा अन्य संज्ञानात्मक कारक जिसमें नैतिक तर्क भी सम्मिलित है, व्यक्ति का सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार निर्धारित करने को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार यह सिद्धांत नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य प्रभावपूर्ण संबंध प्रदर्शित करता है।

Prestwich, Dorothy-L. (2004)[199] ने 'अमेरिका की शाला में चरित्र शिक्षा' नामक शोध लेख प्रकाशित किया, जो स्कूल कम्यूनिटी नामक जर्नल में प्रकाशित हुआ। इस शोध कार्य में 1960 से 1980 तक लगभग 20 वर्षों के अध्ययन के निष्कर्ष को सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि अमेरिकन बालक हिंसात्मक तथा अपराधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। अतः राष्ट्रीय उत्थान के लिये तथा गिरते हुये नैतिकता के स्तर को संभालने के लिये चारित्रिक शिक्षा का शैक्षिक योजना में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। इस शोध के आधार पर यह सुझाव प्रस्तुत किये गये कि शालाओं से संबद्ध एक औपचारिक योजना का प्रारम्भ किया जाए। इस संदर्भ में हार्टवुड इन्स्टीट्यूट में एक ऐथिक्स पाठ्यक्रम बालकों के लिये प्रारंभ किया गया। अन्य शालाओं में भी चारित्रिक विकास के लिये अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किये गये, जिसमें सच्चाई,

आज्ञाकारिता, स्वअनुशासन तथा स्वनियंत्रण पर जोर डाला गया। इस शिक्षा में समुदाय व अभिभावक को भी संबद्ध किया गया। इससे संबंधित इंटरनेट साइट तैयार की गई तथा उसे ऐसे नेटवर्क पर डाला गया, जो कि प्रायः बच्चों के द्वारा उपयोग की जाती थी। इस नैतिक विकास का उत्तरदायित्व शालेय शिक्षिका पर भी डाला गया, परन्तु इस शिक्षा में चारित्रिक शिक्षा से संबंधित औपचारिक प्रशिक्षण का अभाव था।

Simonnes, -Asbjorn (2004)[221] ने 'बालकों में नैतिक प्रत्यय पर मीडिया के प्रभाव' का अध्ययन किया। इसमें नार्वेजियन समाज व संस्कृति के बालक लिये गये। पहले अध्ययन बालक और समाज से मीडिया का संबंध ज्ञात किया गया तथा दूसरे अध्ययन में बालक के विकास में 'स्व' की पहचान व समाजीकरण के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। तृतीय अध्ययन में नैतिक शिक्षा के प्रत्यय विकास में मीडिया के प्रभाव व संचार पर शोध कार्य किया गया। इसके बाद नैतिक मूल्यों से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों की विवेचना की गई। चार वर्ष के शोध के पश्चात् यह निष्कर्ष ज्ञात किया गया कि बालकों में मूल्यों के विकास में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है व इसका गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है। अतः बालक में नैतिक मूल्यों के विकास के लिये मीडिया एक अच्छा संचार माध्यम हो सकता है। इसके अलावा शाला व चर्च में भी नैतिक विकास की शिक्षा मीडिया द्वारा दी जा सकती है। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि बालक में नैतिक प्रत्यय का विकास समाज के लिये एक चुनौती है।

Tejpreet Kaur & Sona Thakur (2004)[235] ने शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य अभिभावकत्व का नैतिक मूल्यों के विकास एवं नैतिक निर्णय से संबंध ज्ञात करना है। इस अध्ययन हेतु पंजाब के लुधियाना जिले के 200 ग्रामीण बालकों, जिनमें 100 बालक एवं 100 बालिकाएं ली गई जिनकी आयु 9 से 12 वर्ष के मध्य थी एवं जो शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं में पढ़ रहे थे, केवल उन्हीं बालकों को शामिल किया गया, जिनके दोनों अभिभावक थे।

इसके साथ अभिभावकों को भी शामिल किया गया तथा इनका निदर्शन विधि से चयन किया गया। इस हेतु बहुस्तरीय अभिभावकत्व मापनी एवं नैतिक मूल्य मापनी तथा नैतिक निर्णय परीक्षण का उपयोग संख्यात्मक मापन हेतु किया गया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि अभिभावकत्व तथा नैतिक मूल्य एवं नैतिक निर्णय में सार्थक संबंध पाया जाता हैं। अच्छा अभिभावकत्व बालकों में स्वस्थ नैतिक मूल्यों एवं नैतिक निर्णयों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

Greenfield (2004)[142] ने बालकों की जीवन-शैली उनके द्वारा नेटवर्क सहभागिता एवं विकास तथा परिवार का अध्ययन किया। सरकारी सुधार कमेटी में बालकों का अश्लील चलचित्रों, जो कि इस आयु में अधिक प्रचलित हैं और एक समूह से दूसरे समूह में नेटवर्क द्वारा प्रसारित होता है, इस पर कमेटी द्वारा तीन प्रमुख निर्णय दिये गये- प्रथम, अश्लीलता व तत्संबंधी काम- माध्यम बालकों एवं युवाओं में काम हिंसा, कामुक मनोवृत्तियों, नैतिक मूल्यों एवं कामुक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। द्वितीय, हमजोलियों की जीवन-सहभागिता से संबंधित सभी नेटवर्क उन्हें कामुक वातावरण पूर्ण माध्यम प्रदान करता है। यह समग्र वातावरण, जिसमें ऐसे माध्यम, नेटवर्क जीवन-शैली बालकों को अश्लील बातों की ओर धकेलता है। यही नहीं बल्कि ये बालक अपनी पहुंच प्रौढ़ काम माध्यमों तक तैयार कर लेते हैं, जिससे बालक इस कामुक वातावरण के बारे में अपनी स्वतः की धारणा बना लेता है। तृतीय, अभिभावकों एवं बालकों के मध्य एक स्वस्थ एवं संचारशाली संबंध, इस अश्लील माध्यम वातावरण के खिलाफ एक सशक्त चुनौती के रूप में कार्य कर सकते हैं। इसके साथ अगर खुले तौर पर अभिभावक-बालकों के संचार कार्यक्रम चैनल्स के माध्यम से कामुकता एवं माध्यम अनुभवों को काम शिक्षा के रूप में घर व स्कूलों में चलाया जाए तो उनका अधिक रचनात्मक प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से बालकों पर, क्योंकि उनके असामाजिक व्यवहार का खतरा उत्पन्न होता है। इसलिये अभिभावकों को न केवल अश्लील चित्रों को देखने की पहुंच को सीमित करना चाहिये बल्कि बालकों को देखरेख सावधानीपूर्वक

करना चाहिये।

Cox, -Richard et.al. (2005)[16] ने धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के बीच जब सम्बन्ध ज्ञात करने की चेष्टा की तो उन्हें इन क्षेत्रों में यद्यपि कोई निश्चित सहसंबंध ज्ञात नहीं हुआ, पर वे अपने अध्ययन से नैतिकता की तत्कालीन सोच एवं सूझबूझ से संबंधित परिभाषा एवं स्पष्टता ज्ञात कर सकते हैं। उनके चार शोध पत्रों में व्यक्तित्व के आध्यात्मिक विकास की अवधारणा को क्रमिक विकास क्रिया के रूप में उसी तरह का दृष्टिकोण दिया जो कि मनोविज्ञान के अध्ययन ज्ञानात्मकता, सामाजिक व्यवहार और नैतिक मूल्यों के विकास के अध्ययन देते हैं। यह दृष्टिकोण बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक व्यक्ति की धार्मिक, आध्यात्मिक मनोवृत्तियां एवं अनुभवों को मापते हुये व्यक्ति के अधिक वैज्ञानिक मनोवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। इन्होंने विभिन्न संस्कृतियों में सांस्कृतिक भिन्नताओं की मदद से उपचार एवं उपचारकर्त्ता को वैज्ञानिक निरीक्षणकर्त्ता के रूप में देखा, जवकि अन्य तीन शोध पत्रों में धर्म एवं आध्यात्मिकता का सम्बन्ध मनश्चिकित्सा से देखने की चेष्टा की। इसके अतिरिक्त कुछ दार्शनिक प्रश्नों की मदद से अनुभवों का विवरण, अस्तित्वादी अंर्तवैयक्तिक सिद्धान्त एवं मूल्यों में लेकर उत्तर दिया गया। यही नहीं कुछ अन्य अध्ययनों में उन्होंने आध्यात्मिकता के भावनात्मक पहलुओं को भाषा एवं रूझानों के माध्यम से समझाया। दृष्टिकोणों का यह भेद आधुनिक मनोविज्ञान में अंतिम मूल्य बनाम वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक उपागम को लेकर है।

Schonfeld (2005)[212] ने 'अभिभावकों में नशे की लत का बालक की नैतिक परिपक्वता व बाल अपराध पर प्रभाव' का अध्ययन किया इस शोध का उद्देश्य बालकों के संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक एवं सामाजिक कमियों, जिसमें बालक अपराध संलग्न है, का अभिभावकों के शराबी हाने से संबंध था। यद्यपि बाल अपराधियों की अधिकांश जनसंख्या, जो कि बौद्धिक व व्यवहारिक कमियों को दर्शाते हैं, उनमें नैतिक निर्णय एवं विवेक कमियों को तब अधिक देखा गया, जब उनके

अभिभावक शराबी पाये गये। ऐसे बालकों का सामाजिक-नैतिक पक्ष उनके लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर और धार्मिकता से संबंधित कर देखा गया। इस हेतु 10 से 18 वर्ष के 27 ऐसे बच्चे लिये, जिनके अभिभावक शरावी थे व 29 ऐसे बच्चे जिनके अभिभावक शराबी नहीं थे। नैतिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि ऐसे बालक जो शराब समूह से संबद्ध थे, उनमें निम्न नैतिक परिपक्वता दिखी, उन बालकों की अपेक्षा जिनके माता-पिता शराबी नही थे। उन्होंने अपने अध्ययन में अतिरिक्त मूल्यांकन करते हुये सामाजिक अपेक्षाओं एवं रोकथाम का भी अध्ययन किया। अभिभावकों द्वारा शराब लेने का प्रभाव बालकों के नैतिक विकास एवं नैतिक निर्णयों की कमियों में स्पष्ट दिखाई दिया, साथ ही शराबी अभिभावकों के समूह के अधिक बाल-अपराधी पाये गये। इस शोध के परिणाम से बाल अपराधों की रोकथाम के सामाजिक उपायों की आवश्यकता को बल मिला।

Grusec, -John-E. (2006)[33] ने 'समाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में बालक के नैतिक व्यवहार व नैतिक चेतना' विषय पर अध्ययन किया। उन्होंने समाजीकरण सिद्धांतों के उपागम से नैतिक विकास के अध्ययन दर्शाये। बालकों के सीखने में समाजीकरण के योगदान से संबंधित विचारों के ऐतिहासिक रूझान के अतिरिक्त समाज के नैतिक मूल्य व प्रमाणिकताओं को क्रमशः समय के साथ विकसित होना माना गया। समाजीकरण की प्रक्रिया में फ्रायड से लकर बाद के सिद्धांविदों ने पूर्ण विकास को लिया, जिसके अंतर्गत नैतिकता के समाजीकरण को भी समाहित किया गया। शोधकर्त्ता व सिद्धांतविदों ने अपना सरोकार इस तथ्य से रखने की चेष्टा की कि किस प्रकार बालक व्यवहार प्रमाणिकताओं व नियमों को सीखते हैं व किस तरह, इस प्रकार का सीखना उनकी चेतना से संबंधित होता है।

मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी अध्ययन :-

एडलर (1907) ने अपने अध्ययन में निष्र्कष निकाला कि बालक में अधिक तिरस्कार से हीनता का भाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसे बच्चे अपने आपको बेकार एवं अवांछित समझने लगते हैं और उन्हें अपने जीवन की समस्याओं के समाधान में कोई अभिरूचि नहीं रह जाती।

Adler (1908) ने बताया कि दूर हटने वाली (चिंतित) जीवनशैली मनोवृति में व्यक्ति समस्याओं का समाधान ढीक प्रकार से नहीं कर पाते। संभावित असफलता का अनुमान लगाकर दूर हट जाते हैं, इनमें सामाजिक अभिरूचि कम पाई जाती है।

एडलर महोदय (1912) ने अपने अध्ययन में बताया कि जिन व्यक्तियों की सामाजिक अभिरूचि जितनी विस्तृत, परिपक्वव और विकसित होती है, उसका मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होता है।

मैकाले तथा वाटकिन्स (1926) ने निष्कर्ष ज्ञात किया कि 9 से 10 वर्ष तक बालकों के नैतिक सप्रंत्यय निश्चित व मूर्त होते हैं, उसके बाद समान्यीकृत हो जाते हैं और यह बालक माता से सीखता है।

Symonds (1939) ने देखा कि तरस्कार बालक नकारात्मक व्यक्तित्व के व स्वीकृत बालक सकारात्मक व्यक्तित्व के होते हैं।

मेहता (1944) ने अपने शोध में देखा कि बालक एवं बालिकाओं का मानसिक स्वास्थ्य माता-पिता के व्यवहार से प्रभावित होता है।

लाइटफ्रूट (1951) ने निष्र्कष निकाला कि जो बालक समूह की अपेक्षा मंदबुद्धि होते हैं उनके व्यक्तित्व में असमर्थता, शर्मीलापन, अंर्तमुखता एवं उदासीनता आ जाती है व तीव्र बुद्धि बालक अपने आपको अन्य से श्रेष्ठ समझते हैं।

कैरेनहॉर्नी (1952) ने बताया कि चिंता बालक में अकेलापन व नि: सहायता का भाव उत्पन्न कर देती है, जो कि विद्वेष के भाव के दमन से जुड़ा रहता है, इससे व्यक्ति में तंत्रिका तापी रोग उत्पन्न हो

जाते हैं। इसका उदय बच्चों को घर में पर्याप्त स्नेह न मिलने के कारण होता है, जबकि पर्याप्त स्नेह व प्रेरित करने वाला वातावरण बालक को उत्साही बनाता है, परन्तु अत्यधिक उत्साही (कोई बात नही) वाला व्यवहार कभी-कभी नैतिक आदर्शों का हनन कर डालते हैं।

हैविंग्हर्स्ट (1953) ने ज्ञात किया कि तीव्र बुद्धि बाले बच्चे महत्वाकांक्षी होते हैं और असफल होने पर भी अथार्थवादी रूख अपनाते हैं व अहं-सप्रंत्य को ठेस नहीं पहुंचने देते। कम तीव्र बुद्धि बालक अथार्थवादी महत्वाकांक्षा रखते हैं व असफलता से उनके अन्दर असमर्थता की भावना उत्पन्न हो जाती है।

Cronback (1956) ने स्पष्ट किया कि व्यक्ति की आदर्श स्वाभिमान भावना व स्व प्रत्यय इससे संबंधित होते है तथा यह शिक्षा, सामाजिक स्तर, नैतिक विकास के द्वारा प्रबलन ग्रहण करता है।

Cattle & Stice (1960) ने बताया कि उच्च 0 प्राप्तांक कारक वाले व्यक्ति विघ्न पहुंचाने वाला, अवरोधक व अपनी मित्र मंडली में कम प्रसिद्ध होते हैं तथा सामाजिक रूप से कुसमायोजित होते हैं। उच्च 0 प्राप्तांक कारक प्रत्येक 40 वें व्यक्ति में दिखाई दे सकता है व ऐसे व्यक्ति न्यूरोसिस (मनस्ताप), साइकोसिस (मनोविकृति) आदि मानसिक रोगों से ग्रसित होने के संकेत देते हैं। सैद्धांतिक रूप से यह कहा जा सकता है कि पूर्व बाल्यावस्था में ही बालक के परा अहम् के विकास में सहायता प्रदान करना चाहिये, जिससे बालक मन में उत्पन्न होने वाली असुरक्षा से छुटकारा पा सके।

Guinouard & Rychlak (1962) ने कहा कि इस प्रकार के संतुलित, सौम्य और मर्यादित तथा चिंतित बालक-बालिकाएं अपनी मित्र मंडली में प्रसिद्ध नहीं होते हैं।

एरिक्सन (1963) के अनुसार एक स्वस्थ मानसिक विकास के लिये विश्वास का अविश्वास की तुलना में एक अनुकूल अनुपात का होना अनिवार्य है। जब बच्चा विश्वास अथवा अविश्वास के संघर्ष का समाधान सफलतापूर्वक कर लेता है तो उसमें एक मनोसामाजिक शक्ति की उत्पत्ति होती है जिससे वह अपने सांस्कृतिक वातावरण व अस्तित्व को अर्थपूर्ण ढगं से समझने लगता है।

रैण्ड, स्वीनी एवं विन्सेन्ट (1963) ने शोध निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि अस्वीकृत बालक झगडालू गैरजिम्मेदार तथा अनाज्ञाकारी हो जाते हैं, वे हमेशा दिवास्व्पन व कल्पना में लीन हो जाते हैं।

प्याजे (1965) ने भी अपनी ऑटोनॉमस नैतिकता की अवस्था में इस बात को स्पष्ट किया है।

प्याजे (1965) तथा कोहेलबर्ग (1974) - द्वारा प्रतिपादित नैतिकता तथा संज्ञानात्मक सिद्धान्त, बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य को व्यक्तित्व संबन्धी कारकों के साथ जोड़कर देखते हैं, संभवत: संज्ञानात्मक उपागम हैं, क्योकि इसमें केवल चेतन मानसिक क्रियाओं पर ध्याान केन्द्रित किया गया हैं। इस उपागम को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों में कैली तथा कार्टलिविन आते हैं। इसके अंतर्गत बालक या बालिकांए किसी भी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण करते है, अपने बौद्धिक आधार पर उसे मूल्यांकित करते हैं, सीखते हैं, सोचते है, निर्णय लेते हैं तथा उसके आधार पर समस्याओं का समाधान करते हैं।

निकेली (1967) एवं बामरिण्ड (1971) ने भी अपने अध्ययनों में देखा कि अस्वकिृत बच्चे कुढां, प्रतिबल व निराशा के शिकार हो जाते हैं।

कोलबर्ग (1974) का 'प्राणीगम उपागम' बताता है कि बालक बौद्धिक क्षमता (तर्क व चिंतन) के आधार पर नैतिक निर्णय लेता है। इलिटर टूरियल (1969 ने भी इसकी पुष्टि की है।)'

ग्रिम्पसन (1975) ने अपने अध्ययन में पाया कि जब बच्चों का मनोबल गिरता है तब वे संवेगात्मक रूप से अस्थिर व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

हरलॉक (1975) ने ज्ञात किया कि अनुपयुक्त सांवेगिक परिस्थिति से बालक भावप्रवण हो जाता है।

एरिकफ्रोम (1979) ने अपने अध्ययन में पाया कि माता-पिता व वालक के मध्य अंत:क्रिया में बालक को पर्याप्त आवश्यक सुरक्षात्मक वातावरण उनके आत्मन् को विकसित करने में उन्नत

अवसर प्रदान करता है। बालक एवं बालिकाओं की लैगिंक विभिन्नता के कारण परिवार का बालक एवं बालिकाओं के प्रति सुरक्षात्मक दृष्टिकोण अलग-अलग होता है।

गैरीसन (1984) ने माना कि ऐसे बालकों का असहयोगी, उदासीन, भावशून्य के रूप में प्रत्यक्षण किया जाता है।

Agarwal,A.K. (1985)[105] ने अपने अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य एवं वंचना का संबंध ज्ञात करने हेतु उत्तर प्रदेश के कक्षा 6 से 9 में पढ़ने वाले 20 बालक एवं 20 बालिकाओं पर अध्ययन किया। आयु व बुद्धि के आधार पर इन्हें 4 उपसमूहों में बांटा गया व Rorschach टेस्ट दिया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि स्नेह वंचना का कम बुद्धिमान बालक पर अधिक बुद्धिमान बालक की अपेक्षा व्यक्तित्व संरचना पर अतयंत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

Sharma's (1986)[254] ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में मानसिक विकास के साथ साथ नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है।

Verma et.al. (1989) ने शोध में पाया कि अभिभावकों द्वारा उपेक्षित व अस्वीकृत बालक संवेगात्मक अस्थिरता, निम्न शैक्षणिक समायोजन एवं अधिक आक्रमणशील प्रवृति प्रदर्शित करते हैं।

कौसर व उनके साथियों (1991) ने अपने शोध में ज्ञात किया कि अभिभावक तिरस्कार बालक को संवेगात्मक रूप से अस्थिर बनाता है तथा अभिभावक स्वीकृति उसे संवेगात्मक रूप से संतुलित करती है।

Mac Ewen (1991) ने देखा कि संवेगात्मक अस्थिरता वाले माता-पिता के बालकों में भी चिंता करने वाली प्रवृत्ति विकसित हो जाती है तथा बालक में निम्न आत्मसम्मान, निम्न उपलब्धि, कम ग्रहणशीलता व संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है।

Kausar et. al. (1991)[160] ने अभिभावक स्वीकृति एवं तिरस्कार का बालकों के मानसिक

स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन कर ज्ञात किया कि जो अभिभावक अपने बालकों को स्वीकृत करते हैं उनके बालक प्रत्येक कार्य में आगे रहने वाले, जिम्मेदार संवेगात्मक स्थिर एवं मिलनसार होते हैं। अपेक्षाकृत उनके जिनके माता-पिता उन्हें तिरस्कृत करते हैं।

Kausal et.al (1991) ने अभिभावक स्वीकृति व तिरस्कार का बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन कर बताया कि जो माता-पिता अपने बालकों को स्वीकृत करते हैं, वे बच्चे प्रत्येक काम में आगे आने वाले, जिम्मेदार, संवेगात्मक स्थिर एवं मिलनसार होते हैं, अपेक्षाकृत उनके जिनके माता-पिता बालकों को तिरस्कृत करते हैं।

Dowdney et. al. (1991)[13] ने शोध में पाया कि जिन अभिभावकों की भूमिका नकारात्मक होती है, उनके बालक का मानसिक स्वास्थ्य भी नकारात्मक होता है।

Mac Even et.al (1991) ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया कि जो अभिभावक अपने अभिभावकत्व में चिंता एवं संवेगात्मक अस्थिरता के लक्षण प्रकट करते हैं, उनके बालक लगातार चिंता संबंधित योजना ग्रहण करते हैं जो बालक के आत्म-विश्वास एवं समस्या सुलझाने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसके कारण धीरे-धीरे बालक में अभिभावक के समान चिंता करने वाली प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। तथा बालक में निम्न आत्म-सम्मान, निम्न उपलब्धि, कम गृहणशीलता, संवेगात्मक समस्याएं, अंर्तवैयक्तिक तथा मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं आदि उत्पन्न हो जाती हैं।

सेली (1993) ने निर्ष्कष निकाला कि संवेगात्मक अस्थिर बालक रचनात्मक नही होते।

Sen, A (1993)[270] ने बताया कि बालक के सुदृढ़ मानसिक स्वास्थ्य हेतु स्थिर, उत्साही, संतुलित, सामजंस्यपूर्ण एवं प्रभावकारी पारिवारिक संबंध आवश्यक हैं।

मेहता (1994) ने मानसिक स्वास्थ्य पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया है।

Silverman Linda-Kreger (1994)[220] ने 'प्रतिभावान बालकों की नैतिक संवेदनशीलता

तथा उनके सामाजिक मूल्यांकन' पर शोध कार्य किया। कुछ व्यक्तित्व विशेषताओं तथा संज्ञानात्मक जटिलताओं के कारण प्रतिभावान बालक विशेष अनुभवों तथा जागरूकता का प्रदर्शन करते हैं। यह जागरूकता विभिन्न अवलोकनों व सैद्धांतिक कारणों में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। अत: अध्ययन यह ज्ञात करने के लिये किया गया कि क्या प्रतिभावान बालकों की नैतिक संवेदनशीलता भी विशेष होती है। इस शोध अध्ययन में प्रतिभावान बालकों को समाज के लिये अधिक उपयोगी बनाने के प्रयास किये गये एवं उनके समझने की आवश्यकता, तर्क, जटिलता तथा नैतिक विकास के संबंध का अवलोकन किया गया।

Bhargava (1994)[264] ने बताया कि आचार्य रजनीश के अनुसार बालकों के पूर्ण प्राकृतिक, निर्बाध एवं स्वतंत्र वातावरण प्रदान किया जाना चाहिये, जिससे वे स्वयं की अंतर्निहित, स्वाभाविक योग्यताओं तथा क्षमताओं का सर्वश्रेष्ठ उपयोग अपने रचनात्मक एवं संतुलित मानसिक विकास हेतु कर सकें।

Singh, Dolly (1995)[222] के अध्ययनानुसार एकल परिवार में बालक माता-पिता के निकटतम संपर्क अपने में विश्वास, खुशमिजाज, दूसरों से प्यार करने वाले व उच्च बौद्धिक योग्यता वाले होते हैं।

Massie et. al. (1996)[175] ने माता के तनावग्रस्त होने का बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन किया उन्होंने 4 वर्ष से 7 एवं 5 वर्ष तक की आयु के बालकों का अध्ययन किया और पाया कि तनावग्रस्त माताएं अपने बालकों से अधिक स्नेह रखती हैं, क्योंकि उनके पास तनाव से बचने का यही मार्ग होता है और यह बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता हैं।

Slutskiy et.al. (1996) ने उन बालकों के सामाजिक अलगाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जो अनाथालय एवं स्वयं अपने परिवार में रह रहे थे। उन्होंने 5 वर्ष 10 माह से 7 वर्ष 4 माह तक के 50 बालकों को लिया, जो अनाथालय में रह रहे थे। 45 सामान्य स्कूल पूर्व

एवं स्कूल जाने वाले बालकों को लिया जो स्वयं अपने परिवार में रह रहे थे। निष्कर्ष बताते हैं कि परिवार में रहने वाले बालकों का मानसिक , संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व व्यक्तित्व विकास अनाथालय के बालकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक व धनात्मक पाया गया एवं सामाजिक अलगाव मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया।

दिव्या गोयल (1996) ने बताया कि अस्वीकृत पूर्ण अभिवृत्ति में लैंगिक विभिन्नता पाई जाती है, बालकों की अपेक्षा बालिकांए अधिक अस्वीकृत होती है।

एण्डरसन तथा कोहली (1996) ने अध्ययन में पाया कि जव बालक में सुखद अनुभूतियों के कारण धनात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न होती है, तो उसकी समायोजन क्षमता उत्तम होती है। उसमें आत्मविश्वास एवं आत्मस्वीकृति का भाव बढ़ता है व भावप्रवण बालकों में ऋणात्मक आत्म प्रत्यय विकसित हो जाता है व बालक को समस्यात्मक बना देता है।

Slutskiy (1998) ने वरिष्ठ पूर्व शालेय बालकों के मानसिक विकास व सामाजिक अलगाव का अध्ययन किया व देखा कि सामाजिक अलगाव व व्यक्तित्व विकास एवं संज्ञानात्मक तथा संवेगात्मक विकास में सार्थक अंतर दिखाई देता है।

Aurora, S. (1998)[262] के शोध निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि अभिभावक के साथ उचित अंत:क्रिया एवं स्वस्थ वातावरण बालक के स्वस्थ मानसिक विकास हेतु आवश्यक है।

Vaughn et. al. (1998)[239] ने 106 परिवारों का दीर्घकालीन अध्ययन कर यह देखा कि अभिभावक सहमति में बालक एवं बालिकाओं के प्रति स्पष्ट अंतर पाया गया। बालकों के प्रति सहमति बौद्धिक क्षमता, नैतिक निर्णय तथा व्यक्तित्व आयाम से होती है जबकि बालिकाओं के लिये आदर्श व स्व के विकास से संबंधित होता है।

Bhatnagar (1998)[258] ने 'किशोरावस्था के छात्रों में नैतिक विकास और समायोजन' विषय पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि नैतिक दृष्टि से सजग छात्राएं सार्वधिक कॉन्वेंट स्कूल में

तथा सबसे कम निजी स्कूलों में पाई गई। राजकीय स्कूलों का स्थान इन दोनों के मध्य में था। नैतिक विकास के साथ-साथ समायोजन भी उच्च स्तर का होता है। निजी विद्यालयों में समायोजन तथा नैतिक विकास का सहसंबंध ऋणात्मक है जबकि कान्वेंट स्कूलों में धनात्मक हैं।

Zhang,Y.et.al. (1999)[248] ने अभिभावकों के प्रत्यक्षीकरण का बालकों के मानसिक विकास पर अध्ययन करने हेतु शोध किया। 3 से 5 वर्ष की आयु के 1999 किंडर गार्टन विद्यार्थी, 6-8 वर्ष आयु के 189 प्रथम कक्षा के विघार्थी, 9 से 11 वर्ष के 167 कक्षा 4 के विद्यार्थी एवं 12-14 वर्ष के 222 बालक माध्यमिक कक्षा के लिये गये। साथ ही इनके अभिभावकों एवं दादा-दादी को भी अध्ययन में शामिल किया गया। 401 परिवारों से साक्षात्मकार के आधार पर एक प्रश्नावली तैयार की गई। इसके अलावा केवल स्क्रीन टेस्ट के आधार पर बालकों की मानसिक स्वास्थ्य स्वीकृति, बर्हिमुखता, संवेगात्मक स्थिरता, आत्म-निर्भरता का अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि चाइनीज बालकों में सवसे अधिक स्थिरता पाई गई।

एक अन्य अध्ययन में **केरनहॉर्नी (1952)** ने निर्ष्कष निकाला कि जब बालकों को परिवार में स्नेह व प्यार नहीं मिला तथा तिरस्कार मिलता है, तो उनमें अलगाव का भाव विकसित हो जाता है। इससे उनमें विद्वेष की भावना विकसित होकर वह आक्रामक बन जाते हैं, उनमें दोषभाव उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे बाद में चिता विकसित हो जाती है।

अग्रवाल (1999) ने माता की सवीकृति का बालिकाओं की स्वाभावगत विशेषताओं पर अध्ययन कर पाया कि स्वीकृति प्राप्त बालिकांए व अस्वीकृत बालिकाओं की स्वाभावगत विशेषताओं में सार्थक अंतर पाया जाता है। स्वीकृत बालिकाएं सामाजिक व सवेगात्मक रूप से स्थिर तथा प्रभावशाली होती है।

Sharma (1999) ने शहरी व ग्रामीण छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक विकास विषय पर अध्ययन में बताया कि छात्र-छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य नैतिक विकास से प्रभावित

होता है, साथ ही नैतिक मूल्य भी प्रभावित करते हैं।

Budhal- Rishichand - Sookai (2000)[113] Aryas (2000)[90] ने किशोरों में नैतिक मूल्य के विकास के लिये प्रयोगात्मक अध्ययन में बताया कि नैतिक मूल्य के विकास पर मानसिक योग्यता, शैक्षिक कार्यक्रम व सामाजिक-आर्थिक स्तर की मित्रता का सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

Nakao,K. et. al. (2000) ने बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव जानने हेतु औसत 13.2 वर्ष आयु के 150 बालकों का साक्षात्कार लिया, जिसमें 13 व्यवहारिक आयाम शामिल किये, जिसमें क्रियाशीलता बातचीत सामाजिकता सामाजिक कौशल नियम-पालन इच्छा क्रोध संवेगात्मक नियंत्रण कल्पना, चिंता, परिपक्वता, बुद्धि एवं असामान्यता का अध्ययन किया गया। कारकों के विश्लेषण द्वारा तीन प्रकार के व्यक्तित्व आयाम स्पष्ट दिखाई दियं, जिन्हें बर्हिमुखता परिपक्वता एवं बौद्धिक श्रेणी में वर्गीकृत किया गया। पारिवारिक वातावरण का प्रभाव, जिसमें पालन-पोषण में अभिभावकों की सहभागिता, पालन-पोषण-शैली, अभिभावक संबंध, सहोदर संबंध, सहोदर संख्या, जन्मक्रम व सामाजिक-आर्थिक स्तर को पारिवारि बातावरण के अंतर्गत रखा गया। परिणाम यह बताते हैं कि बर्हिमुखता-अतिसुरक्षात्मकता से नकारात्मक सहसंबंध रखती है। परिपक्वता उच्च सामाजिक-आर्थिक से संबंधित है, जबकि उचित पालन-पोषण संबंधी शैली व अभिभावक सहभागिता का प्रभाव भी परिपक्वता पर दिखाई दिया। बौद्धिकता उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से तथा माता की पालन-पोषण में सहभागिता से संबंधित थी। कुल उत्तरदाताओं में से 8 प्रतिशत बर्हिमुखता, 14 प्रतिशत परिपक्वता व 10 प्रतिशत बौद्धिक स्तर के पाये गये, जिनका कारण उनका पारिवारिक वातावरण था। उच्च अंर्तमुखी व उच्च बौद्धिक स्तर के बालकों पर उनके पारिवारिक वातावरण का सशक्त प्रभाव परिलक्षित हुआ, उनकी तुलना में जो उच्च बर्हिमुखी व निम्न-बौद्धिक स्तर के थे।

Budhal, -Rishichand-Sookai (2000)[113] ने एक शोध कार्य किया, जिसमें शाला में अकेले रहने वाले या अधिक घुलने-मिलने वाले बालकों के संज्ञानात्मक, नैतिक, सामाजिक व व्यक्तित्व विकास' का अध्ययन किया व यह पाया कि जिन बालकों को उनकी मित्र मंडली द्वारा तिरस्कृत किया जाता है, वे अकेले रहना पसंद करते है। यह अध्ययन प्रायमरी व सेकेण्डरी स्कूल के बालकों पर किया गया। इसका उद्देश्य अभिभावकों व शिक्षकों हेतु प्रीाावशाली कार्यक्रम विकसित करना था। जब सामाजिक अकेलेपन के कारकों का अध्ययन किया गया, तब सामाजिक प्रतिस्पर्धा, आत्म-सम्मान, मनोवैज्ञानिक कारक, बुद्धि, शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक मूल्य, शारीरिक अक्षमता, खेल में सहभागिता व शारीरिक आकर्षण मुख्य कारक ज्ञात हुए। इसके अलावा माता-पिता का वैवाहिक समायोजन, अभिभावक का निरीक्षण, अभिभावक की स्वीकृति, अभिभावक सत्ता, अभिभावक संघर्ष आदि कारक भी सामने आये। सामाजिक अकेलेपन के संदर्भ में शारीरिक, संज्ञानात्मक, व्यक्तित्व, नैतिक व सामाजिक पक्षों का अध्ययन यिका गया। निर्णय यह बताते हैं कि स्वाभिमान तथा सामाजिक प्रतिस्पर्धा एवं आज्ञाकारिता सामाजिक अकेलेपन के लिये सर्वाधिक जिम्मेदार हैं। इसके अलावा परिवार में बोली जाने वाली भाषा भी सामाजिक अकेलेपन को प्रभावित करती है। इस हेतु अभिभावक एवं शिक्षकों को निर्देशित किया कि सामाजिक रूप से अकेले बालकों को पहचानें व उन्हें सामाजिक बनाने का प्रयास करें।

Baksi (2001) ने बालक-बालिकाओं में लैंगिक विभिन्नता के प्रभाव का अध्ययन कर ज्ञात किया कि इनमें हो रहे परिवर्तन, माता-पिता से संबंध, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य दोनों के व्यक्तित्व पर समान प्रभाव डालते है।

फ्रांससी मनोवैज्ञानिक **Aifred Binet** ने मानसिक स्वास्थ्य का संबंध व्यक्ति की निर्णयात्मक योग्यता के साथ बताया है।

Palmer-Barbara-G (2001)[189] ने बालकों के समायोजन पर माता-पिता के अलगाव के

प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने 83 परिवारों में उनके माता-पिता व बालकों एवं उनके संबंधों का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि उन बालकों का समायोजन ज्यादा अच्छा था जो माता-पिता के साथ रहते थे।

Finkchaur, Catrin (2002)[133] ने 227 बालक-बालिकाओं पर अध्ययन कर पाया कि अभिभावकों से मधुर संबंध न होने के कारण उनसे अपनी समस्यायें नहीं बताते। यह बालक के सकारात्मक विकास हेतु उचित नहीं है।

Solis, C. et. al. (2002)[229] ने 145 अभिभावक व बालकों का अध्ययन कर ज्ञात किया कि अभिभावकों का मित्रवत व्यवहार बालकों की संवेगात्मक स्थिरता से धनात्मक रूप से संबंधित है, बजाए उनके जो अभिभावक अतिप्रभुत्वशाली, तिरस्कृत व्यवहार अपनाते हैं।

Solis (2002) ने अपने शोध निषकर्ष में बताया कि जो अभिभावक अपने बालकों से मित्रवत व्यवहार करते हैं वे बालक संवेगात्मक रूप से स्थिर होते हैं।

Lewis, C. et. al (2003)[55] ने एलिमेन्ट्री स्कूल में नैतिक सुधार की दृष्टि से एक प्रोग्राम डिजायन किया, जिसमें बालकों को अधिक कौशल करने, उत्तरदायित्व निभाने व देखभाल करने संबंधी, कौशल सिखाने के कार्यक्रम विकसित किये गये। इसमें बालकों को उनकी शैक्षणिक वृद्धि के साथ-साथ उनके सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास के लिये भी प्रेरित किया गया। विशेष रूप से इस प्रोग्राम के द्वारा शालेय वातावरण तथा उसमें निहित मूल सिद्धांतों को पुनः निर्मित करने का प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थिर्यों, शिक्षकों व अभिभावकों के मध्य अच्छे संबंध विकसित करने हेतु सहायक सेवाएँ प्रारंभ की गई तथा विद्यार्थियों को नियमित रूप से दूसरों से मिलने-जुलने के अवसर प्रदान किये गये। उनके लिये अनेक लेख तैयार किये गये और उन्हें जीवन मूल्यों से संबंधित कार्यों को करने हेतु प्रेरित किया गया। प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियों में आपसी सहायक संबंधों को विकसित करने वाले क्रियाकलापों को डिजाइन किया गया, जिससे

विद्यार्थियों की प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियां जीवन मूल्यों से प्रेरित हो सकें तथा शाला और घर में अच्छे आपसी संबंध विकसित हो सकें। आपस में सहयोगी सीखने की क्रिया संपन्न हो, विकासात्मक अनुशासन निर्मित हो, साहित्य संबंधी शिक्षा दी जा सके तथा विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थी आपस में क्रिया कर सकें। विभिन्न क्रियाकलापों में परिवार की भागीदारी हो तथा संपूर्ण शाला, समुदाय से जुड़कर समुदाय के निर्माण के लिये संलग्न हो सके।

Krock's (2003) ने बताया कि अतिसुरक्षित बालक संवेगात्मक अस्थिर होते हैं।

Lewis, C. Et.al (2003)[55] Verma et.al (1989)[255] ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया कि अभिभावकों द्वारा उपेक्षित एवं अस्वीकृत बालक संवेगात्मक अस्थिरता, निम्न शैक्षिक समायोजन एवं अधिक आक्रमणशील पृवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

John & Galdi (2003)[156] ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षित एवं अपने बालकों को अवसर प्रदान करने वाले अभिभावकों के बालकों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है एवं उनका व्यक्तित्व विकास सकारात्मक होता है।

Krocks, -P. (2003)[162] ने हाईस्कूल के 306 बालकों पर अध्ययन कर पाया कि माता-पिता की अभिवृत्तियां बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती हैं। उनकी नकारात्मक अभिवृत्ति बालकों में आक्रामकता, संबेगात्मक अस्थिरता व असुरक्षा दर्शाती हैं। सत्तात्मक अभिवृत्ति से बालक चिंताग्रस्त, आलोचनात्मक व शीघ्र क्रोधित होने वाले होते हैं।

Janet (2004) ने अपने शोध में बालकों व उनसे परिवारों पर अध्ययन कर बताया कि जो माता-पिता अपने बालकों को स्वीकृत करते हैं उनका सकारात्मक मानसिक विकास होता है एवं तिरस्कृत बालकों का नकारात्मक मानसिक विकास होता है।

Benson, A. (2005)[109] ने माता-पिता की अभिवृत्तियों का किशोर के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि जो मता-पिता प्रगतिशील एवं स्वीकृत

अभिवृत्ति के साथ उच्च शिक्षित भी होते हैं वे अपने बालकों को बोलने के समान अवसर देते हैं, उन्हें स्वतंत्रता व सम्मान प्रदान करते हैं एवं उन पर भरोसा करते हैं, ऐसे बालकों का मानसिक विकास सकारात्मक होता है।

Green, -Robert (2005)[141] ने 160 बालकों पर अध्ययन कर पाया कि मता-पिता की अति संरक्षात्मक अभिवृत्ति बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अतिसुरक्षा प्रदान करने वाले माता-पिता के बालक पर निर्भर, जिद्दी, अंर्तमुखी संवेगात्मक अस्थिर होते हैं।

अनुशासन संबंधी अध्ययन :-

लॉंग (1914) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि बालकों में नैतिकता विकसित करने हेतु पुरस्कार, प्रशसा तथा समझने पर अधिक बल दिया जाना चाहिये।

लोंग (1914) ने शोध अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि दंड की अपेक्षा पुरूस्कार अधिक प्रभावकारी होता है, पर कभी-कभी नैतिक मानकों के अनुसरण हेतु दंड का भी प्रयोग अनुशासन विकसित करने में सहायक हो सकता है।

वॉटसन (1934) ने कहा कि दंड के प्रभाव से बालक अरूचि व असम्मान अपने मूक उत्तरों द्वारा प्रदर्शित करता है, दूसरों पर निर्भर रहता है, स्वनिर्णय की क्षमता नहीं रहती, समाज में समायोजित नहीं हो पाते तथा बाल अपराध व लगाव विकसित होता है।

वॉटसन (1934) ने बताया कि अत्यधिक नियंत्रण बालक में बड़ों के प्रति निरादर, परनिर्भरता, कुसमायोजन, स्वनिर्णय क्षमता का अभाव, बाल-अपराध, तनाव उत्पन्न करता है।

अय्यर तथा बर्नकटर (1937) ने ज्ञात किया कि शारीरिक दंड देने से बालक सच्चाई का सामना नहीं कर पाते तथा प्रौढ़ों पर स्नेह प्राप्त करने के लिये अधिक निर्भर रहते हैं। डांटने फटकारनें से उनमें पराश्रितता बढ़ती है तथा प्राकृतिक परिणामों के आगे निर्भरता घटती है।

साइमंड्स (1939) ने देखा कि माता-पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण में पूरी रूचि लेते हैं, बालक को प्यार व सुरक्षा प्रदान करते हैं, अपने स्नेह को प्रकट रूप में अभिव्यक्त करते है, बच्चे की योजनाओं व महत्वाकांक्षाओं में रूचि लेते हैं, बहुत अधिक उम्मीदें नहीं पालते, बच्चों को परामर्श व प्रोत्साहन देते हैं। ऐसे बालक अपने पूरे उत्साह के साथ अपने आपको सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत व्यवहार में लगा देते हैं। वे बालक जिन्हें पारिवारिक अस्वीकृति प्राप्त होती है, वे अपने प्रति अधिक ध्यान आकर्षण का प्रयास करते हैं, शालेय जीवन में समस्या बन जाते हैं एवं उनका अपचारी प्रवृत्तियों की ओर झुकाव देखा जाता है। ऐसे बालक असुरक्षा व हीनता की भावनाओं का विकास कर लेता है वह स्वयं भी अपने बारे में अच्छी धारणा नहीं बना पाता। वह विरोधी और आक्रामक अथवा दब्बू और अपने आप में सिकुड़ा रहने वाला बन सकता है।

डोल्गर तथा गिनेडस (1946) ने भी निष्कर्ष ज्ञाता किया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में बालक अपने बडों की कठोर दंड देने की प्रवृत्ति से अनुशासित होते हैं।

सेमण्ड्स (1949) का मत है कि जब बालक को परिवार में स्वीकृति प्राप्त होती है तो स्नेह के कारण वह माता-पिता की विशेषताओं को धारण कर लेता है। अनुरूपता की प्रक्रिया में लिंग भेद भी पाये जाते हैं। प्रारंभ में बालक और बालिका दोनों ही माँ के साथ सारूप्यता स्थापित करते हैं, परन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ बालक की पिता के साथ सारूप्यता बढ़ती जाती है, क्योंकि उसे समाज में रहकर पुरूष दायित्व समझना होता है। लड़कियां पूर्ववत माँ के साथ सारूप्यता बनाये रखती हैं।

हरलॉक (1950) ने कहा कि पुरस्कार बालक को वांछित या अवांछित व्यवहार का ज्ञान कराता है व अच्छा व्यवहार करने के लिये प्रेरित करता है।

Adorana (1950) & Auscubel (1951) ने अपने अध्ययनों में पाया कि स्वामित्व अभिवृत्ति वाले अभिभावक अपने बालकों से अत्यधिक अनुशासन की आशा रखते हैं, कठोर नियंत्रण, दडं व

भय के कारण बालक आक्रामक हो जाते हैं।

बकविन (1951) ने बताया कि अनुशासन का प्रभाव व्यवहार पर होने की अपेक्षा व्यक्तित्व पर होना अधिक महत्व रखता है। उत्तर बाल्यावस्था में कठोर शारीरिक दंड के अधिक प्रयोग से भी बालक निषिद्ध व अवांछनीय आचरण (जो नैतिक नहीं है) को न करने का संकल्प नहीं लेते, बल्कि वे बाद में दुखी रहते हैं व कुसमायोजित, संजीदा, हठी, नकारात्मक वृत्ति वाले हो सकते हैं।

Du Bois (1952) ने ज्ञात किया कि पुरस्कार बालक में पुरस्कृत व्यवहार को दोहराने की अभिप्रेरणा प्रदान करता है।

मैक्कॉबी एवं गिब्स (1952) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि मध्यवर्गीय माता-पिता अधिक अनुज्ञात्मक होते हैं, निम्न वर्ग की अपेक्षा।

सियर्स (1953) ने अपने अध्ययन में देखा कि दडं का स्तर उच्च होने पर लड़कों में आक्रामकता का स्तर बढ़ जाता है व लड़कियों में कम हो जाता है।

फ्रेंकल ब्रांस्विक (1953) ने भी शोध निष्कर्ष में बताया कि जिन बालकों को बाल्यावस्था में कठोर दंड मिला वे आगे चलकर आक्रामक, कठोर व क्रूर हो जाते हैं।

डेमरॉन (1955) ने कहा कि अत्यधिक छूट देने वाला व्यवहार बालक को आक्रामक व विध्वंसकारी बना देता है।

ओटिस एवं मैकफैण्डलैस (1955) ने बताया कि अनुज्ञात्मकता की अवधि बालक के आक्रामक व्यवहार को प्रभावित करती है।

Rainwater (1956) ने ज्ञात किया कि निम्न वर्ग के माता-पिता बालक को कठोर शारीरिक दंड देना जारी रखते हैं, जबकि मध्यम वर्ग के माता-पिता अधिकतर बालक के अंदर दोष या लज्जा की भावनाएं जगाने की कोशिश करते हैं या प्यार से वंचित करने की घमकी देते हैं। इसके फलस्वरूप निम्न वर्ग का बालक झूठ बोलकर या चुपचार रहकर दंड से बचने का प्रयास करता है, जबकि मध्यम

वर्ग का बालक माता-पिता की इच्छानुसार चलने का प्रयास करता है।

रोजेन (1956) एवं कोहन (1959) ने भी अनुरूपता के विषय में शोध करने पर सामाजिक वर्गगत अंतर पाया।

एल्डन्स (1956) ने अपने अध्ययन में देखा कि जो माता-पिता अपने बालक को अत्यधिक नियंत्रण में रखते हैं और उसे अधिक प्यार व स्नेह देने से डरते हैं वह उनके व वालक के संबंधों हेतु प्रतिकूल होता है। अनुज्ञात्मक बालक सामाजिक समायोजन नहीं कर पाते। इस बात की पुष्टि हरलॉक (1956) ने भी की हैं।

रेक्सफोर्ड (1957) ने बताया कि कुसमायोजित माता-पिता की अपेक्षा सुसमायोजित माता-पिता के कारण घर का पर्यावरण अधिक अच्छा होता है और उनके संबंध अपने बालकों से अधिक अच्छे होते हैं।

टरमन (1957) ने बताया कि अनुज्ञात्मक प्रवृत्ति में लैंगिक विभेद पाया जाता है। बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक अनुज्ञात्मक वातावरण दिया जाता है।

सियर्स, मैकोबी तथा लेविन ((1957) हेनरी (1961), बोसार्ड एवं बाल (1966) ने बताया कि जब माता-पिता अपने बालकों को तर्कसंगत अनुज्ञात्मकता प्रदान करते हैं, तो बच्चे सहयोगी, आत्मनिर्भर, उत्तरदायित्वपूर्ण व सुसमायोजित बनते हैं एवं अधिक अनुज्ञात्मकता में बालकों में सामाजिक दशाओं के साथ समायोजन में मुश्किलें आती हैं। ऐसे बच्च स्वार्थी व क्रूर प्रवृत्ति के तथा पराश्रित भी हो जाते हैं।

सीयर्स, मैकॉबी एवं लेविन (1957) तथा मिलर एवं स्वानसन (1958) ने निष्कर्ष निकाला कि बालकों को पुरस्कार देने से वे अनुशासित होते हैं।

सियर्स, मैकाबी तथा लेविन (1957), हैनरी (1961) तथा बोसार्ड एवं बाल (1966) ने अपने अध्ययनों में निष्कर्ष निकाला कि जब माता-पिता अपने बालकों को तर्कसंगत अनुज्ञात्मक

वातावरण प्रदान करते हैं तो बच्चे आत्मनिर्भर बनते हैं व अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन सुसमायोजित ढंग से करते हैं तथा नैतिक मानकों को स्वीकार करते हैं।

ब्रोनफेनब्रेनर (1958), डेविस (1946), मैक्कॉबी (1952), व्हाइट (1957), लिट्मैन (1957), मिलर एवं स्वानसन (1959) आदि के अध्ययनों का विश्लेषण कर देखा कि मध्यम वर्गीय अभिभावक अधिक अनुज्ञात्मक होते हैं एवं बालकों से उत्तरदायित्व, शैक्षिक उपलब्धि, आदर व उच्च नैतिक मूल्यों की आशा करते हैं, जबकि निम्न वर्ग में अभिभावक आवेगी एवं बालकों की आक्रामकता के प्रदर्शन, शारीरिक संतुष्टि, व्यय करने एवं सहभागिता के प्रति अनिषेधात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

सीयर्स (1961) ने शोध निष्कर्ष निकाला, जिसमें वताया कि कम दंड पाने वाले बालक आक्रामक व्यवहार व समाज विरोधी हो जाते हैं।

मॉस (1962) ने दीर्घकालीन अध्ययन में देखा कि प्रारंभिक अवस्था में नियंत्रण के व्यवहार का बालक के व्यवहार पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है, परन्तु जब बालक नियंत्रण के औचित्य और अनौचित्य को समझने की पर्याप्त क्षमता प्राप्त कर लेता है तब वह ऐसे व्यवहार का विरोध करने की प्रतिक्रिया जागृत कर लेता है।

रैण्ड, स्वीनी एवं विन्सेन्ट (1963) ने शोध निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि अस्वीकृत बालक झगड़ालू, गैरजिम्मेदार तथा अनाज्ञाकारी हो जाते हैं, वे हमेशा दिवास्वप्न व कल्पना में लीन हो जाते हैं।

एरिक्सन (1963) ने निष्कर्ष निकाला कि उत्तर बाल्यावस्था में अनुशासन द्वारा बालक के पर्यावरण के प्रति समायोजन एवं विधेयात्मक शीलगुणों के विकास द्वारा बालक के व्यक्तित्व में निखार आता है तथा उसमें आत्मसम्मान की भावना का विकास होता है। तथा आयु में वृद्धि एवं सकारात्मक व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ नैतिकता का विकास होता है। नैतिकता का विकास समाजीकरण

की अवधि में होता है, जिसमें लैंगिक भूमिकाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, क्योंकि बालक-बालिकाओं से हमारा समाज भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रत्याशाएँ भी करता है। अत: सामाजिक मानकों के आधार पर लैंगिक भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं, जिनका अनुपालन बालक तथा बालिकाओं को करना चाहिये, जिससे उनका व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित हो सके। इस अवस्था में माता-पिता के निर्देशों के परिणामस्वरूप बच्चों में आत्मनियंत्रण की भावना जन्म लेती है, जो नैतिक विकास के लिये महत्वपूर्ण मानी जाती है।

Rodman (1963) ने कहा कि भारतीय समाज में निम्न वर्ग के बालकों में परंपरागत क्रियाओं पर अधिक बल देता है, परन्तु नैतिक मूल्य के पालन पर बल नहीं देता। किन्तु मध्य वर्ग व उच्च वर्ग परंपरागत सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों के पालन पर अधिक बल देता है।

बेकर (1964) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि अनुज्ञात्मक अभिभावकों के बालक आज्ञा न मानने वाले, विद्रोही और आक्रामक हो सकते हैं, जबकि निम्न अनुज्ञात्मक अभिभावकों के बालक साफ-सुथरे, विनम्र, आज्ञाकारी और सामाजिक नियमों को मानने वाले होते हैं। एक अन्य अध्ययन में कोलमेन महोदय ने कहा कि अनुज्ञात्मक बालक स्वार्थी, अधिक मांग करने वाले व उद्दंड होते हैं, वे गैरजिम्मेदार, आज्ञा विरोधी, आक्रामक व अनैतिक हो जाते हैं।

मिंटर्न और लैम्बर्ट (1964) ने देखा कि राजपूत माताएँ लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को शारीरिक दंड भी अधिक कठोर व बार-बार देते रहने में भी संकोच नहीं करतीं। कभी-कभी दंड की स्थिति में जब दंड का भय हट जाता है तो बालक उसी पुरानी अनुक्रिया को करने लगता है व दंडित बालक आक्रामक हो जाता है।

एण्डेलर (1965 व 1966) ने कहा कि संरूपता पुरूस्कार एवं दंड से प्रभावित होती है।

रोथवर्ट और मैक्कोबी (1966) ने देखा कि लड़कों व लड़कियों के प्रति नियंत्रण व्यवहार में अंतर होता है।

जूलियन, रेग्यूला व हॉलेण्डर (1967) ने अपने अध्ययन में देखा कि बालिकाएं बालकों की तुलना में अधिक संरूप होती हैं, इसका कारण संभवत: हमारे समाज में बालिकाओं को इस बात का प्रोत्साहन मिलता है कि वे विनम्र रहें।

हरलॉक (1967) ने बताते हुये कहा है कि बालिकाओं में सामाजिक परिपक्वता बालकों की अपेक्षा जल्दी आ जाती है, अत: उनके लिये औसत दडं का प्रावधान होता है।

बामरिण्ड (1967) ने अपने शोधकार्य में निष्कर्ष स्वरूप बताया कि इससे पारिवारिक सम्बन्धों का विकास मंद होता है।

बुल (1969) ने कहा कि दडं का प्रावधान, अधिगम के प्रबलन का कार्य करता है व संवेगात्मक विकास में सहायक होता है। दंड का उद्‌देश्य बालक को सुधारना व उन्नत बनाना होना चाहिये, न कि उसे अपमानित करना।

Kohn (1969) ने देखा कि गैर-कार्यकारी मध्य वर्ग में बालकों से आज्ञापालन, स्वनियंत्रण, स्व-निर्देशन की अपेक्षा की जाती है, जबकि कार्यकारी मध्य वर्ग में बालकों को सांस्कृतिक मानकों के प्रति ईमानदार रहने की शिक्षा दी जाती है।

हरलॉक (1978) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि जब अभिभावकों की प्रत्याशा के अनुरूप उनके बालक नहीं बन पाते हैं, तब उनकी अभिवृत्ति दंडात्मक प्रकार की बन जाती हैं, तब बालक का व्यवहार प्रतिक्रिया स्वरूप नकारात्मक और परेशानी उत्पन्न करने वाला हो जाता है।

फिशर (1982) ने बताया कि बालक के सामाजिक व्यवहार सीखने में अनुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक संस्कृति के मानकों एवं मूल्यों के अनुकूल व्यवहार करने का प्रयास करता है।

Katainer (1988)[158] ने ''अभिभावकों की अनुशासनात्मक अभिवृत्ति का बालकों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का'' अध्ययन किया और बताया कि अभिभावकों का कम अनुशासनात्मक

व्यवहार बालिकाओं में कम नकारात्मक संवेग प्रदर्शित करता है तथा कठोर अनुशासनात्मक व्यवहार बालकों में निम्न सामाजिकता व उच्च नकारात्मक संवेग प्रदर्शित करता है एवं बालक का व्यक्तित्व विकास प्रभावित होता है।

स्टीवर्ट (1990) ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया कि माता-पिता का बालक पर पर्याप्त नियंत्रण एवं मार्गदर्शन न होने से बालकों में अनुशासनहीनता, गैरसामाजिक व्यवहार व व्यक्तित्व कुसमायोजन देखा जाता है।

Sengar & Shrivastave (1990)[215] ने अपने अध्ययन में बताया कि अभिभावकों द्वारा अस्वीकृत स्कूली किशोर स्नेह एवं प्यार का अधिक अभाव महसूस करते हैं, अधिक शत्रुतापूर्ण एवं आक्रामकता प्रदर्शित करते हैं और वे आर्थिक तथा राजनैतिक मूल्यों को उच्च वरीयता तथा धार्मिक एवं सैद्धांतिक मूल्यों को कम वरीयता देते हैं।

Denham et.al (1991)[127] ने देखा कि प्रतिकूल अभिभावकत्व अर्थात् क्रोध, शत्रुता, आलोचना आदि में जो अभिभावक बालकों को अनुशासित रखने में शारीरिक दण्ड, अपशब्द, आलोचनात्मक बातें, लाभ के अवसरों से वंचित करना एवं अन्य कठोर व्यवहार अपनाते हैं, उनके बालकों में अनेक शारीरिक व संवेगात्मक समस्याएं देखी जाती हैं तथा ऐसे बालकों में अभिभावकों के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार विकसित हो जाता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है जो अभिभावक के शत्रुतापूर्ण व्यवहार को और प्रबल करता है।

Dix, T. (1991)[129] ने अपने शोध में बताया कि सामंजस्यपूर्ण अभिभावकत्व हेतु समायोजन एवं परिपक्वता की योग्यता का आंतरिक दृष्टिकोण आवश्यक है। सबसे अच्छे अभिभावक वे हैं जो अपने लक्ष्यों को अपने बालकों की आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप निर्धारित करने में प्रभावशाली रूप से सक्षम होते हैं।

Dowdney et.al. (1991)[131] ने शोध में पाया कि जिन अभिभावकों की भूमिका नकारात्मक

होती है, उनके बालक का व्यवहार भी नकारात्मक होता है।

Mac Even et.al. (1991)[171] ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया कि जो अभिभावक अपने अभिभावकत्व में चिंता एवं संवेगात्मक अस्थिरता के लक्षण प्रकट करते हैं, उनके बालक लगातार चिंता संबंधित योजना ग्रहण करते हैं जो बालक के आत्म-विशस एवं समस्या सुलझाने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसके कारण धीरे-धीरे बालक में अभिभावक के समान चिंता करने वाली प्रवृत्ति विकसित हो जाती है तथा बालक में निम्न आत्म-सम्मान, निम्न उपलब्धि, कम ग्रहणशीलता, संवेगात्मक समस्याएं, अंर्तवैयक्तिक समस्याएं आदि उत्पन्न हो जाती हैं।

Ojha et. al. (1991) ने 156 भारतीय बालकों की सुरक्षा-असुरक्षा तथा निर्भरता पर माता-पिता के व्यवहार का प्रभाव देखने हेतु अध्ययन किया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि माता-पिता की दबाने वाली, तिरस्कृत एवं अस्वीकृत करने की अभिवृत्ति बालकों में असुरक्षा को जन्म देती है जबकि उनकी स्वीकृति असुरक्षा के स्तर को कम करती है। मता-पिता की अतिसंरक्षात्मक अभिवृत्ति बालक पर निर्भर बनाती है। तिरस्कारपूर्ण अभिवृत्ति, बालकों की निर्भरता से नकारात्मक रूप से संबंधित है। पिता की प्रतिवंधात्मक अभिवृत्ति बालक की निर्भरता से धनात्मक रूप से संबंधित पाई गई।

Baumrind (1991)[108] ने अपने अध्ययन में देखा कि स्कूल जाने वाले बालकों में मद्यपान एवं नशे की बढ़ती प्रवृत्ति तथा बालक के व्यसनी व्यवहार पर पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकत्व शैली की अत्यंत सार्थक भूमिका पाई जाती है। इन्होंने अपने निष्कर्ष में यह भी बताया कि बालकों एवं किशोरों की कुछ संवेगात्मक समस्याएं, कम आत्म-सम्मान, हीनता की भावना, अवसाद, भयभीत रहना, चिंता, तनाव, भोजन के प्रति अरूचि, समायोजन संबंधी समस्या, शर्मीलापन, नींद न आना, अरूचि, अपरिपक्वता, असंचारशीलता, सामाजिक प्रत्याहार आदि 'डिस्फंक्शनल' अभिभावकत्व के कारण देखी गई है। इन्होंने यह भी बताया कि जो अभिभावक, असंगठित, मांग

न करने वाले एवं बालक को प्रभावित करने की स्वयं की क्षमताओं के प्रति असुरक्षित रहते हैं, उनके बालक निम्न आत्म-सम्मान, कम आत्मनिर्भरता एवं कम परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं।

Compbell et.al (1991)[118] ने बताया कि अभिभावक बालक के नकारात्मक संबंध न केवल बालक के व्यवहार को समस्यात्मक बनाते हैं बल्कि पूर्ववर्ती समस्यात्मक व्यवहार में और अधिक वृद्धि करने की भूमिका भी निभाते हैं।

Denham et.al. (1991) ने अपने शोध में ज्ञात किया कि जो अभिभावक बालकों को अनुशासित रखने में कठोर शारीरिक दंड व कठोर व्यवहार अपनाते हैं उनके बालकों में शारीरिक व संवेगात्मक समस्याएँ देखी जाती हैं तथा जैसे बालकों में अभिभावकों के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार विकसित हो जाता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है जिससे अभिभावक और कठोर दंड देते हैं।

De-La-Taille et. al. (1993)[125] ने 6 से 14 वर्ष के बालकों के नैतिक मूल्यों तथा अपराध स्वीकृति व नैतिक सीमा रेखाओं का अध्ययन किया। अपने शोध कार्य में यह देखा कि नैतिक मूल्यों के विकास में अपराध स्वीकृति की क्या भूमिका है तथा वे कौन से तथ्य हैं, जो व्यक्ति की नैतिक सीमा रेखा निर्धारित करते हैं। इस शोध कार्य हेतु 5 से 14 वर्ष के 50 ब्राजीलियन के पूर्व शालेय, शालेय व किशोरावस्था के बालक लिये गये। इन्हें दो प्रकार की परिस्थितियों में रखा गया। प्रथम परिस्थिति में गंभीर अपराध स्वीकृति को प्रदर्शित किया गया व द्वितीय परिस्थिति में कम गंभीर समस्याओं पर अपराध स्वीकृति का अवलोकन किया गया। दोनों ही परिस्थितियों से संबंधित बालकों के अभिमतों का निरीक्षण किया गया व आयु के अनुसार निर्णयों का मूल्यांकन किया गया।

Aacharya, Padma (1993) ने पारिवारिक पृष्टभूमि का बालक की जागरूकता पर प्रभाव का अध्ययन इन्होंने 10 से 11 वर्ष आयु के 300 बालकों पर अध्ययन किया और देखा कि

माता-पिता की शिक्षा, परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की सकारात्मक अभिवृत्ति तथा बालक की जारूकता में धनात्मक सहसंबंध है। पारिवारिक वातावरण बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

Thomus,-Robert Murray et.al. (1993)[80] ने 'नैतिक तर्क तथा अनुचित कार्य के मध्य संबंध ज्ञात क़रने के लिये' एक शोध कार्य किया, जिसमें यह देखा गया कि अनुचित कार्य करने के बाद बालक उसका क्या नैतिक तर्क प्रस्तुत करते हैं। इसके अंतर्गत उत्तरदाताओं में पूर्व किशोरावस्था व पूर्व प्रौढ़ावस्था को सम्मिलित किया व उनसे निर्धारित प्रश्न पूछ गये तथा इन प्रश्नों को विभिन्न उत्तरदाताओं के नैतिक तर्क से जोड़ा गया, इसमें कुल 562 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया। परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि बालकों के नैतिक तर्क के स्तर व अनुचित कार्यों में सहसंबंध पाया गया।

Saxena, V. (1993) ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि माता की अस्वीकृति अपराधी बालक अधिक महसूस करते हैं, गैर अपराधी बालकों की अपेक्षा।

Mishra, R. (1993) ने माता की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति बालक आठ आवश्यक चरों को दर्शाती है, ये प्रेरणात्मक पैटर्न हैं, उपलब्धि की आवश्यकता, आज्ञा, स्वीकृति, प्रभुत्व, अनादर, सहनशक्ति, भिन्न लिंगी कामुकता एवं आक्रामकता।

Bhargava (1994) ने बताया कि आचार्य रजनीश के अनुसार बालकों को पूर्ण प्राकृतिक, निर्बाध एवं स्वतंत्र वातावरण प्रदान किया जाना चाहिये, जिससे वे स्वयं की अंतनिर्हित, स्वाभाविक योग्यताओं तथा क्षमताओं का सर्वश्रेष्ठ उपयोग अपने रचनात्मक एवं संतुलित व्यक्तित्व विकास हेतु कर सकें।

दिव्या गोयल (1994) ने कहा कि कठोर माता अपने बालक की अपेक्षा बालिकाओं से अधिक कठोर व्यवहार का प्रदर्शन करती हैं।

Damon,-William (1994) ने 'धनात्मक न्याय के विकास के संदर्भ में वितरण प्रणाली एवं सहभागिता पर नैतिक विकास' के संदर्भ में अध्ययन किया। बालकों की सहभागिता के क्रियाकलाप, उनके सामाजिक विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं? क्या बालक अपनी स्वतः की सहभागिता अपने स्वतः के साथ करता है या स्रोतों के साथ? क्या वह दूसरों के साथ सहभागिता इसलिये करता है कि वे उसे ठीक लगते हैं या सहभागिता के नैतिक मूल्य आधार हैं? क्या सहभागिता के कई कारण एवं तरीके होते हैं? क्या बालक सहभागिता को विकास के अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग दर्शाते हैं? ये सभी प्रश्न बालकों में धनात्मक न्याय की स्थिति जानने हेतु आवश्यक हैं। साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि उपलब्ध स्रोत, प्रशंसा एवं अन्य पुरस्कार का नैतिक विकास में क्या महत्व है तथा विभिन्न अवस्थाओं में किस प्रकार बालक अंतर्द्वन्दों से बाहर आते हैं? अपने अध्ययन में इन्होंने वास्तविक जीवन मे पुरस्कृत परिस्थिति का नैतिक विकास पर प्रभाव देखा।

Bharadwaj, R. (1995)[110] ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि माता-पिता की बालकों के प्रति लापरवाही, उपेक्षा बालकों में अवांछितपन, अनचाहेपन की भावना उत्पन्न कर देती है, परिणामस्वरूप बालक में निर्भरता दिखाई देती है। इन्होंने यह भी देखा कि बालक के व्यक्तित्व विकास हेतु माँ प्राथमिक रूप से बालक से जुड़ी रहती है, क्योंकि बालक सर्वप्रथम माँ के संपर्क में आता है और माँ उसकी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। माँ की भूमिका, संवेगात्मक आधार को प्रतिबिंबित करती है। अंर्तवैयक्तिक संवेदनशीलता (सुग्राहिता) एवं सहायता बालक को अधिक उपलब्धि पूर्ण तथा कल्पनापूर्ण बनाने हेतु महत्वपूर्ण है। अपर्याप्त मातृत्व व्यवहार बालक में व्यवहारगत समस्यायें उत्पन्न करता है।

Reddemma, -C. et.al. (1995)[203] ने आयु, लिंग और जन्मक्रम का स्वीकृत व्यवहार के संबंध में शोध अध्ययन किया। इस हेतु उन्होंने 117 बालकों पर अध्ययन किया। निष्कर्ष बताते हैं

कि बालकों की आयु, लिंग और उनकी स्वीकृति को प्रभावित करती हैं। बालिकाएं बालकों की अपेक्षा अधिक स्वीकृति चाहती हैं।

Gjerde et.al. (1995) ने 38 बालिकाओं व 46 बालकों पर अध्ययन कर पाया कि बालक अपनी माता के अधिक समीप होते हैं उनमें अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने की शक्ति कम होती है एवं उनके संबंध प्रेमपूर्ण होते हैं, परन्तु मता-पिता जब उनका विरोध करते हैं, तो वे अपेक्षाकृत कम अंर्तसंबंध का प्रदर्शन करते हैं। उच्च अभिभावक समीपता बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में उच्च स्तर का अंर्तसंबंध प्रकट करती है।

दिव्या गोयल (1996) ने निष्कर्ष निकाला कि अनुज्ञात्मक वातावरण में लैंगिक विभेद पाये जाते हैं। बालिकाओं की अपेक्षा बालक अधिक अनुज्ञात्मकता प्राप्त करते हैं।

डेविस एवं हैविंग्हर्स्ट (1996) ने देखा कि मध्यवर्गीय माता-पिता कम अनुज्ञात्मक होते हैं, निम्न वर्ग की अपेक्षा।

Schulman,-Michael (1996)[213] ने 'बालकों में देखरेख संबंधी रूपरेखा, जिसमें किशोरों हेतु उपलब्ध आवास सुविधाओं का उनके नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव' का अध्ययन किया। इसमें किशोरों को व्यवहार प्रलोभन एवं नैतिक शिक्षा इसलिये दी गई ताकि वे अपने व्यवहारों पर नियंत्रण व आवश्यकता पड़ने पर उनमें संशोधन कर सकें। यही नहीं अंततोगत्वा वे यह जान सकें कि कौन सी बात प्रोत्साहनकारी है। वे किशोर जिनके व्यवहार के धनात्मक पक्षों को अन्यों के संदर्भ में परखा गया एवं प्रोत्साहित किया गया, वे अधिक आपस में सहयोगी देखे गये व उनका जीवन समाज के लिये अधिक रचनात्मक था। इन कार्यक्रमों में आवास में रहने वाले, दूसरों की परवाह करने वाले, अधिक पुरूस्कार पाने वाले और अधिक अच्छे स्तर के घोषित किये गये। इन कार्यक्रमों में पुरस्कार पद्धति एवं अन्य पक्ष जैसे कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण एवं परामर्शदाताओं का अधिक प्रभावी नैतिक शिक्षक बनना उपयोगी सिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम के अध्ययन का लक्ष्य

आवास में रहने वाले बालकों को नियमों का आज्ञाकारी बनाने की तुलना में उन्हें अच्छा व स्वयं के प्रति आज्ञाकारी बनाना था।

Slobodnik et.al. (1997)[226] ने 'दत्तक परिवारों में बालकों के लगाव एवं व्यक्तित्व विकास' का अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य यह जानना था कि क्या दत्तक परिवार अपने दत्तक बालकों के साथ न्याय करते हैं और इन परिवारों में बालकों को स्वीकृत तथा स्नेही व्यवहार प्राप्त होता है। इस अध्ययन में दत्तक तथा सामान्य परिवारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इसमें 86 दत्तक परिवारों व 86 सामान्य परिवार लिये गये एवं उन्हें व्यक्तित्व आयाम, बाल्यावस्था के दौरान बालक-अभिभावक लगाव एवं संचार तथा संवेगात्मकता पर प्रश्नावली भरने को दी गई। शोध निष्कर्ष यह बताते हैं कि दत्तक परिवारों के बालकों को अतिसुरक्षा प्रदान की जाती थी, इससे बालक के व्यक्तित्व में अवसादी लक्षण उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

Plucker,-Jonathan-A. et.al. (1998)[95] ने अभिभावकों के मद्यपान करने तथा ड्रग लेने संबंधी समस्या का किशोर बालकों की रचनात्मक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस हेतु औसत 21 वर्ष आयु के 163 स्नातक छात्र चयनित किये गये। शोध निर्णय यह बताते हैं कि अभिभावकों के मद्यपान व ड्रग समस्या का बालकों की रचनात्मक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु लिंग विभेद के अनुसार किशोरों की अंत:क्रिया विभिन्न होती है। इस अध्ययन में यह भी सुझाव दिये गये कि वास्तविक प्रभाव देखने के लिये लंबे समय तक अभिभावक तिरस्कार का अध्ययन करना आवश्यक है।

Harris, J.R.et.al. (1998)[35] ने बालकों के पारिवारिक पालन-पोषण के प्रभाव का बालक के व्यक्तित्व को बनाने व रूपान्तरित करने के संदर्भ में अध्ययन किया एवं पाया कि परिवार के अतिरिक्त बालक को अपनी मित्रमंडली में जो अनुभव होते हैं, वे उनके व्यक्तित्व निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं, क्योंकि अभिभावक-बालकों को सामाजिक नहीं बनाते, बल्कि बालक-बालकों

को सामाजिक बनाते हैं।

Ono-Yutaka et.al. (1999)[186] ने अभिभावकों की पालन-पोषण अभिवृत्ति एवं बाल्यावस्था के बालकों की व्यक्तित्व विशेषताओं में संबंध का अध्ययन किया। यदि माता अपनी बालिकाओं का ध्यान रखती है तो वे जिम्मेदार पायी जाती हैं और पिता अपनी पुत्रियों का ध्यान रखते हैं तो वे स्वयं को निर्देशित करने वाली व आत्मनिर्भर होती हैं। अति सुरक्षात्मकता प्राप्त करने वाली बालिकाएं हमेशा दूसरों को दोषी ठहराने वाली होती हैं व जो अभिभावक अति सरंक्षणात्मक नहीं होते, उनकी बालिकाओं में ग्रहणशीलता अधिक पाई जाती है।

Goodman,-Joan-F. (2000)[140] ने 'पूर्व शालेय बालकों की नैतिक शिक्षा' पर शोध कार्य किया, जिसमें शिक्षा के दो आयाम लिये गये-एक परंपरागत व दूसरा प्रगतिशील। परंपरागतवादियों का विश्वास है कि नैतिक मूल्य, बाह्य जगत से संबंधित व विश्वव्यापी होते हैं व उन्हें बालक के चरित्र में उतारने के लिये अनुशासन, साहस, आज्ञाकारिता तथा विश्वास से प्रत्यक्ष निर्देशित करने की आवश्यकता होती है और इन्हें विकसित करने हेतु बालक में कुछ नियमों का नियमन करना आवश्यक है, जबकि प्रगतिवादी यह विश्वास रखते हैं कि नैतिक जीवन-मूल्य व कारक हैं जो कि सामाजिक संदर्भ पर आधारित हैं और इन्हें विकसित करने हेतु बालकों का सामाजिक-नैतिक वातावरण, जिसमें निःस्वार्थता, देखभाल, सहनशीलता आदि कारकों की आवश्यकता होती है। अतः जो योजनाएँ प्रारंभ की जाएं, उनमें दोनों ही तथ्यों का ध्यान में रखकर आवश्यकतानुसार संतुलित किया जावे। यदि परंपरागत विधियों का उपयोग करना है तो बालक के संज्ञानात्मक विकास, नैतिक वास्तविकता तथा स्वीकृति को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस प्रकार बालक में नैतिक पहचान को निर्मित करने के लिये इन दृष्टिकोणों का सहारा लिया जा सकता है।

Lee, Kang (2000)[54] ने शोध कार्य किया, जिसमें 'बालकों की झूठ बोलने संबंधी भाषा क्रिया का अध्ययन' किया गया, इसमें क्रिया भाषा-सिद्धांत व विचार का उपयोग किया गया तथा

बालकों के झूठ बोलने संबंधी ज्ञान के विकास का अध्ययन विशेष रूप से नैतिक जीवन मूल्यों के साथ किया गया। शोधकर्त्ता ने पाया कि बालक जानबूझकर व अनजाने में, दोनों ही प्रकार से झूठ बोलते हैं। इस प्रत्यय को देखने हेतु शोधकर्त्ता ने केनेडा व चाइना में बालकों के झूठ के प्रत्यय व नैतिक नियंत्रण का अध्ययन किया व पाया कि किस प्रकार झूठ बोलने की क्रिया में सांस्कृतिक विभिन्नता पाई जाती है।

Ravi, Sidhu (2001)[201] ने परिवर्तित सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में केवल विधवा माता एवं बालक की समस्याओं को ज्ञात करने हेतु यह अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु आगरा शहर के निदर्शन विधि से चयनित शालाओं के 7 से 14 वर्ष आयु के कक्षा 4, 5 एवं 6 में पढ़ने वाले 50 बालक एवं 50 बालिकाओं को, जिनके पिता की मृत्यु हो चुकी थी, लिया तथा बालकों की समस्याओं (सामान्य समस्याएं, सामाजिक अंत:क्रिया, बालक-अभिभावक संबंध एवं अनुशासन से संबंधित) एवं अकेली माताओं की समस्या जिनका वे सामना करती हैं, जैसे सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक प्रकार की समस्याएं। इन समस्याओं का अध्ययन करने हेतु एक स्वयं बनाई गई अइन्वेन्ट्री का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि बालकों की आयु एवं सामान्य समस्याओं में नकारात्मक संबंध पाये गये। बालकों की आुय एवं केवल माता अभिभावक-बालक संबंध में सार्थक धनात्मक संबंध पाये गये। शोध यह भी बताता है कि बालकों के दो समूह के मध्य माता द्वारा सामाजिक समस्याओं के अनुभवों में सार्थक रूप से भिन्नता पाई जाती है एवं बालकों के दानों आयु समूहों के मध्य माता द्वारा शैक्षणिक समस्याओं के अनुभव में भी सार्थक अंतर पाया गया। ऐसे परिवारों के बालकों में आयु के पहले ही परिपक्वता आ गई। वे बालक अपने घर की जिम्मेदारियों का वहन करते हैं व अधिक जिम्मेदार भूमिका का निर्वहन करते हैं तथा बालक अपने आदर्श मॉडल की अनुपस्थिति में अपर्याप्त समाजीकरण प्रदर्शित करते हैं।

Purohit, N. et.al. (2001)[200] ने ''बालकों द्वारा अभिभावक व्यवहारों का प्रत्यक्षीकरण

एवं उनकी दमनकारी तथा संवेदनशील प्रवृत्तियों का संबंध'' विषय का अध्ययन किया। इस हेतु जयपुर के तीन पब्लिक हाईस्कूलों से 240 किशोर बालक एवं बालिकाओं को चुना। इसमें कला, विज्ञान एवं कॉमर्स संकाय के विद्यार्थी शामिल थे। 128 बालक व 112 बालिकाएं ली गई। इनके मापन हेतु Parent Child Relationship Scale एवं R.S. Scale का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि किशोरों में दमनकारी-संवेदनशील प्रवृत्ति, अभिभावकों के पुरूस्कार और दंड देने द्वारा प्रदर्शित होती है, तो बालक अधिक संवेदनशील प्रवृत्ति दिखाते हैं एवं अभिभावकों की अतिसुरक्षा एवं अतिअनुग्रह (अतिपक्षपात) बालकों में दमनकारी प्रवृत्ति विकसित करता है। बालकों में दमनकारी एवं संवेदनशील प्रवृत्ति केवल पिता के व्यवहार के कारण दिखाई देती हैं। माता के व्यवहार से इसका कोई संबंध नहीं होता है। लड़कियों में उक्त व्यवहार माता-पिता दोनों के व्यवहार के फलस्वरूप दिखाई देता है।

Purohit et.al. (2001) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि जब अभिभावकों की अस्वीकृति अधिक दंड द्वारा प्रदर्शित होती है तो बालक अधिक संवेदनशील प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

बलडोइन महोदय ने देखा कि उचित मात्रा में स्नेह व दंड से बालक ऐसे काम करना सीखता है जिससे माता-पिता उसे प्यार करें न कि दंड दें।

Tripathi, V.P. et. al. (2001)[236] ने शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के किशोर व किशोरियों के मध्य पिता के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में अंतर तथा अभिभावक अनुशासन संबंधी व्यवहार का उनके प्रत्यक्षीकरण में अंतर। इस अध्ययन हेतु आगरा शहर की 4 शालाओं को जिसमें 2 कॉन्वेंट एवं 2 हिन्दी माध्यम स्कूल थे, लिया गया। इस हेतु 100 बालक एवं बालिकाओं को जिसकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी, लिया गया। जो उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग से संबंधित थे। मध्यम वर्ग की मासिक आय 3000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह थी। इसमें उच्च मध्यम वर्ग आय रूपये

4000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह व निम्न मध्यम वर्ग की आय 3000/- से 3900/- रूपये प्रतिमाह थी।

Nucci et.al. (2001) ने 'नैतिक शिक्षा' विषय पर एक शोध लेख का प्रकाशन किया, जिसमें 25 वर्षों के शोध निष्कर्ष प्रकाशित किये गये थे। यह शोध सामाजिक-संज्ञानात्मक डोमेन सिद्धांत पर आधारित थे, जिसके अनुसार नैतिकता अन्य सामाजिक मूल्यों से भिन्न होती है तथा कक्षा में नैतिक वातावरण निर्मित करने के लिये, बालकों के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में अनुशासन तथा नैतिक मूल्य कार्यक्रम सम्मिलित किये जाने की आवश्यकता थी। इसमें एक प्रश्नावली निर्मित की गई, जिसमें नैतिकता से संबंधित प्रश्न समिलित किये गये-क्या नैतिकता एक विश्वव्यापी भावना है?, क्या यह व्यक्ति की संस्कृति से संबंधित है?, क्या नैतिक चरित्र जैसा कोई कथन हो सकता है?, बालक के नैतिक तथा सामाजिक विकास में शिक्षिका की क्या भूमिका है? शोलय बालकों के नैतिक विकास कार्यक्रम में एक सघन नैतिक विकास कार्यक्रम की भूमिका का अध्ययन करने हेतु यह शोध कार्य किया गया, जिसमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि बालक के सामाजिक संसार को निर्मित करने में विशेष प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

Coulacoglou, -Carina (2002)[119] ने परियों की कथा परीक्षण के माध्यम से बालक की आक्रामकता का अध्ययन किया। इस हेतु 7 से 12 वर्ष के बालकों को व्यक्तित्व प्रत्यारोपण परीक्षण Fairy Tale Test (FTT) दिया गया। व्यक्तित्व की रूपरेखा का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि 51 बालकों ने परीक्षण में आक्रामक प्रेरणा के संबंध में उच्च अंक प्राप्त किये थे, 55 बालकों ने प्रतिशोधवादी आक्रामकता प्रदर्शित की, 58 बालकों ने शत्रुता में आक्रामकता को प्रकट किया तथा 68 बालकों ने प्रभुत्ववादी आक्रामकता दर्शाई। इसके साथ 50 बालकों का एक समूह ऐसा भी था जिसने आक्रामकता का प्रदर्शन नहीं किया तथा 70 बालकों का एक नियंत्रित समूह का परीक्षण भी किया गया, जिनकी आक्रामकता का स्तर निम्न या औसत था। शोध

निष्कर्ष यह बताते है कि बिना आक्रामकता तथा प्रभुत्व के रूप में आक्रामकता प्रदर्शित करने वाले बालकों में नियंत्रित समूह के साथ तुलना करने पर सार्थक अंतर पाया गया।

Lewis, C.et.al. (2003)[55] ने एलिमिन्ट्री स्कूल में नैतिक सुधार की दृष्टि से एक प्रोग्राम डिजायन किया, जिसमें बालकों को अधिक कौशल करने, उत्तरदायित्व निभाने व देखभाल करने संबंधी, कौशल सिखाने के कार्यक्रम विकसित किये गये। इसमें बालकों को उनकी शैक्षणिक वृद्धि के साथ-साथ उनके सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास के लिये भी प्रेरित किया गया। विशेष रूप से इस प्रोग्राम के द्वारा शालेय वातावरण तथा उसमें निहित मूल सिद्धांतों को पुनः निर्मित करने का प्रयास किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों, शिक्षकों व अभिभावकों के मध्य अच्छे संबंध विकसित करने हेतु सहायक सेवाएँ प्रारंभ की गई तथा विद्यार्थियों को नियमित रूप से दूसरों से मिलने-जुलने के अवसर प्रदान किये गये। उनके लिये अनेक लेख तैयार किये गये और उन्हें जीवन मूल्यों से संबंधित कार्यों को करने हेतु प्रेरित किया गया। प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियों में आपसी सहायक संबंधों को विकसित करने वाले क्रियाकलापों को डिजाइन किया गया, जिससे विद्यार्थियों की प्रतिदिन की कक्षा संबंधी गतिविधियां जीवन मूल्यों से प्रेरित हो सकें तथा शाला और घर में अच्छे आपसी संबंध विकसित हो सकें। आपस में सहयोगी सीखने की क्रिया संपन्न हो, विकासात्मक अनुशासन निर्मित हो, साहित्य संबंधी शिक्षा दी जा सके तथा विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थी आपस में क्रिया कर सकें। विभिन्न क्रियाकलापों में परिवार की भागीदारी हो तथा संपूर्ण शाला, समुदाय से जुड़कर, समुदाय के निर्माण के लिये संलग्न हो सके।

Palmer, -Emma J. (2003)[190] ने नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु शोध कार्य किया। यद्यपि शोध के पहले ही यह ज्ञात था कि नैतिक तर्क के स्तर तथा बचाव व्यवहार में संबंध पाया जाता है तथा बचाव करने वाला व्यक्ति, बचाव न करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा, कम परिपक्व व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं, परन्तु यह शोध कार्य अधिक विस्तृत संबंध

ज्ञात करने हेतु किया गया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि कुछ विशेष नैतिक मूल्य बचाव पक्ष से अपेक्षाकृत अधिक संबंध रखते हैं। इसके अलावा नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य संबंध ज्ञात करने की मनोवैज्ञानिक तकनीकी के विषय में अधिक शोध कार्य नहीं हुये थे। यह शोध अपराध के सैद्धांतिक मॉडल एवं नैतिक तर्क सिद्धांत के मध्य संबंध ज्ञात करने हेतु किया गया। शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि बालकों के पूर्व सामाजिक अनुभव, बालक के नैतिक तर्क तथा अन्य सामाजिक-संज्ञानात्मक प्राविधि को प्रभावित करते हैं तथा ये सामाजिक-संज्ञानात्मक कारक, जैस- सामाजिक सूचना प्राविधि तथा अन्य संज्ञानात्मक कारक, जिसमें नैतिक तर्क भी सम्मिलित है, व्यक्ति का सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार निर्धारित करने को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार यह सिद्धांत नैतिक तर्क तथा बचाव के मध्य प्रभावपूर्ण संबंध प्रदर्शित करता है।

Janet (2004) ने अपने शोध में बालकों व उनसे परिवारों पर अध्ययन कर बाताया कि जो माता-पिता अपने बालकों को स्वीकृत करते हैं उनका सकारात्मक व्यक्तित्व विकास होता है एवं तिरस्कृत बालकों का नकारात्मक व्यक्तित्व विकास होता है।

Prestwich, -Dorothy-L. (2004)[199] ने 'अमेरिका की शाला में चरित्र शिक्षा' नामक शोध लेख प्रकाशित किया, जो स्कूल कम्यूनिटी नामक जर्नल में प्रकाशित हुआ। इस शोध कार्य में 1960 से 1980 तक लगभग 20 वर्षो के अध्ययन के निष्कर्ष को सम्मिलित किया गया। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि अमेरिकन बालक हिंसात्मक तथा अपराधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। अतः राष्ट्रीय उत्थान के लिये तथा गिरते हुये नैतिकता के स्तर को संभालने के लिये चारित्रिक शिक्षा का शैक्षिक योजना में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। इस शोध के आधार पर यह सुझाव प्रस्तुत किये गये कि शालाओं से संबद्ध एक औपचारिक योजना का प्रारम्भ किया जाए। इस संदर्भ में हार्टबुड इन्स्टीट्यूट में एक ऐथिक्स पाठ्यक्रम बालकों के लिये प्रारंभ किया गया। अन्य शालाओं में भी चारित्रिक विकास के लिये अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किये गये, जिसमें

सच्चाई, आज्ञाकारिता, स्वअनुशासन तथा स्वनियंत्रण पर जोर डाला गया। इस शिक्षा में समुदाय व अभिभावक को भी संबद्ध किया गया। इससे संबंधित इंटरनेट साइट तैयार की गई तथा उसे ऐसे नेटवर्क पर डाला गया, जो कि प्राय: बच्चों के द्वारा उपयोग की जाती थी। इस नैतिक विकास का उत्तरदायित्व शालेय शिक्षिका पर भी डाला गया, परन्तु इस शिक्षा में चारित्रिक शिक्षा से संबंधित औपचारिक प्रशिक्षण का अभाव था।

Schonfeld (2005)[212] ने 'अभिभावकों में नशे की लत का बालक की नैतिक परिपक्वता व बाल अपराध पर प्रभाव' का अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य बालकों के संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक एवं सामाजिक कमियों, जिसमें बालक अपराध संलग्न है, का अभिभावकों के शराबी होने से संबंध था। यद्यपि बाल अपराधियों की अधिकांश जनसंख्या, जो कि बौद्धिक व व्यवहारिक कमियों को दर्शाते हैं, उनमें नैतिक निर्णय एवं विवेक कमियों को तब अधिक देखा गया, जब उनके अभिभावक शराबी पाये गये। ऐसे बालकों का सामाजिक-नैतिक पक्ष उनके लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर और धार्मिकता से संबंधित कर देखा गया। इस हेतु 10 से 18 वर्ष के 27 ऐसे बच्चे लिये, जिनके अभिभावक शराबी थे व 29 ऐसे बच्चे जिनके अभिभावक शराबी नहीं थे। नैतिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि ऐसे बालक जो शराब समूह से संबद्ध थे, उनमें निम्न नैतिक परिपक्वता दिखी, उन बालकों की अपेक्षा जिनके माता-पिता शराबी नही थे। उन्होंने अपने अध्ययन में अतिरिक्त मूल्यांकन करते हुये सामाजिक अपेक्षाओं एवं रोकथाम का भी अध्ययन किया। अभिभावकों द्वारा शराब लेने का प्रभाव बालकों के नैतिक मूल्य एवं नैतिक निर्णयों की कमियों में स्पष्ट दिखाई दिया, साथ ही शराबी अभिभावकों के समूह के अधिक बाल-अपराधी पाये गये। इस शोध के परिणाम से बाल अपराधों की रोकथाम के सामाजिक उपायों की आवश्यकता को बल मिला।

सामाजिक-आर्थिक स्तर संबंधी अध्ययन

Drotarova,-Eva (1987)[132] ने 526 सामान्य बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण तथा लिंग के प्रभाव का अध्ययन इनके सीखने की प्रेरणा पर किया। इसके लिये उन्होनें KOZEKI की JMB प्रश्नावली का प्रयोग व निरीक्षण किया एवं निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक वातावरण एवं लैंगिक भेद बालक एवं बालिकाओं के सीखने की प्रक्रिया हेतु उत्तरदायी हैं।

Onacha, -Charles et.al. (1987)[187] ने परिवार के आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण व विद्यालयीन वातावरण का बालक-बालिकाओं के विज्ञान की उपलब्धि से संबंध का अध्ययन किया। इस हेतु उन्होंने 480 नाइजेरिया छात्रों जिनकी आयु 12-17 वर्ष की थी, का अध्ययन किया। इस शोध में अभिभावकों ने भी भाग लिया। इस शोध के परिणाम यह बताते हैं कि परिवार का आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयीन वातावरण सामूहिक रूप से छात्रों की विज्ञान उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

Sater, Gray-M. (1988)[207] ने अधिगम रूप से अक्षम छात्रों की समाजिक-स्थिति का अध्ययन किया। इसके लिये उन्होंने विभिन्न सामाजिक स्तरों के बालकों की विशेषताओं एवं विभिन्न आनुवांशिकियों का अध्ययन किया व निष्कर्ष प्राप्त किया कि विभिन्न सामाजिक स्तरों का बालक के अधिगम पर प्रभाव पड़ता है।

Major, Bank- (1990)[172] ने बालकों के सामाजिक स्तर, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकों के शैक्षिक-समाजीकरण के आधार पर 11 वर्षीय 900 आस्ट्रेलियन बालकों और उनके माता-पिता से आंकड़े संकलित किये। इसमें बालकों को चार समूहों में बांटा और पाया कि शैक्षिक पारिवारिक समूह में सहोदर कारक का बच्चों की विभिन्न योग्यताओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से संबंध नही था, फिर भी सामान्य आनुपातिक में विभिन्नताओं से यह स्पष्ट हुआ है कि विभिन्न पारिवारिक वातावरण सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं समूह के सहोदर कारक और बच्चों

की शैक्षिक उपलब्धि में काफी कुछ जटिल सम्बन्ध थे।

Horvat et. al. (1993)[153] ने 7 से 9 वर्ष के 203 बालकों पर अध्ययन कर निष्कर्ष ज्ञात किया कि बालकों के परिवार का सामाजिक--आर्थिक स्तर एवं शैक्षणिक स्तर व बौद्धिक विकास में सार्थक संबंध होता है।

Coleman et. al. (1993)[117] ने अपने अध्ययन में ज्ञात किया कि बालक की शैक्षणिक स्थिति पर उसके सामाजिक स्तर का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

Jason et. al. (1994)[154] ने अपने अध्ययन में देखा कि निम्न सामाजिक स्तर होने के बावजूद अगर शैक्षणिक स्थिति अच्छी हो तो बालक लोकप्रियता हासिल कर लेते हैं।

Vander et.al (1994)[238] ने 18 वर्ष आयु के 519 स्कूल जाने वाले छात्रों एवं उनके माता-पिता की सामाजिक पृष्ठभूमि व ज्ञानात्मक विकास का अध्ययन किया व निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक पृष्ठभूमि माता-पिता का शिक्षा के प्रति रूझान बालक की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

Orr, E.et.al. (1995)[188] ने बालक की स्वयं के प्रति अवधारणा पर माता-पिता के वास्तविक एवं माने हुये सामाजिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष बताते है कि इसके बीच कोई धनात्मक सहसंबंध नहीं था।

Hatzichristou et. al. (1996)[146] ने विभिन्न क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक सामाजिक योग्यता के आधार पर अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर, समूह व लिंग भेद से बालक की सामाजिक योग्यता प्रभावित होती है।

Joewana, - Satya (1997)[155] ने बालकों की उपलब्धि पर माता -पिता के अति-महत्वाकांक्षी विचारों, सामाजिक-आर्थिक स्तर व व्यवसाय के प्रभाव का अध्ययन किया। इस हेतु 5 परिवारों के 10 से 12 वर्ष के बालकों व 10 वर्ष की बालिकाओं को लिया गया।

निष्कर्ष बताते हैं कि बालकों की उपलब्धि पर माता-पिता का व्यवसाय सामाजिक-आर्थिक स्तर व महत्वाकांक्षा का स्तर प्रभावित करता है।

Kotekova, - Ratislava (1997)[161] ने विभिन्न पारिवारिक संस्कृतियों, विभिन्न पारिवारिक वातावरण, परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का बालक के सामाजिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिये 11 से 12 वर्ष के 205 बालक चार परिवारों से लिये गये। निष्कर्ष स्वरूप ज्ञात हुआ कि बालक का सामाजिक-आर्थिक स्तर उसके सामाजिक वेकास को प्रभावित करता है।

Follz, C. et.al. (1999)[134] ने 224 बालक व 224 बालिकाओं का अध्ययन कर नेष्कर्ष प्राप्त किया कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों का समायोजन विभिन्न कार का होता है।

Shukla, Geeta (1999)[260] ने 300 छात्रों का अध्ययन कर निष्कर्ष ज्ञात किया कि च्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक एवं अभिभावकों के संबंध में स्वीकृत छात्रों के हिंमुखी विरूद्ध अंतर्मुखी व्यक्तित्व शील गुण में सार्थक अंतर है। इससे स्पष्ट है कि उच्च समूह यह गुण अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में विद्यमान है।

Monale et. al. (2000)[179] ने 322 बालकों (70 प्रतिशत बालक एवं 30 प्रतिशत लिकाऐं) पर अध्ययन कर ज्ञात किया कि बालकों के आक्रामक व्यवहार व सामाजिक असंतुलन कारण उनका पारिवारिक - सामाजिक आर्थिक स्तर था।

Sinha, UK et. al. (2000)[226] ने अपने शोध में देखा कि निम्न सामाजिक-आर्थिक एवं माता की अनुदारता का प्रभाव बालकों पर पड़ता है और बालकों में अनेक समस्याएं न्न करता है।

Tripathi, V.P. et. al. (2001)[237] ने शोध अध्ययन कार्य किया। इस अध्ययन का

उद्देश्य बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का पता लगाना तथा इसका बालिकाओं की समायोजन संबंधी समस्याओं के मध्य संबंध ज्ञात करना तथा अभिभावकों की आय, शिक्षा एवं व्यवसाय का इन समायोजन समस्याओं पर प्रभाव जानना है। इस शोध हेतु उत्तर बाल्यावस्था की कक्षा 6 व 7 में पढ़ने वाली 110 छात्राओं का चयन किया गया जो शहरी क्षेत्रों में निवास कर रही थीं तथा इनकी उम्र 10 से 13 वर्ष थी। इस हेतु समायोजन मापनी व सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि समायोजन व सामाजिक-आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध पाया गया। अभिभावक शिक्षा एवं आय उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं को प्रभावित करती है। व्यवसाय एवं बालिकाओं की समस्याओं के मध्य असार्थक संबंध पाया गया। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं का स्कूल में समायोजन अच्छा नहीं था। इसका कारण हो सकता है कि अभिभावक बालकों की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं जिसके कारण उनके प्रति बालकों की प्रतिकूल भावना विकिसत हो जाती है।

Tripathi, V.P. et. al (2001)[236] ने शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के किशोर व किशोरियों के मध्य पिता के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में अंतर तथा अभिभावक अनुशासन संबंधी व्यवहार का उनके प्रत्यक्षीकरण में अंतर। इस अध्ययन हेतु आगरा शहर की 4 शालाओं को जिसमें 2 कॉन्वेंट एवं 2 हिन्दी माध्यम स्कूल थे, लिया गया। इस हेतु 100 बालक एवं बालिकाओं को जिसकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी, लिया गया। जो उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग से संबंधित थे। मध्यम वर्ग की मासिक आय 3000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह थी। इसमें उच्च मध्यम वर्ग आय रूपये 4000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह व निम्न मध्यम वर्ग की आय 3000/- से 3900/- रूपये प्रतिमाह थी।

निष्कर्ष बताते हैं कि किशोरों की अभिभावकों के प्रति अभिवृत्तियों में लिंग भेद व

आर्थिक वर्ग भेद का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है। इसका कारण सामाजिक दबाव एवं बाल्यावस्था से बालकों को बड़ों के प्रति सम्मान के नैतिक मूल्य से परिचित कराना है। निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि किशोर बालक एवं बालिकाओं के मध्य अभिभावकों के अनुशासनात्मक व्यवहार संबंधी प्रत्यक्षीकरण में उच्च स्तर का अंतर पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि बालिकाएं स्वाभाविक रूप से आज्ञाकारी होती हैं तथा अभिभावकों की अपेक्षाओं व इच्छाओं को पूरा करती हैं। वे अधिक शांत भी होती हैं जबकि बालक स्वाभाविक रूप से स्वीकारात्मक तथा अभिभावकों की अपेक्षाओं की अपेक्षा स्वयं की इच्छाएं पूरा करने पर बल देते हैं तथा बालिकाओं की अपेक्षा अधिक शरारती होते हैं। इन सब बातों के कारण अभिभावक बालिकाओं के प्रति अधिक अच्छे, स्वतंत्र एवं अधिक अनुज्ञात्मक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं।

Lopes et. al. (2002)[169] ने अपने अध्ययन में 10 से 14 वर्ष के 173 बालकों को लिया। निष्कर्ष दिखाते हैं कि तिरस्कृत, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर, उपेक्षित बालक अक्सर विध्वंसक दिखाई देते हैं व अपेक्षाकृत गलत सामाजिक व्यवहार के साथ पेश आते हैं।

Blum,-S. (2004)[112] ने छोटे एवं बड़े शहरों व कस्बों में रहने वाले 995 स्कूल जाने वाले बालकों का अध्ययन किया व उन्होंने देखा कि बालक के वातावरण एवं शिक्षा का उसके व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

Garcia et. al. (2004)[136] ने अपने अध्ययन में सातवी कक्षा के 150 छात्रों पर परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का बालक की उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम बताते हैं कि बालक की उपलब्धि का स्तर उनके माता-पिता की योग्यता, शैक्षिक स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्तर द्वारा निर्धारित होता है।
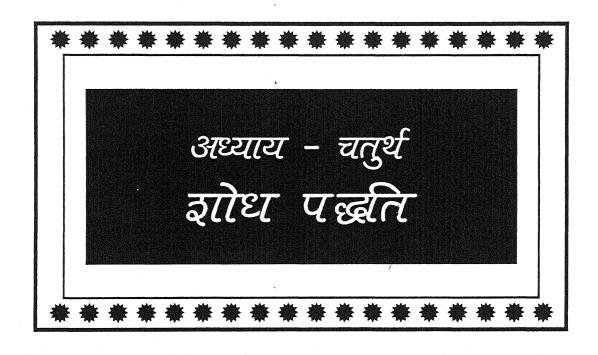
अध्याय - चतुर्थ
शोध पद्धति

अध्याय - चतुर्थ
शोध - पद्धति

''सत्य को पाने के लिये कोई संक्षिप्त मार्ग नही है, समष्टि का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक पद्धति के द्वार से ही गुजरना पड़ता है।''

- कार्ल पियर्सन

मानव एक बौद्धिक और जिज्ञासु प्राणी है। वह इस रहस्यमय जगत में चारों ओर छिपे हुये विभिन्न रहस्यपूर्ण तथ्यों का उद्‌घाटन करने व अज्ञात घटनाओं को ज्ञात करने के लिये सदा तत्पर रहता है क्योंकि मानव सदियों से ही अज्ञात की खोज करता रहा है। यह तत्परता व अज्ञात जानने की लालसा, मानव की सभ्यता, ज्ञान और प्रगतिशील प्रकृति की परिचायिका है। उसमें अज्ञात को जानने की, नवीनता को ढूंढ निकालने की और अपने ज्ञात भण्डार की निरंतर वृद्धि करने की प्रकृति स्वाभाविक है। परिवेश में बदलाव के साथ-साथ मानव का बौद्धिक स्तर का विकास हुआ ओर उसके चिंतन करने की क्षमता बढ़ी और साथ ही रहस्यमय व अज्ञात घटनाओं के प्रति क्यों, कैसे एवं कब जैसे प्रश्न खड़े कर दिये! और मानव ने घटनाओं के पीछे छिपे हुये कारणों की खोज प्रारम्भ कर दी। इन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास व कार्यकारण संबंधों की स्थापना के प्रयास से शोध की नींव पड़ी।

मानव की जिज्ञासु एवं खोजी प्रवृति उसे एक निश्चित दिशा में गमन करने को बाध्य करती है जो हमारी सभी प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों का वास्तविक आधार है। मानव की जिज्ञासा का आधार चाहे प्राकृतिक दशाएं हों अथवा सामाजिक जटिलताएँ, इनसे संबधित ज्ञान का स्पष्टीकरण करना तथा प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करना ही शोध है।

अनुसंधान का अर्थ होता है नवीन ज्ञान की प्राप्ति एवं विद्यमान ज्ञान का सत्यापन। मात्र कल्पना के आधार पर निकाला गया निष्कर्ष वैज्ञानिक नहीं होता जब तक वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये निरंतर निरीक्षण एवं परीक्षण न हो। परीक्षण एवं निरीक्षण के आधार पर वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति केवल अनुसंधान से ही हो सकती है।

अग्रवाल एवं पाण्डेय के अनुसार :- "सामाजिक शोध एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा किसी विशेष लक्ष्य को सामने रखकर नये सिद्धांत का निर्माण किया जाता है अथवा वर्तमान दशाओं के अर्न्तगत पुराने सिद्धांतों की सत्यता को समझने का प्रयत्न किया जाता है।"

मोसर (1961) ने लिखा है :- "कि सामाजिक घटनाओं व समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये किये गये व्यवस्थित अनुसंधान को सामाजिक शोध कहते है।"

जी. एम. फिशन के अनुसार :- "किसी समस्या को हल करने अथवा एक परिकल्पना की परीक्षा करने अथवा नई घटना या नये संबंध को खोजने के उद्देश्य से सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त कार्यविधि का प्रयोग करना ही सामाजिक शोध है।" हम कह सकते हैं कि अनुसंधान का तात्पर्य नये सिद्धांतों का निर्माण करना ही नही होता वरन् वर्तमान दशाओं के अंतर्गत पुराने तथ्यों की प्रमाणिकता को जानने का प्रयास भी है।

श्रीमती पी. वी. यंग के अनुसार :- "सामाजिक शोध एक वैज्ञानिक योजना है जिसका उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा एवं उनमें पाये जाने वाले अनुक्रमों अंतःसंबंधो, कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।"

सामाजिक शोध का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। एक शोधकर्ता का प्राथमिक उद्देश्य दूरवर्ती अथवा तात्कालिक सामाजिक व्यव्हार तथा सामाजिक जीवन को समझना है, ताकि उनका उपयोग व्यावहारिक जीवन में किया जा सके तथा सामाजिक जीवन उत्तरोत्तर प्रगतिशील बने एवं इसके

लिये बौद्धिक तथा व्यावहारिक अनुसंधान की आवश्यकता होती है ताकि जो सूचनाएं एकत्रित हो, उनसे पूर्व संचित निष्कर्षो का परिवर्धन, परिमार्जन तथा परिष्कार होता रहे एवं कुछ सर्वोत्तम आदर्श प्रारूप निर्धारित हो, जिनका उपयोग मानवीय कल्याण हेतु सहायक सिद्ध हो। प्रस्तुत शोध में मानव कल्याण के इसी उद्देश्य को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

शोध कार्य हेतु प्रस्तावित अध्ययन पद्धति

शोध अध्ययन का विषय :-

अध्ययन का विषय 'बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में' का चयन किया गया है।

शोध परिकल्पना :-

परिकल्पना आर्थात् 'प्राक् +कल्पना' जिसका तात्पर्य है 'पूर्व चिंतन।' परिकल्पना किसी भी शोध कार्य की वह नींव है जिस पर अनुसंधान रूपी भवन खड़ा होता है। विषय अथवा समस्या का चयन करने के पश्चात् शोधार्थी को उससे संबंधित कुछ निश्चित उद्देश्यों की संरचना करने की आवश्यकता होती है। जब यह उद्देश्य समस्या से संबंधित, प्रस्तावित उत्तर की धारणा विकसित कर लेते हैं, तब यही उद्देश्य परिकल्पना कहलाते हैं।

अनुसंधान का मार्ग परिकल्पना द्वारा ही प्रशस्त किया जा सकता है। परिकल्पना एक अस्थायी मेधावी वक्तव्य है जिसकी वैधता, अनुभावात्मक प्रमाण के आधार पर तथा इसकी सत्यता की जांच वैज्ञानिक प्रविधि का उपयोग कर की जाती हैं।

गुड एवं सकेन्स (1954) के अनुसार :- "परिकल्पना एक तीक्ष्ण अनुमान है जिसका प्रतिपादन तथा अस्थायी स्वीकरण, अवलोकित तथ्यों अथवा दशाओं की व्याख्या करने तथा अनुसंधान को आगे मार्गदर्शन करने के लिये किया जाता है।"

मैक्ग्यूगन (1990) के शब्दों में :- "दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबन्धों के बारे में बनाये गये जांचनीय कथन को प्राक्कल्पना कहा जाता है।"

परिकल्पना अध्ययन के उद्देश्यों को निर्धारित करती है, अध्ययन क्षेत्र की सीमा को निर्धारित करती है तथा अध्ययन को विशिष्ट एवं प्रयोगानुकूल बनाती है।

गुडे एवं हॉट के शब्दों में:- "प्राकल्पना यह बताती है कि हम किसकी खोज करें।"

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने परिकल्पना की परिभाषांए विभिन्न प्रकार से दी है, जो निम्नानुसार हैं-

टाउन सैण्ड (1933)- "प्राक्कल्पना, अनुसंधान की समस्या के लिये सुझाया गया उत्तर है।"

बोगाडर्स (1954) - "प्राक्कल्पना परीक्षित होने वाला प्रस्ताव है।"

परिकल्पनाओं का निर्माण तथ्य सत्यापन वैज्ञानिक अध्ययन का उद्देश्य है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का विकास किया गया जो, निम्नलिखित है :-

(1) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर में सार्थक विभिन्नता पाई जाती है।

(2) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(3) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मध्यम मानसिक

स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

द. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

न. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(4) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(5) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर परिवार के अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(6) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक विभिन्नता पाई जाती है।

(7) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के विभिन्न सामाजिक - आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के उच्च सामाजिक - आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के मध्यम सामाजिक - आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के निम्न सामाजिक - आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

कार्यकारी परिभाषा :-

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित कार्यकारी परिभाषाओं का उपयोग किया है।

(1) **विकास –** विकास का तात्पर्य गर्भावस्था से लेकर मृत्यु तक किसी निश्चित लक्ष्य की ओर होने वाले उन निरन्तर परिवर्तनों से है जो 'व्यवस्थित तथा समानुगत' रूप से होता है।

हारलॉक के अनुसार– विकास का तात्पर्य बढने से नहीं है। इसका तात्पर्य व्यवस्थित तथा समानुगत परिवर्तन से है, जो परिपक्वता से लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर होता है।

(2) **नैतिक विकास –** उचित और अनुचित के संबंध में समाज द्वारा निर्धारित प्रतिमान।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार – ''वास्तविक रूप में नैतिकता, नियमों का वह समूह है जिनके द्वारा व्यक्ति का अतः करण सत्य-असत्य' का ज्ञान करता है।''

(3) **मानसिक स्वास्थ्य –** मानसिक स्वास्थ्य के अर्न्तगत व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करने उसे मानसिक रोगों से मुक्त करने तथा यदि व्यक्ति मानसिक रोग या समायोजन दोष से पीड़ित होना आरम्भ हो जाता है, तो उसके कारणों का यथोचित पता लगाकर उसका उपचार करना मानसिक स्वास्थ्य कहलाता है।

क्रो तथा क्रो के अनुसार – ''मानसिक स्वास्थ्य एक विज्ञान है, जो मानव कल्याण के लिए है, और वह मानवीय सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।''

(4) **अनुशासन –** अनुशासन सामाजिक समूह द्वारा मान्य नैतिक व्यवहार सिखाने का सामाजिक तरीका है।

पैरिक (1980) ने खोज की कि "वे अभिभावक जो कम स्तर की शक्ति दृढ़ कथन (दाता) एवं उच्च स्तर का प्रोत्साहन एवं प्रेरक अनुशासन का उपयोग करते है, उनके बालक नैतिक रूप से परिपक्व होते हैं।"

(5) **सामाजिक-आर्थिक वर्ग –** समाज में सगंठित कुछ ऐसे व्यक्तियों का समूह, जिनकी सामाजिक विशेषता तथा आर्थिक स्थिति में समानता हो, एक विशिष्ठ सामाजिक-आर्थिक वर्ग का निर्धारण करता है।

चैपिन (1933) के शब्दों में – "सामाजिक - आर्थिक वर्ग में व्यक्ति की समूह में सामाजिक और आर्थिक दोनो स्थितियां शामिल होती है। सामाजिक स्थिति, सामाजिक संबंधों में व्यक्ति की स्थिति को दर्शाती हैं।"

शोध प्ररचनाएँ (अभिकल्प) –

शोध प्ररचनाएँ अनुसंधान प्रक्रम का अभिन्न अंग हैं, व्यवस्थित, क्रमबद्ध अनुसंधान हेतु शोध की रूपरेखा का निर्माण अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पी० वी० यगं (1975) के अनुसार – "एक अनुसंधान प्ररचना एक शोध का व्यवस्थित नियोजन तथा निर्देशन है।"

शोध प्ररचना के प्रकार –

समस्त शोध कार्यो का एक ही आधारभूत उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति होता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति विभिन्न प्रकार से हो सकती है और उसी के अनुसार शोध प्ररचना का रूप भी अलग-अलग होता है। शोध प्ररचना मुख्यतः चार प्रकार की होती है :-

1 अन्वेषणात्मक / निरूपणात्मक शोध प्ररचना

2 वर्णनात्मक शोध प्ररचना

3 निदानात्मक शोध प्ररचना

4 परीक्षणात्मक शोध प्ररचना।

अनुसंधान कार्य सही दिशा की ओर अभिमुख होने एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये आवश्यक है कि व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध रूप से शोध कार्य की रूपरेखा निर्मित हो।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध कार्य ''बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर बाल्यावस्था के विशेष सन्दर्भ में'' के अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है।

वर्णनात्मक शोध प्ररचना -

इस शोध प्ररचना का मुख्य उद्देश्य विषय या समस्या के संबंध में वास्तविक तथ्यों के आधार पर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत करना है, इसमें तथ्यों का संकलन किसी भी वैज्ञानिक प्रविधि (साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली, प्रत्यक्ष निरीक्षण, सहभागी निरीक्षण, सामुदायिक रिकार्ड का विश्लेषण आदि) के द्वारा किया जाता है, इसके प्रमुख चरण निम्नलिखित है।

1. शोध के विषय का उपयुक्त चुनाव
2. शोध के उद्देश्यों का निरूपण
3. तथ्य संकलन की प्रविधियों का चयन
4. न्यादर्श का चुनाव
5. आंकडों का संकलन तथा उनकी जांच
6. परिणामों का विश्लेषण
7. तथ्ययुक्त विवरण व सामान्य निष्कर्ष

शोध अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण -

सामाजिक शोध का अध्ययन क्षेत्र सम्पूर्ण सामाजिक जीवन और उससे सम्बद्ध सामाजिक प्रक्रियाओं व नियमों तक विस्तृत है। सामाजिक अनुसंधान का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सोपान, अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण करना है। अध्ययन का असीमित क्षेत्र, विषय की अस्पष्टता एवं त्रुटिपूर्ण अवधारणायें, शोध कार्य को अनिश्चित एवं प्रभावहीन बनाती है। असीमित क्षेत्र, एक ओर तो विषय के अध्ययन को असंभव एवं कष्टकारी बनाते हैं, दूसरी ओर प्राप्त होने वाले परिणामों एवं निष्कर्षों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है इसलिये यह अनिवार्य है कि शोधकर्ता, शोध कार्य आरंभ करने से पूर्व शोध कार्य के क्षेत्र को स्पष्ट रूप से निर्धारित करें। इस संबंध में **कार्ल पियर्सन (1969)** ने लिखा है कि ''शोध का क्षेत्र वास्तव में असीमित है तथा इसे संबंधित विषय सामग्री भी अनंत है।''

अतः समय और साधनों के सीमित दायरे को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तुत शोध के विषय ''बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर बाल्यावस्था के विशेष सन्दर्भ में'' के अध्ययन हेतु वृहत्तर ग्वालियर क्षेत्र को शोध कार्य हेतु चयनित किया गया है जो कि पूर्व में, मध्य भारत की राजधानी रहा है। ग्वालियर नगर का क्षेत्रफल 2,810 एकड़ तथा वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार ग्वालियर जिले की जनसंख्या 16,32,109 है। वृहत्तर ग्वालियर तीन उपनगरों में बंटा हुआ है :-

1. **प्राचीन ग्वालियर :-** इस उपनगर को पुराना ग्वालियर के नाम से भी जाना जाता है जो पहाड़ी किले के उत्तर में है तथा जहां अनेक मध्यकालीन स्मारक विद्यमान है।

2. **लश्कर :-** इसकी नीवं किले के दक्षिण की ओर स्थित है जो प्राचीन काल से महाराजा दौलतराव सिंधिंया की फौजी छावनी थी।

3. **मुरार :-** यह किले के पूर्व में स्थित है जो पहले ब्रिटिश छावनी थी। वृहत्तर ग्वालियर के तीनों क्षेत्र 8288 वर्ग मीटर फैले हुये है। क्षेत्रों की स्थिति मानचित्र में दर्शाई गई है।

शोधार्थी का विषय 9-12 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं के नैतिक विकास के अध्ययन से सबंधित है, अतः उक्त तीनों क्षेत्रों के विभिन्न अशासकीय स्कूलों से निर्धारित आयु वर्ग, सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक-बालिकाओं का जनसंख्या के आधार पर चयन किया गया है।

शोध प्रतिदर्श (न्यादर्श) का चुनाव-

प्रतिदर्श सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी, अनुसंधान व सर्वेक्षण के परिणाम उतने ही विश्वसनीय, वैध एवं परिशुद्ध होंगे। प्रतिदर्श सदैव एक विशिष्ट समग्र से प्राप्त किया जाता है। शोध कार्य पद्धति को सुगम, सरल, अल्पव्ययी तथा शुद्ध बनाने हेतु प्रतिदर्श का उपयोग किया जाता है। प्रतिदर्श समग्र का वह अंश होता है जिसमें समग्र की समस्त विशेषताएं पाई जाती है।

गुडे एवं हाट के अनुसार - ''एक निदर्शन किसी विशाल संपूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है। निदर्शन विधि वैज्ञानिक एवं युक्तिसंगत मानी जाती है, इसके गुण - मितव्ययता, विस्तृत अनुसंधान, निष्कर्षों की विश्वसनीयता, उपयुक्तता तथा प्रबन्ध एवं संगठन में सुविधा आदि है। निदर्शन से सही निष्र्कष प्राप्त करने हेतु न्यादर्श समस्त समग्र के गुणों का प्रतिनिधित्व करें, उनमें परस्पर सजातीयता हो, समग्र की प्रत्येक इकाई आपस में स्वतंत्र हो तथा समस्त इकाईयां पर्याप्त हों।''

डी० एस० बघेल (2000) के शब्दों में - ''प्रतिदर्श थोड़े मामलों का अधिक गहन अध्ययन कर सकता है।''

निदर्शन विधि द्वारा अनुसंधान से प्राप्त परिणामों की शुद्धता एवं विश्वसनीयता समग्र से लिये गये न्यादर्शो की उत्तमता पर निर्भर है, इसलिये अनुसंधानकर्ता को निदर्शन की रीतियों का

पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है, ताकि सही रीतियों का प्रयोग करके वह समग्र का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्शो का चुनाव कर सके। सामान्य प्रतिचयन की निम्नलिखित विधियां हैं।

1. प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन
2. अर्धप्रसम्भव्यता प्रतिचयन
3. अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन

दैव निदर्शन विधि – प्रसम्भव्यता प्रतिचयन के अर्न्तगत दैव निदर्शन विधि है। जब समग्र को किसी भी इकाई को समान अवसर प्रदान करते हुये निदर्श का चुनाव किया जाता है, उसे दैव निदर्शन विधि कहते हैं।

गिलफोर्ड (1956) के अनुसार – ''यह जीव संख्या से व्यक्तियों को चुनने का एक ऐसा ढंग है जिसमें जीव संख्या के प्रत्येक व्यक्ति को चुने जाने की सम्भावना बराबर-बराबर होती है। किसी एक व्यक्ति का चयन किसी भी तरह से अन्य दूसरे व्यक्ति के चयन पर निर्भर नही होता अर्थात् स्वतंत्र होता है। ''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का आधार दैवनिदर्शन विधि को अपनाया गया है। जनसंख्या की समस्त इकाईयों का अध्ययन संभव नही है, अतः कुछ इकाईयों को न्यादर्श के रूप में चुन लिया जाता है, जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

न्यादर्श का आकार :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श हेतु चुने गये अध्ययन क्षेत्र वृहत्तर ग्वालियर से न्यादर्श चयन प्रक्रिया दो स्तरों में पूर्ण की गई है।

प्रथम सोपान में ग्वालियर नगर के तीनों क्षेत्र ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार की विभिन्न प्राथमिक एवं माध्यमिक अशासकीय शालाओं का चुनाव किया गया । वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार ग्वालियर जिले में 0 से 14 वर्ष आयु के 5,95,210 (36.53 प्रतिशत) बालक एवं

बालिकाएं है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं की संख्या 2004-05 में क्रमशः 2075 एवं 1441 है। इन शैक्षणिक संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या प्राथमिक शालाओं में बालक 1,56,841 एवं बालिकाएं 1,13,308 तथा माध्यमिक शालाओं में बालक 74,283 व बालिकाएं 59,250 हैं।

उक्त तीनों क्षेत्रों की जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के आधार पर शालाओं का चयन किया गया तथा बालक एवं बालिकाओं की संख्या का चयन छात्रों की संख्या के आधार पर किया गया। सर्वाधिक छात्र लगभग 50 प्रतिशत बालक एवं बालिकाएं लश्कर क्षेत्र से, लगभग 25 प्रतिशत बालक-बालिकाएं मुरार क्षेत्र एवं लगभग 25 प्रतिशत बालक-बालिकाओं का चयन ग्वालियर क्षेत्र की विभिन्न अशासकीय शालाओं से किया गया।

द्वितीय सोपान में विभिन्न अशासकीय शालाओं के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के उत्तर बाल्यावस्था (9 से 12 वर्ष) के बालक-बालिकाओं एवं उनके 300 अभिभावकों को उद्देश्यानुसार दैवनिदर्शन विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है जो कि इस प्रकार है।

कुल बालक-बालिकाएं (300)

150 बालक

50 उच्च सा0आ0 स्तर | 50 मध्यम सा0आ0 स्तर | 50 निम्न सा0आ0 स्तर

150 बालिकाएं

50 उच्च सा0आ0 स्तर | 50 मध्यम सा0आ0 स्तर | 50 निम्न सा0आ0 स्तर

इस प्रकार वृहत्तर ग्वालियर क्षेत्र के 300 बालक (150 बालक एवं 150 बालिकाएँ) प्रस्तुत शोध के समग्र का निर्धारण करेगे।

प्रतिदर्श का चयन करते समय निम्नलिखित कारकों को नियंत्रित चर के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

1. **अभिभावकों की शिक्षा –** विद्यालयीन बालक एवं बालिकाओं के अभिभावक उच्च शिक्षा (स्नातक, स्नातकोत्तर, पी0एच0डी0), माध्यमिक शिक्षा (12 वीं), निम्न शैक्षणिक स्तर (12 वीं से कम) को लिया गया है।

2. **धर्म –** हिन्दू धर्म के बालक एवं बालिकाओं को शामिल किया गया है।

3. **अभिभावक व्यवसाय –** सभी प्रकार के व्यवसाय वाले अभिभावकों को सम्मिलित किया गया है।

4. **सामाजिक–आर्थिक स्तर –** सभी प्रकार के सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च, मध्यम, एवं निम्न) के बालक एवं बालिकाओं को शामिल किया गया है।

5. **स्थान –** वृहत्तर ग्वालियर

6. **बालकों की आयु –** 9 से 12 वर्ष (उत्तर बाल्यावस्था)

7. **लिंग –** बालक एवं बालिकाऐं दोनों ही प्रकार के लिंग के बालकों के नैतिक विकास का तुलनात्मक स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुये अध्ययन किया गया है, जिससे बालक एवं बालिकाओं में नैतिक विकास के अंतर का अध्ययन किया जा सके।

8. **परिवार का प्रकार :–** संयुक्त परिवार व एकाकी परिवार दोनों ही परिवारों से प्रतिदर्श हेतु उन बालक बालिकाओं का चयन किया गया है जिनके अभिभावक (माता-पिता) जीवित हो ताकि माता-पिता दोनों का बालक के नैतिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सके।

9. **विद्यालय का प्रकार –** केवल गैरसरकारी विद्यालयों के बालक-बालिकाओं का

चयन किया गया है, क्योंकि केवल आशासकीय विद्यालयों में ही नैतिक शिक्षण प्राठ्यक्रम में शामिल किया जाता है।

10. **कक्षा स्तर –** कक्षा 4 से 8 तक के विद्यार्थियों का ही चयन किया गया है।

तथ्य संकलन –

तथ्य संकलन की प्रक्रिया की शुद्धता एवं व्यापकता पर ही तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या की सफलता आधारित होती है। वास्तव में तथ्य संकलन क्रिया की परिशुद्धता एवं व्यापकता पर ही तथ्यों के विश्लेषण एवं निर्वाचन की आगामी क्रियाओं की सफलता आधारित है।

शोध हेतु तथ्य संकलन को दो भागों प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीयक स्रोत में वर्गीकृत किया गया है।

1. **प्राथमिक स्रोत –** प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्रोत वे हैं, जिनके संकलन हेतु शोधकर्ता स्वयं संबंधित व्यक्तियों से प्रश्नावली, मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि के माध्यम से प्राप्त करता है।

2. **द्वितीयक स्रोत –** अनुसंधान में अधिक विश्वसनीयता तथा वैधता लाने हेतु द्वितीयक स्रोतों से भी तथ्यों का संकलन किया जाता है, इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकें, शोध प्रबन्ध, पत्र-पत्रिकायें एवं अन्य संबंधित साहित्य द्वारा तथ्य संकलन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के विषय का चयन करने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा आवश्यक समंकों तथा तथ्यों के संकलन की दृष्टि से विभिन्न महाविद्यालयों में स्थापित पुस्तकालय, विभिन्न विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं अन्य संस्थाओं के पुस्तकालयों में संपर्क स्थापित कर उन्हें अपने शोध अध्ययन के उद्देश्यों से अवगत कराया गया तथा संबंधित समंक व जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त विभिन्न मनौवैज्ञानिक परीक्षण मापनी द्वारा उनसे संबंधित समंक तथा तथ्य एकत्रित, व्यवस्थित कर विश्वसनीय तथ्यों का प्रयोग शोध अध्ययन में किया गया।

मापन के उपकरण अथवा मनोवैज्ञानिक परीक्षण–

बीन (1953) के शब्दों में :– ''कुछ मानसिक प्रक्रिया, शीलगुण या विशेषताओं का गुणात्मक

मूल्यांकन करने या परिमाणात्मक ढंग से मापनें के लिये उद्दीपनों का संगठित अनुक्रम ही मनोवैज्ञानिक परीक्षण है।''

टाइलर (1960) के अनुसार – ''मापन किसी नियम के अनुसार अंक आंवटन की प्रक्रिया है।''

शोध अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु उचित मापन के उपकरणों अथवा परीक्षणों का चयन अनुसंधान का महत्वपूर्ण आयाम है। प्रमापीकरण उपकरण वैध एवं विश्वसनीय परिणामों की प्रथम आवश्यकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षण मापनी का प्रयोग किया गया है।

1.	Alpana Sen Gupta & - Dr. Arun Kumar Singh	Moral Value Scale (MVS)
2.	Dr. Arun Kumar Singh & Alpana Sen Gupta	Mental Health Battery (MHB)
3.	Self Made	Discipline
4.	R.L. Bhardwaj	Socio-Economic Status Scale (SESS)

1. नैतिक मापनी परीक्षण

Moral Value Scale (MVS)

इस परीक्षण मापनी का निर्माण श्री मती अल्पना सेना गुप्ता व श्री अरूण कुमार सिंह ने किया है, इसमें उन्होने उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक मूल्यों का परीक्षण करने के लिये मापनी का निर्माण किया है। यह परीक्षण चार क्षेत्रों (स्तरों) में विभाजित है, जैसे- झूठ बोलना, बेईमानी, चोरी एवं धोखा देना, प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित 9 प्रश्न हैं, कुल 36 प्रश्न हैं, जिनके आधार पर बालक के नैतिक मूल्यों का मापन किया है।

फलांकन – फलांकन हेतु प्रत्येक सही उत्तर के लिये 1 अंक एवं गलत उत्तर हेतु 0 अंक दिया गया है। मापनी में धनात्मक एवं ऋणात्मक प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया गया है। धनात्मक

उत्तर एवं ऋणात्मक उत्तर हेतु (नही) + 1 नम्बर एवं गलत उत्तर हेतु 0 नम्बर दिया है। उच्च स्कोर, उच्च नैतिक मूल्य एवं निम्न स्कोर निम्न नैतिक मूल्य दर्शाता है। कुल प्राप्तांक 36 हैं। प्राप्तांकों के अनुसार नैतिक मूल्यों को विभिन्न श्रेणियों- अतिउच्च नैतिक मूल्य, उच्च नैतिक मूल्य, मध्यम नैतिक मूल्य, निम्न नैतिक मूल्य, अति निम्न नैतिक मूल्य में विभक्त किया है। यह मापनी 6-12 वर्ष के बालकों के नैतिक मूल्यों का मापन करने की वैद्य एवं विश्वसनीय प्रणाली है।

2. **मानसिक मापनी परीक्षण**

Mental Health Battery (MHB)

इस परीक्षण मापनी का निर्माण श्रीमती अल्पना सेना गुप्ता व श्री अरूण कुमार सिंह ने किया है, बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का परीक्षण करने के लिये मापनी को छः स्तरों में विभाजित किया गया है जैसे- सवेंगात्मक/स्थिर, कुल समायोजन, सत्तावादी, सुरक्षा/असुरक्षा, स्वः प्रत्यय, बौद्धिक क्षमता, जिनके आधार पर बालक के मानसिक स्वास्थ्य का मापन किया है।

फलांकन – फलांकन मापनी में दिये गये भारंक के अनुसार किये गये हैं। जिसमें कुल 130 प्रश्न हैं। मापनी में धनात्मक एवं ऋणात्मक प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया गया है। धनात्मक उत्तर एवं ऋणात्मक उत्तर हेतु (नहीं) + 1 नबंर एवं गलत उत्तर हेतु 0 नबंर दिया है।

इस परीक्षण का गुणात्मक स्तर करने हेतु इसे बहुत अच्छा, अच्छा, औसत, कम तथा अति कम में वर्गीकृत किया है।

3. **अनुशासन**

Discipline

इस परीक्षण मापनी का निर्माण शोधार्थी द्वारा स्वयं ही किया गया है। जिसे तीन स्तरों उच्च, मध्यम एवं निम्न अनुशासन में विभाजित किया गया है, इसमें कुल 15 प्रश्न है, जिसे प्रश्नावली के प्राप्ताक भारंक के आधार पर तीन स्तरों में विभाजित किया है तथा प्रत्येक प्रश्न के लिये उनके नवंर निर्धारित किये गये हैं जिनके आधार पर बालक के उच्च, मध्यम एवं निम्न अनुशासन को निर्धारित करता है।

फलांकन – इस प्रश्नावली को विशेषज्ञों द्वारा इसका मूल्यांकन करवा कर फिर इसका उपयोग किया गया है। विभिन्न पदों में दिये गये प्राप्ताकों का कुल योग उत्तरदाता के अनुशासन के स्तर को निर्धारित करता है।

शोध में सम्मिलित 9 से 13 वर्ष के बालकों के अभिभावकों से यह प्रश्नावली पूर्ण करायी गयी है, इसके अलावा अवलोकन एवं अनौपचारिक साक्षात्कार द्वारा भी प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों को सुदृढ़ किया गया है।

4. **सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी**

Socio-Ecananic Status Scale (SESS)

इस परीक्षण मापनी का निर्माण श्री आर0 एल0 भारद्वाज द्वारा किया गया है, इसे दो स्तरों सामाजिक व आर्थिक स्तर में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण में सामाजिक- आर्थिक स्तर के विभिन्न क्षेत्रों जैसे- सामाजिक स्थिति, परिवार, सामान्य या तकनीकी शिक्षा, अभिभावक का व्यवसाय, जाति, पारिवारिक आय, शिक्षा, मासिक आय से संवंधित पदों को सम्मिलित किया गया है।

फलांकन – इस परीक्षण का फलांकन मार्गदर्शिका द्वारा, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिये अंक दिये गये है, किया गया है। विभिन्न पदों में दिये गये प्राप्तांकों का कुल योग उत्तरदाता के सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण करता है।

पथप्रदर्शी अध्ययन –

पूर्व परीक्षण शोध के विनिर्देशनों, उपकरणों अथवा आयोजन के विकल्पों का एक नियंत्रित अध्ययन है जिसका उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है कि कौन सा विकल्प सबसे अधिक कार्यक्षम है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भविष्य की कठिनाईयों को ज्ञात करने, परीक्षण व फलाकंन की कठिनाईयों को जानने हेतु पथप्रदर्शी अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श हेतु ग्वालियर क्षेत्र के विभिन्न अशासकीय विद्यालयों के 9 से 13 वर्ष के 30 बालक एवं 30 बालिकाओं, जो कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे, का चयन किया

गया। विभिन्न मनौवैज्ञानिक द्वारा निर्मित परीक्षणों (मापनी) को इन बालकों द्वारा भरवाया गया। सम्पूर्ण तथ्यों को एकत्रित करने के पश्चात् उनकी सत्यता की जांच भी की गयी।

सांख्यिकीय विश्लेषण -

प्रस्तुत शोध में बालक - बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को मापने हेतु काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिसका सूत्र निम्न है :-

$$X^2 = \sum\left(\frac{(f_0 - f_e)^2}{f_e}\right)$$

जबकि, fo = वास्तविक आवृत्तियां

fe = प्रत्याशित आवृत्तियां

यहां काई वर्ग ज्ञात करने हेतु प्रत्येक आंकड़े की वास्तविक एवं प्रत्याशित आवृत्तियों के मध्य अन्तर ज्ञात कर उसका वर्ग किया जाता है तथा प्रत्याशित आवृत्ति से भाग देकर काई वर्ग का मान प्राप्त कर लेते हैं और तालिका के सभी वर्गो का योग कर कुल काई वर्ग का मान प्राप्त करते हैं। तत्पश्चात् स्वतंत्रता की कोटि (df)के आधार पर काई वर्ग की सार्थकता ज्ञात की जाती है। यहां (df) की गणना निम्न सूत्र से करते हैं :-

$$df = (r-1)\ (c-1)$$

जबकि

r = तालिका में पंक्तियों की संख्या

C= तालिका में स्तभ्भों की संख्या

तालिका में एक ही सतभ्म होने पर (C - 1) के स्थान पर 1 का प्रयोग करते है।

आगे के अध्याय में शोधार्थी शोध हेतु निर्मित परिकल्पनाओं को सार्थक सिद्ध करने हेतु तालिकाऐं निर्मित कर आकड़ों का विश्लेषण करेगी।

अध्याय - पंचम
तथ्यों का विश्लेषण

अध्याय – पंचम
तथ्यों का विश्लेषण

शोध समस्या का वैज्ञानिक चयन हो जाने के पश्चात् शोधार्थी उसका एक अस्थायी समाधान एक जाचंनीय प्रस्ताव के रूप में करता है। इसी जांचनीय प्रस्तावित अंतरिम कथन को तकनीकी भाषा में प्राक्कल्पना कहा जाता है। सत्यान्वेषण एवं निश्चयात्मक पक्ष की प्राप्ति हेतु अनुसंधान प्रक्रम में एक उपयुक्त परिकल्पना अत्यंत आवश्यक है। एवं शोध का सफलतापूर्वक संपादन इसी उपकल्पना पर आधारित होता है।

समाज, राष्ट्र तथा संस्कृति के अस्तित्व को मूल्यहीनता के गर्त से बचाने हेतु आवश्यक है कि जीवन की प्रारम्भिक अवस्था, बाल्यावस्था से ही पारिवारिक परिवेश के माध्यम से बालकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जावे। नैतिकता का सीधा संबंध सामाजिकता से होता है। नैतिकता के नियम सामाजिकता के संदर्भ में ही क्रियान्वित होते है। बाल्यावस्था वह आयु है, जिसमें बालक अपनी विकासात्मक अवस्थाओं से गुजरकर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता है तथा विभिन्न क्षेत्रों में कौशल प्राप्त करने लगता है। टोली की यह आयु खेलों के सामान्य नियमों में बदलकर बालक को नैतिक विकास के अवसर प्रदान करती है। अतः बाल्यावस्था ही बालक के नैतिक विकास की प्रथम पाठशाला है। बाल्यावस्था में दिये गये संस्कार, चारित्रिक व नैतिक जीवन मूल्यों के रूप में परिलक्षित होते हैं। बालक के नैतिक मूल्यों के विकास को मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन, सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन को सफलतापूर्वक संपादित करने हेतु आवश्यक है कि सूक्ष्म अध्ययन हेतु इससे संबंधित उपकल्पना का निर्माण कर लिया जाए, ताकि इसी के मार्गनिर्देशिका में यह शोध सफलतापूर्वक संपादित हो सके। अतः ''बालकों के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य,

अनुशासन, सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर : बाल्यावस्था के विशेष सन्दर्भ में'' इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है :-

(1) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर में सार्थक विभिन्नता पाई जाती है।

(2) विभिन्न बालक बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(3) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मानिसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मध्यम मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

द. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

न. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(4) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(5) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर परिवार के अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(6) बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक विभिन्नता पाई जाती है।

(7) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के मध्यम सामाजिक -आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के निम्न सामाजिक - आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

शून्य परिकल्पना (निराकरणीय परिकल्पना =HO)

संबंधित आंकड़ों के आधार पर यथार्थ अनुमान ज्ञात करने के लिये शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया जाता है। इस परिकल्पना की यह धारणा होती है कि स्वतंत्र चर के अभाव के कारण दो या दो से अधिक समूहों में कोई वास्तविक अंतर नही होता है। वह जब तक संदेह से परे सिद्ध

नहीं किया जाता, सार्थक नहीं माना जा सकता है।

निराकरणीय परिकल्पना एक ऐसा यंत्र है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रतिदर्शों में पाये जाने वाले अंतरों की सार्थकता की जांच की जाती है। निराकरणीय परिकल्पना की उपधारणा यह है कि दो प्रतिदर्शी में यदि वास्तविक अंतर है, तब उसे निश्चित रूप से सिद्ध किया जाना चाहिये। इसी प्रकार दो प्रतिदर्शों में जो भी अंतर देखने में आता है, उनको संयोगवश ही समझा जावेगा, जब तक कि यह तथ्य सिद्ध नहीं हो जायेगा कि उनके अंतर का कारण स्वतंत्र चर ही है।

गिल्फर्ड (1967) के शब्दों में :- ''इस प्रकार की कल्पना केवल यही बताती है कि प्रायोगिक स्थिति में व अप्रायोगिक स्थिति में भी जिन घटनाओं की गणना अथवा मापन होता है, उन सबके विषय में यही मान्यता रहती है कि इन सबका विशेष कारण कुछ नहीं है, बल्कि यह सब स्वतंत्र व बंधन युक्त संयोग के नियमों के प्रभाव के कारण ही देखने में आ रहा है।''

निराकरणीय परिकल्पना की रचना श्रेष्ठ व सरल रहती है क्योकि परिकल्पना के अस्वीकृत हो जाने पर विवेचना में कठिनाई नहीं होती ओर शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है। शून्य परिकल्पना एक प्रकार से शोधकर्ता के लिये एक ऐसी चुनौती है जिसमें उसे अपने अध्ययन के अंर्तगत स्वतंत्र चर के प्रभाव को स्थापित करना है तथा उसे यह निश्चित रूप से सिद्ध करना होता है।

अपने अध्ययन में सार्थक अंतर सिद्ध करने हेतु अध्ययनकर्ता ने निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं विकसित की है :-

(1) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर में सार्थक विभिन्नता नहीं पाई जाती है।

(2) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(3) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मानसिक स्वास्थ्य

का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मध्यम मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

द. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

न. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(4) विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

(5) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर परिवार के अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

(6) बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक विभिन्नता नही पाई जाती है।

(7) उत्तर बाल्यावस्था के बालकों एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित नहीं होता है।

अ. उत्तर बाल्यावस्था के बालकों एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित नहीं होता है।

ब. उत्तर बाल्यावस्था के बालकों एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित नहीं होता है।

स. उत्तर बाल्यावस्था के बालकों एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित नहीं होता है।

तालिका क्रमांक – 1

परिवार के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण दर्शाने वाली तालिका

लिंग	परिवार का स्वरूप				योग	
	एकल		सयुंक्त			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	95	63.33	55	36.67	150	100.00
बालिका	87	58.00	63	42.00	150	100.00
योग	182	60.67	118	39.33	300	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि एकल परिवार का प्रतिशत 60.67 है जिसमें 63.63 प्रतिशत एकल परिवार के बालक व 58.00 प्रतिशत एकल परिवार की बालिकाऐं हैं। संयुक्त परिवार का प्रतिशत 39.33 है जिसमें 36.67 प्रतिशत संयुक्त परिवार के बालक हैं व 42.00 प्रतिशत संयुक्त परिवार की बालिकाऐं हैं।

परिवार के स्वरूप का प्रभाव भी बालकों के नैतिक विकास पर पड़ता है। यह जानने के लिये ही इसे अनुसूची में शामिल करके सूचना एकत्र की गई है।

रेखाचित्र क्रमांक – 1
परिवार के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण
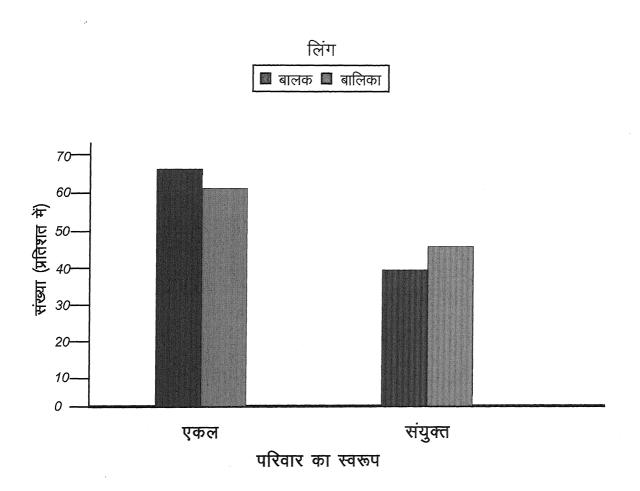
तालिका क्रमांक – 2

बालक एवं बालिकाओं के परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को

प्रदर्शित करने वाली तालिका

लिंग	सामाजिक-आर्थिक स्तर			योग
	उच्च	मध्यम	निम्न	
बालक	50	50	50	150
बालिका	50	50	50	150
योग	100	100	100	300

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि बालक एवं बालिकाओं के परिवारों के समाजिक-आर्थिक स्तर के अन्तर्गत उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर के बालक को क्रमशः 50, 50 एवं 50 लिया गया है, वहीं बालिकाओं की उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की क्रमशः 50, 50 एवं 50 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया हैं।

तालिका क्रमांक – 3

अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण दर्शाने वाली तालिका

लिंग/ अभिभावक	शिक्षा का स्तर						योग
	उच्च शिक्षा स्तर		हायर सेकेण्ड्री स्तर		निम्न शैक्षिक स्तर		
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या
बालक							
माता	82	54.67	40	26.66	28	18.67	150
पिता	90	60.00	35	23.33	25	16.67	150
बालिका							
माता	98	65.33	40	29.67	12	08.00	150
पिता	105	70.00	39	26.00	06	04.00	150
योग	375	62.50	154	25.67	71	11.83	600

उक्त तालिका अभिभावकों का शैक्षणिक स्तर प्रदर्शित करती हैं जिसमें कुल 375 (62.50 प्रतिशत) अभिभावक उच्च शिक्षित, 154 (25.67 प्रतिशत) अभिभावक हाईस्कूल एवं 71 (11.83 प्रतिशत) अभिभावक निम्न शैक्षिक स्तर को दिखाते हैं। माता पिता की शिक्षा का बालकों के नैतिक विकास व व्यक्तित्व विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। अतः प्रतिदर्श से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गई है।

रेखाचित्र क्रमांक – 2

अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण
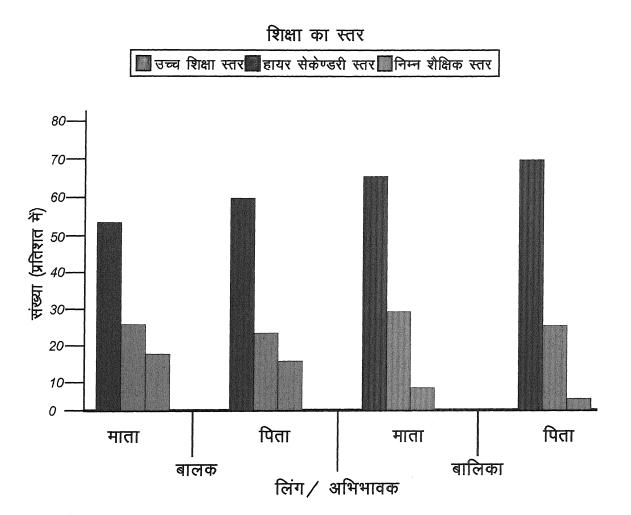
तालिका क्रंमाक – 4

अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण को प्रदर्शित करने वाली तालिका

व्यवसाय के प्रकार	अभिभावक				योग	
	माता		पिता			
	संख्या	प्रतिशित	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
शासकीय	90	30.00	119	39.67	209	34.84
अशासकीय	70	23.33	70	23.33	140	23.33
निजी-व्यवसाय	47	15.67	111	37.00	158	26.33
केवल गृहणी	93	31.00	-	-	93	15.50
योग	300	100.00	300	100.00	600	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 30.00 प्रतिशत महिला अभिभावक शासकीय नौकरी में, 23.33 प्रतिशत अशासकीय नौकरी में, 15.67 प्रतिशत निजी व्यवसाय तथा 31.00 प्रतिशत विशुद्ध ग्रहणी हैं जबकि 39.67 पुरूष शासकीय नौकरी में, 23.33 प्रतिशत अशासकीय नौकरी में तथा 37.00 प्रतिशत निजी व्यवसाय में नियोजित हैं।

उक्त तुलनात्मक प्रतिशत के आधार पर महिला एवं पुरूष अभिभावक के नियोजन और अनियोजन का प्रभाव बालकों के नैतिक विकास पर भी पड़ेगा।

रेखाचित्र क्रमांक – 3

अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण
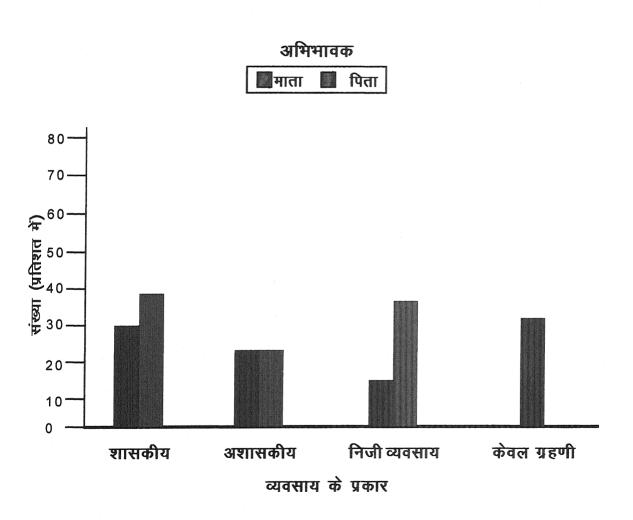
तालिका क्रमांक – 5

ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों से ली गई शालाओं की संख्या एवं प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका

क्षेत्र	प्राथमिक शाला		माध्यमिक शाला		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
ग्वालियर	02	20.00	08	18.61	10	18.87
लश्कर	05	50.00	25	58.13	30	56.60
मुरार	03	30.00	10	23.26	13	24.53
योग	10	100.00	43	100.00	53	100.00

प्रस्तुत तालिका अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न भागों से ली गई शालाओं की संख्या पर आधारित है, जिसमें ग्वालियर क्षेत्र की 10, लश्कर क्षेत्र की 30 तथा मुरार क्षेत्र की 13 प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं को सम्मिलित किया गया है।

रेखाचित्र क्रमांक – 4

ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों से ली गई शालाओं का वर्गीकरण
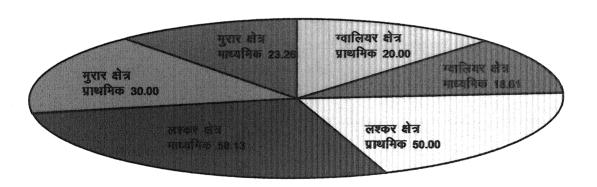
तालिका क्रमांक – 6

ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों से लिये गये बालक-बालिकाओं की संख्या एवं प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका

क्षेत्र	बालक		बालिका		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
ग्वालियर	26	17.33	34	22.67	60	20.00
लश्कर	82	54.67	75	50.00	157	52.33
मुरार	42	28.00	41	27.33	83	27.67
योग	150	100.00	150	100.00	300	100.00

उपर्युक्त तालिका अध्ययन क्षेत्र से लिये गये बालक-बालिकाओं से सम्बन्धित है, जिसमें ग्वालियर क्षेत्र के 60, लश्कर क्षेत्र की 157 तथा मुरार क्षेत्र के 81 बालक एवं बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

रेखाचित्र क्रमांक – 5

ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों से लिये गये बालक–बालिकाओं का वर्गीकरण
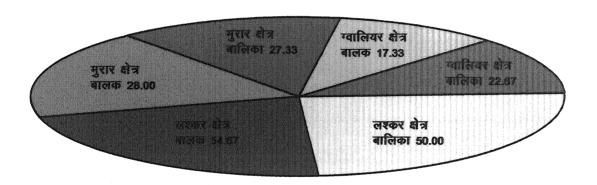
तालिका क्रमाक – 7

आयु के आधार पर लिये गये बालक एवं बालिकाओं के वर्गीकरण को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

आयु समूह (वर्षो मे)	लिंग				योग	
	बालक		बालिका			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
6-8	12	08.00	16	10.67	28	09.33
8-10	67	44.67	60	40.00	127	42.33
10-12	71	47.33	74	49.33	145	48.34
योग	150	100.00	150	100.00	300	100.00

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट विदित होता है कि प्रतिदर्श में शामिल किये गये बच्चे उत्तर बाल्यवस्था की विभिन्न आयु समूह के हैं। इसमें 6-8 वर्ष आयु समूह का कुल प्रतिशत 9.33 रहा, जिसमें 8 प्रतिशत बालक, 10.67 प्रतिशत बालिकाऐं, 8-10 वर्ष आयु समूह का कुल प्रतिशत 42.33 है जिसमें 44.67 प्रतिशत बालक व 40.00 प्रतिशत बालिकाऐं हैं तथा 10-12 वर्ष आयु समूह का कुल प्रतिशत 48.34 रहा, जिसमें 47.33 प्रतिशत बालक व 49.33 प्रतिशत बालिकाऐं पाई गयीं। इस प्रकार 10-12 वर्ष आयु समूह के बालिकाओं का प्रतिशत सर्वाधिक है।

रेखाचित्र क्रमांक – 6

आयु के आधार पर बालक एवं बालिकाओं का वर्गीकरण
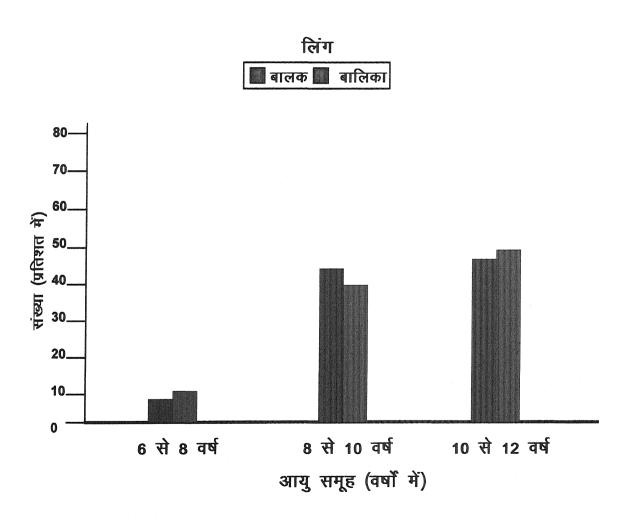
तालिका क्रमांक - 8

बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य विभिन्नता के प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

लिंग	नैतिक स्तर						योग	
	उच्च		मध्यम		निम्न			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	100	66.67	41	27.33	09	06.00	150	100.00
बालिका	130	86.66	16	10.67	04	02.67	150	100.00
योग	230	76.77	57	19.00	13	04.34	300	100.00

उक्त तालिका यह अभिव्यक्त करती है कि उच्च नैतिक स्तर के 66.67 प्रतिशत बालक व 86. 66 प्रतिशत बालिकाऐं हैं। मध्यम नैतिक स्तर के 27.33 प्रतिशत बालक व 10.67 प्रतिशत बालिकाएं है। निम्न नैतिक स्तर के 06.00 प्रतिशत बालक व 02.67 प्रतिशत बालिकाएं हैं। बालिकाओं में अपेक्षाकृत उच्च नैतिक स्तर पाया गया है।

रेखाचित्र क्रमांक – 7

बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य विभिन्नता
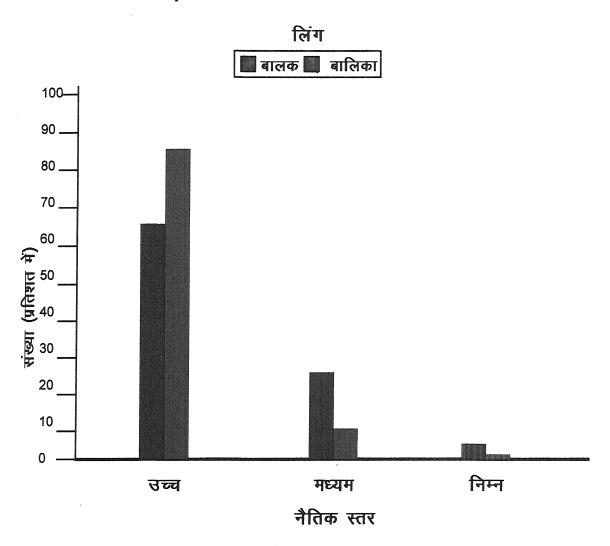
तालिका क्रमांक – 9

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	100	41	09	150	17.02	2	9.210
बालिका	130	16	04	150			
योग	230	57	13	300			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका यह विवेचना करती है कि कुल 150 बालकों के नैतिक स्तर में 100, बालक उच्च नैतिक स्तर के, मध्यम नैतिक स्तर के 41 बालक व निम्न नैतिक स्तर के 09 बालक पाये गये। इसी प्रकार कुल 150 बालिकाओं के नैतिक स्तर में 130 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर की, मध्यम नैतिक स्तर की 16 बालिकायें व निम्न नैतिक स्तर की 04 बालिकाऐं पाई गयीं।

अतः इनकी भिन्नता का काई मान 17.02 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक – 10

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

नैतिक स्तर	नैतिक विकास स्तर						योग	
	उच्च		मध्यम		निम्न			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	62	62.00	35	35.00	03	03.00	100	66.67
मध्यम	31	75.00	05	12.19	05	12.19	41	27.33
निम्न	07	77.77	01	11.11	01	11.11	09	06.00
योग	100	66.67	41	27.33	09	6.00	150	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालकों के उच्च नैतिक स्तर में उच्च के 62.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 35.00 प्रतिशत बालक व 03.60 प्रतिशन निम्न नैतिक स्तर के बालक, मध्यम नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 75.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 12.19 प्रतिशत व निम्न के 12.19 प्रतिशत बालक, निम्न नैतिक स्तर मे उच्च के 77.77 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 11.11 प्रतिशत बालक व निम्न नैतिक स्तर के 11.11 प्रतिशत बालक पाये गये।

रेखाचित्र क्रमांक – 8

बालकों के नैतिक स्तर के मध्य विभिन्नता
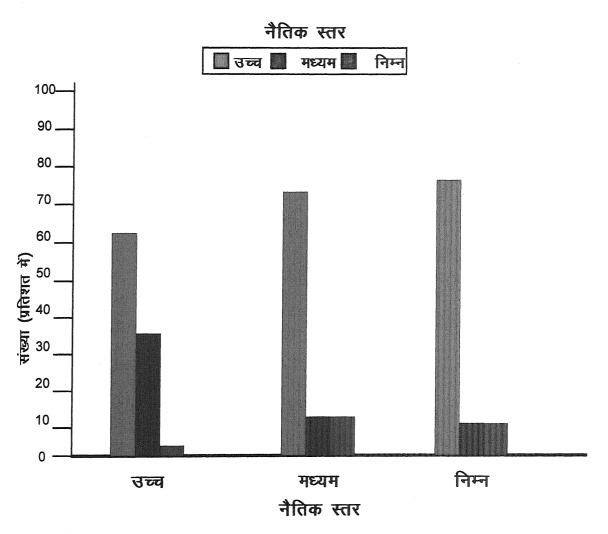
तालिका क्रमांक – 11

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

नैतिक स्तर	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	62	35	03	100	22.01	4	13.277
मध्यम	31	05	05	41			
निम्न	07	01	01	09			
योग	100	41	09	150			

P < 0:01 स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 100 बालकों के उच्च नैतिक स्तर में उच्च के 62 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 35 बालक, व निम्न नैतिक स्तर के 03 बालक, 41 मध्यम नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 31 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 05 बालक व निम्न नैतिक स्तर के 05 बालक व 09 निम्न नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 07 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 01 बालक व निम्न नैतिक स्तर के 1 बालक पाये गये।

अतः इनकी विभिन्नता का काई मान 22.01 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक -12

उत्तरबाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका

नैतिक	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
स्तर	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	118	90.76	10	7.69	02	01.53	130	86.67
मध्यम	10	62.05	05	31.25	01	06.25	16	10.67
निम्न	02	50.00	01	25.00	01	25.00	04	02.66
योग	130	86.67	16	10.67	04	02.67	150	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालिकाओं के उच्च नैतिक स्तर में उच्च की 90.76 प्रतिशत बालिकाएं, मध्यम नैतिक स्तर की 07.69 प्रतिशत बालिकाऐं व निम्न की 01.53 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 62.05 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 31.25 प्रतिशत बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर की 6.25 प्रतिशत बालिकाएं व निम्न नैतिक स्तर में उच्च की 50.00 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 25.00 प्रतिशत बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर की 25.00 प्रतिशत बालिकाऐं पाई गयीं।

रेखाचित्र क्रमांक – 9

बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य विभिन्नता
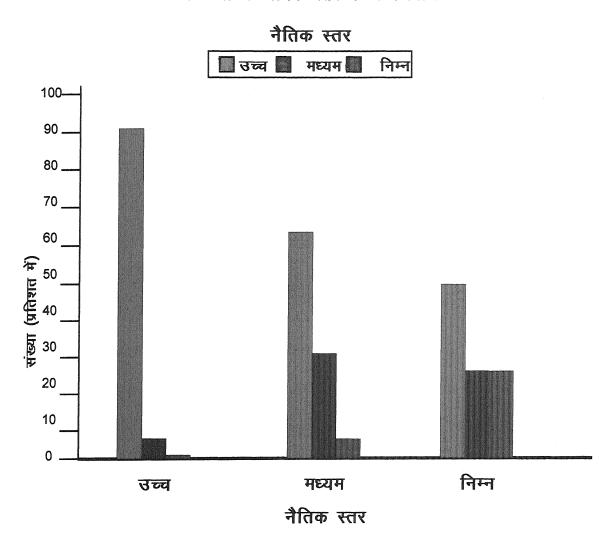
तालिका क्रमांक – 13

उत्तरबाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

नैतिक स्तर	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	118	10	02	130	22.92	4	13.277
मध्यम	10	05	01	16			
निम्न	02	01	01	04			
योग	130	16	04	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 130 बालिकाओं के उच्च नैतिक स्तर में उच्च की 118 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 10 बालिकाएं व निम्न नैतिक स्तर की 02 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 10 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 05 बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर की 1 बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 02 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 01 बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर की 01 बालिकाऐं पाई गई।

अतः इनकी विभिन्नता के मध्य काई मान 22.92 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक – 14

उत्तरबाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका

लिंग	मानसिक स्वास्थ्य										योग	
	अति उच्च		उच्च		मध्यम		निम्न		अति निम्न			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	36	24.00	44	29.33	55	36.67	10	06.67	05	03.33	150	50.00
बालिका	20	13.34	33	22.00	74	49.33	16	10.67	07	04.67	150	50.00
योग	56	18.67	77	25.66	129	43.00	26	08.67	12	04.00	300	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि समस्त 300 बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य में 24.00 प्रतिशत बालक, 13.34 प्रतिशत बालिकाऐं, उच्च मानसिक स्वास्थ्य में 29.33 प्रतिशत बालक, 22.00 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में 36.67 प्रतिशत बालक, 49.33 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न मानसिक स्वास्थ्य में 06.67 प्रतिशत बालक, 10.67 प्रतिशत बालिकाऐं, अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में 03.33 प्रतिशत बालक व 04.67 प्रतिशत बालिकाऐं पाई गयी।

रेखाचित्र क्रमांक – 10

बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य विभिन्नता
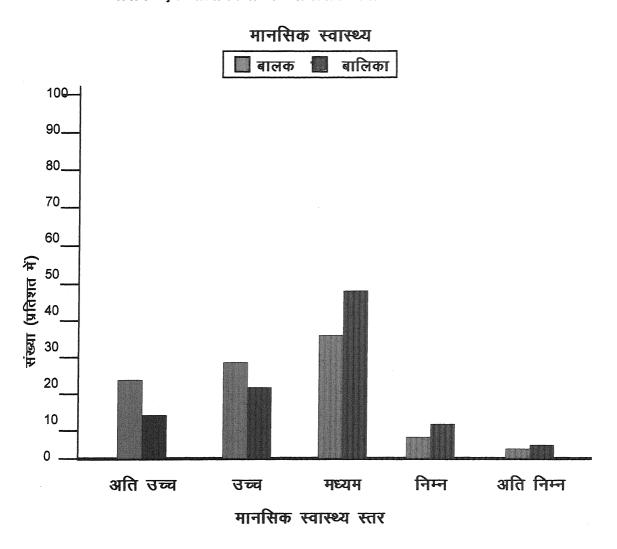
तालिका क्रमांक – 15

विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को

दर्शाने वाली तालिका

लिंग	मानसिक स्वास्थ्य स्तर						काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग तालिका मान
	अतिउच्च	उच्च	मध्यम	अति निम्न	निम्न	योग			
बालक	36	44	55	10	05	150	11.25	4	9.488
बालिका	20	33	74	16	07	150			
योग	56	77	129	26	12	300			

$P < 0.05$ स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका यह विवेचना करती है कि कुल 300 बालकों एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में से अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य में 36 बालक एवं 20 बालिकाऐं, उच्च मानसिक स्वास्थ्य में 44 बालक एवं 33 बालिकाऐं, मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में 55 बालक एवं 74 बालिकाऐं, निम्न मानसिक स्वास्थ्य में 10 बालक एवं 16 बालिकाऐं एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में 05 बालक व 07 बालिकाऐं पायी गयी।

अतः इनके मध्य विभिन्नता का काई वर्ग मान 11.25 प्राप्त हुआ जो, 0.05 स्तर पर अपनी सार्थकता को प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक – 16

उत्तरबाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
स्वास्थ्य	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अतिउच्च	22	61.11	13	36.11	01	02.77	36	24.00
उच्च	37	84.09	04	9.09	03	06.81	44	29.33
मध्यम	36	65.45	17	30.90	02	03.63	55	36.67
निम्न	03	30.00	05	50.00	02	20.00	10	6.67
अति निम्न	02	40.00	02	40.00	01	20.00	05	3.33
योग	100	66.67	41	27.33	09	06.00	150	100.00

उपर्युक्त सारिणी यह दर्शाती है कि कुल 150 बालकों के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 61.11 प्रतिशत बालक, मध्यम के 36.11 प्रतिशत बालक, निम्न नैतिक स्तर के 02.77 प्रतिशत बालक, उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 84.09 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 09.09 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 06.81 प्रतिशत बालक, मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 65.45 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 30.90 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 03.63 प्रतिशत बालक, निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 30.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 50.00 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 20.00 प्रतिशत बालक एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 40.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 40.00 प्रतिशत एवं निम्न नैतिक स्तर के 20.00 प्रतिशत बालक पाये गये।

रेखाचित्र क्रमांक – 11

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य विभिन्नता
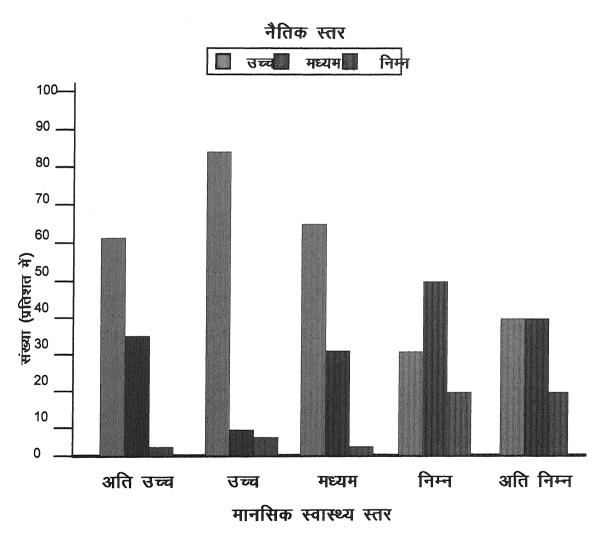
तालिका क्रमांक – 17

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
अति उच्च	22	13	01	36	19.99	8	20.09
उच्च	37	04	03	44			
मध्यम	36	17	02	55			
निम्न	03	05	02	10			
अति निम्न	02	02	01	05			
योग	100	46	09	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 36 अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के बालकों में से उच्च नैतिक स्तर के 22 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 13 बालक एवं निम्न नैतिक स्तर का 1 बालक एवं 44 उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 37 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 04 बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 03 बालक, 55 मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 36 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 17 बालक, निम्न नैतिक स्तर के 02 बालक, 10 निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 03 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 05 बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 02 बालक पाये गये एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर के 02 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 02 बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 01 बालक पाये गये।

अतः इनके मध्य विभिन्नता का काई मान 19.99 प्राप्त हुआ जो, 0.01 स्तर पर अपनी सार्थकता प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक – 18

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

नैतिक स्तर

मानसिक स्वास्थ्य	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
अति उच्च	17	85.00	02	10.00	01	05.00	20	13.33
उच्च	29	87.87	03	9.09	01	03.03	33	22.00
मध्यम	70	94.59	03	4.05	01	01.35	74	49.33
निम्न	09	56.25	06	37.50	01	06.25	16	10.67
अति निम्न	05	71.42	02	28.57	00	00.00	07	4.67
योग	130	86.68	16	10.67	04	02.66	150	100.00

उपर्युक्त सारणी यह दर्शाती है कि कुल 150 बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 85.00 प्रतिशत बालिकाएं, मध्यम नैतिक स्तर की 10.00 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर की 5.00 प्रतिशत बालिकाऐं, उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 87.87 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 09.09 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 03.03 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 94.59 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 04.05 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 01.35 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 56.25 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 37.50 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 06.25 प्रतिशत बालिकाऐं एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 71.42 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 28.57 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 00.00 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

रेखाचित्र क्रमांक – 12

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य विभिन्नता
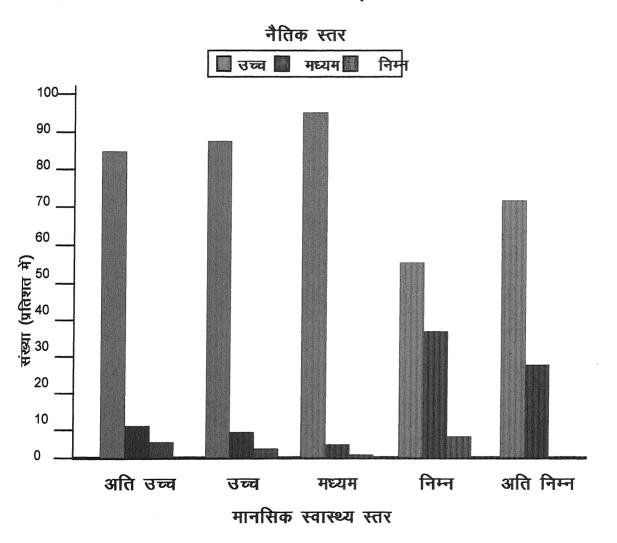
तालिका क्रमांक – 19

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर कों प्रदर्शित करने वाली तालिका –

मानसिक स्वास्थ्य	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
अति उच्च	17	02	01	20	22.34	8	20.09
उच्च	29	03	01	33			
मध्यम	70	03	01	74			
निम्न	09	06	01	16			
अति निम्न	05	02	00	07			
योग	130	16	04	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 20 बालिकाओं के अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 17 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 02 बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर की 01 बालिका, 33 उच्च मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 29 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 03 बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 01 बालिका, 74 मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 70 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 03 बालिका एवं निम्न नैतिक स्तर की 01 बालिका, 16 निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 09 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 06 बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 01 बालिका एवं 07 अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य में उच्च नैतिक स्तर की 05 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 02 बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 00 बालिकाऐं पाई गयी।

इनके मध्य विभिन्नता का काई मान 22.34 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक – 20

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका –

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	22	61.11	11	36.11	03	02.77	36	64.28
बालिका	17	85.00	02	10.00	01	05.00	20	35.72
योग	39	69.64	13	23.21	04	07.14	56	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि अति उच्च नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य में 61.11 प्रतिशत बालक एवं 85.00 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य में 36.11 प्रतिशत बालक एवं 10.00 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य में 02.77 प्रतिशत बालक एवं 05.00 प्रतिशत बालिकाऐं है।

तालिका क्रमांक – 21

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	22	11	03	36			
बालिका	17	02	01	20	3.63	2	1.38
योग	39	13	04	56			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के अति उच्च नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि अति उच्च नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 22 बालक व 17 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 11 बालक एवं 02 बालिकाऐं व निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 03 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गई।

इनके मध्य विभिन्नता का काई मान 3.69 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 पर असार्थक हैं।

तालिका क्रमांक – 22

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	37	84.09	04	09.09	03	06.81	44	57.14
बालिका	29	87.87	03	09.09	01	03.03	33	42.85
योग	66	85.71	07	09.09	04	05.19	77	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 84.09 प्रतिशत बालक एवं 87.87 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 09.09 प्रतिशत बालक एवं 09.09 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 06.81 प्रतिशत बालक एवं 03.03 प्रतिशत बालिकाऐं हैं।

तालिका क्रमांक – 23

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	37	04	03	44			
बालिका	29	03	01	33	0.59	2	0.02
योग	66	07	04	77			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 37 बालक एवं 29 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 04 बालक एवं 03 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 03 बालक व 01 बालिकाऐं पाई गयी।

इनके मध्य विभिन्नता का काई मान 0.59 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 पर असार्थक है।

तालिका क्रमांक – 24

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	36	84.09	17	30.90	02	03.63	55	42.63
बालिका	70	94.59	03	04.05	01	01.30	74	57.37
योग	106	82.17	20	15.50	03	02.32	129	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 84.09 प्रतिशत बालक एवं 94.59 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 30.90 प्रतिशत बालक एवं 04.05 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 03.63 प्रतिशत बालक एवं 01.03 प्रतिशत बालिकाऐं हैं।

तालिका क्रमांक – 25

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	36	17	02	55	19.33	2	9.210
बालिका	70	03	01	74			
योग	106	20	03	129			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 36 बालक एवं 70 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 17 बालक एवं 03 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 02 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गयी।

अतः इनके मध्य विभिन्नता का काई मान 19.33 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक – 26

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	03	30.00	05	50.00	02	02.00	10	38.47
बालिका	09	56.25	06	37.05	01	06.25	16	61.53
योग	12	46.15	11	42.30	03	11.53	26	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 30.00 प्रतिशत बालक एवं 56.25 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य की 50.00 प्रतिशत बालक एवं 37.05 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 02.00 प्रतिशत बालक एवं 06.25 प्रतिशत बालिकाऐं पाई गयीं।

तालिका क्रमांक – 27

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	03	05	02	10			
बालिका	09	06	01	16	2.21	2	1.38
योग	12	11	03	26			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 03 बालक एवं 09 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 05 बालक एवं 06 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 02 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गयी।

इनकी विभिन्नता के मध्य 2.21 काई मान प्राप्त हुआ जो 0.01 पर असार्थक है।

तालिका क्रमांक – 28

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	02	40.00	02	40.00	01	20.00	05	41.67
बालिका	05	71.42	02	28.57	00	00.00	07	58.33
योग	07	58.33	04	33.33	01	08.33	12	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि अति निम्न नैतिक स्तर एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 40.00 प्रतिशत बालक एवं 71.42 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 40.00 प्रतिशत बालक एवं 28.57 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 20.00 प्रतिशत बालक एवं 00.00 प्रतिशत बालिकाऐं पाई गयी।

तालिका क्रमांक – 29

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

मानसिक स्वास्थ्य स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	02	02	01	05	2.07	2	1.38
बालिका	05	02	00	07			
योग	07	04	01	12			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के अति निम्न नैतिक स्तर एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध देखने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के 02 बालक एवं 05 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के 02 बालक एवं 02 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के 01 बालक एवं 00 बालिकाऐं पाई गयी।

इनकी विभिन्नता के मध्य 2.07 काई मान प्राप्त हुआ, जो 0.01 पर असार्थक हैं।

तालिका क्रमांक -30

विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका-

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	51	34.00	59	39.33	40	26.67	150	50.00
बालिका	43	28.67	92	61.33	15	10.00	150	50.00
योग	94	31.33	151	50.33	55	18.33	300	100.00

उक्त तालिका यह अभिव्यक्त करती है कि उच्च अनुशासन के 34.00 प्रतिशत बालक एवं 28.67 प्रतिशत बालिकाऐं है, मध्यम अनुशासन के 39.33 प्रतिशत बालक एवं 61.33 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न अनुशासन में 26.67 प्रतिशत बालक एवं 10.00 प्रतिशत बालिकाऐं हैं।

रेखाचित्र क्रमांक – 13

बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन के मध्य विभिन्नता

तालिका क्रमांक – 31
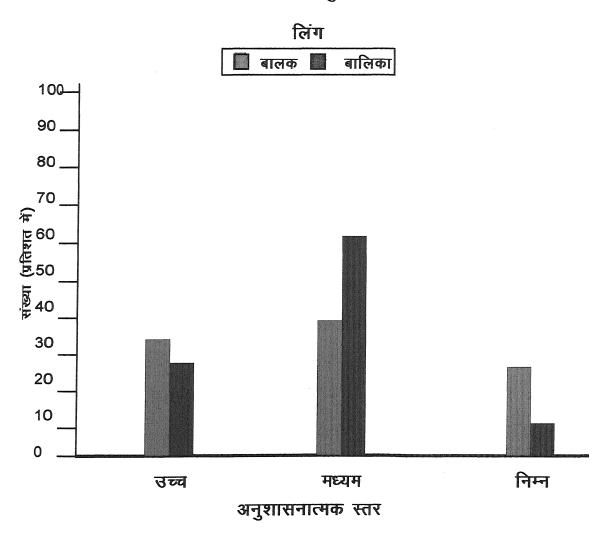
विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

लिंग	अनुशासन				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	51	59	40	150	21.56	2	9.210
बालिका	43	92	15	150			
योग	94	151	55	300			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उक्त तालिक के ऑकड़े स्पष्ट करते है कि कुल 300 बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन में से उच्च अनुशासन में 51 बालक, मध्यम अनुशासन में 59 बालक एवं निम्न अनुशासन में 40 बालक पाये गये। इसी प्रकार बालिकाऐं उच्च अनुशासन में 43, मध्यम अनुशासन में 92 बालिकाऐं एवं निम्न अनुशासन में 15 बालिकाऐं पाई गयी।

इनकी विभिन्नता के मध्य 21.56 काई मान प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 32

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका -

अनुशासन	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	30	58.82	20	39.21	01	1.97	51	34.00
मध्यम	50	84.74	08	13.55	01	1.69	59	39.33
निम्न	20	50.00	13	32.50	07	17.50	40	26.67
योग	100	66.67	41	27.33	09	6.00	150	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य संबंध देखने पर उच्च अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 58.82 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 39.21 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 01.97 प्रतिशत बालक, मध्यम अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 84.74 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 13.55 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 01.69 प्रतिशत बालक एवं निम्न अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 50.00 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 32.50 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 17.50 प्रतिशत बालक पाये गये।

रेखाचित्र क्रमांक – 14

बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य विभिन्नता
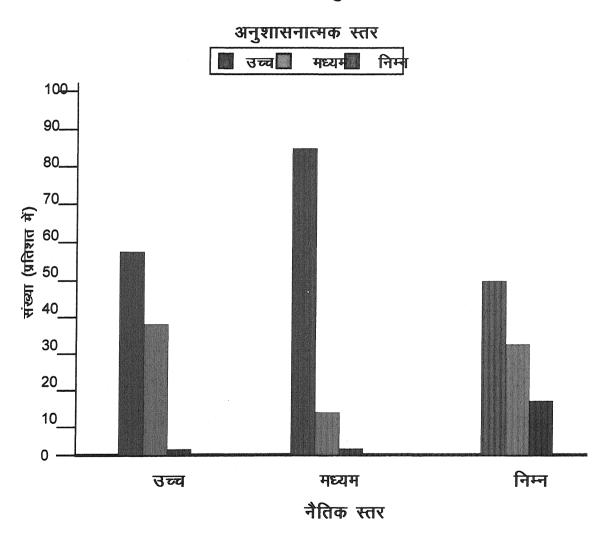
तालिका क्रमांक -33

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को

प्रदर्शित करने वाली तालिका

अनुशासन	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	30	20	01	51	24.28	4	13.27
मध्यम	50	08	01	59			
निम्न	20	13	07	40			
योग	100	41	09	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उक्त तालिका के अनुसार नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थक सम्बंध देखने पर ज्ञात हुआ कि समस्त 51 उच्च अनुशासन के बालकों में से उच्च नैतिक स्तर के 30 बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 20 बालक एवं निम्न नैतिक स्तर के 01 बालक, 59 मध्यम अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 50 बालक, 08 बालक मध्यम नैतिक स्तर के, 01 बालक निम्न नैतिक स्तर का एवं 40 निम्न अनुशासन में 20 बालक उच्च नैतिक स्तर के, 13 बालक मध्यम नैतिक स्तर के, 07 बालक निम्न नैतिक स्तर के पाये गये।

इनकी विभिन्नता के मध्य 24.28 काई मान प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 34

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

अनुशासन	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	40	93.02	02	04.65	01	02.32	43	28.67
मध्यम	78	84.78	13	14.13	01	01.08	92	61.33
निम्न	12	80.00	01	06.67	02	13.33	15	10.00
योग	130	86.67	16	10.67	04	02.66	150	100.00

उक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य संबंध देखने पर उच्च अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर के 93.02 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 04.65 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 02.32 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर की 84.78 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 14.13 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 01.08 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न अनुशासन में उच्च नैतिक स्तर की 80.00 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 06.67 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर की 13.33 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयी।

रेखाचित्र क्रमांक – 15

बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य विभिन्नता
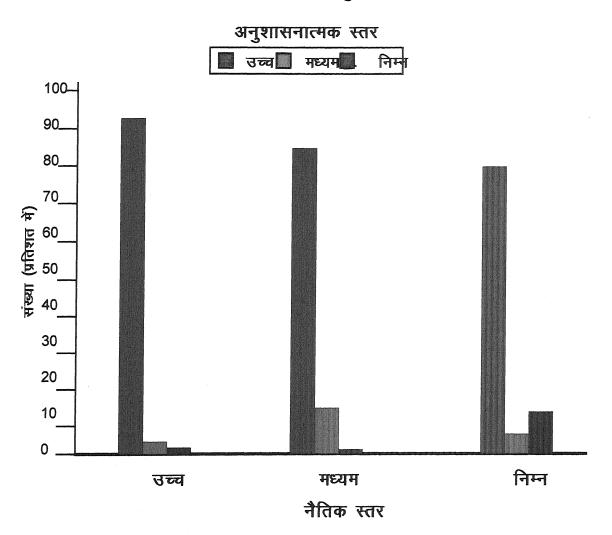
तालिका क्रमांक – 35

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

अनुशासन	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	40	02	01	43	13.29	4	13.27
मध्यम	78	13	01	92			
निम्न	12	01	02	15			
योग	130	16	04	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार नैतिक स्तर एवं अनुशासन के मध्य सार्थक संबंध देखने पर ज्ञात हुआ कि समस्त 43 उच्च अनुशासन की बालिकाओं में से 40 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर में, 02 बालिकाऐं मध्यम नैतिक स्तर में एवं 01 बालिका निम्न नैतिक स्तर में, 92 मध्यम अनुशासन की बालिकाओं में से 78 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर में, मध्यम नैतिक स्तर में 13 बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर में 01 बालिका, 15 निम्न अनुशासन की बालिकाओं में से उच्च नैतिक स्तर में 12 बालिका, मध्यम नैतिक स्तर की 01 बालिका एवं निम्न नैतिक स्तर की 02 बालिकाऐं पाई गयी।

इनकी विभिन्नता के मध्य 13.29 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 36

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका –

अनुशासनात्मक स्तर / लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	30	58.82	20	39.21	01	01.97	51	54.25
बालिका	40	93.02	02	04.66	01	02.32	43	45.74
योग	70	74.77	22	23.40	02	02.12	94	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 58.82 प्रतिशत बालक एवं 93.02 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 39.21 प्रतिशत बालक एवं 04.66 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 01.97 प्रतिशत बालक एवं 02.32 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक – 37

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका

अनुशासनात्मक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	30	20	01	51			
बालिका	40	02	01	43	15.82	2	9.210
योग	70	22	02	94			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 30 बालक एवं 40 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 20 बालक एवं 02 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 01 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गयी।

अतः इनकी विभिन्नता के मध्य 15.82 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 38

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका-

अनुशासनात्मक स्तर — लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	50	84.74	08	13.55	01	01.69	59	39.07
बालिका	78	84.78	13	14.13	01	01.08	92	60.93
योग	128	84.77	21	13.90	02	01.32	151	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 84.74 प्रतिशत बालक एवं 84.78 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 13.55 प्रतिशत बालक एवं 14.13 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 01.69 प्रतिशत बालक एवं 01.08 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक – 39

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका –

अनुशासनात्मक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	50	08	01	59	0.40	2	0.20
बालिका	78	13	01	92			
योग	128	21	02	151			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 50 बालक एवं 78 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 08 बालक एवं 13 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 01 बालक एवं 1 बालिकाऐं पाये गये।

इनकी विभिन्नता के मध्य 0.40 काई मान प्राप्त हुआ जो 0.01 पर अपनी असार्थकता को प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक – 40

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

अनुशासनात्मक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	20	50.00	13	32.50	07	17.50	40	72.72
बालिका	12	80.00	01	06.67	02	13.33	15	27.28
योग	32	58.18	14	25.45	09	16.37	55	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 50.00 प्रतिशत बालक एवं 80.00 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 32.50 प्रतिशत बालक एवं 06.67 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 17.50 प्रतिशत बालक एवं 13.33 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक- 41

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

अनुशासनात्मक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	20	13	07	40	4.67	2	4.60
बालिका	12	01	02	15			
योग	32	14	09	55			

$P < 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के मध्य संबंध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च अनुशासन के 20 बालक एवं 12 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम अनुशासन के 13 बालक एवं 01 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न अनुशासन के 07 बालक एवं 02 बालिकाऐं पाई गई।

इनकी विभिन्नता के मध्य 4.67 काई मान प्राप्त हुआ जो 0.01 पर अपनी सार्थकता को प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक – 42

विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत को

प्रदर्शित करने वाली तालिका -

लिंग	सामाजिक-आर्थिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	51	34.00	69	46.00	30	20.00	150	50.00
बालिका	55	36.67	46	30.67	49	32.67	150	50.00
योग	106	35.33	115	38.33	79	26.34	300	100.00

उक्त तालिका अभिव्यक्त करती है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर 34.00 प्रतिशत बालक एवं 36.67 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 46.00 प्रतिशत बालक एवं 30. 67 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 20.00 प्रतिशत बालक एवं 32.67 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

रेखाचित्र क्रमांक – 16

बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य विभिन्नता

तालिका क्रमांक – 43
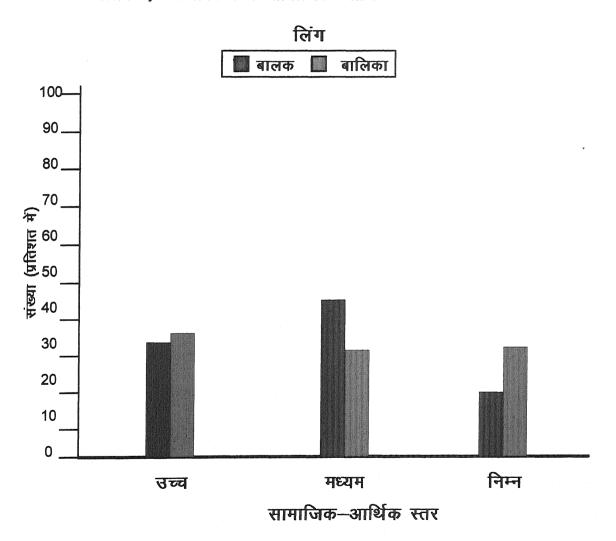
विभिन्न बालक वं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को दर्शाने वाली तालिका

लिंग	सामाजिक-आर्थिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	51	69	30	150	9.42	2	9.210
बालिका	55	46	49	150			
योग	106	115	79	300			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उक्त तालिका के ऑकड़े स्पष्ट करते हैं कि समस्त 300 बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर में से उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर में 51 बालक, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर में 69 बालक, व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर में 30 बालक पाये गये।

इसी प्रकार उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर में 55 बालिकाऐं, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर में 46 बालिकाऐं व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर में 49 बालिकऐं पाई गयी।

अत: इनकी विभिन्नता के मध्य 9.42 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 44

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं सामाजिक आर्थक स्तर के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

सामाजिक-आर्थिक स्तर	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	42	82.35	05	09.80	04	07.84	51	34.00
मध्यम	45	65.21	21	30.43	03	04.34	69	46.00
निम्न	13	43.33	15	50.00	02	06.67	30	20.00
योग	100	66.67	41	27.33	09	06.00	150	100.00

उक्त तालिका के विशलेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालकों के नैतिक स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध देखने पर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 82.35 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 09.80 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर में 07.84 प्रतिशत बालक, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 65.21 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 30.40 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर में 04.34 प्रतिशत बालक एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर के 43.33 प्रतिशत बालक, मध्यम नैतिक स्तर के 50.00 प्रतिशत बालक एवं निम्न नैतिक स्तर में 06.67 प्रतिशत बालक पाये गये।

रेखाचित्र क्रमांक – 17

बालकों के नैतिक स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य विभिन्नता

तालिका क्रमांक –45

उत्तर बाल्यावस्था के बालकों के नैतिक स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका

सामाजिक-आर्थिकस्तर	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	42	05	04	51	16.75	4	13.277
मध्यम	45	21	03	69			
निम्न	13	15	02	30			
योग	100	41	09	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 51 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों में से 42 बालक उच्च नैतिक स्तर में, 05 बालक मध्यम नैतिक स्तर में, 04 बालक निम्न नैतिक स्तर में, 69 मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों में से 45 बालक उच्च नैतिक स्तर में, 21 बालक मध्यम नैतिक स्तर में, 03 बालक निम्न नैतिक स्तर में एवं 30 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों में से 13 बालक उच्च नैतिक स्तर के, 15 बालक मध्यम नैतिक स्तर के व 02 बालक निम्न नैतिक स्तर में पायें गये।

अत: इनकी विभिन्नता के मध्य 16.75 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 46

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका-

सा0आ0 स्तर	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उच्च	51	92.72	03	5.45	01	1.81	55	36.67
मध्यम	33	71.73	11	23.91	02	4.34	46	30.67
निम्न	46	93.87	02	4.08	01	2.04	49	32.66
योग	130	86.67	16	10.67	04	2.66	150	100.00

उक्त तालिका के विशलेषण से स्पष्ट है कि कुल 150 बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध देखने पर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 92.72 प्रतिशत बालिकाओं, मध्यम नैतिक स्तर की 05.45 प्रतिशत बालिकाओं एवं निम्न नैतिक स्तर में 01.81 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 71.73 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 23.91 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर में 04. 34 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर में उच्च नैतिक स्तर की 93.87 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर की 04.08 प्रतिशत बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर में 02.04 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

रेखाचित्र क्रमांक – 18

बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य विभिन्नता

तालिका क्रमांक – 47

उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका

सामाजिक-आर्थिकस्तर	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
उच्च	51	03	01	55	14.71	4	13.27
मध्यम	33	11	02	46			
निम्न	46	02	01	49			
योग	130	16	04	150			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उक्त तालिका की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि समस्त 55 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं में से 51 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर में, 03 बालिकाऐं मध्यम नैतिक स्तर में, 01 बालिकाऐं निम्न नैतिक स्तर में, 46 मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं में 33 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर में, 11 बालिकाऐं मध्यम नैतिक स्तर में, 02 बालिकाऐं निम्न नैतिक स्तर में एवं 49 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं में से 46 बालिकाऐं उच्च नैतिक स्तर में, मध्यम नैतिक स्तर में 02 बालिकाऐं एवं निम्न नैतिक स्तर में 01 बालिकाऐं पाई गई।

अत: इनकी विभिन्नता के मध्य 14.71 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी उच्च सार्थकता अभिव्यक्त करता है।

तालिका क्रमांक – 48

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित कर ने वाली तालिका -

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	42	82.35	05	09.80	04	07.84	51	48.11
बालिका	51	92.72	03	05.45	01	01.81	55	51.89
योग	93	87.73	08	07.54	05	04.71	106	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 82.35 प्रतिशत बालक एवं 92.72 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 09.80 प्रतिशत बालक एवं 05.45 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 07.84 प्रतिशत बालक एवं 01.81 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक – 49

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका-

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	42	05	04	51	3.61	2	1.38
बालिका	51	03	01	55			
योग	93	08	05	106			

$P > 0.01$ पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 42 बालक एवं 51 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 05 बालक एवं 03 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 04 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गयी।

अतः इनकी विभिन्नता के मध्य 3.61 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर अपनी असार्थकता को प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक – 50

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	45	65.21	21	30.43	03	04.34	69	60.00
बालिका	33	71.73	11	23.91	02	04.34	46	40.00
योग	78	66.95	32	27.82	05	04.34	115	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 65.21 प्रतिशत बालक एवं 71.73 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 30.43 प्रतिशत बालक एवं 23.91 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 04.34 प्रतिशत बालक एवं 04.34 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक – 51

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका-

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	45	21	03	69			
बालिका	33	11	02	46	0.67	2	0.02
योग	78	32	05	115			

P > 0.01 पर असार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 45 बालक एवं 33 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 21 बालक एवं 11 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 03 बालक एवं 02 बालिकाऐं पाई गयीं।

अत: इनकी विभिन्नता के मध्य 0.67 काई मान प्रात हुआ जो कि 0.01 पर अपनी आसर्थकता को प्रकट करता है।

तालिका क्रमांक – 52

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर							
	उच्च		मध्यम		निम्न		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बालक	13	43.33	15	50.00	02	06.67	30	37.97
बालिका	46	93.87	02	04.08	01	02.04	49	62.03
योग	59	74.68	17	21.51	03	03.79	79	100.00

प्रस्तुत तालिका का वर्गीकरण प्रदर्शित करता है कि निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 43.33 प्रतिशत बालक एवं 93.87 प्रतिशत बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 50.00 प्रतिशत बालक एवं 04.08 प्रतिशत बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 06.67 प्रतिशत बालक एवं 02.04 प्रतिशत बालिकाऐं पायी गयीं।

तालिका क्रमांक – 53

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थकता के स्तर को प्रदर्शित करने वाली तालिका -

सामाजिक-आर्थिक स्तर

लिंग	नैतिक स्तर				काई वर्ग का मान	स्वातंत्र्य के अंश(df)	काई वर्ग का तालिका मान
	उच्च	मध्यम	निम्न	योग			
बालक	13	15	02	30	26.59	2	9.210
बालिका	46	02	01	49			
योग	59	17	03	79			

$P < 0.01$ स्तर पर उच्च सार्थक

उपरोक्त तालिका के अनुसार बालक एवं बालिकाओं के निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि उच्च नैतिक स्तर एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के 13 बालक एवं 46 बालिकाऐं, मध्यम नैतिक स्तर एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के 15 बालक एवं 02 बालिकाऐं, निम्न नैतिक स्तर एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के 02 बालक एवं 01 बालिकाऐं पाई गयीं।

अतः इनकी विभिन्नता के मध्य 26.59 काई मान प्राप्त हुआ जो कि 0.01 पर अपनी उच्च सार्थकता को अभिव्यक्त करता है।

अध्याय - षष्ठ
विवेचना

अध्याय - षष्ठ्
विवेचना

''नैतिकता का विकास व्यक्तिगत बनावट और समायोजक के प्रारूप के संयोगों से संभव होता है।''

- हैविंगहर्स्ट

उत्तर बाल्यावस्था नैतिक मानकों के निर्माण की अवस्था है। इस समय तक बालक एक नैतिक नियमावली को विकसित कर लेता है और उसके नैतिक सप्रंत्यय अत्यधिक संकीर्ण व विशिष्ट नहीं रहते। वह धीरे-धीरे नैतिक संप्रत्ययों का स्थायीकरण करना प्रारम्भ कर देता है। बालक के नैतिक विकास पर उसके मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है। जो उसके नैतिक विकास को प्रभावित करता है। बालकों के नैतिक विकास में अनुशासन एक महत्वपूर्ण तथ्य है। जो बालकों को सामाजिक समूह द्वारा मान्य नैतिक व्यवहार सिखाने का सामाजिक तरीका है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने बालक के नैतिक विकास, उसके मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को जोड़ने का प्रयास किया है।। निर्धारित की गई विभिन्न परिकल्पनाओं एवं उपपरिकल्पनाओं के आधार पर प्रतिपादित शोध विवेचना निम्नानुसार प्रस्तुत हैं

(1) शोधार्थी द्वारा निर्मित प्रथम परिकल्पना (तालिका क्रमांक - 9) सार्थक सिद्ध हुई कि ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर में विभिन्नता पाई जाती है।'' नैतिकता का विकास व्यक्ति के परिवेश में होता है। इस विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि इसमें एक ऐसी प्रक्रिया सम्मिलित हो जाती है, जिसे हम नियमों का आभ्यंतीकरण कह सकते हैं। यह स्वायत्तता की स्थिति की एक विशिष्टता मानी जा सकती है। बालक अब यह अनुभव

करता है कि अब वह नैतिक विकास के आर्विभाव के साथ किसी बाह्य सत्ता की आज्ञा नहीं मान रहा है, बल्कि स्वयं अपने आत्म, अपनी निजी आंतरिक सत्ता का कहना मान रहा है।

भारतीय परिवेश में एक ही परिवार में पालन-पोषण होने के पश्चात् भी बालक एवं बालिकाओं के लिये पारिवारिक, नैतिक मापदण्ड विभिन्न होते हैं। बालिकाओं से विनम्रता, सौम्यता सहिष्णुता, कोमलता आदि मूल्यों की अपेक्षा की जाती है, जबकि बालकों से शौर्य, बहादुरी, वीरयता, गर्व आदि मूल्य अपेक्षित होते हैं। यद्यपि वर्तमान परिवेश में बालक एवं बालिकाओं को काफी समानता से पालन-पोषण मिलता है, परन्तु फिर भी लिंग विभिन्नता नैतिक मूल्यों के अनुसरण में स्पष्ट दिखाई देती है। यही कारण है कि शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना सत्य सिद्ध पाई गई। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में नैतिक मूल्य अधिक पाये गये। **मैकडोनाल्ड (1963)** का अध्ययन इसकी पुष्टि करता है। इन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में अधिक नैतिकता पाई जाती है।

Jones (1954) ने निष्कर्ष निकाला कि 9 से 12 वर्ष आयु तक के बालकों में ईमानदारी के आदर्श अत्यधिक उच्च हो जाते हैं। बालक की नैतिक नियमावली प्रौढ़ की जैसी हो जाती है।

Ausubel (1955) ने माना है कि इस समय नैतिक लज्जा, नैतिक व्यवहार के विकास में एक शक्तिशाली कारक होता है। इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक **पिकूनस महोदय** ने भी इस बात की स्वीकारोक्ति की है कि 9 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक नैतिक व्यवहार को समझने लगता है। **ब्रेकन रिज व विन्सेण्ट** ने कहा कि इस अवस्था में बालक का नैतिक व्यवहार दूसरों के निर्णय पर निर्भर करता है। **लर्नर एवं मरफी (1941)** ने कहा कि 8 से 10 वर्ष के बालक में दोहरी नैतिकता होती है, को माना है। **हरलॉक महोदय** ने माना कि नैतिक नियमों में लिंगभेद पाये जाते हैं व बालक नैतिक नियमों के उल्लंघन को गलत कार्य समझने लगते हैं। **एरिक्सन (1963)** ने कहा कि बालक के मनोसामाजिक विकास की अवस्था में 'स्वायत्तता बनाम शर्म' संदेह तत्व

पाया जाता है, जो आत्मनियंत्रण की भावना उत्पन्न करता है जो उनके नैतिक विकास हेतु महत्वपूर्ण है। **कोल्हबर्ग (1968)** के अनुसार बालक नैतिक दार्शनिक होता है।

वर्मा (1969) ने 6 से 11 वर्ष के बालकों के नैतिक विकास का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि बालक के नैतिक ज्ञान में अंतर होता है, नैतिक गुणों की दृष्टि से इनमें विभिन्नता पाई जाती है। **राय (1980)** ने मूल्यों की विकासात्मक प्रकिया का अध्ययन कर बताया कि बालक एवं बालिकाओं के नैतिक विकास में अंतर पाया जाता है। **अग्रवाल एवं पाण्डेय (1989)** ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि धार्मिक एवं पारिवारिक नैतिक मूल्यों में छात्र-छात्राओं के बीच सार्थक अंतर नही है, जबकि शेष मूल्यों पर इनके मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है, अर्थात् अधिकांश नैतिक विकास के प्रति उनके दृष्टिकोण में भिन्नता है।

एरन (1985) ने माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी बालक-बालिकाओं के नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्र-छात्राओं को विभिन्न नैतिक विकास में पिछड़ा पाया गया। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नैतिक मूल्य अधिक पाये गये। इसी प्रकार **राजेन्द्र शर्मा (1999)** ने ग्रामीण छात्राओं के नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया व निष्कर्ष ज्ञात किया कि ग्रामीण छात्राओं का नैतिक विकास स्तर ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक उच्च पाया गया।

(2) शोधार्थी द्वारा निर्मित द्वितीय परिकल्पना यह थी कि ''विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है''। (तालिका क्रमांक - 15) सत्य सिद्ध हुई। विभिन्न परिवारों में आनुवांशिक पृष्ठभूमि, सामाजिक अवस्था, आर्थिक अवस्था, स्थिति, शारीरिक अवस्था तथा संवेगात्मक परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं जो कि बालक एवं बालिकाओं में विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य के लिये उत्तरदायी होती हैं। इसके साथ-साथ बालक एवं बालिकाओं को एक विशेष सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्राप्त होती है, जो उनके समुचित मानसिक विकास पर प्रभाव

डालती हैं। बालक एवं बालिकाओं को लिंग भेद के आधार पर आत्मरक्षा संबंधी, सामाजिक जीवन संबंधी तथा जाति रक्षा संबंधी अभिवृत्तियाँ विकसित की जाती हैं। उन्हें लिंग भेद की आधार मूल प्रवृत्तियों के दमन तथा मूल प्रवृत्तियों के उन्नयन की शिक्षा दी जाती है। जो उनके मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में विभिन्नता प्रकट करती हैं। **मेहता (1944)** ने अपने शोध में देखा कि ''बालक एवं बालिकाओं का मानसिक स्वास्थ्य माता-पिता के व्यवहार से प्रभावित होता है।'' **Guinouard & Rychlak (1962)** ने कहा कि संतुलित, सौम्य और मर्यादित तथा चिंतित बालक-बालिकाएं अपनी मित्र मंडली में प्रसिद्ध नहीं होते हैं। **Baksi (2001)** ने बालक-बालिकाओं में लैंगिक विभिन्नता के प्रभाव का अध्ययन कर ज्ञात किया कि किशोर बालक एवं बालिकाओं में हो रहे परिवर्तन, उनके माता-पिता से संबंध, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व पर समान प्रभाव डालते है। फ्रांससी मनोवैज्ञानिक **Alfled Binet** ने मानसिक स्वास्थ्य का संबंध व्यक्ति की निर्णयात्मक योग्यता के साथ बताया है। **मेहता (1994)** ने मानसिक स्वास्थ्य पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया है।

अग्रवाल (1999) ने माता की सवीकृति का बालिकाओं की स्वाभावगत विशेषताओं पर अध्ययन कर पाया कि स्वीकृति प्राप्त बालिकांए व अस्वीकृत बालिकाओं की स्वाभावगत विशेषताओं में सार्थक अंतर पाया जाता है। स्वीकृत बालिकाएं सामाजिक व संवेगात्मक रूप से स्थिर तथा प्रभावशाली होती है। **Janet (2004)** ने अपने शोध में बालकों व उनके परिवारों पर अध्ययन कर बताया कि जो माता-पिता अपने बालकों को स्वीकृत करते हैं उनका सकारात्मक मानसिक विकास होता है एवं तिरस्कृत बालकों का नकारात्मक मानसिक विकास होता है।

Sharma's (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में मानसिक विकास के साथ साथ नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है। **Sharma (1999)** ने शहरी व ग्रामीण छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक विकास विषय पर अध्ययन में बताया कि छात्र-छात्राओं का

मानसिक स्वास्थ्य नैतिक विकास से प्रभावित होता है, साथ ही नैतिक मूल्य भी प्रभावित करते हैं। **प्याजे (1965) तथा कोहेलबर्ग (1974)** - द्वारा प्रतिपादित नैतिकता तथा संज्ञानात्मक सिद्धान्त, बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य को व्यक्तित्व संबंधी कारकों के साथ जोड़कर देखते हैं, संभवतः संज्ञानात्मक उपागम हैं, क्योंकि इसमें केवल चेतन मानसिक क्रियाओं पर ध्याान केन्द्रित किया गया हैं। इस उपागम को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों में कैली तथा कार्टलिविन आते हैं। इसके अंतर्गत बालक या बालिकांए् किसी भी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण करते है, अपने बौद्धिक आधार पर उसे मूल्यांकित करते हैं, सीखते हैं, सोचते है, निर्णय लेते हैं तथा उसके आधार पर समस्याओं का समाधान करते हैं। **एडलर महोदय (1912)** ने इसे एक जन्मजात प्रक्रिया माना है जिन व्यक्तियों की सामाजिक अभिरूचि जितनी विस्तृत, परिपक्व और विकसित होती है, उसका मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होता है, परन्तु कुछ व्यक्तियों के जीवन का अर्थ पूर्णतः व्यक्तिगत होता है और वे व्यक्तिगत हितों के आगे सामाजिक हितों को समर्पित कर देते हैं। यह विभिन्नता लड़के-लड़कियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनके अनुसार सामाजिक दवाब, प्रशंसा, पुष्टिकरण आदि बालिकाओं को प्रभावित करता है, इसलिये वे अधिक सामाजिक होती हैं।, जबकि बालक को समाज अधिक स्वतंत्रता प्रदान कर व्यक्तिवादी बना देता है।

(3) शोधार्थी द्वारा निर्मित तृतीय परिकल्पना यह थी कि ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता हैं।'' (तालिका क्रमांक- 17,19) सत्यापित हुई, इस परिकल्पना में शोधार्थी द्वारा कुल पॉच प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी स्तरों का अध्ययन किया गया, जिसमें अ,ब,द एवं य को छोड़कर सभी स्तरों संबंधी उपपरिकल्पनायें अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं।

(अ) प्रथम उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 21) असत्य

सिद्ध हुई।

(ब) द्वितीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके उच्च मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।''(तालिका क्रमांक-23) असत्य सिद्ध हुई।

(स) तृतीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकओं के नैतिक स्तर पर उनके मध्यम मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।''(तालिका क्रमांक- 25) सत्य सिद्ध हुई।

(द) चतुर्थ उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 27) असत्य सिद्ध हुई।

(य) पाचॅवी उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रंमाक - 29) असत्य सिद्ध हुई।

Sharma (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में मानसिक विकास के साथ-साथ नैतिक विकास भी होता है। **Arya S. (2000)** ने बालक-बालिकाओं में नैतिक मूल्यों के विकास के लिये प्रयोगात्मक अध्ययन में बताया कि नैतिक मूल्यों के विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक कार्यक्रम व सामाजिक-आर्थिक स्तर की मित्रता का सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

ग्रीन स्पैन (1999)– ने अपनी खोजों, अन्वेषण एवं अभ्यास के आधार पर ग्रीनस्पैन अभिभावकों को न सिर्फ यह बताते है कि छोटे-मोटे प्रकार की क्रीड़ायुक्त घनिष्ठता, खेल, मौज-मस्ती तथा शब्दिक एवं अशब्दिक वार्तालाप प्रतिभावान भावनात्मक रूप से स्वस्थ नैतिक बालकों के विकास को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि यह भी बताते है कि वे (अभिभावक) अपने बालकों में किस प्रकार इनका (गुणों का) समावेश करें। बौद्धिक विकास का उदगम् तथा इसके विभिन्न चरणों का ठोस तथा प्रायोगिक वर्णन विस्तार से किया गया है। अभिभावक यह जान पायेगें कि किस प्रकार बालकों के संकेतों का अध्ययन किया जाये, किस प्रकार उनके विकास की अवस्थाओं को पहचाना

जाये तथा किस प्रकार उनकी संज्ञेय, भावनात्मक तथा नैतिक विकास की प्रत्येक अवस्था को प्रोत्साहित किया जाऐ।

Singh, Dolly (1995) के अध्ययनानुसार एकल परिवार में बालक माता-पिता के निकटतम संपर्क अपने में विश्वास खुशमिजाज दूसरों से प्यार करने वाले व उच्च बौद्धिक योग्यता वाले होते हैं। Dowdney et. al. (1991) ने शोध में पाया कि जिन अभिभावकों की भूमिका नकारात्मक होती है उनके बालकों का मानसिक स्वास्थ्य भी नकारात्मक होता है। **मेहता (1994)** ने मानसिक स्वास्थ्य पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया है। Alfred Binet ने मानसिक स्वास्थ्य का संबंध व्यक्ति की निर्णयात्मक योग्यता के साथ बताया है। **कोलबर्ग (1974)** का 'प्राणीगम उपागम' बताता है कि बालक बौद्धिक क्षमता (तर्क व चिंतन) के आधार पर नैतिक निर्णय लेता है। **इलियर टूरियल (1969)** ने भी इसकी पुष्टि की है। **ग्रिम्पसन (1975)** ने अपने अध्ययन में पाया कि जब बच्चों का मनोबल गिरता है तब वे संवेगात्मक रूप से अस्थिर व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। **कौसर व उनके साथियों (1991)** ने अपने शोध में ज्ञात किया कि अभिभावक तिरस्कार बालक को सवेंगात्मक रूप से अस्थिर बनाता है तथा अभिभावक स्वीकृति उसे संवेगात्मक रूप से सन्तुलित करती हैं।

Krocks (2003) ने बताया कि अतिसुरक्षित बालक संवेगात्मक अस्थिर होते हैं। **एण्डरसन तथा कोहली (1996)** ने अध्ययन में पाया कि जब बालक में सुखद अनुभूतियों के कारण धनात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न होती है तो उसकी समायोजन क्षमता उत्तम होती है। उसमें आत्मविश्वास एवं आत्म-स्वीकृति का भाव बढ़ता है व भावप्रवण बालकों में ऋणात्मक आत्म-प्रत्यय विकसित हो जाता है, जो बालक को समस्यात्मक बना देता है। Cronback (1956) ने स्पष्ट किया कि व्यक्ति की आदर्श स्वाभिमान भावना व 'स्व प्रत्यय' इससें संबंधित होते हैं तथा यह शिक्षा सामाजिक स्तर नैतिक विकास के द्वारा प्रबलन ग्रहण करता है।

शोधार्थी के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते है कि मानसिक स्वास्थ्य का धनात्मक पक्ष व्यक्ति को सन्तुलित समायोजित, आत्मनिर्भर, संवेगात्मक स्थिर बनाता है। जबकि मानसिक स्वास्थ्य का ऋणात्मक विकास बालक को भावप्रवण, अस्थिर, असन्तुलित असमायोजित तथा दूसरों पर निर्भर रहना आदि बनाता है। ये दोनों धनात्मक तथा ऋणात्मक मानसिक स्वास्थ्य के दो ध्रुब्रीय बिन्दु हैं। इन दोनों के मध्य विभिन्न प्रकार की पारिवारिक परिस्थितियाँ माता-पिता की अभिवृत्तियाँ व्यवहार का तरीका बालक को मानसिक स्वास्थ्य के स्तर पर विभिन्न कर देता है।

(4) शोधार्थी द्वारा निर्मित चर्तुथ परिकल्पना यह थी कि ''विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।'' (तालिका क्रमांक - 31) सत्य सिद्ध हुई।

प्रत्येक परिवार एक विशेष अनुशासनात्मक वातावरण विकसित करता है। तथा परिवार की प्रतिष्ठा एवं नियमन के लिये कुछ विशेष नियमों को अपने परिवार में आरोपित करता है। कभी ये नियम विनियम सांस्कृतिक डोर से बधें होते हैं, तो कभी ये नियम विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण दिखाई देते हैं। परन्तु भारतीय सास्कृंतिक विरासत में स्त्री और पुरूष के लिये अलग-अलग अपेक्षाओं और सम्भावनाओं का संसार रचा हुआ है। जिसके तहत ये अपने बालक और बालिकाओं से अलग-अलग प्रकार की अपेक्षाऐं करते हैं तथा अमल करने हेतु उन पर विभिन्न प्रकार के बन्धन एवं मर्यादाऐं विकसित करना चाहते है। एक बात जो बालक के लिये उचित होती है वहीं बात बालिका के लिये अनुचित हो सकती है, उपयुक्त सभी परिस्थितियाँ एक ही परिवार के बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन में भिन्नता के लिये उत्तरदायी हैं।

Adorana (1950) & Auscubel (1951) ने अपने अध्ययनों में पाया कि स्वाम्तिव अभिवृत्ति वाले अभिभावक अपने बालकों से अत्यधिक अनुशासन की आशा रखते हैं, कठोर नियंत्रण, दंड व भय के कारण बालक आक्रामक हो जाते हैं। **सियर्स (1953)** ने अपने अध्ययन में देखा कि दंड का स्तर उच्च होने पर लड़कों में आक्रामकता का स्तर बढ़ जाता है व लड़कियों में कम हो जाता

है। **फ्रेंकल ब्रांस्विक (1953)** ने भी शोध निष्कर्ष में बताया कि जिन बालकों को बाल्यावस्था में कठोर दंड मिला वे आगे चलकर आक्रामक, कठोर व क्रूर हो जाते हैं। **मिंटर्न और लैम्बर्ट (1964)** ने देखा कि राजपूत माताएँ लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को शारीरिक दंड भी अधिक कठोर व बार-बार देते रहने में भी संकोच नहीं करतीं। कभी-कभी दंड की स्थिति में जब दंड का भय हट जाता है तो बालक उसी पुरानी अनुक्रिया को करने लगता है व दंडित बालक आक्रामक हो जाता है। **हरलॉक (1978)** ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि जब अभिभावकों की प्रत्याशा के अनुरूप उनके बालक नहीं बन पाते हैं, तब उनकी अभिवृत्ति दंडात्मक प्रकार की बन जाती हैं, तब बालक का व्यवहार प्रतिक्रिया स्वरूप नकारात्मक और परेशानी उत्पन्न करने वाला हो जाता है।

Purohit et.al. (2001) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि जब अभिभावकों की अस्वीकृति अधिक दंड द्वारा प्रदर्शित होती है तो बालक अधिक संवेदनशील प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। बलडोइन महोदय ने देखा कि उचित मात्रा में स्नेह व दंड से बालक ऐसे काम करना सीखता है जिससे माता-पिता उसे प्यार करें न कि दंड दें। **दिव्या गोयल (1994)** ने कहा कि कठोर माता अपने बालक की अपेक्षा बालिकाओं से अधिक कठोर व्यवहार का प्रदर्शन करती हैं। **सीयर्स, मैकॉबी एवं लेविन (1957) तथा मिलर एवं स्वानसन (1958)** ने निष्कर्ष निकाला कि बालकों को पुरस्कार देने से वे अनुशासित होते हैं।

पुरस्कार बालक एवं बालिकाओं को वांछित कार्य के प्रति प्रोत्साहित करता है। यह अनुशासन का एक आवश्यक अंग है। बालकों को दिया जाने वाला पुरस्कार उचित समय व उचित मात्रा में दिया जाना चाहिये, परन्तु परिवार में बालक एवं बालिकाओं से अपेक्षा का स्तर भी अलग-अलग रहता है, इसलिये उन्हें अपने-अपने स्तर की अपेक्षाओं के अनुरूप पुरस्कार का प्रावधान रहता है। पुरस्कार अधिगम के प्रबलक का कार्य करता है। **लोंग (1914)** ने शोध अध्ययन में निष्कर्ष

निकाला कि दंड की अपेक्षा पुरस्कार अधिक प्रभावकारी होता है पर कभी-कभी नैतिक मानकों के अनुसरण हेतु दण्ड का भी प्रयोग अनुशासन विकसित करने में सहायक हो सकता है।

यद्यपि अनुशासन नैतिकता से संबंधित है परन्तु लिंग भेद, वातावरण की स्वतंत्रता तथा आयु विशेषता बालकों को अनियंत्रित बना देती है, परन्तु नैतिक मूल्य बालक को शनैः-शनैः विकसित करता है। लिंग भेद के कारण बालिकाऐं बालकों की अपेक्षा अधिक नियंत्रित होती हैं और नैतिक मूल्यों की पोषक भी। **एरिक्सन (1963)** ने निष्कर्ष निकाला कि उत्तर बाल्यावस्था में अनुशासन द्वारा बालक एवं बालिकाओं के पर्यावरण के प्रति समायोजन एवं विधेयात्मक शलिगुणों के विकास द्वारा बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व में निखार आता है। तथा उसमें आत्मसम्मान की भावना का विकास होता है तथा व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ नैतिकता का विकास होता है।

जूलियन, रेग्यूला व हॉलेण्डर (1967) ने अपने अध्ययन में देखा कि बालिकाएं बालकों की तुलना में अधिक अनुशासित होती हैं, इसका कारण संभवतः हमारे समाज में बालिकाओं को इस बात का प्रोत्साहन मिलता है। कि वे विनम्र रहें।

(5) शोधार्थी द्वारा निर्मित पॉचवी परिकल्पना यह थी कि ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर परिवार के अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 32,34) सत्यापित हुई, इस परिकल्पना में शोधार्थी द्वारा कुल 3 प्रकार के अनुशासनात्मक व्यवहार संबंधी आयामों का अध्ययन किया गया जिसमें (ब) को छोड़कर सभी आयामों संबंधी उपपरिकल्पनाऐं अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं।

(अ) प्रथम उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 36) सत्य सिद्ध हुयी।

(ब) द्वितीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 38) असत्य सिद्ध हुयी।

(स) तृतीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 40) सत्य सिद्ध हुयी।

अनुशासन बालक एवं बालिकाओं को अपने व्यवहार को नियंत्रित करने के अवसर प्रदान करता है। अनुशासन की लोकतंत्रात्मक प्रणाली, विचार-विमर्श व कारण बताने की युक्ति द्वारा बालक की तर्क शक्ति को बढ़ाने की प्रेरणा देती है, नियत्रंण बालक को सुरक्षा प्रदान करता है क्योंकि ये नियंत्रण उसे सामाजिक मानकों के अनुसार विकसित होने के अवसर प्रदान करता है। कोई भी व्यक्ति वह बालक हो या बालिका उसका संयमित या असंयमित होना, उसके व्यक्त्वि विकास पर नहीं, बल्कि उसे प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होता है। बालक एवं बालिकाओं को परिवार व शाला में ऐसे विभिन्न अनुभव प्राप्त होते हैं, जो उन्हें संयमी बनाकर उनके व्यक्तित्व में अनुशासन की नींव स्थापित करते हैं, जबकि पक्षपातपूर्ण, शिथिल अनुशासन बालक में असंयमित व्यक्तित्व निर्धारण हेतु जिम्मेदार होते हैं। बालक एवं बालिकाओं द्वारा सीखे गये अनेक व्यवहार, जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अनुबंधित होते हैं व इन्हीं अर्जित किये गये व्यवहारों द्वारा संयमित व असंयमित व्यक्तित्व कारक का जन्म होता है। **वॉटसन (1934)** ने बताया कि अत्यधिक नियंत्रण बालक में बड़ों के प्रति निरादर, पर निर्भरता, कुसमायोजन, स्वनिर्णय क्षमता का अभाव, बाल-अपराध तथा तनाव उत्पन्न करता है। **स्वीटर्व (1990)** ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया कि माता-पिता का बालक पर पर्याप्त नियंत्रण एवं मार्गदर्शन न होने से बालकों में अनुशासनहीनता, गैरसामाजिक व्यवहार व व्यक्तित्व कुसमायोजन

देखा जाता है। **एरिकक्रोम (1979)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बालक एवं बालिकाओं की लैंगिक विभिन्नता के कारण परिवार का बालक एवं बालिकाओं के प्रति अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अलग-अलग होता है।

Adorana (1950) & Auscubel (1951) ने अपने अध्ययनों में पाया कि स्वाम्तिव अभिवृत्ति वाले अभिभावक अपने बालकों से अत्यधिक अनुशासन की आशा रखते हैं, कठोर नियंत्रण, दंड व भय के कारण बालक आक्रामक हो जाते हैं। **बुल (1969)** ने कहा कि दंड का प्रावधान, अधिगम के प्रवलन का कार्य करता है व संवेगात्मक विकास में सहायक होता है। दंड का उद्देश्य बालक को सुधारना व उन्नत बनाना होना चाहिये, न कि उसे अपमानित करना।

हरलॉक (1978) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि जब अभिभावकों की प्रत्याशा के अनुरूप उनके बालक नहीं बन पाते हैं, तब उनकी अभिवृत्ति दंडात्मक प्रकार की बन जाती हैं, तब बालक का व्यवहार प्रतिक्रिया स्वरूप नकारात्मक और परेशानी उत्पन्न करने वाला हो जाता है।

(6) शोधार्थी द्वारा निर्मित छठवीं परिकल्पना यह थी कि ''बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक विभिन्नता पाई जाती है। '' (तालिका क्रमांक - 42) सार्थक सिद्ध हुई।

सामाजिक-आर्थिक स्तर बालक एवं बालिकाओं में नैतिक विकास को प्रभावित करता है। जब बालक का सामाजिक-आर्थिक स्तर सुदृढ़ होगा तो उसका विकास भी समुचित प्रक्रिया में होगा और उसमें नैतिक मूल्य भी विकसित होगें, जिससे उसका नैतिक विकास प्रभावी होगा। परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व का निर्धारण करती है। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति बालकों में हीन ग्रंथियों, कुंण, असंतोष और विद्रोही प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करती है। बालक के विकास हेतु उत्तरदायी कारक सामाजिक-आर्थिक स्तर के मापन हेतु मनोवैज्ञानिकों व विद्वानों ने अध्ययन से प्राप्त बिन्दुओं का रूप प्रदान किया।

सामाजिक-आर्थिक कारक बालक एवं बालिकाओं के विकास को सकारात्मक व नकारात्मक मार्ग की ओर उन्मुख कर सकता है।

Onacha, -Charles et.al. (1987) ने परिवार के आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण व विद्यालयीन वातावरण का बालक-बालिकाओं के विज्ञान की उपलब्धि से संबंध का अध्ययन किया। इस हेतु उन्होंने 480 नाइजेरिया छात्रों जिनकी आयु 12-17 वर्ष की थी, का अध्ययन किया। इस शोध में अभिभावकों ने भी भाग लिया। इस शोध के परिणाम यह बताते हैं कि परिवार का आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयीन वातावरण सामूहिक रूप से छात्रों की विज्ञान उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। **Follz, C. et.al. (1999)** ने 224 बालक व 224 बालिकाओं का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों का समायोजन विभिन्न प्रकार का होता है। **Monale et. al. (2000)** ने 322 बालकों (70 प्रतिशत बालक एवं 30 प्रतिशत बालिकाऐं) पर अध्ययन कर ज्ञात किया कि बालकों के आक्रामक व्यवहार व सामाजिक असंतुलन का कारण उनका पारिवारिक - सामाजिक आर्थिक स्तर था। **Tripathi, V.P. et. al. (2001)** ने शोध अध्ययन कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का पता लगाना तथा इसका बालिकाओं की समायोजन संबंधी समस्याओं के मध्य संबंध ज्ञात करना तथा अभिभावकों की आय, शिक्षा एवं व्यवसाय का इन समायोजन समस्याओं पर प्रभाव जानना है। इस शोध हेतु उत्तर बाल्यावस्था की कक्षा 6 व 7 में पढ़ने वाली 110 छात्राओं का चयन किया गया जो शहरी क्षेत्रों में निवास कर रही थीं तथा इनकी उम्र 10 से 13 वर्ष थी। इस हेतु समायोजन मापनी व सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि समायोजन व सामाजिक-आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध पाया गया। अभिभावक शिक्षा एवं आय उत्तर बाल्यावस्था की बालिकाओं को प्रभावित करती है। व्यवसाय एवं बालिकाओं की समस्याओं के मध्य असार्थक संबंध पाया गया।

निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं का स्कूल में समायोजन अच्छा नहीं था। इसका कारण हो सकता है कि अभिभावक बालकों की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं जिसके कारण उनके प्रति बालकों की प्रतिकूल भावना विकिसत हो जाती है।

Tripathi, V.P. et. al (2001) ने शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग के किशोर व किशोरियों के मध्य पिता के अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में अंतर तथा अभिभावक अनुशासन संबंधी व्यवहार का उनके प्रत्यक्षीकरण में अंतर। इस अध्ययन हेतु आगरा शहर की 4 शालाओं को जिसमें 2 कॉन्वेंट एवं 2 हिन्दी माध्यम स्कूल थे, लिया गया। इस हेतु 100 बालक एवं बालिकाओं को जिसकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी, लिया गया। जो उच्च मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग से संबंधित थे। मध्यम वर्ग की मासिक आय 3000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह थी। इसमें उच्च मध्यम वर्ग आय रूपये 4000/- से 5000/- रूपये प्रतिमाह व निम्न मध्यम वर्ग की आय 3000/- से 3900/- रूपये प्रतिमाह थी। **Garcia et. al. (2004)** ने अपने अध्ययन में सांतवी कक्षा के 150 छात्रों पर परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का बालक की उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम बताते हैं कि बालक की उपलब्धि का स्तर उनके माता-पिता की योग्यता, शैक्षिक स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्तर द्वारा निर्धारित होता है। **Hatzichristou et. al. (1996)** ने विभिन्न क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक सामाजिक योग्यता के आधार पर अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर, समूह व लिंग भेद से बालक की सामाजिक योग्यता प्रभावित होती है। **Kotekova, - Ratislava (1997)** ने विभिन्न पारिवारिक संस्कृतियों, विभिन्न पारिवारिक वातावरण, परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का बालक के सामाजिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिये 11 से 12 वर्ष के 205 बालक चार परिवारों से लिये गये। निष्कर्ष स्वरूप ज्ञात हुआ कि बालक का सामाजिक-आर्थिक स्तर उसके सामाजिक विकास को

प्रभावित करता है। निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि किशोर बालक एवं बालिकाओं के मध्य अभिभावकों के अनुशासनात्मक व्यवहार संबंधी प्रत्यक्षीकरण में उच्च स्तर का अंतर पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि बालिकाएं स्वाभाविक रूप से आज्ञाकारी होती हैं तथा अभिभावकों की अपेक्षाओं व इच्छाओं को पूरा करती हैं। वे अधिक शांत भी होती हैं जबकि बालक स्वाभाविक रूप से स्वीकारात्मक तथा अभिभावकों की अपेक्षाओं की अपेक्षा स्वयं की इच्छाएं पूरा करने पर बल देते हैं तथा बालिकाओं की अपेक्षा अधिक शरारती होते हैं। इन सब बातों के कारण अभिभावक बालिकाओं के प्रति अधिक अच्छे, स्वतंत्र एवं अधिक अनुज्ञात्मक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं।

(7) शोधार्थी द्वारा निर्मित सांतवी परिकल्पना यह थी कि ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक विकास उनके परिवारों के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होते है'' (तालिका क्रमांक - 45,47) सत्यापित हुई, इस परिकल्पना में शोधार्थी द्वारा कुल 3 प्रकार के सामाजिक-आर्थिक स्तर संबंधी आयामों का अध्ययन किया गया, जिसमें (अ,ब) को छोड़कर सभी आयामों संबधी उपपरिकल्पनाऐं अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं।

(अ) प्रथम उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवारों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है '' (तालिका क्रमांक - 48) असत्य सिद्ध हुई।

(ब) द्वितीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवारों के मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 50) असत्य सिद्ध हुई।

(स) तृतीय उपपरिकल्पना ''उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवारों के निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है।'' (तालिका क्रमांक - 52) सत्य सिद्ध हुई।

इस प्रकार शोधार्थी द्वारा उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं हेतु निर्मित उपपरिकल्पनाऐं जो कि उनके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं नैतिक स्तर के संबंध को प्रदर्शित करती हैं से यह ज्ञात होता है कि भिन्न-भिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग अपनी संप्रभुता के कारण अपनी स्थिति के अनुसार नैतिक निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं, उन्हें प्राप्त राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक आश्रय उनके इस निर्णय को भी सामाजिक बाना पहना देता है। यही जीवन मूल्य उनके बच्चे देखते-सुनते हैं व उसी रूप में अपने जीवन में उतारते हैं।

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों के बालक तथा बालिकाओं का पृथक-पृथक तुलनात्मक अध्ययन करने पर बालिकाऐं बालकों की अपेक्षा अधिक नैतिक पाई गई। **फाइट (1940)** ने यह निष्कर्ष निकाला कि परिवार के स्तर तथा परिस्थितियों का नैतिक विकास पर स्पष्ट प्रभाव पडता है। **Long (1941)** ने बताया कि अधिकांश कदाचरण अपरिपक्वता के कारण होते हैं। इस आयु में लडकों की अपेक्षा लडकियां विरोधभाव वाली, शक्की और जिद्दी अधिक होती हैं। **डोलगर व गिनेडस (1946)** के अनुसार निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों में बालक अपने बड़ों की नैतिक अनुशासन संबंधी सलाह पर अधिक ध्यान देते हैं। **Dameron (1955)** ने कहा कि मध्यम वर्ग के माता-पिता निम्न या उच्च वर्ग के माता-पिता की अपेक्षा बालक से समाज द्वारा अनुमोदित नैतिक मानकों के अनुसार व्यव्हार कराने में अधिक सख्त होते हैं।

हरलॉक (1956) ने कहा कि उत्तर बाल्यावस्था में लड़के-लड़किया दोनो यह जानते हैं कि वे जिस सामाजिक-आर्थिक वर्ग से संबंध रखते हैं, उसमें उनके लिंग के व्यक्तियों से किस प्रकार के सामाजिक व्यव्हारों, धारणाओं, सामाजिक सप्रंत्ययों व नैतिक मानकों की अपेक्षा की जाती है, वह अपने अहं-संप्रत्यय में सामाजिक-आर्थिक वर्गवत् स्थिति को भी शामिल कर लेते हैं, जो कि माता-पिता के व्यवसाय पर आधारित होती है, इन्हीं विचारों का समर्थन (Vinacko,

1954, Dombrose, 1955 &Stranss, 1956) ने भी किया है। (Rainwater (1956)) ने ज्ञात किया कि निम्न वर्ग के माता-पिता बालक को कठोर शारीरिक दंड देना जारी रखते हैं, जबकि मध्यम वर्ग के माता-पिता अधिकतर बालक के अंदर दोष या लज्जा की भावनाएं जगाने की कोशिश करते हैं या प्यार से वंचित करने की धमकी देते हैं। इसके फलस्वरूप निम्न वर्ग का बालक झूठ बोलकर या चुपचाप रहकर दंड से बचने का प्रयास करता है जबकि मध्यम वर्ग का बालक माता-पिता की इच्छानुसार चलने का प्रयास करता है।

ब्रोनफेनब्रेनर (1958), **डेविस** (1946), **मैक्कॉबी** (1952), **व्हाइट** (1957), **लिट्मैन** (1957), **मिलर एवं स्वानसन्** (1959) आदि के अध्ययनों का विश्लेषण कर देखा कि मध्यम वर्गीय अभिभावक अधिक अनुज्ञात्मक होते हैं एवं बालकों से उत्तरदायित्व, शैक्षिक उपलब्धि, आदर व उच्च नैतिक मूल्यों की आशा करते हैं, जबकि निम्न वर्ग में अभिभावक आवेगी एवं बालकों की आक्रामकता के प्रदर्शन, शारीरिक संतुष्टि व्यय करने एवं सहभागिता के प्रति अनिषेधात्मक व्यव्हार प्रदर्शित करते हैं। Rodman (1963) ने कहा कि भारतीय समाज में निम्न वर्ग के बालकों में परंपरागत क्रियाओं पर अधिक बल देता है, परन्तु नैतिक मूल्यों के पालन पर बल नहीं देता। किन्तु मध्य वर्ग व उच्च वर्ग परांपरागत सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों के पालन पर अधिक वल देता है। Kohn (1969) ने देखा कि गैर-कार्यकारी मध्य वर्ग में बालकों से आज्ञापालन स्वनियंत्रण, स्व-निर्देशन की अपेक्षा की जाती है, जबकि कार्यकारी मध्य वर्ग में बालकों को सांस्कृतिक मानकों के प्रति ईमानदार रहने की शिक्षा दी जाती हैं। **हैडरमेन** (1972) **फोडर** (1973) तथा **ओलेज्निक एवं मैक्किनी** (1973) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं बालक के नैतिक प्रत्यय के विकास में संबंध बताया।

इस प्रकार शोध विषय **'बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन - उत्तर**

बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में' हेतु निर्धारित उद्देश्यों एवं इनकी प्राप्ति हेतु निर्मित परिकल्पनाओं एवं उपरिकल्पनाओं के अध्ययन, विश्लेषण एवं विवेचना से सपष्ट होता है कि मानव के क्रमिक विकास की प्रक्रिया में उत्तर बाल्यावस्था एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें बालक के आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण होता है तथा बालक की इच्छॉए अनभूतिया, प्रेरणा आदि जो आदर्श व्यक्तित्व से उद्भूत होती है वे ही बालक में नैतिक मूल्यों का निर्माण एवं विकास करती हैं। इन शाश्वत् नैतिक मूल्यों की वरीयता, श्रेष्ठता एवं प्राथमिकता का निर्धारण अलग-अलग होता है, इस तथ्य की पुष्टि मनौवैज्ञानिक ब्राइटमैन में भी की है। नैतिक मूल्य सामाजिक पंरपराओं में सवेंगात्मक, नैतिक और धार्मिक तत्वों से जुड़े होते हैं , जो बालक में पर्यावरण की क्रिया-प्रतिक्रिया से विकसित होते हैं। बालक के संतुलित, एकीकृत व सुसमन्वयित व्यक्तित्व निर्माण हेतु नैतिक विकास का आधार गहन और गहरा होना उनके प्रति आस्था व प्रतिबद्धता होना आवश्यक है। बालक के जीवन में नैतिकता का पुट (जीवन के उच्च स्तरीय सिद्धांत) उसके व्यक्तित्व को परिष्कृत करता है और इस हेतु पर्यावरण (पारिवारिक / सामाजिक) में आचरण, मानक और व्यवहारों की नैतिकता, जो बालक के जीवन की प्रकिया को अर्थ और परिभाषा देती है, का उत्कृष्ट होना आवश्यक है।

अध्याय - सप्तम्
सारांश एवं निष्कर्ष
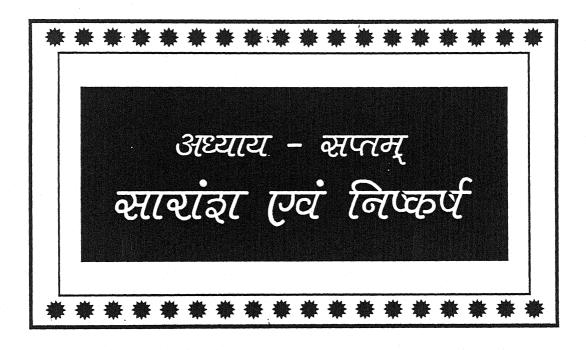
अध्याय - सप्तम्
सारांश एवं निष्कर्ष

व्यष्टि और समष्टि को सुचारू, सुव्यवस्थित, संपन्न एवं समृद्ध बनाये रखने के लिये मूल्यों-शील-सद्गुणों को जानना और मानना आवश्यक है जिस प्रकार अन्धकार से लड़ने के लिए एक दीपक ही पर्याप्त होता है, वैसे ही नैतिक अंतर्दृष्टि का प्रकाश नि:संदेह समाज व देश में व्याप्त अनैतिकता के अधंकार को दूर कर सकेगा। आवश्यकता है, केवल अपने कर्तव्यबोध और दृढ़ मनोबल की।

संपूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव समाज में कल्याण तथा सुख-शांति के अभिवर्द्धन और सरंक्षण के लिये, हमारे अतीत की धरोहर को सुरक्षित रखने, हमारी संस्कृति जिस पर हमें गर्व है, को अक्षुण्ण रखने के लिये, नैतिक विकास को संवर्द्धित व सुरक्षित रखना हमारा कर्त्वय है। बिना नैतिकता के न तो व्यक्ति सही मार्ग पर चल सकता है और न समाज और न ही देश। इसलिये आज नैतिक विकास की प्रासंगिकता को दृष्टिगत रखते हुये आवश्यक है कि हम बाल्यावस्था से ही बालक को नैतिक संस्कारों से सुपोषित करें। नैतिकता रूपी बीज के अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होने के लिये उत्तर बाल्यावस्था एक सुसमृद्ध उर्वर क्षेत्र है और इसे तैयार करना समाज एवं अभिभावक के अधीन है।

शोधार्थी द्वारा बालक के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु 9 से 13 वर्ष के बालकों का चयन किया गया। यह अध्ययन वृहत्तर ग्वालियर के बाल्यावस्था के बालकों से संबंधित है। इसमें ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार क्षेत्रों के गैर-सरकारी विद्यालयों के 9 से 13 वर्ष आयु के विद्यार्थियों ने अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण किया है। न्यादर्श हेतु दैंव निदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन हेतु कुल 300 बालक एवं बालिकाओं तथा उनके अभिभावकों का चयन किया गया। इन्हें चयनित करते समय शिक्षा, धर्म, अभिभावक, व्यवसाय, सामाजिक-आर्थिक स्तर, बालकों की आयु, लिंग, परिवार का प्रकार तथा विद्यालय को नियंत्रित चर के रूप में मान्य किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर स्वतंत्र चर हैं तथा शोधार्थी ने नैतिक विकास पर बालकों के मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को देखने का प्रयास किया है।

शोधार्थी को प्राप्त परिणाम उसकी परिकल्पनाओं को सार्थक सिद्ध करते है तथा सम्पूर्ण शोध के सबंध में किये गये विश्लेषण, व्याख्या, विवेचना तथा रेखाचित्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण के आधार पर शोधार्थी स्वयं को निम्नलिखित निष्कर्ष प्रतिपादित करने योग्य पाती है :-

(1) शोधार्थी द्वारा निर्मित प्रथम परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक विकास में सार्थक विभिन्नता पाई जाती है।

(2) शोधार्थी द्वारा निर्मित द्वितीय परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(3) शोधार्थी की तृतीय परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक विकास पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(मानसिक स्वास्थ्य संबंधी स्तर अ, ब, द एवं य को छोड़कर)

तृतीय परिकल्पना को सार्थक सिद्ध करने हेतु मानसिक स्वास्थ्य के पॉच स्तरों का अध्ययन किया गया। इस हेतु निम्नलिखित उपपरिकल्पनॉए बालक एवं बालिकाओं हेतु निर्मित की गई, जिनके निष्कर्ष निम्नानुसार प्राप्त किये गये:-

(अ) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति उच्च मानसिक

स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(ब) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(स) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं मध्यम मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

(द) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(य) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर एवं अति निम्न मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(4) शोधार्थी द्वारा निर्मित चतुर्थ परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि विभिन्न बालक एवं बालिकाओं के अनुशासनात्मक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(5) शोधार्थी की पांचवी परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर परिवार के अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(अनुशासनात्मक व्यवहार संबंधी आयाम ब को छोड़कर)

पॉचवी परिकल्पना को सार्थक सिद्ध करने हेतु बालक एवं बालिकाओं के अनुशासन के तीन आयामों का अध्ययन किया गया एवं इस हेतु निम्नलिखित उपपरिकल्पनॉए निर्मित की गयी-

(अ) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पाया गया।

(ब) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

(स) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न अनुशासनात्मक व्यवहार का सार्थक प्रभाव पाया गया।

(6) शोधार्थी द्वारा निर्मित छठवीं परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक विभिन्नता पाई जाती है, सार्थक सिद्ध हुई।

(7) शोधार्थी द्वारा निर्मित सांतवी परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुई कि उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर उनके परिवार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से प्रभावित होता है।

(सामाजिक-आर्थिक स्तर संबंधी आयाम अ, ब को छोड़कर)

सांतवी परिकल्पना को सार्थक सिद्ध करने हेतु बालक एवं बालिकाओं के परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के तीन आयामों का अध्ययन किया गया एवं निम्नलिखित उपपरिकल्पनाँए निर्मित की गयी।

(अ) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

(ब) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

(स) उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर उनके परिवार के निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रस्तुत निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि उत्तर बाल्यावस्था नैतिक विकास के अधिग्रहण की क्रांतिक अवस्था है। बालक के नैतिक विकास को मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर प्रभावित करता है, यही बोध नैतिकता की पृष्ठभूमि है। बालक के नैतिक विकास को विकसित करने हेतु पारिवारिक अनुशासन द्वारा अभिभावक निर्णयात्मक

भूमिका निभाते हैं। विशिष्ट धनात्मक परिवेश नैतिक विकास की प्रक्रिया को त्वरित करते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर बालक-बालिकाओं अभिभावक, पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षण संबंधी एवं सरकार हेतु कतिपय सुझाव दिये गये हैं।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष कतिपय सीमाओं के आधार पर ही विवेचित किये गये हैं। परिणामों को और अधिक प्रमाणिक बनाने के लिये अथवा विभिन्न संदर्भों में इन परिणामों के सत्यापन हेतु इसी प्रकार के अन्य अध्ययनों की आवश्यकता प्रतीत होती है।

अध्याय - अष्टम्

सुझाव एवं व्यवहारिक उपादेयता

अध्याय- अष्टम्

सुझाव एवं व्यवहारिक उपादेयता

''शिक्षा बालक को सभ्य् बनाती है और नैतिक मूल्य उसे पूर्णता की ओर ले जाते हैं।''

- डॉ. राधाकृष्णन

नैतिक विकास बालक का सम्पूर्ण उत्थान, उत्कर्ष और कल्याण करते हैं, उसे सुसंस्कारित बनाते हैं और मानव जागृति में सहायक होते हैं। नैतिक मूल्य एक इंसान के रूप में बालक को अलंकृत करते हैं।

इस दृष्टि से 'उत्तर बाल्यावस्था में नैतिक' विषय पर अध्ययन किया गया। शोधकर्ता ने चयनित समस्या के समाधान की चेष्टा की, वह अपेक्षाकृत पूर्ण रही है, परन्तु प्रत्येक शोध कार्य में किसी समस्या के एक अथवा कुछ अंशों का अध्ययन किया जा सकता है, अन्य पक्ष अधूरे रह जाते हैं। शोधकर्त्ता का विचार है कि न्यादर्श व उपकरणों की दृष्टि से इसी अध्ययन को व्यापक तथा विस्तृत बनाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष, सीमाओं एवं अनुभवों को ध्यान में रखकर आगामी अध्ययन हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं :–

(1) प्रस्तुत अध्ययन मात्र ग्वालियर शहर के गैरसरकारी विद्यालयों के बालकों पर किया गया है। यह अध्ययन अन्य क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों के बालकों पर भी किया जा सकता है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन में मात्र उत्तर बाल्यावस्था (9 से 13 वर्ष) के बालक–बालिकाओं को ही लिया गया है। यह अध्यन अन्य विकासात्मक अवस्थाओं पर भी किया जा सकता है।

(3) प्रस्तुत अध्ययन में नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव ही देखा गया है । इनके अतिरिक्त कक्षा स्तर, शहरी व ग्रामीण परिवेश, महानगरीय व नगरीय परिवेश, बुद्धिभिन्नता स्तर, कक्षा स्तर, रूचि, आकांक्षा स्तर आदि का प्रभाव भी देखा जा सकता है। पालन–पोषण की पद्धतियों का प्रभाव, माता–पिता की बालक के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन भी किया जा कसता है।

(4) ग्रामीण व शहरी परिवेश के बालक–बालिकाओं पर भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(5) संयुक्त व एकाकी परिवार के बालक–बालिकाओं के नैतिक विकास का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(6) शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के मध्य, भग्न परिवारों के बालकों के नैतिक विकास पर भी अध्ययन किया जा सकता है ।

(7) विभिन्न धार्मिक व जातिगत विभिन्नता के आधार पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

(8) विद्यालय के वातावरण के प्रभाव, भिन्न–भिन्न विचारधाराओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यालयों का अध्ययन, सहशिक्षा (को–एज्युकेशन) विद्यालय आदि का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

(9) नैतिक विकास का दीर्घकालीन अध्ययन किया जा सकता है ।

(10) प्रयुक्त उपकरणों के अतिरिक्त अन्य उपकरणों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

(11) संचार क्रांति के विभिन्न माध्यमों का नैतिकता पर प्रभाव का अध्ययन भी किया जा सकता है।

(12) परिवार में बालक हेतु उपलब्ध साहित्य एवं बालकों द्वारा उसका उपयोग व अध्ययन का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन भी किया जा सकता है।

(13) माता–पिता के व्यवसाय, आपसी संबंधों एवं बालक की मित्रमंडली के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है ।

(14) सामाजिक वातावरण, स्थानीय जनजीवन का प्रभाव, शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव एवं वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव, आदि भी अध्ययन में शमिल किये जा सकते हैं।

(15) शिक्षण विधियों का प्रभाव, कार्यरत/घरेलू माता–पिता का प्रभाव, परिवार में बालक को दिये जाने वाले गुणात्मक समय एवं मात्रात्मक समय का प्रभाव आदि का नैतिक मूल्यों के विकास से संबंध का अध्ययन भी किया जा सकता है।

अध्ययन की शैक्षिक एवं व्यवहारिक उपादेयता :-

मानव की बुद्धि के चरमोत्कर्ष ने जहां उसे महानता के शिखर पर पहुंचाकर सम्पूर्ण प्रकृति को वश में करने की प्रेरणा दी है, वहीं उसकी बुद्धि का यह विकास उचित नैतिक मार्गदर्शन के अभाव में सम्पूर्ण मानव के विनाश का कारण बनता जा रहा हैं मानव एवं मानवता का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। मानव में अपार क्षमता एवं बुद्धि में विकास की अनंत संभावनाएँ हैं।

आज की पीढ़ी नैतिक मूल्यों से प्रयाण कर चुकी है। नैतिकता का ह्रास हो रहा है। नैतिकता में उनकी आस्था समाप्त हो गई। आज सही दिशा ज्ञान दे सकता है नैतिक अंतर्दृष्टि संपन्न चिंतन। इसलिये आज नैतिक शिक्षण की शैक्षिक एवं व्यवहारिक उपादेयता का ज्ञान आवश्यक है, साथ ही अनुसंधान कार्य का परिणाम भावी शिक्षा नीति निर्धारण की आधारशिला बनाने पर भी पड़ता है। व्यक्ति अपने अनुभवों से सीखता है तथा उनके अनुरूप कार्य करता है

अर्थात् अतीत के अनुभव व्यक्ति के वर्तमान और भावी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं अथवा नीति निर्धारण एवं निर्णय लेने में सहायक बनते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन **''बालकों के नैतिक विकास पर मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन बाल्यावस्था के विशेष संदर्भ में''** से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर जब तक आगे के नीति निर्धारण हेतु उपादेयता सिद्ध नहीं होती, तब तक शोध कार्य अपूर्ण रहेगा। अतः शोधार्थी के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न उपादेयता प्रस्तुत है :–

(1) अभिभावकों के लिये :– प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिभावकों के लिये एक मार्ग निर्देशिका है। नैतिक विकास की प्रथम पाठशाला परिवार है। माता–पिता के ममता भरे वात्सल्य के अभाव में कोई भी बालक अपनी जीवनलीला का निर्वाह नहीं कर सकता है। माता–पिता का व्यवहार बालक के प्रति संतुलित होना चाहिये तथा बालक में आत्मनिर्भरता उत्पन्न की जानी चाहिये। विवेकपूर्ण ढंग से उनका मार्ग निर्देशन करना चाहिये एवं माता–पिता को बालक के व्यक्तित्व को सम्मान देना चाहिये। बच्चों को संवेगात्मक सुरक्षा, स्नेह व प्रोतसाहन देना चाहिये। बालक में बचपन से ही विभिन्न महापुरूषों की कहानियों द्वारा नैतिक मूल्यों को प्रेरित करना तथा बालकों को सुसंस्कारित बनाना चाहिये।

(2) बालकों हेतु :- नैतिकता बालक के लिये एक सुरक्षा कवच है। उचित तथा अनुचित का ज्ञान बालक को अनुशासित बनाता है तथा नैतिकता का विकास उसके धनात्मक व्यक्तित्व की आधारशिला निर्मित करता है, इसका उत्तरदायित्व परिवार व पाठशाला पर है।

(3) समाज के लिये :- 'समाज के नियम व मान्यताएं बिना नैतिक प्रहरी के सुरक्षित नहीं रह सकतीं।' सम्पूर्ण समाज के लिये इस शोध अध्ययन की उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता। आज का बालक कल के राष्ट्र का निर्माता है। समाज का कर्त्तव्य है कि बालक में

संस्कृति के माध्यम से सुसंस्कारों का बीजारोपण करें तथा समाज के प्रतिमान बालक के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करें, तभी वह समाज का उपयोगी सदस्य बन सकेगा। चरित्रशील विद्यार्थियों द्वारा समाज कल्याण एवं समाज कल्याण द्वारा राष्ट्र कल्याण, इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र के निजी उदात्त कल्याण की पराकाष्ठा है, समस्त विश्व का कल्याण।

(4) शिक्षकों हेतु :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में 9 से 13 वर्ष के बालकों को सम्मिलित किया गया है, जिन पर शिक्षकों के व्यवहार का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। शिक्षक सभी विद्यार्थियों को बिना किसी वर्ग, स्तर, जाति या लिंगभेद के समान रूप से सहयोग पूर्ण व्यवहार करें। शिक्षक स्वयं भी सुसंस्कारित हों ताकि बालकों को सुव्यवहार की प्रेरणा दे सकें और बालकों में हीन भावना या मनोग्रंथियां उत्पन्न न हो सकें।

(5) पाठ्यक्रम निर्माताओं हेतु :- नैतिक विकास की शिक्षा प्राथमिक स्तर से पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके साथ में सहभागी क्रियाएँ भी संचालित करना चाहिये। स्तर भेद के अनुसार नैतिक मूल्यों के विकास का पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये, साथ ही प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर में भी पाठ्यक्रम का निर्माण चयनित किया जांना चाहिये।

(6) शिक्षण नीति हेतु :- यदि हम वास्तव में अपने बालकों को चरित्रवान बनाना चाहते हैं तो मान्टेसरी शिक्षा से लेकर महाविद्यालयीन स्तर तक शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिये। शिक्षा पद्धति की बुनियाद नैतिक सिद्धांतों से निर्मित हो।

(7) मीडिया हेतु :- वर्तमान युग संचार के विस्फोट का युग है। प्रचार माध्यमों जैसे – दूरदर्शन, कम्प्यूटर, समाचार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से नीति मूल्य आधारित संस्कृति का अस्तित्व बनाये रखने का अभियान चलाना होगा। ये माध्यम जनसमाज द्वारा स्वीकृत शालीनता के प्रचलित मानदंडों के प्रतिकूल न हों। समाज में नैतिक मूल्यों की संरचना में संचार माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान है।

(8) सरकार हेतु उपादेयता :- शासन हेतु भी इस शोध अध्ययन की उपदेयता को नकारा नहीं जा सकता। मानव अधिकार आयोग, मानव संसाधन्न विकास मंत्रालय एवं महिला कल्याण विभाग आदि का यह दायित्व है कि यह विद्यालयों में सकारात्मक व व्यवहारिक शिक्षा की व्यवस्था करें। शिक्षा प्रणाली में सुधार करें तथा विकास की घोषणाओं के साथ उनका क्रियान्वयन भी करें। मानवीय संसाधनों का विकास, शिक्षा की नई तकनीकी और प्रौद्योगिकी का निर्माण करना भी सरकार का दायित्व है। समस्त शासकीय नीतियां नैतिकता पर आधारित हों तथा ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन संभव किया जा सके, जिससे मानवीय मूल्यों का पोषण तथा संवर्द्धन संभव हो सके। यद्यपि यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है, परन्तु फिर भी इसे प्रारंभ करने का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिये।

(9) मनोवैज्ञानिकों के लिये :- कुछ विद्वान कहते हैं कि चित्त विश्लेषण–विज्ञान की खोजों से पता चला है कि जो व्यक्ति अपनी नैतिक बुद्धि की आज्ञा की अवेहलना करता है, उसके मन में ग्रंथियों का पड़ना स्वभाविक है। अतः मानसिक जटिलताओं के निराकरण हेतु मनोवैज्ञानिकों के लिये यह शोध उपादेयता सिद्ध करता है।

दार्शनिक, बुद्धिजीवी, लेखक, कलाकार आदि वैचारिक आन्दोलन व संघर्ष के द्वारा नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा हेतु प्रयास करें।

आज मूल्यहीनता के युग में हमें वैयक्तिक और सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक, आर्थिक और राजनीतिक, बौद्धिक (सांस्कृतिक) और वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से सभी श्रेयष्कर नैतिक मूल्यों से संपृक्त नैतिक शिक्षा नई पीढ़ी के बालकों को प्रदान करने की आवश्यकता है, तभी इस शोध की उपादेयता सिद्ध होगी।

✵✵✵

"मेरे और ईश्वर के बीच में क्या है ?
प्रकाश
किसका प्रकाश ?
मेरे ही चित्त की शुद्धि का
वह अगर है तो प्रकाश है,
बीच का यह व्यवधान ही हमें जोड़े रहता है।"

- अज्ञेय

ईश्वर और मनुष्य, लौकिक और अलौकिक
के बीच के इस व्यवधान को
मनुष्य द्वारा गढ़े गये
'नैतिक मूल्य'
ही पाटते हैं - यही इनकी प्रासंगिकता है।

परिशिष्ट
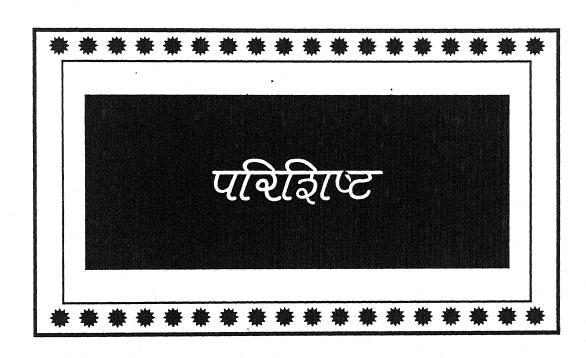
संदर्भ ग्रंथ सूची

ENGLISH BOOKS

1. Adler (1930) - Education of Children, New York Cosmopolition.

2. Agarwal, JC (1966) - Educational research An introduction, Mansingh Arya Book Depot, New Delhi.

3. Ainsworth, MDS (1992) - Attachment : Retrospect and prospect. In C.M. Parkes and J. Stavension - Hindi (Ed.), The place of attachment in human behaviour, Basic Books, New York.

4. Ausuwell, D.P. (1950) - Theory and problems of child development.

5. Baldwin, AL (1 967)-Theories of child development, John Willey,, New York.

6. Berends, Polly B (1978) - Whole child, whole parents, Harper's Magazine Press, New York.

7. Best, John W (1963) - Research in education, Printice Hall, New Delhi.

8. Biller, HB; Davids, A (1973) - Parent child relation, personality development in abnormal and child psychology, Monterey, Colif Brooks/ Cole.

9. Bornstein, MH (1995) - Pareating infants. In M. H. Bornstein (Ed), Handbook of Pareating, Hillsdale, NJ Erlbaum.

10. Bull, M.S. (1979)- Moral education, Rouledge and Kegan Paul, London.

11. Coles Rober (1997) - The moral intelligence of children: How to raise a moral child, Vol. IV, Random House, New York.

12. Cox, Richard-H (Ed.); Ervin, Cox-Betty (Ed.); Haffman, -Louis (Ed.) Spirituality and psychological health (2005). Colorado Spring, CU, US:

Colorado School of Psychology Press, xviii, 320 pp.

13. Crow & Crow (1951) - Mental Hygine, New York.

14. Curry, -Nancy-E; Johnson, -Carl-N - Beyond self-esteem: Developing a genuine sense of human value. 1990, Washington, DC, US: National Association for the Education of Young Children, xii, 177 p.

15. Damon, William; Hart, -Daniel - Self-understanding and its role in social. and moral development. 1992, Lamb, Michael E (Ed), Bornstein, Marc H (Ed), Developmental psychology: An advanced textbook (3rd edition- pp. 421-464). Hillsdale, NJ, England: Lawrence Erlbaum Associates, Inc. ix, 848 pp.

16. Daman, -William Fair distribution and sharing: The development of positive. justice, Puka, Bill (Ed.) 1994, Fundamental Research in oral Development, Vol. 2, (pp. 189-254), New York US: Garland Publishing Inc., xi, 399 pp.

17. Diver-Stamnes, -Ann-C; Thomas, -Robert-Murray - Prevent, repent reform, revenge: A study in adolescent moral development. Westport, 1995, CT US: Greenwood Publishing Group, Inc. xii, 224 pp.

18. Downey, M; Kelly, AV (1978) Moral education: theory and practice,. Harper & Row, London.

19. Du, Bois, ES (1952) - The security of discipline, Ment., Hyg.; Vol. IV

20. Durkheim, E (1 953)-Moral education, Free Press of Gleacoe, New York

21. Dutt, Suresh (1998) - Moral values in child development, Encyclopedia of child psychology and development seris, Anmol Publications Pvt. Ltd., Delhi.

22. Edwards, -Carolyn-Pope - Culture and the construction of moral values A comparative ethnography of moral encounters in two culture settings. 1993, Dobrin, Arthur (Ed), Being good and doing right : Readings in

moral development (pp. 93-120). Lanham, MD, England University Press of America, x, 180 pp.

23. Epps, -Kevin; Hollin, -Clive-R - Authority and hatred, Verma, Ved-P. (Ed) (1993). How and Why Children Hatred. (pp. 136-154). Brisrol. PA, US : Jessica Kingsley Publishers, xii, 209.pp.

24. "Erikson, EH (1963) - Childhood and society, 2nd edition, W.S. Norton & Company, New York.

25. Garrett, HE (1981) - Statistics in psychology and education, Vakils, Fapper & Simons Ltd., Bombay, p. 212-213.

26. Graham, Douglas (1972) - Moral learning and development, theory and research, B.T atsford Ltd., London.

27. Grusec, -Joan-E (Ed.); Kuczynski, -Leon (Ed.) - Parenting and children's internationalization of values : A handbook of contemporary theory. 1997, New York, NY US - John Wiley & Son, Inc. xxiv, 439 pp.

28. Grusec, -Joan-E.-The development of moral behaviour and conscience from a socialization perspective. Killen, Melanie (Ed.); Smetana, Judith G. (Ed), 2006, Handbook of moral development (pp. 243-265), Mahwah, NJ, US : Lawrence Erlbaum Association Publishers, xvi, 790 PP.

29. Harris-Judith-Rich (1998) - The nurture assumption Why children turn out the way they do, New York, NY US : Free Press. xviii, 462 pp.

30. Havinghurst, RJ (1953) Human development and education Congresses, New York.

31. Hoffman, ML (1960) - Child rearing practices and moral development, Child Development, Vol. 34, p. 295-318.

32. Hurlock, EB (1956) - Child development, Forth edition, McGraw hill Book Company, New york, p. 544-550.

33. Hurlock, EB (1992) - Child growth and development, Fifth edition, Tata McGraw Hill Publishing Company Ltd., New Delhi.

34. Hurlock, Ell (1999) - Child development, Sixth edition, Tata Mcgraw Hill Publishing Company Ltd., New Delhi, p. 227-2531, 385-414, 518, 523-554.

35. Huxley, R (2000) Moral development of children Knowing. Right from Wrong.

36. Jersild, A; Telford, TCW; Sawrey, Jill (1978) - Child psychology, 6th edition, Eaglewood Cliffs, NJ Prentice Hall of India, New Delhi, 242, 473-535.

37. Jones, V (1954) - Character development in children - an objective approach. In L. Carmichael, Mannual of Child Psychology, 2nd edition, John Willey, New York, 781-832.

38. Kagitcibasi, C. (1990) - Family and socialization in cross-culture perspective: A model change. In J. Berman (Ed) N e bras ka symposium on motivation (pp. 135-200), Lincoln University of Nebraska Press.

39. Kakkar, Alpana (2001) - Personal values as correlates of parentalacceptance, Rejection Part II, Empirical papers, Parental behaviour, Mahesh

40. Kay, W (1970) - Moral development, George Allen & Unwin, London.

41. Kochanska, -Grazyna; Thompson, -Ross-A - The emergence and development of conscience in toddlerhood and early childhood. 1997, Kuczynski, Leon (Ed), Grusec, Joan E (Ed). Parenting and children's internationalization of values: A handbook of contemporary theory. (pp. 53-77). New York, NY, US: John Wiley & Sons, Inc. xxiv, 439 pp.

42. Kohlberg, L (1962) - Sex difference in morality. In Maecoby, E. (Ed.) Sex Role Development, Social Science Research Council

43. Kohlberg, L (1976) Moral development, Holt, Renehart & Winston, New York.

44. Kohlberg, L (1989) The psychology of moral development, Harper & Row, New York.

45. Kuppuswami, B (1996) - Child behaviour and development, 3rd Review Edition, Konark Publishing Pvt. Ltd., Delhi, p. 47-78, 120-138, 161 - 206, 258-273.

46. Lansdown, Richard (1984)- Child development, Heinenmamn, London, p. 15-33, 177-189.

47. Laupa, Marta (Ed)- New directions for child and adolescent development Rights and wrongs: How children and young adults evaluate the worlds, No. 89. 2000, San Francisco, CA, US : Jossey-Bass 96 pp..

48. Lee, Kang - Lying as doing deceptive things with words: A speech act theoretical perspectives. 2000, Astington, Janet Wilde (Ed), Minds in (pp. 177-196). Malden, the making: Essays in honor of David R. Olson. (pp. 177-196), Maiden MA, US: Blackwell Publishers, viii, 299 pp.

49. Lewis, -Catherine; Watson, -Marilyn; Schaps, -Eric -Building community In school : The child development project. 2003. Arnond, Harriett Ed), et. al. Elias, Maurice J (Ed), EQIQ = best leadership practices for caring and successful schools. (pp. 100-108). Thousand Oaks, CA, US: Corwin Press, Inc. xxv, 238.

50. Margon, CT (1956) - Introduction to psychology, New York, McGrow Hill Book Company, p, 239.

51. Miller, D; Swanson, G (1958) - The changing American parent, John Wiley and Sons, Inc. New York.

52. Mowrer, CH (1967) Morality and mental health Rand McWally, Chicago.

53. Mukerjee, RK (1969) Social structure and values, S. Chand Publication, Delhi.

54. Nucci, -Larry-P (2001) - Education in the moral domain:. New York, US - Cambridge University Press, xxi, 242 pp.

55. Nucci, Larry-P - Morality and the personal sphere of actions. 1996,. Turiel, Elliot (Ed), et. al. Reed, Edward S (Ed), Values and knowledge. (pp. 41-60). Hillsdale, NJ, England Lawrence Erlbaum Associates, Inc.

ix, 181 pp.

56. Pancer, -Smark; Pratt, -Michael-W Social and family determinants of community service involvement in Canadian youth. 1999, Youniss, James (Ed), Yates, Miranda (Ed), Roots of civic identity: International perspectives on community service and activism in youth. (pp. 32-35) New York, NY US : Cambridge University Press. xiii, 283 pp

57. Parke, RD; Ornstein, PA; Reiser, JJ; Zahn, Waxler-C - The past as prologue : An overview of a century of developmental psychology. In R.D. Parke, P.A. Ornstein, JJ Reisen & C. Zaher Wader (Eds.), A century of developmental psychology (pp. 1-75), American. Psychology Association. Washington, DC.

58. Paul, Roubiczek (1969) - Ethical values in the page of science, Cambridge University Press, Cambridge.

59. Pellegrini, -Robert-J (Ed); Sarbin, -Tgheodore-R (Ed) - E Between fathers and sons -. Critical incident narratives in the development of men's lives 2002, Binghamton, NY, US: Haworth Clinical Practive Press, xv, 231 pp.

60. Piaget, J (1965) - The Moral judgement of the child, Free Press, New York, p. 99.

61. Rule, BH; Nesdale, AR - Moral judgements of aggressive behaviour. In Green, RC and O'Neal, E.C. (Eds), Perspectives on Aggression (pp, 37-60) Academic Press, New York

62. Saraswati (1997) - The internationlization moral values and rules of moral action from external imposition to internal acceptance of these rules.

63. Sears, -RR; Rao, -L., Alport, -R (1966) Identification and child reading,. Ravistock Publication, New York.

64. Singh, AK (1997) - Tests, measurements and research methods in behavioural sciences, Bharti Bhawan, Patna.

65. Sinha, D; Verma, M (1992) - Knowledge of moral values in children, Psychological Studies, Mysore.

66. Sinha, P (1982) - Socio-cultural factors and development of perceptual and cognitive kills. In W.W, Hartup (Ed), Review of Child Development Research, (Vol,6); University of Chicago Press, Chicago.

67. Smetana, -Judith-G - Morality in context : Abstractions, ambiguities and applications. Vasta, Ross (Ed), Annals of child development : A research annual, Vol. 10, 1994 (pp. 83-130), Philadelphia, PA, US Jessica Kingsley Publishers Ltd., ix, 208 pp.

68. Sueann, Robinson Ambron (1978) - Child development, 3rd edition, Holt Riachart & Winston, New York, p. 26, 355-382, 425-460.

69. Taylor, KW (1981) - Parents and children learn together, 3rd edition, Columbia University, New York & London.

70. Thomas, -Robert-Murray; Diver-Stamnes, -Ann - What wrongdoers deserve: The moral reasoning behind responses to misconduct, 1993, Westport, CT, US: Greenwood Publishing Group, Inc. ix, 172 pp.

71. Thomas, W-Phelan (1990) - 1-2-3 magic : Effective discipline for children 2-12, Child Management, Inc., Toranto.

72. Turiel, E (1969) - Developmental process in the childs moral thinking. In P. Mussen; J., Lauger & M. Covington (Eds.), New Directions in Developmental Psychology, Holt Rinechart & Winston. New York.

73. Verma, Sandhya; Ajwani. J.C. (2001) - Moral values of parents and development of pro-social behaviour, Part-II, Empricial Papers, Parental behaviour, Mahesh Bhargava, Agra.

74. Williams, JG (1946) - The psychology of childhood to maturity, WM Heineman, Medicac Books Ltd.

75. Wilson, J (1968) - Introduction to moral education, pelicon, London.

76. Woodworth, Robert S., Donald G. Marquis (1949) - Psychology, Methuen & Co. Ltd., London (Reprinted 1952 & 1955)

77. Zern, David - A longitudinal study of aolescents attitudes about assistance in the development of moral values, Department of education, Clark University, 950 Main Street, Worcester, MA 01610.

HINDI BOOKS

78. अग्रवाल, पदमा – मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियायें, मनोविज्ञान प्रकाशन वाराणसी।

79. अर्नाल्ड, टॉयनबी एवं इकेदा (1992) – सृजनात्मक जीवन की ओर : एक वार्तालाप, हिन्दी रूपान्तर, पृ. 37–378

80. आर्य, सुमित्रा (2000) – किशोरावस्था में नैतिक मूल्य, क्लासिक पब्लिकेशंस, जयपुर।

81. बघेल, डी.एस. (2000) – सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., आगरा।

82. चौबे सरयू प्रसाद (1950) – किशोर मनोविज्ञान की भूमिका, आगरा बुक स्टोर।

83. गुप्ता, रामबाबू (1993–94) – बाल मनोविज्ञान, रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा।

84. जैन, डा. शशिप्रभा (2004) – बाल्यावस्था, शिवा प्रकाशन, इन्दौर।

85. जोशी, शांति (1979) – नीतिशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, पटना।

86. कपिल एच.के. (1996) – सांख्यिकीय के मूल तत्व, नवीनतम संस्करण, विनोद पुस्तक सदन, आगरा

87. कुमारी आशा (2005) – सामाजिक परिवेश में बाल विकास क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली

88. माथुर, एस.एस. (1965) – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

89. मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (1995) – सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।

90. मिश्र, हृदयनारायण (1976) – नीतिशास्त्र की भूमिका, हरियाण हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,

चंडीगढ़।

91. नेगी, सुरेन्द्र सिंह (2000) – नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स, बीना।

92. सिंह, जगत (2003) – बालक और अनुशासन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

93. शर्मा, रामनाथ (1983) – नीतिशास्त्र की रूपरेखा, मेरठ, पृ. 309–315, 257–368।

94. शर्मा, राजेन्द्र (1999) – नैतिक मूल्य शिक्षा, शीतल ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर।

95. सिन्हा, जे.एन. (1972) – नीतिशास्त्र, जय प्रकाश नाथ एंड कंपनी, मेरठ, पृ. 46–77

96. सारंगी, राधेश्याम (1994) : "प्राथमिक विद्यालयों (उड़ीसा के 100) का नैतिक शिक्षा की दृष्टि से सर्वेक्षण और नैतिक शिक्षा में रुचि का अध्ययन" उद्धृत महावीरमल लोढ़ा – नैतिक शिक्षा : विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

97. तौमर, रामवीर सिंह – व्यक्तित्व, श्री राम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा।

98. वर्मा सावित्री देवी (1953) – आपका मुन्ना, दिल्ली प्रकाशन।

99. योगेन्द्रजति भाई – बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

JOURNALS

100. Agarwal, AK - Intelligence diffrences and afectional deprivation. Indian Psychological Review, May 1985; Vol. 28 (3) : 39-46.

101. Agatti - Occupational values and intellectual aptitude. Arquives Brasilerons de Psicologia, 1984; Vol. 36 : 142-151.

102. Anantharamn - The effect of sex, social class and rural-urban locality on values, Journal of Psychological Research, 1980; Vol. 24 (2) : 112-114.

103. Ammerjan, MS - Preceived parental behaviour of boys and girls. Journal of Psychological Researches, 1994 (a); Vol. 38 (1&2) : 26-29.

104. Baumrind, D - The influence of parenting style on adolescent competence and substance use, Journal of Early Adolescence, 1991;

Vol.11 : 56-65.

105. Bhardwaj, R. - Perception as regards to mothering among chemical dependent and non-dependent. Praachi Journal of Psychology Cultural Dimension, 1995; Vol. 11 (1 &2): 75-78.

106. Budhal, -Rishichand-Sookai - The socially isolated child at school, Diisertation-Abstracts-intemational-Section-A : Humanities and Social Sciences, Sep 2000, Vol. 61 (3-A) - 876.

107. Cohen, -Ketlenis; P.T Arrindall, -WA Perceived paternal rearing style, paternal divorce and transexualism A controlled study, Psychological Medicine, 1990; Vol. 20: 613-620.

108. Coleman, -J-Michael; Minnet, -Ann-M The concept of equality of educational opportunity Harvard Education Review , Dec-Jan 1993; Vol. 59(3): 234-246.

109. Compbell, S.B. - Hard to manage preschool boys Family context and the stability of externalizing behaviour. Journal of Abnormal Child Psychology, 1091: Vol. 19 - 301-318,

110. Dameron, L.E. - Mother-child interaction in the development of selfrestraint. J. Genet. Psychol., Vol. 86 : 289-308.

111. David, T-Hansen - Teaching and the moral life of classroom, Journal for just and caring education, 1995, Vol. 2 - 5975.

112. Damiani, -Carole; Bailly, -Lionel - Child victims of Violence-; From clinical findings to treatment / L-enfant victime de violences De 16 clinigue a la reparation. Pratiques Psychologiques, 2001 -, No. 2 13-29.

113. Darling, N; Steinberg, L - Pareating style as context : An intergrative model. Psychological Bulletin, 1993; Vol. 113 - 487-496'

114. de-la-Taille, Yves; Duarte, -Cristiane-S; de-Melb, Pairicia-C - The intimacy moral boundry - Moral development and construction of norms regulating self-disclosure Psicologia-Teoria-e-Pesquisa, Jan-Apr 1993

Vol. 9 (1): 51-73.

115. de-la-Taille, -Yves,- Bedoian,-Graziela; Gimene'z, Patricia-The construction of intimacy moral boundry : The place of confession, moral value hierarchy in 6 to 14 year old subjects. Psicologia-Teoria-e Pesquisa, May-Aug 1991 - Vol. 7 (2) - 91 -110.

116. Denham, SA; Renwick, SM; Holt, RW - Working and playing togather : Prediction of preschool social-emotional competence from mother child interaction. Child Development, 1991 - Vol, 62. 242-249.

117. Dhawan, Rani; Lai, JN - A study of development of person concept in childhood and adolescence. Indian Journal of Behaviour, Apr 1987-1 Vol. 11 (2): 10-16.

118. Dowdney, L; Pickles, AR - Expression of negative affect within disciplinary encounters : Is there dyadic reciprolity? Developmental Psychology, 1991; Vol. 27 - 606-617

119. Drotarova, Eva - 1987; Vol. 22 (2).

120. Fink, -Chauer-Catrin - Journal of Youth & Adolescence, Apr 2002-, Vol. 31 (2): 123-136.

121. Follz, -Carol; Barber, -Jacques-P. - Journal of Social and Clinical Psychology, Aug 1999~ Vol. 126 (2) - 204,

122. Foti, Harkness - Journal of Adolescent, 2004 . 26-28,

123. Girija, PR; Bhadra, BR- Comparative study of change in values among three socio-economic groups of college students. Indian Journal of Applied Psychology, 1986-, Vol, 23 : 17-24

124. Goodman, -Joan-F - Moral education in early childhood: The limits of constructivism. Early Education and Development. Jan. 2000; Vol 11 (1): 37-54.

125. Hatzichristou, -Chruyse; Hopt, -Diether - Child Development,-June 1996; Vol. 67 (3): 1085-1102.

126. Helkama, -Klaus - The development of moral reasoning and moral values. Acta -Psych ologica -Fen nica, 1983-1 Vol. 9 : 99-111.

127. Hodin, -Louise-Klein - The impact of Jewish education on the moral reasoning of Jewish high school students : An exploratory study. Dissertation-Abstracts-International-Section-A.- Humanities and Social Sciences, Feb 2000; Vol. 60 (7-A): 2431.

128. Haffman, M.L. - Child rearing and moral development geheralization from empirical research, Child Development, 1982, Vol. 34 : 295-318.

129. Hoffman, ML - Child rearing practices and moral development, generalisation from empirical research, Child Development, 1968; Vol. 34: 295-318.

130. Hoffman, ML; Saizstein, HD - Parental discipline and the childs moral development, Journal of Personality and Social Psychology, 1967; Vol. 5: 45-57.

131. Horvat, -Ludvik; Svebina, -Matija - Studia-Psvchologia, 1993; Vol. 3.5 (4-5): 420-422.

132. Jason, Leonard-A, Reyes, -Olga; Danner, -Kareh-F; De-La-Torre Georgina - Social class race and genetics. Journal of Implication for Education American Education Research, Dec 1994; Vol. 21 (4) - 351-352.

133. Joewana, -Satya - Journal of International Medical, Jan. 1997 : 'Vol. 4 (2). 119-121,

134. Katainen, -Saara; Raeikkoenen, --Katri; Kattikangas, -Jaervinen, -Lissa Development of temperament - Childhood temperament and the mothers child rearing attitudes as predictors of adolescent temperament in a 9 years fallow up study, Journal of Research on Adolescence, 1988; Vol. 8 (4): 485-509.

135. Kotekova, Ratislava - Studio-Psychologia, 1997; Vol. 39 (1) - 53-57

136. Kyung-Hee-Kin, -Maria - Socio-moral judgement in Korean children and

adolescents - A development sequence for understanding honesty and kindness. Korean Journal of Development Psychology 1999 Vol. 12(1) : 14-24.

137. Krishnan, L. - Parental acceptance-rejection and -attitudes to helping A study on Indian mothers. Psychological Studies, 1988, Vol. 33 (3) 185-193.

138. Levin, David-M - Moral education - The body's felt sense of value Teachers-College- Record Win 1982, Vol 84 (2) 283-300

139. Li-Liu; Xiangming, -Han; Zhiyong; -Xin; Chen, -Sufang -An experomental study of the development and education of moral values of primary school. students, Psychological Science (China), 1996; Vol. 19 (4) 246-248

140. London Kings College, Institute of Psychitry, 2004.

141. Lopes, -Joao; Cruz, -Conceicao; Rutherford, -Rbbert-B - Education and Treatment of Children, Nov 2002; Vol. 25 (4) : 476-495:

142. Ma, Hing Keung - The relation on altruistic orientation of human relationship and moral judegement in Chinese people. International Journal of Psychology, 1992, Vol. 29 (6): 377-400.

143. MacEwen, K; Barling, J - Effects of maternal employment experiences on childrens behaviour via mood, cognitive difficulties and pareating behaviour. Journal of Marriage and the Family, 1991; Vol. 53: 635-644.

144. Major Banks, -Kevin-Psychology Reports, Aug 1990; Vol. 67 (1): 147-154.

145. Mastrong - Journal of Adolescent Psychology, 2005 - 115-116.

146. McDonald, FJ - Children's judgement of theft from individual and corporate owners. Child Development, 1963, Vol. 34 : 143-1-50.

147. Millard, Janice-L - Evaluation of an adolescent moral development, self-esteem, and conflict resolution skills program. Dissertation abstracts-

International-Section-A Humanities and Social Sciences Apr 1995; (10-A) : 3094.

148. Monale, -Bruce; Gene, B.M, - Dissertation-Abstract-International Section-A : Humanities and Social Sciences, Dec 2000, Vol. 61 (5-A) 1743.

149. Morrison, -Nancy-K.; Severino, -Sally-K. - Moral values: Development and gender influences. Journal of the American Academy of Psychoanalysis and Dynamic Psychiatry. Sum. 1997; Vol. 25 (2) : 255-275.

150. Orr, Emla; Dinur, Batia-Ado/escence, Feb 1995; Vol. 30 (119)-603-616,

151. Palmer, -Barbara-G - Dissertation-Abstract-international Section-B, 2001; Vol. 61 (12-B) : 67-72.

152. Palmer, -Emma-J - An overview of the relationship between moral reasoning and offending. Australian-Psychologist, Nov. 2003; Vol. 38 (3): 165-174.

153. Pascual, -Alejandra-Cortes -The contribution of ecological psychology to moral development: A ecological desarrollo moral. Un estudio con adolescentes. Anales-de-Psicologia, Jan 2002, Vol. 18 (1) : 111-134.

154. Paul, H; Whiteman; Rohner; Hibles, Replogle; Kenneth, P; Kosier Development of childrens moralistic judgements : age, sex and certain personal -experiental variables. Child Development, Mar-Dec 1964; Vol. 35: 843-850.

155. Perry Kedan, Deff i W Kohn - The effect of religious education on moral judgement, Psychological Abstract, Aug. 1988, Vol. 75 (8) : 234-240.

156. Poonam; Balda, S - Indian psychological Review, 2001; 8-11.

157. Prencipe, -Angela; Helwig, -Charles-C -The development of reasoning about the teaching of values in school and family contexts. Child Development. May-Jan 2002, Vol. 73 (3) : 841-856

158. Prestwich, -Dorothy-L - Character education in America's schools. School Community Journal, 2004; Vol. 14 (1) - 139-150.

159. Regmi, SK, Nepal, MK; Khalid, A, Sinha, UK; Kiljunen, R, Pokharel, A; Sharma, SC - A study of children and adolescents attending the child. guidence clinic of a general hospital Nepalese Journal of Psychiatry, 2000; Vol. 1 : 90-97.

160. Reddemma, C; E. Manju Vani - Sex, age, ordinal position and approval seeking behaviour of children. Journal of Psychological Researches, 1995, Vol. 39 (3): 9-12.

161. Rubela, S.P. - A traditional values of the Indian society and College students, Indian Educational Review (NCERT), Jan 1969 :-135-162

162. Sapozhnikova, L.S. - Development of moral values in adolescens., Voprosy-Psychologi. Jan-Feb 1985, No.1, 50-56.

163. Sater, Gray-M - Dissertation-Abstract-International, Dec 1 988 Vol. 89 (6-A).

164. Saxena, Saraswati; Jayanti, Sudarshan - Sex differences., in- the expression of moral judgement, Child Development, 1984- Vol. 55%, 1040-1043.

165. Schonfeld, -Amy-M; Mattson, -Sarah-N, Riley. -Edward-P. - Moral maturity and delinuency after prpriatal alcohol exposure Journal of Studies on Alcohol, Vol. 66(4) July 2005, 545-554.

166. Schulman, -Michael -The caring profile: A values modification program for adolescents in residential facilities Residential Treatment for Children and Youth, 1996; Vol. 14 (1): 9-23.

167. Sengar, SRI Shrivastava. DS - Perceived parental acceptance and rejection and value system of school adolescents, Prespectives. in Psychological Researches, 1990; Vol. 13 (2): 43-46,

168. Sharda, K - Journal of Psycholingua, July 2000; Vol. 1 : 2.

169. Silva,-Cristinal Fonseca, -Estele; Lou renco, -Orlando - Moral values in television : Analysis of a television series with a large audience/valores morais em televisao : Analise de uma serie televisiva de grancle audiencia. Analise-Psicologica, Oct-Dec. 2002, Vol. 20(4):541-553.

170. Silverman, -Linda-Kreger - The moral sensitivity of gifted children and the evoluation of society. Roeper-Review Dec. 1994; Vol. 17 (2): 110-116.

171. Simonnes, -Asbjorn - Media influence and the moral forma tion of children : A strategy of strengthening the moral value formation of children in contemporary norwegian society and cultrue, Dissertation-Abstracts- International-Section -A : Humanities and Social Sciences. 2004; Vol. 65 (2-A), 574.

172. Singh, Dolly - Child development - Issue policies and programmes, Criskha Pubilthes Distribution, 1995; Vol. 3.

173. Smalt, -Ruth-Herron - The influence of girl scouting as a character building organization on the moral development of young girl scouts Dissertation-Abstracts-intemational-Section-A : Humanities and Social Sciences. Apr 1997; Vol. 57 (10-A): 4276.

174. Solis; Carara; Pedro, -Bonnie - Journal of Child Development and Care, 2002 115-163

175. Stengel, -Susan-R --- Moral education for young childrern Young Children, Sept 1982; Vol. 37 (6) : 23-31.

176. Stephens, -Dawn-L, Bredemeter Brenda-Jo-Light, Shields, -Davi d-Lyle Light - Construction of a measure designed to assess players' descriptions and prescriptions for moral behaviour in youth sports soocer. international Journal of Sport Psychology Oct-Dec 1997 : Vol. ,8 (4)\ 370-390.

177. Tejpreet Kaur; Sona Thakur - Pareating as related to development of moral values and judgement. Psycho lingua (ISSN 0377-3132) 2004.

Vol. 34 (2) : 137-139, Psycholinguistic Association of India.

178. Tripathi, VP: Kampoor, Yogesh; Dwivedi, Jadhakar - Perceived parental disciplinary practices and attitude towards paternal descipline among adolescents, 2001, Parental behaviour, M. Bhargava

179. Tripathi, VP- Mahajan, Neeta; Singh, Jaspal - Economic back ground on adjustment problems of late childhood girls, 2001, Parental behaviour, M. Bhargava.

180. Verma, -N; Sinha, -R - Pattern of moral values in children psychology studies, 1989; Vol. 17 - 242-249

181. Welsh, IRS - Severe parental punishment and delinquency - A development theory, Journal of Clinical Child Psychology Apr. 1976, 5(1): 17-21.

182. Whiting, -Beatrice-B - Freud in the field. Ethos-. Jan. 2001, Vol. 29 (3) 247-258.

183. Woolger, C; Power, TG - Parent and sport socialization views from the achievement literature, Joumal of Sports Bahaviour, 1993 Vol. 16: 171-189.

184. Zern, -David-S - A longitudinal study of adolescents attitudes about assistance in the development of moral values. Journal of Genetic Psychology, Mar 1997; Vol. 58 (1) - 79-96.

185. Zhai Hongchang; Shi, -Oingmin -A study of the factors which influence the formation of secondary school students' sense of self-vatue. Psychological-Science (China), July 2000; Vol. 23 (4): 408-411.

186. अग्रवाल, डॉ. सुभाष चन्द्र एण्ड पाण्डेय, द्वारिका प्रसाद (1989) – "कला संकाय के छात्रों एवं छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन" राजस्थान बोर्ड शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, जर्नल ऑफ एजूकेशन, अप्रैल – जून।

UNPUBLISHED THESIS & PROJECT REPORTS

187. Prasad, Jyoti (1999) - "Differential values in child reari ng pattern of Indian mothers", Unpublished Ph.D. Thesis, Jiwaji University, Gwalior.

188. Sharma, Shashikala (11986) - "Values of college students of different socio 1 - 1 economic groups and religionship with their intelligency and adjustment in college", Unpublished Ph.D. Thesis.

189. एरन, उमा (1985) – ''माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी बालक – बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'', अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध (एम.एड.) राजस्थान विश्वविद्यालय।

190. भटनागर, अल्का (1988) – ''किशोरावस्था की छात्राओं में नैतिक मूल्य और समायोजन'', अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध (एम.एड.) अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर।

191. शुक्ला, गीता (1999) – ''विभिन्न सामाजिक – आर्थिक स्तर के बालक – अभिभावकों का बालकों के व्यक्तित्व शीलगुण पर प्रभाव का अध्ययन'', अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध (पीएच.डी.) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।

192. तिवारी, ललितचन्द्र (1987) – ''किशोरावस्था में धार्मिक और नैतिक विकास'', अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध (एम.एड.) राजस्थान विश्वविद्यालय।

193. Aurora, Saroj (1998) - Mothering pattern in high caste and scheduled caste families, UGC Project Report, Deptt. of Psychology, CCS University, Meerut.

CONFRENCES

194. Bhardwaj, Nishi - Perceived parental behaviour and self concept..among adolescents, Souvenir, Paper presented in 2nd National Conferenre of PLAI at L.A.D. College, Nagpur on 17 & 18 Oct. 1996, p. 68.

195. Kapoor, Nidhi - Adolescent adjustment as related to mate rnal acceptance- rejection. Souvenir, IPA Interaction Conference, Oct, 7 & 18, 1993 at P.P.N. College, Kanpur

196. Mathur, M.; Arora, S. - Psychological barriers among career women in traditional and non-traditional jobs, Souvenir, Paper presented in Seminar on pareatal bahaviour and child development, 24th Sept., 199 at Institute of Home Science, Agra

197. Mishra, Rashmi - Adolescents motivational patterns of relate d to perceived maternal acceptance - rejection. Souvenir, IPA National Conference Oct 17 & 18, 1993 at P.P.N. College, Kanpur'.

198. Prakash Seema - Moral judgement among children as related to perceived maternal acceptance - rejection. Souvenir, IPA National Conference Oct 17 & 18, 1993 at P.P.N. College, Kanpur.

198. Sen, Anima (1993) - Scientific achievement, social change, human values and quality of life, Presidential address, Section of Psychology and Educational Science, 80th Session of India Science Congress -- Association at Goa University, Goa,

REPORTS

200. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, जिला योजना एवं सांख्यिकीय कार्यालय, ग्वालियर, 2005, पृ. 02, 15 (2.6), 79 (11.2), 80 11.3)।

201. सेन्सस ऑफ इन्डिया, मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट हैण्ड बुक, ग्वालियर, 1961, पृ. 3

तालिका सूची

रेखाचित्रों की सूची

Arun Kumar Singh *(Patna)*
Alpana Sen Gupta *(Patna)*

Consumable Booklet
of
M H B
(Hindi Version)

कृपया निम्न सूचनाएँ भरिए –

नाम.. कक्षा..........................

आयु.. लिंग..........................

स्कूल/कॉलेज.. शहरी/ग्रामीण..........................

Total Time : Part I to Part V : 25 मिनट (Approximate) ; Part VI : 10 मिनट (Fixed)

Qualitative Interpretation :

I : माता या पिता या दोनों की कुल आय : (क) रु. 50,000 प्रति माह से अधिक
(ख) रु. 25,000 से रु. 50,000 तक प्रति माह
(ग) रु. 10,000 से रु. 25,000 तक प्रति माह
(घ) रु. 5,000 से रु. 10,000 तक प्रति माह
(ङ) रु. 5,000 से नीचे

II : पिता की शिक्षा : (क) मैट्रिक या उससे कम (ख) इंटर
(ग) स्नातक (घ) स्नातकोत्तर

III : माता की शिक्षा : (क) मैट्रिक या उससे कम (ख) इंटर
(ग) स्नातक (घ) स्नातकोत्तर

IV : परिवार में सदस्यों की कुल संख्या : (क) 15 से ऊपर (ख) 10 से 15 तक
(ग) 5 से 10 तक (घ) 5 से कम

SCORING TABLE

Part	I (ES)	II (OA)	III (AY)	IV (SI)	V (SC)	VI (IQ)	TOTAL
Raw Score							
Percentile							

Estd. 1983 © (0522) 354807

ANKUR PSYCHOLOGICAL AGENCY

22/481, INDIRA NAGAR, LUCKNOW – 226 016

PART – I

निर्देश (Instructions) :

आप दिये गए प्रश्नों को ध्यान से पढ़े। प्रत्येक प्रश्न के सामने दो विकल्प 'हाँ' या 'नहीं' में से किसी एक के नीचे वाले खाने में जिसे आप अपने लिये उपयुक्त एवं सही समझते हैं, उस पर सही (√) का चिह्न लगा दें। किसी भी प्रश्न को न छोड़े, आपके उत्तर गोपनीय (confidential) रखे जावेंगे।

क्र. सं.	कथन	हाँ	नहीं
1.	किसी व्यक्ति द्वारा आलोचना किये जाने पर आप क्या क्रोधित हो जाते हैं ?	☐	☐
2.	कक्षा में यदि शिक्षक कुछ प्रश्न करते हैं और आप उसका जबाव नहीं दे पाते हैं तो क्या आप अच्छा महसूस नहीं करते हैं ?	☐	☐
3.	परीक्षा में फेल हो जाने पर क्या आपको आत्महत्या करने का मन करता है ?	☐	☐
4.	माता-पिता द्वारा हल्का डॉट देने पर भी क्या आप डर जाते हैं ?	☐	☐
5.	साँप, छिपकिली या मकड़ी या अन्य समान जानवर देखने पर क्या आप काफी डर जाते हैं ?	☐	☐
6.	गृह-कार्य (home work) नहीं करके जाने पर क्या आप भीतर-भीतर क्षुब्ध रहते हैं ?	☐	☐
7.	क्या आप अपने दोस्त का कोई सामान या चीज चुराकर चुपचाप कक्षा में बैठे रहते हैं ?	☐	☐
8.	क्या आपको अपने दोस्तों को भला-बुरा कहने में अच्छा लगता है ?	☐	☐
9.	क्या आप किसी पल में अपने आप बहुत खुश हो जाते हैं एवं दूसरे पल में बहुत उदास हो जाते हैं ?	☐	☐
10.	खेलने में हार जाने पर क्या आप अपने दोस्त को दोषी समझकर उसे भला-बुरा कहते हैं ?	☐	☐
11.	माता-पिता से मन-पसन्द चीज मिलने पर क्या आप खुश नजर आते हैं ?	☐	☐
12.	घनिष्ठ दोस्त द्वारा निन्दा किये जाने पर क्या आप विचलित हो जाते हैं ?	☐	☐
13.	विपरीत परिस्थिति के होने पर भी क्या आप अपना संतुलन बनाये रखते हैं ?	☐	☐
14.	किसी व्यक्ति द्वारा जरा-सा भला बुरा कहे जाने पर आप क्रोधित हो जाते हैं ?	☐	☐ √
15.	शिक्षक द्वारा अनुशासनहीनता के लिये डाँट जाने पर क्या आप काफी विचलित हो जाते हैं ?	☐	☐

PART – II

निर्देश (Instructions) :

भाग - I के समान ही यहाँ भी प्रत्येक प्रश्न के दो-दो उत्तर, अर्थात् 'हाँ' या 'नहीं' दिये गये हैं। आप दिये गए इन उत्तरों में से अपने लिए उपयुक्त उत्तर चुनकर उसके नीचे बने खानों में हाँ अथवा नहीं के नीचे सही (√) का चिह्न लगा दें। किसी भी प्रश्न को न छोड़े।

क्र. सं.	कथन	हाँ	नहीं
16.	क्या माता-पिता के साथ आपका सम्बन्ध परिवार के दूसरे सदस्यों की अपेक्षा बहुत अच्छा है ?	☐	☐
17.	अगर आप किसी दिन स्कूल नहीं जाते हैं तो क्या आपका मन घर पर नहीं लगता है ?	☐	☐
18.	क्या आप अपने विचार दूसरों के सामने व्यक्त करते समय बहुत आत्म सचेत हो जाते हैं।	☐	☐
19.	क्या आप किसी सामाजिक-कार्य का दायित्व लेने में सबसे आगे रहते हैं ?	☐	☐
20.	क्या आपको रात में अक्सर नींद नहीं आती है ?	☐	☐
21.	क्या आपकी अपने भाई-बहन से अक्सर किसी-न-किसी बात पर कहा-सुनी हो जाती है ?	☐	☐
22.	क्या आपको लोगों से मिलना-जुलना बहुत पसन्द है ?	☐	☐
23.	क्या आपको अक्सर कब्जियत की शिकायत रहती है ?	☐	☐
24.	क्या आपके मन में बेकार की बातें प्रायः आती रहती है ?	☐	☐
25.	स्कूल या कालेज के वातावरण में क्या आप घुटन महसूस करते हैं ?	☐	☐
26.	क्या आपका घर का वातावरण शांतिपूर्ण है ?	☐	☐
27.	क्या आप नये लोगों से बहुत जल्दी मित्रता कर लेते हैं ?	☐	☐
28.	क्या आपको अक्सर पाचन-संबंधी शिकायत रहती है ?	☐	☐
29.	अगर कोई आपकी जरा-सी निन्दा करे तो क्या आप अपना संतुलन खो बैठते हैं ?	☐	☐
30.	क्या आपको रोज स्कूल या कालेज जाने में अच्छा लगता है ?	☐	☐
31.	क्या आप किसी कार्य को अपने माता-पिता की अनुमति के बिना नहीं करते हैं ?	☐	☐
32.	क्या आप दूसरे व्यक्ति से बिना झिझक सहायता लेते हैं ?	☐	☐
33.	क्या आप पावर का चश्मा पहनते हैं ?	☐	☐
34.	कोई अगर आपका अपमान करता है तो आप परेशान हो जाते हैं ?	☐	☐

क्र. सं.	कथन	हाँ	नहीं
35.	क्या आप अपने दोस्तों के साथ मिल-जुलकर कोई कार्य करना ज्यादा पसन्द करते हैं ?	☐	☐
36.	क्या आपको ऐसा महसूस होता है कि परिवार के लोग आपको कम चाहते हैं ?	☐	☐
37.	क्या आप किसी सामाजिक कार्य में प्रधान भूमिका अदा करना चाहते हैं ?	☐	☐
38.	क्या आपके शरीर में रक्त की कमी है ?	☐	☐
39.	क्या आप अपने को अक्सर असहाय महसूस करते हैं ?	☐	☐
40.	अगर आपके दोस्त के पास किताब नहीं होती है तो क्या आप उसे अपनी किताब देकर सहायता करते हैं ?	☐	☐
41.	अगर आपके माता-पिता बीमार पड़ जाते है तो क्या आप चिन्तित हो जाते हैं ?	☐	☐
42.	अगर आप रेलगाड़ी में सफर करते हैं तो क्या आप सहयात्रियों के साथ बहुत जल्दी दोस्ती कर लेते हैं ?	☐	☐
43.	घर में झगड़ा होने से क्या आप उसे शान्त कराने की कोशिश करते हैं ?	☐	☐
44.	क्या आप अन्य व्यक्तियों के सामने बेझिझक अपना विचार व्यक्त करते हैं ?	☐	☐
45.	किसी का खून बहते देखकर क्या आप घबड़ा जाते हैं ?	☐	☐
46.	अगर आप किसी के घर जाते हैं तो क्या आप अपने मन पसन्द खाने की चीज नहीं मिलने पर ताना-वाना कसते हैं ?	☐	☐
47.	वर्ग की प्रतियोगिताओं में क्या आप प्रायः आगे रहते हैं ?	☐	☐
48.	क्या घर के लोग आपको उतना प्यार नहीं करते हैं जितना किया जाना चाहिए ?	☐	☐
49.	कोई बात पसन्द नहीं आने पर भी क्या आप प्रायः चुप रह जाते हैं ?	☐	☐
50.	क्या आप अपने पास-पड़ोस के लोगों का ख्याल रखते हैं ?	☐	☐
51.	घर में रहने के बजाय क्या आपको दोस्तों के घर रहना ज्यादा अच्छा लगता है ?	☐	☐
52.	अगर आप किसी रिश्तेदार के पास जाते हैं तो क्या आप आसानी से वहाँ के माहोल या वातावरण में घुल-मिल जाते हैं ?	☐	☐
53.	क्या माता-पिता आपके द्वारा गलती किये जाने पर आपकी निन्दा भी करते हैं ?	☐	☐
54.	क्या आपको मकड़ी या छिपकली देखते ही अजीब-सी घबड़ाहट होती है ?	☐	☐
55.	अगर कोई आपके घर के विभिन्न कमरों को देखने की इच्छा प्रकट करता है तो क्या आप उनके इस विचार की प्रशंसा करते हैं ?	☐	☐

PART – III

निर्देश (Instructions) :

नीचे कुछ ऐसी परिस्थितियाँ (situations) दी गई हैं जिनसे होकर प्रायः व्यक्ति अपने दिन-प्रतिदिन की जिंदगी में गुजरता है। आप इन परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक पढ़े और यह बताने की कोशिश करे कि यदि आप उस परिस्थिति में होते तो क्या करते ? आपका जवाब प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये दो उत्तरों में से किसी एक के रूप में होना चाहिए। अतः जो उत्तर आपको सही लगे उसके सामने बने खाने में सही (√) का चिह्न लगा दें। किसी भी प्रश्न को न छोड़े।

---

56. आप अपने दोस्त के साथ शाम को घूमने जा रहे हैं। उसी समय रास्ते में एक मुद्रा पर्स (money purse) गिरा हुआ मिलता है। उसमें कुछ रुपये थे और उस व्यक्ति का पता (address) भी। आपके दोस्त ने कहा "चलो इस रूपये से आज होटल में अच्छा-सा खाना खाये और उसके बाद सिनेमा चलें।" ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे ?

    (क) दोस्त की बात मान लेंगे ? ☐

    (ख) दोस्त के विचार से असहमति दिखायेंगें। ☐

57. आपके माता-पिता चाहते हैं कि आप किसी चींज का व्यवसाय (business) करें ताकि अच्छा धन कमा सके। लेकिन आपकी इच्छा डाक्टर बनने की है ताकि लोगों की सेवा की जा सके, गरीब-दुखी का इलाज किया जा सके। ऐसी अवस्था में आप क्या करेंगे ?

    (क) पिता की बात से सहमति दिखायेंगे। ☐

    (ख) मेडिकल परीक्षा की तैयारी में जुट जायेंगे। ☐

58. वर्ग में अगर दोस्तों के बीच बहुत झगड़ा होता है और मार-पीट की नौबत आ जाती है तो आप ऐसी परिस्थिति में क्या करेंगे ?

    (क) झगड़ा शांत करने की कोशिश करेंगे। ☐

    (ख) चुपचाप तटस्थ रहकर मजा लेंगे। ☐

59. आपकी परीक्षा बहुत नजदीक है। आपके माता-पिता आपको पढ़ने में ज्यादा समय देने के लिए कहते हैं, परन्तु आपका ध्यान सिनेमा तथा खेल-कूद की ओर अक्सर चला जाता है। आप ऐसी परिस्थिति में क्या करेंगे ?

    (क) माता-पिता की बात सुनी-अनसुनी करेंगे ? ☐

    (ख) खेल-कूद तथा मनोरंजन के साधन में अभिरूचि दिखायेंगे ? ☐

60. अगर राह चलते समय कोई व्यक्ति दुर्घटना (accident) का शिकार हो जाता है और आप अचानक वहाँ पहुँच जाते हैं, तो आप ऐसी परिस्थिति में क्या करेंगे ?

    (क) व्यक्ति को किसी डाक्टर या अस्पताल में पहुँचाने की कोशिश करेंगे। ☐

    (ख) व्यक्ति को थोड़े देर तक देखकर फिर वहाँ से चल देंगे। ☐

61. स्कूल से अगर आपकी बहन या भाई किसी का पेंसिल या रबर चुराकर लाता है तो आप उसे बहुत डाँटते हैं तथा उसे समझाते हैं कि चोरी करना बुरी आदत है। किसी की चींज चुराने से लोग उसे बुरा आदमी कहेंगे। लेकिन एक दिन आपका दोस्त कहीं से 500 रुपये चुराकर लाता है और आपके सामने रखते हुए कहता है, "चलो हम लोग इस पैसे से मौज उड़ायें।" ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे ?

(क) दोस्त को वैसा न करने के लिए समझायेंगे। ☐

(ख) दोस्त का साथ देंगे। ☐

62. परीक्षा में अगर प्रश्न-पत्र बहुत कठिन आता है और आप उसका जबाव जानते हैं और आपके साथी आपसे कहते है कि जरा-सा उसे बता दो। दोस्ती के नाते आप सोचते हैं कि बता दें। लेकिन तुरंत आपके मन में यह बात आती है कि परीक्षा में चोरी करना या दूसरों को बताना या सहायता करना दोनों ही जुर्म है और वीक्षक (examiner) द्वारा पकड़े जाने पर वह कड़ी सजा भी पायेगा। ऐसी अवस्था में आप क्या करेंगे ?

(क) साहस करके दोस्त को यथासंभव मदद करेंगे। ☐

(ख) दोस्त को झिड़क देंगे। ☐

63. घर में अगर किसी बात को लेकर आपके माता-पिता में झगड़ा होता है तो आप कुछ देर के लिए चिन्तित हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप क्या करना चाहेंगे ?

(क) माता या पिता या दोनों को चुप करायेंगे। ☐

(ख) डर से उनके पास न जायेंगे। ☐

64. अगर वर्ग में नये शिक्षक आते हैं तो कुछ लड़के उनके पीछे लगते हैं तथा मुँह लगाने की कोशिश करते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे ?

(क) साथियों का साथ नहीं देंगे। ☐

(ख) साथियों को नये शिक्षक को तंग करने के लिये कुछ नयी तरकीब बतायेंगे। ☐

65. अगर कुछ लड़के स्कूल के अनुशासन को भंग करते हैं और स्कूल से भागकर सिनेमा चले जाते हैं, और यदि यह बात आपको मालूम होती है तो आप क्या करेंगे ?

(क) उन लड़कों के बारे में शिक्षक से शिकायत करेंगे। ☐

(ख) तटस्थ रहकर अपना कार्य करेंगे। ☐

66. अगर आपके दोस्त के पिता बहुत बीमार हो जाय और उनके पास इलाज कराने को पैसा भी नहीं हो तो आप क्या करेंगे ?

(क) दोस्त के पिता के लिए पैसों की जुगाड़ करेंगे। ☐

(ख) दोस्त को संतावना देते रहेंगे। ☐

67. अगर बस (bus) में सफर करते समय कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति का कीमती सामान लेकर भागते समय पकड़ा जाता है तो आप क्या करेंगे ?

(क) चुपचाप बैठकर तमाशा देखना पसन्द करेंगे । ☐

(ख) उस व्यक्ति को सजा दिलाने का भरसक प्रयास करेंगे । ☐

68. अगर आपको पता चलता है कि आपके साथी के पास पढ़ने के लिए कोई भी किताब नहीं है और उसे पढ़ने का बहुत शौक है लेकिन उसके गरीब पिता बहुत मुश्किल से घर का खर्चा चलाते हैं तो आप ऐसी अवस्था में उस छात्र के साथ क्या करेंगे ?

(क) अपनी किताब उसे पढ़ने के लिये थोड़े समय के लिये दे देंगे । ☐

(ख) उसे किताब दिलाने का वादा करेंगे । ☐

69. वर्ग में शिक्षक के पढ़ाते समय अगर कोई लड़का उनके व्यवहारों की नकल छिपकर अपने अन्य साथियों को हँसाने के लिए करता है और आप उसे देख लेते है तो उस अवस्था में आप क्या करेंगे ?

(क) उस लड़के को वैसा नहीं करने का इशारा करेंगें । ☐

(ख) वर्ग में बीच में ही उठकर उसकी शिकायत शिक्षक से करेंगे । ☐

70. नदी या सरोवर में नहाते समय अगर आप देखते हैं कि कोई छोटा बच्चा डूब रहा है तो आप वैसी परिस्थिति में क्या करेंगे ?

(क) जोर-जोर से 'बचाओ-बचाओ' की आवाज देंगे । ☐

(ख) स्वयं उसे बचाने की कोशिश करेंगे । ☐

PART – IV

निर्देश (Instructions) :

इसमें आपके व्यवहार से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों का कोई पूर्व निश्चित उत्तर नहीं है। इसलिए आपको जो उत्तर सही लगे, वही आपके लिए सही उत्तर होगा और वैसे ही उत्तर पर हाँ अथवा नहीं के नीचे बने खाने पर सही (√) का चिह्न लगा दें। किसी भी प्रश्न को न छोड़ें।

क्र. सं.	कथन	हाँ	नहीं
71.	घर में माता-पिता नहीं रहने से क्या आपको डर लगता है ?	☐	☐
72.	रास्ते में होने पर अचानक बत्ती (light) बुझ जाने से क्या आप परेशान हो उठते हैं ?	☐	☐
73.	घर में झगड़ा होने से क्या आपकी परेशानी बढ़ जाती है ?	☐	☐
74.	आपके घर के लोग यदि आपको लाने रेलवे स्टेशन पर देर से पहुँचते हैं तो क्या आप चिंतित हो जाते हैं ?	☐	☐
75.	रात में अकेला जाने के नाम से ही क्या आपको डर लगने लगता है ?	☐	☐
76.	दोस्तों के बीच रहकर भी क्या आप अकेलापन महसूस करते हैं ?	☐	☐
77.	क्या आप दोस्तों के ऊपर भरोसा करते हैं ?	☐	☐
78.	क्या आप अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं ?	☐	☐
79.	क्या आप अपने वातावरण में पूरी तरह से समायोजित (adjusted) महसूस करते हैं ?	☐	☐
80.	क्या आपको ऐसा लगता है कि आप बहुत-सी खुशी से वंचित हैं ?	☐	☐
81.	नये लोगों से परिचय होने पर क्या आपको घबड़ाहट होती है ?	☐	☐
82.	क्या आपको लोगों से काफी प्रशंसा मिलती है ?	☐	☐
83.	क्या आप अक्सर उदास रहते हैं ?	☐	☐
84.	जरा-सी बात पर क्या आप दुखी हो जाते हैं ?	☐	☐
85.	क्या आपको किसी प्रकार की प्रतियोगिता (competition) से डर नहीं लगता है ?	☐	☐

PART – V

निर्देश (Instructions) :

नीचे दिये गए कथनों को आप ध्यानपूर्वक पढ़े। प्रत्येक कथन के सामने उसके दो-दो उत्तर अर्थात् 'सही' या 'गलत' दिये गये हैं। आप अपने लिये उनमें से जिसे उपयुक्त एवं ठीक समझते हैं, उस पर सही (√) का चिह्न लगा दें। किसी भी प्रश्न को न छोड़े।

क्र. सं.	कथन	सही	गलत
86.	मुझे लगता है कि मेरा व्यवहार परिपक्व है।		
87.	मेरा सामान्य ज्ञान का भंडार पर्याप्त है।		
88.	मैं जल्द ही कठिन समस्याओं का समाधान कर लेता हूँ।		
89.	हमारी आकांक्षाएँ (aspirations) वास्तविक होती हैं।		
90.	प्रगति के रास्ते में मुझे अक्सर कोई न कोई बाधा का सामना करना पड़ता है।		
91.	मुझे पूर्ण उम्मीद है कि एक दिन हम अपने सभी प्रतियोगियों को पीछे छोड़ देंगे।		
92.	कुछ लोग मेरी सफलता से बहुत हताश रहते हैं।		
93.	मेरी प्रत्याशाएँ (expectations) मेरी सफलता पर आधारित होती हैं।		
94.	मुझे अपनी जिन्दगी में कभी असफलता हाथ नहीं लगी है।		
95.	प्रत्येक व्यक्ति को सच्चे ढंग से जिंदगी में सफल होने का प्रयास करना चाहिए।		
96.	मेरी सफलता हमेशा प्रभावी (effective) रही है।		
97.	अभी तक किसी ऐसे व्यक्ति से मेरी भेंट नहीं हुई है जिसने हमारी उपलब्धियों की आलोचना की हो।		
98.	मेरी व्यक्तिगत आदतें हमारी उपलब्धि में बाधक सिद्ध हुई है।		
99.	मुझे प्रायः लगता है कि बहुत प्रयास करने के बाद भी बहुत थोड़ा ही प्राप्त हो पाता है।		
100.	मेरी उपलब्धियाँ कुछ बिन्दु पर निश्चित रूप से आलोच्य होती हैं।		

रूकिए! जब तक कहा न जाए पार्ट VI का उत्तर देना प्रारंभ न करें।

PART – VI

समय: सिर्फ 10 मिनट

निर्देश (Instructions) :

नीचे कुछ ऐसे प्रश्न दिये गए हैं जिनके उत्तर आपसे वांछनीय हैं। आप प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़े और दिये गये उनके चार-चार उत्तरों में से सबसे सही एवं उपयुक्त उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगा दें। याद रखें कि इस भाग के सभी प्रश्नों का उत्तर आपको 10 मिनट के समय में ही देना है।

प्रश्न	विकल्प		विकल्प	
101. आरोप का अर्थ है	(क) दोष	☐	(ख) गुण	☐
	(ग) लज्जा	☐	(घ) पश्चाताप	☐
102. डरपोक का उल्टा है	(क) कमजोर	☐	(ख) झगड़ालू	☐
	(ग) बहादुर	☐	(घ) साहसी	☐
103. किनारा का अर्थ है	(क) बाँध	☐	(ख) नदी	☐
	(ग) तट	☐	(घ) जल	☐
104. लम्बा का उल्टा है	(क) मोटा	☐	(ख) छोटा	☐
	(ग) नाटा	☐	(घ) पहलवान	☐
105. प्रभात का सम्बन्ध है	(क) उजाला	☐	(ख) सूर्य	☐
	(ग) किरण	☐	(घ) रात	☐
106. सेना का सम्बन्ध है	(क) युद्ध	☐	(ख) वायुयान	☐
	(ग) राईफल	☐	(घ) सैनिक	☐
107. आशा का उल्टा है	(क) खुशी	☐	(ख) निराशा	☐
	(ग) दुःख	☐	(घ) तकलीफ	☐
108. उजाला का सम्बन्ध है	(क) अन्धकार	☐	(ख) प्रकाश	☐
	(ग) आकाश	☐	(घ) सूर्य	☐
109. गोरा का उल्टा है	(क) काला	☐	(ख) प्रकाश	☐
	(ग) कुरूप	☐	(घ) सुन्दर	☐
110. आश्चर्य का अर्थ है	(क) अनुभव	☐	(ख) विस्मय	☐
	(ग) अचानक	☐	(घ) क्षणिक	☐

111. इनमें से किसका अन्य तीनों से मेल नहीं है ?
(क) रवीन्द्रनाथ टैगौर ☐ (ख) प्रेमचन्द ☐
(ग) दिनकर ☐ (घ) महात्मा गाँधी ☐

112. इनमें से किसका अन्य तीनों से मेल नहीं है ?
(क) कुर्सी ☐ (ख) टेबुल ☐
(ग) सोफा ☐ (घ) चादर ☐

113. मीठा का सम्बन्ध है
(क) चीनी ☐ (ख) नमक ☐
(ग) सेव ☐ (घ) रस ☐

114. कपड़ा का सम्बन्ध है
(क) दर्जी ☐ (ख) काटना ☐
(ग) पहनना ☐ (घ) सिलना ☐

115. $\sqrt{16}$ के बराबर कौन है ?
(क) $\sqrt{2}$ ☐ (ख) 2^2 ☐
(ग) 4^3 ☐ (घ) 4^2 ☐

116. 3^3 का बराबर क्या होगा ?
(क) 9 ☐ (ख) 6 ☐
(ग) 26 ☐ (घ) 27 ☐

117. प्यार का अर्थ है
(क) स्नेह ☐ (ख) ममता ☐
(ग) घृणा ☐ (घ) मोह ☐

118. 5, 7, 8, 10, 11, 13, ... इन संख्याओं के आगे की संख्या क्या होगी ?
(क) 28 ☐ (ख) 14 ☐
(ग) 26 ☐ (घ) 23 ☐

119. 5, 10, 15, 20, 25, ... इसके आगे की संख्या लिखें—
(क) 40 ☐ (ख) 30 ☐
(ग) 35 ☐ (घ) 45 ☐

120. 98, 90, 82, 80, 72, 64, ... इन संख्याओं के क्रम के अनुसार आगे की संख्या लिखें—
(क) 55 ☐ (ख) 56 ☐
(ग) 62 ☐ (घ) 66 ☐

121. 102, 204, 408, 816......इस क्रम के अनुसार आगे की संख्या लिखें—
(क) 1532 ☐ (ख) 1432 ☐
(ग) 1632 ☐ (घ) 1832 ☐

122. अशोक से अजय कम बुद्धिमान है। अरूण अशोक से भी अधिक बुद्धिमान है, तो सबसे बुद्धिमान कौन है ?
(क) अशोक ☐ (ख) अरूण ☐
(ग) अजय ☐ (घ) कोई नहीं ☐

123. **हिनहिनाना : घोड़ा ; भौंकना :**

(क) बिल्ली ☐ (ख) कुत्ता ☐
(ग) शेर ☐ (घ) भालू ☐

124. **इन चार शब्दों में से किसका अन्य सभी से कोई सम्बन्ध नहीं है ?**

(क) द्वारका ☐ (ख) मैसूर ☐
(ग) वैष्णोदेवी ☐ (घ) कन्याकुमारी ☐

125. **श्यामली किरण से सुन्दर है और किरण उषा से भी सुन्दर है तो श्यामली उषा से कितनी सुन्दर है ?**

(क) अधिक सुन्दर ☐ (ख) कुरूप ☐
(ग) बराबर ☐ (घ) साधारण ☐

126. **सर : टोपी ; पाव :**

(क) मोजा ☐ (ख) जूता ☐
(ग) पतलून ☐ (घ) अँगूठी ☐

127. **किसी भी देश में रेल की कई लाइनें होनी चाहिए जिसका कारण यह है कि—**

(क) लोगों को आने जाने में तथा माल ढोने में सुविधा हो । ☐

(ख) इससे समय की बचत हो सके । ☐

(ग) इससे व्यापारियों का मुनाफा बढ़ सके । ☐

(घ) इससे वस्तुओं की कीमत ऊँचा न हो । ☐

128. **बिल्ली एक लाभदायक पशु है क्योंकि—**

(क) वह दूध पीती है । ☐

(ख) वह चूहों का सफाया करती है । ☐

(ग) वह कुत्ते से डरकर भाग जाती है । ☐

(घ) वह अपनी आवाज से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है । ☐

129. **जूते चमड़े के बने इसलिये होते हैं क्योंकि—**

(क) चमड़ा सभी देशों में उपलब्ध होता है । ☐

(ख) चमड़े का जूता आरामदेह होता है । ☐

(ग) चमड़े का जूता पहनने से किसी प्रकार की बीमारी के होने की संभावना नहीं होती है । ☐

(घ) चमड़े का जूता बनाना आसान होता है । ☐

130. $\frac{4}{2} \times \frac{6}{2} \times \frac{6}{2} \times \frac{0}{2} \times \frac{4}{6}$ **बराबर कितना होगा ?**

(क) 3 ☐ (ख) 6 ☐
(ग) 4 ☐ (घ) 0 ☑

Dr. A. Sen Gupta *(Patna)*

Prof. A. K. Singh *(Patna)*

Consumable Booklet

of

M V S

(Hindi Version)

कृपया निम्न सूचनाएँ भरिये :–

नाम .... लिंग ....

वर्ग .... शहर/गाँव ....

स्कूल .... दिनांक ....

निर्देश

आगे के पृष्ठों पर कुछ प्रश्न दिए गए हैं जो नैतिकता से सम्बन्धित हैं। इन्हें आप ध्यानपूर्वक पढ़ें और हाँ तथा नहीं में से किसी एक के नीचे वाले खाने में सही (√) का चिन्ह लगा दें। यहाँ कोई प्रश्न सही या गलत नहीं है।

आपके उत्तरों तथा प्राप्तांकों (Scores) को हमेशा गोपनीय रखा जायेगा।

Estd. 1971 ✆ (0562) 364926

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA – 282 004 (U. P.) INDIA

		हाँ	नहीं
1. (अ)	क्या माता-पिता द्वारा कछ पूछे जाने पर आप उसे छिपा लेते हैं ?	☐	☐
2. (ब)	अगर आपको मौका मिले तो क्या आप दुकान से किसी चीज को चुपके से उठा लेते हैं ?	☐	☐
3. (स)	क्या आप मौका पाते ही किसी की चीज छिपा लेते हैं ?	☐	☐
4. (द)	परीक्षा में चोरी करके लिखने से क्या आप यह महसूस करते हैं कि आपको इससे ज्यादा अंक प्राप्त होंगे ?	☐	☐
5. (अ)	शिक्षक द्वारा डाँट पड़ने पर डर से क्या आप गृहकार्य नहीं करके आने का झूठा बहाना बना देते हैं ?	☐	☐
6. (ब)	क्या आप अपने काम को ईमानदारी से करना पसन्द करते हैं ?	☐	☐
7. (स)	क्या आपको चोरी करना बुरा लगता है ?	☐	☐
8. (द)	क्या चोरी करके सफल होना आप एक आदर्श एवं उचित कार्य समझते हैं ?	☐	☐
9. (अ)	क्या आप स्कूल जाने के बजाय खेलने या सिनेमा देखने भाग जाते हैं और स्कूल में छुट्टी होते ही सही समय पर घर पहुँच जाते हैं ताकि किसी को पता नहीं चले कि आप स्कूल नहीं गये थे ?	☐	☐
10. (ब)	क्या आपको ऐसा लगता है कि आज के जमाने में ईमानदार होना बेवकूफी है ?	☐	☐
11. (स)	आप अगर दुकान में जाते हैं तो क्या मौका देखते ही कोई सामान चोरी कर लेते हैं ?	☐	☐
12. (द)	क्या आपको अपने दोस्त की किसी बात पर अपराध करते हुए पकड़े जाने पर खुशी होती है ?	☐	☐
13. (अ)	आपका दोस्त अगर आप से कोई किताब माँगे तो किताब रहने पर भी आप उसे तुरन्त कह देते हैं कि आपके पास वह किताब नहीं है ?	☐	☐
14. (ब)	क्या आप अपने दोस्त के साथ हमेशा ईमानदारी से पेश आते हैं ?	☐	☐

		हाँ	नहीं
15. (स)	क्या आप क्लास में अक्सर दोस्तों की कीमती चीजें चुरा लेते हैं ?	☐	☐
16. (द)	क्लास में चोरी करते समय पकड़े जाने पर क्या आपको शिक्षक से पिटाई का डर होता है ?	☐	☐
17. (अ)	क्या आप तभी झूठ बोलते हैं जब इसकी सख्त जरूरत हो ?	☐	☐
18. (ब)	आप बाजार में कुछ खरीदने जाते हैं और यदि दुकानदार आपको गलती से ज्यादा पैसा लौटा देता है तो क्या आप उसे अपने पास रख लेते हैं ?	☐	☐
19. (स)	चोरी करना क्या आपको एक आसान काम लगता है ?	☐	☐
20. (द)	चोरी करना आज के युग के लिए उचित है, क्या आप इस कथन से सहमत हैं ?	☐	☐
21. (अ)	क्या आप माता-पिता से कभी झूठ नहीं बोलते हैं ?	☐	☐
22. (ब)	अगर किसी का पता लिखा बटुआ रास्ते में गिर जाये और उसमें काफी रुपया हो तो क्या आप उसे उस पर लिखे पते के अनुसार लौटा देंगे ?	☐	☐
23. (स)	क्या आप अक्सर दोस्तों का टिफिन चुराकर खा लेते हैं ?	☐	☐
24. (द)	चोरी करते हुए पकड़े जाने पर क्या आपको शर्मिन्दगी महसूस होती है ?	☐	☐
25. (अ)	अगर घर में झगड़ा हो तो पड़ोसी से पूछे जाने पर क्या आप इस बात को नकार देते हैं ?	☐	☐
26. (ब)	अगर आपका दोस्त अपनी किताब भूल जाता है तो क्या आप उसे वापस कर देंगे ?	☐	☐
27. (स)	क्या आप समझते हैं कि चोरी का ही दूसरा नाम किसी की चीज बिना बोले ले लेना है ?	☐	☐
28. (द)	अगर आपको किसी प्रश्न का जवाब नहीं आता तो आप बेझिझक अपने दोस्त का नकल उतार देते हैं ?	☐	☐

			हाँ	नहीं
29.	(अ)	झूठ बोलना पाप है, क्या आप इसे मानते हैं ?	☐	☐
30.	(ब)	यदि घर में आये मेहमान की कीमती घड़ी छूट जाती है तो क्या आप उसे रख लेंगे ?	☐	☐
31.	(स)	क्या आप घर में हमेशा माता-पिता से चुराकर पैसा ले लेते हैं ?	☐	☐
32.	(द)	चोरी करते समय क्या आप अपने को दोषी महसूस करते हैं ?	☐	☐
33.	(अ)	अगर किसी का भला हो तो आप झूठ बोलने के लिए तुरन्त तैयार हो जाते हैं ?	☐	☐
34.	(ब)	अगर आपके माता-पिता कुछ लाने को देते हैं तो क्या आप उसका सही दाम नहीं बताकर कुछ पैसा रख लेते हैं ?	☐	☐
35.	(स)	क्या चोरी करने से आपको उसके परिणाम से डर लगता है ?	☐	☐
36.	(द)	क्या आप परीक्षा में सभी प्रश्नों का जबाब अपने से देते हैं ?	☐	☐

Printed By- Archana Printers, Subhashpuram, Bodla, AGRA-7

T. M. No. 458715

Rajeev Lochan Bharadwaj *(Aligarh)*

Consumable Booklet

of

S E S S

(Hindi Version)

कृपया निम्न सूचनाएँ भरिए—

नाम .... शिक्षा ....

आयु .... लिंग ....

धर्म ....

घर का पता ....

निर्देश

1. आपके तथा आपके पितरों के विषय में तथ्य चाहिए। अनेक उत्तरों में से केवल अनुकूल उत्तरों को चुनिए। चुने उत्तरों के उचित स्थानों पर सही का चिह्न (√) लगाना है।
2. आपके सही उत्तर शोध में काम आने हैं। उत्तर गुप्त रहेंगे।
3. पितरों में से किसी एक या दोनों के जीवित न होने पर उनके चुने हुए उत्तर उनके जीवित होने के समय से सम्बन्धित होने चाहिए।
4. उत्तर देने से पूर्व आगे दिए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए।

Estd. 1971

✆ (0562) 364926

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA – 282 004 (INDIA)

निर्देश—

प्रत्येक विषय से सम्बन्धित पाँच सम्भावनाएँ हैं। उत्तर अपने तथा माता, पिता के बारे में अलग-अलग देना है। तीनों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

'बहुत अधिक' उत्तर के लिए '1' पर चिह्न लगाइए।

'अधिक' उत्तर के लिए '2' पर चिह्न लगाइए।

'साधारण' उत्तर के लिए '3' पर चिह्न लगाइए।

'कम' उत्तर के लिए '4' पर चिह्न लगाइए।

'बहुत कम' उत्तर के लिए '5' पर चिह्न लगाइए।

		पिता	माता	आप
1. सामाजिक परिप्रेक्ष्य—				
(क) समाज-सेवी के रूप में समाज में आपको कितना स्थान प्राप्त है ?	1.	☐	☐	☐
	2.	☑	☐	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☐	☐	☐
	5.	☐	☑	☐
(ख) व्यक्ति में समाज-सेवा की सामर्थ्य उसकी शिक्षा-दीक्षा, शारीरिक स्वास्थ्य, आर्थिक शक्ति एवं सेवा में आस्था पर आधारित है। आप अपने परिवार की समाज-सेवा सामर्थ्य को कितनी महत्वपूर्ण मानते हैं ?	1.	☑	☐	☐
	2.	☐	☐	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☐	☑	☐
	5.	☐	☐	☐
		32	10	
2. पारिवारिक परिप्रेक्ष्य—				
(क) समाज-सेवा में उपयोगी के रूप में पड़ौसी आपके परिवार को कैसा मानते हैं ?	1.	☐	☐	☐
	2.	☐	☐	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☑	☐	☐
	5.	☐	☑	☐
(ख) समाज-सेवा में सक्षम के रूप में पड़ौसी आपके परिवार को कैसा मानते हैं ?	1.	☑	☑	☐
	2.	☐	☐	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☐	☐	☐
	5.	☐	☐	☐

		पिता	माता	आप
(ग) अब तक की गयी सेवा के आधार पर पड़ौसी आपके परिवार को कैसा सम्मान प्रदान करते हैं ?	1.	☑	☑	☐
	2.	☐	☐	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☐	☐	☐
	5.	☐	☐	☐
(घ) समाज-सेवा की व्यापकता इस बात से तय होती है कि व्यक्ति कितनी समाजसेवी संस्थाओं का सक्रिय सदस्य है। आप इस तथ्य को आगे रखकर अपने परिवार की सेवा व्यापकता आँकिए।	1.	☐	☐	☐
	2.	☑	☑	☐
	3.	☐	☐	☐
	4.	☐	☐	☐
	5.	☐	☐	☐
		45	41	

3. शिक्षा परिप्रेक्ष्य—

	पिता	माता	आप
(क) D.Litt/D.Sc./LL.D./Ph.D./M.D./M.S./M.E.	☐	☐	☐
(ख) M.A. / M.Com. / M.Sc. / M.Sc. (Ag.) / M.Ed. / M.B.A. / M.C.A.	☑	☐	☐
(ग) M. B., B. S. / B. E. / LL. B.	☐	☐	☐
(घ) B. A. / B. Sc. / B. Com. / B.Sc. (Ag.)	☐	☑	☐
(ड.) Intermediate / Higher Secondary	☐	☐	☐
(च) High School तक	☐	☐	☐
(छ) अनपढ़	☐	☐	☐
	९	3	

4. व्यवसाय परिप्रेक्ष्य—

	पिता	माता	आप
(क) यदि आप चिकित्सक हैं :			
मैडीकल कॉलेज के प्रोफेसर	☐	☐	☐
M. B., B. S. प्राप्त व्यक्तिगत / सरकारी सेवा में	☐	☐	☐
मनोचिकित्सक / हौम्योपैथ / डिप्लोमा वाले	☐	☐	☐
यूनानी / झाड़फूँक करने वाले	☐	☐	☐
(ख) यदि प्रधानाचार्य हैं :			
पोस्ट-ग्रेजुएट/ग्रेजुएट/इन्जीनियरिंग/मैडीकल कॉलेज	☐	☐	☐
इण्टरमीडिएट / हाई स्कूल या समकक्ष	☐	☐	☐
जूनियर / प्राइमरी स्कूल	☐	☐	☐

	पिता	माता	आप
(ग) यदि सरकारी अफसर हैं :			
कमिश्नर / डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट	☐	☐	☐
सिविल जज / प्रशासक	☐	☐	☐
आई. ए. एस. / पी. सी. एस. प्राप्त अन्य पदों पर	☐	☐	☐
(घ) यदि भारतीय सेना में हैं :			
वायु सेना — कमीशण्ड	☐	☐	☐
वायु सेना — नॉन-कमीशण्ड	☐	☐	☐
थल सेना — कमीशण्ड	☐	☐	☐
थल सेना — नॉन-कमीशण्ड	☐	☐	☐
जल सेना — कमीशण्ड	☐	☐	☐
जल सेना — नॉन-कमीशण्ड	☐	☐	☐
सी. आर. पी. / बी. एस. एफ. / पुलिस — अधिकारी	☐	☐	☐
सी. आर. पी. / बी. एस. एफ. / पुलिस — कर्मचारी	☐	☐	☐
(च) यदि अधिकारी हैं :			
इन्कम टैक्स / रेलवे / शिक्षा / वन / उद्योग आदि	☐	☐	☐
(छ) यदि वकील हैं	☐	☐	☐
(ज) यदि शिक्षक हैं :			
कॉलेज प्रोफेसर	☐	☐	
इण्टरमीडिएट/ हाईस्कूल	☐	☐	
स्कूल—जूनियर व प्राइमरी	☐	☐	☐
(झ) यदि लेखक हैं :			
साहित्यकार	☐	☐	☐
पाठ्य-पुस्तक	☐	☐	☐
नोट्स/ गाइड्स आदि	☐	☐	☐
(ट) यदि व्यापारी हैं :			
बड़े कारखाने के मालिक	☑	☐	☐
लघु कारखानों के मालिक	☐	☐	☐
कैमिस्ट / कपड़ा व्यापारी	☐	☐	☐
होटल / रेस्टोरेण्ट / जनरल मर्चेण्ट / पुस्तक विक्रेता / स्वर्णकार / खाद्य सामग्री	☐	☐	☐
गलीचा उद्योग / बर्तन व्यापारी / जूता उद्योग	☐	☐	☐

	पिता	माता	आप
(ठ) यदि कलाकार हैं :			
संगीतकार	☐	☐	☐
नृत्यकार / चित्रकार / नाटककार	☐	☐	☐
मूर्तिकार	☐	☐	☐
(ड) यदि इन्जीनियर हैं :			
सिविल / इलैक्ट्रीकल / मैकेनिकल	☐	☐	☐
आर्कीटेक्ट	☐	☐	☐
(ढ) यदि नेता हैं :			
मिनिस्टर / एम. पी.	☐	☐	☐
जननेता / एम.एल.ए. / एम.एल.सी. / यूनियन / पेशेवर	☐	☐	☐
विद्यार्थी / आकस्मिक	☐	☐	☐
(ण) यदि मैनेजर हैं :			
उद्योग / बैंक	☐	☐	☐
फार्म / डेरी / सिनेमा	☐	☐	☐
(त) यदि कृषक हैं :			
फार्म मालिक	☐	☐	☐
कम भूमि वाले	☐	☐	☐
मजदूरी वाले	☐	☐	☐
(थ) क्या आप या आपके माता-पिता निम्न में से कुछ हैं ?			
ठेकेदार / क्रय-विक्रय अधिकारी	☐	☐	☐
वीमा निगम / बैंक कर्मचारी / एकाउण्टेण्ट	☐	☐	☐
क्राफ्ट्समैन / चपरासी	☐	☐	☐
मजदूर	☐	☐	☐
	21		

5. सम्पत्ति परिप्रेक्ष्य—

आप अपने परिवार की चल एवं अचल सम्पत्ति का मूल्यांकन करके बताइए कि वह अनुमानत: कितनी होगी । अपने द्वारा संजोयी गयी सम्पत्ति का भी विवरण दें ।

50 लाख से ऊपर	☐	☐	☐
35 लाख से 49 लाख तक	☐	☐	☐
15 लाख से 34 लाख तक	☑	☐	☐
5 लाख से 14 लाख तक	☐	☐	☐
26 हजार से 4 लाख तक	☐	☐	☐
25 हजार से नीचे	☐	☐	☐
	4		

6. मासिक आय परिप्रेक्ष्य—

परिवार की मासिक आय बताइए। पिता या माता के जीवित न होने पर निर्भर स्रोत की मासिक आय पिता के खाने में लिखकर उक्त स्रोत को लिख दीजिए:

	पिता	माता	आप
46 हजार से ऊपर	☐	☐	☐
21 हजार से 45 हजार तक	☐	☐	☐
11 हजार से 30 हजार तक	☑	☐	☐
3,100 से 10 हजार तक	☐	☐	☐
1000 हजार से 3000 हजार तक	☐	☐	☐
1000 से नीचे	☐	☐	☐
	4		

7. जाति परिप्रेक्ष्य—

	पिता	माता
उच्च जाति	☑	☑
पिछड़ी जाति	☐	☐
अनुसूचित जाति	☐	☐
	4	4

TABLE 1

Put area-wise total of weighted scores from the test for Father, Mother and Self

AREAS	Father	Mother	Self
Social	32	10	
Family	45	41	
Education	9	3	
Profession	21		
Caste	8	4	
Total Assets	4		
Monthly Income	4		

TABLE 2

Put area-wise Z-scores (From Manual Tables – D, E and F) corresponding to area-wise total of weighted scores of Table 1 for Father, Mother and Self separately. To determine any status score take help with the Manual Table C

AREAS	Ascribed		Achieved
	Father	Mother	Self
Social			
Family			
Education			
Profession			
Caste			
Total			

Total

[A] (Ascribed) **Social Status**	[B] (Achieved) **Social Status**	[C] (As a whole) **Social Status**

Total Assets			
Monthly Income			
Total			

Total

[D] (Ascribed) **Economic Status**	[E] (Achieved) **Economic Status**	[F] (As a whole) **Economic Status**

Total

[G] (Ascribed) **Socio-Economic Status**	[H] (Achieved) **Socio-Economic Status**	[I] (As a whole) **Socio-Economic Status**

TABLE 3

Put various status score from the Table 2 and write the category with the help of T-Scores

S. No.	Status	Status Score	T-Score	Category
A	Social Status (ascribed)			
B	Social Status (achieved)			
C	Social Status (as a whole)			
D	Economic Status (ascribed)			
E	Economic Status (achieved)			
F	Economic Status (as a whole)			
G	Socio-Eco. Status (ascribed)			
H	Socio-Eco. Status (achieved)			
I	Socio-Eco. Status (as a whole)			

क्रमांक	प्रश्न	सदैव	कभी-कभी	कभी नही
1.	क्या आपका बच्चा आपका कहना मानता है।			
2.	क्या आपका बच्चा अपने दैनिक कार्य नियम पूर्वक करता है।			
3.	क्या आपका बच्चा अपना गृह कार्य (Home-work) रोज समय से करता है।			
4.	क्या वह अपने छोटे भाई-बहनों का ख्याल रखता है।			
5.	क्या वह अपने शिक्षकों की बात मानता है।			
6.	अच्छा कार्य करने पर आप उसे पुरस्कृत करते हैं।			
7.	क्या आपका बच्चा अपने साथ के दूसरे बच्चों की भी मदद करता है।			
8.	क्या आपका बच्चा अपने कमरे को साफ रखता है।			
9.	क्या आपके जरा सा भी गुस्सा करने पर बहुत आक्रामक हो जाता है।			
10.	अपना हर काम वह आपसे पूछकर करता है।			
11.	घर या बाहर के कामों में आपकी सहायता करता हैं।			
12.	क्या घर में आये मेहमानों के साथ वह शिष्टता से पेश आता है।			
13.	अपनी आलोचना सुनने पर क्या वह अपना सतुलंन खोने लगता है।			
14.	क्या आपका बच्चा दूसरों के घर जाकर उनके घर के वातावरण में समायोजित (Adjust) हो पाता है।			
15.	क्या आपका बच्चा विपरीत परिस्थितियों में जल्दी घबड़ा जाता है।			